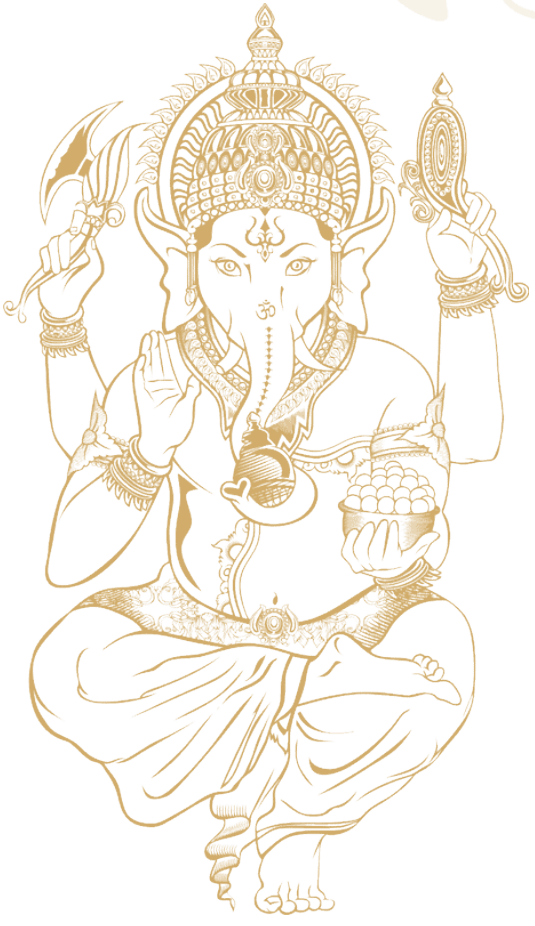

Deepti Matai

07 Mar 1980

06:58 PM

Mumbai

Model: Web-BhriguPatrika

Order No: 121146801

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	स्त्रीलिंग
जन्म तिथि	**07/03/1980**
दिन	शुक्रवार
जन्म समय	**18:58:00 घंटे**
इष्ट	30:10:46 घटी
स्थान	**Mumbai**
राज्य	Maharashtra
देश	India

अक्षांश	18:58:00 उत्तर
रेखांश	72:50:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:38:40 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	18:19:20 घंटे
वेलान्तर	-00:11:03 घंटे
साम्पातिक काल	05:21:01 घंटे
सूर्योदय	06:53:41 घंटे
सूर्यास्त	18:45:57 घंटे
दिनमान	11:52:16 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	वसन्त
सूर्य के अंश	23:33:23 कुम्भ
लग्न के अंश	27:10:57 सिंह

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	सिंह - सूर्य
राशि-स्वामी	**तुला - शुक्र**
नक्षत्र-चरण	**विशाखा - 2**
नक्षत्र स्वामी	गुरु
योग	व्याघात
करण	गर
गण	राक्षस
योनि	व्याघ्र
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	सर्प
युँजा	मध्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	तू-तुष्टि
पाया(राशि-नक्षत्र)	ताम्र - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मीन

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1901	फाल्गुन	17
पंजाबी	संवत : 2036	फाल्गुन	24
बंगाली	सन् : 1386	फाल्गुन	23
तमिल	संवत : 2036	मासी	24
केरल	कोल्लम : 1155	कुंभम	24
नेपाली	संवत : 2036	फाल्गुन	24
चैत्रादि	संवत : 2036	चैत्र	कृष्ण 5
कार्तिकादि	संवत : 2036	फाल्गुन	कृष्ण 5

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ___: 5
तिथि समाप्ति काल _____: 14:38:32
जन्म तिथि _____: 6
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ___: स्वाति
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 07:58:03 घंटे
जन्म योग _____: विशाखा
सूर्योदय कालीन योग ___: व्याघात
योग समाप्ति काल _____: 26:35:32 घंटे
जन्म योग _____: व्याघात
सूर्योदय कालीन करण ___: तैतिल
करण समाप्ति काल _____: 14:38:32 घंटे
जन्म करण _____: गर
भयात _____: 27:29:54
भभोग _____: 65:27:09
भोग्य दशा काल _____: गुरु 9 वर्ष 3 मा 23 दि

घात चक्र

मास _____: माघ
तिथि _____: 4-9-14
दिन _____: गुरुवार
नक्षत्र _____: शतभिषा
योग _____: शुक्ल
करण _____: तैतिल
प्रहर _____: 4
वर्ग _____: गरुड़
लग्न _____: कन्या
सूर्य _____: कन्या
चन्द्र _____: मीन
मंगल _____: तुला
बुध _____: कर्क
गुरु _____: वृश्चिक
शुक्र _____: धनु
शनि _____: सिंह
राहु _____: मकर

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

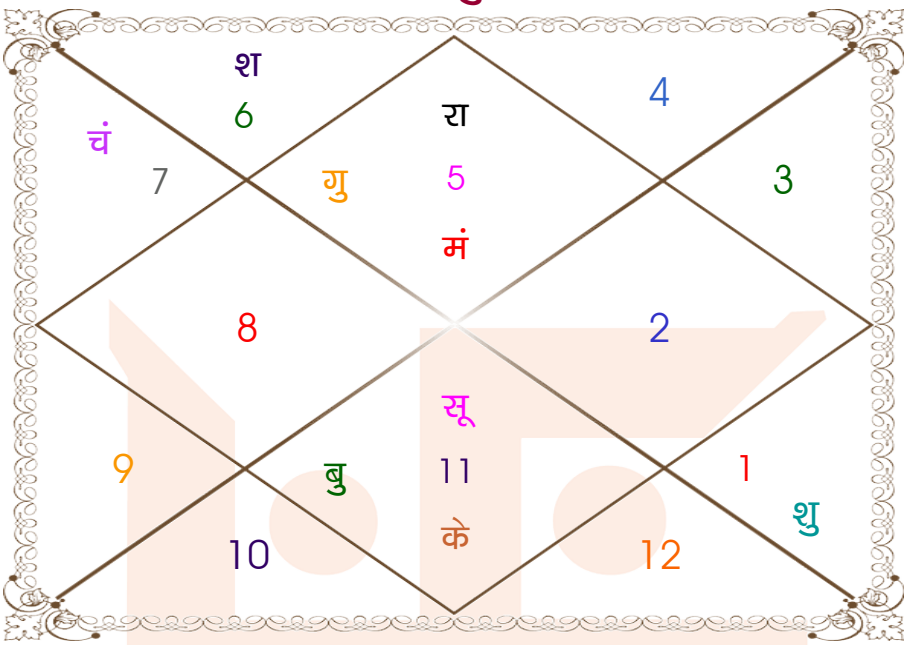

चन्द्र कुंडली

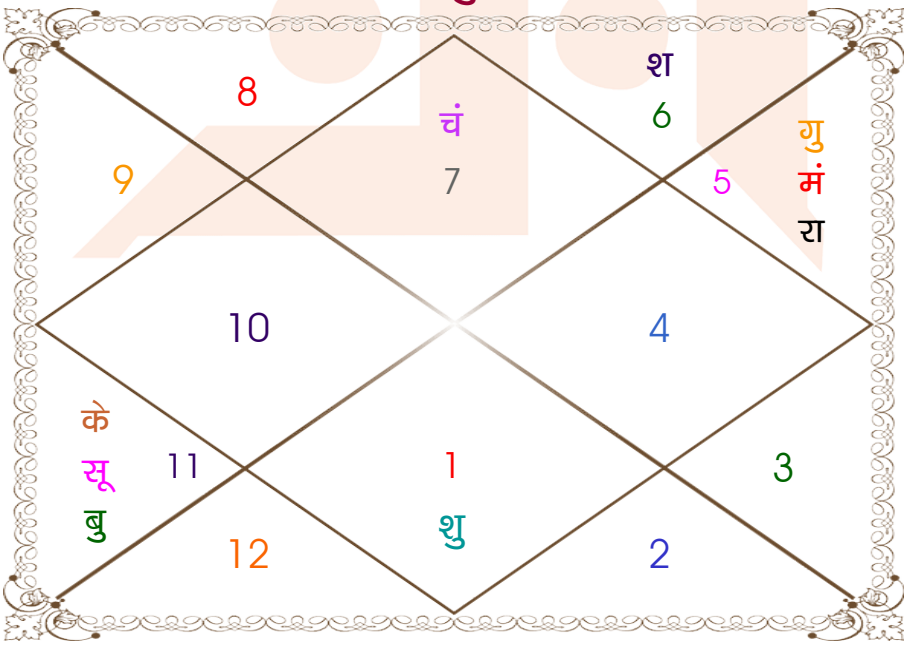

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

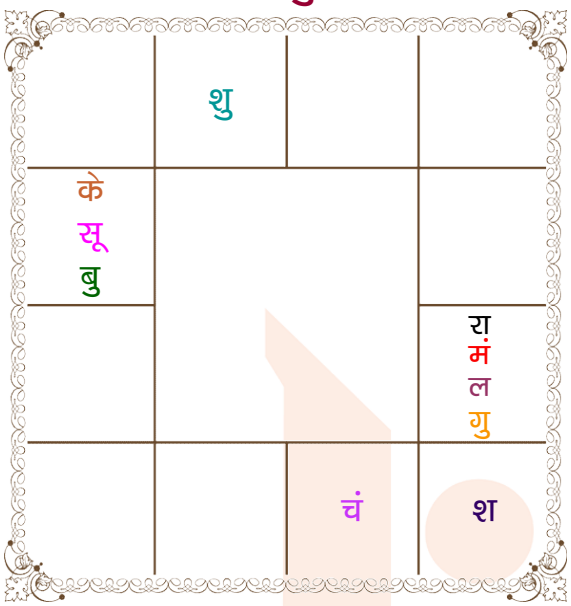

लग्न कुंडली

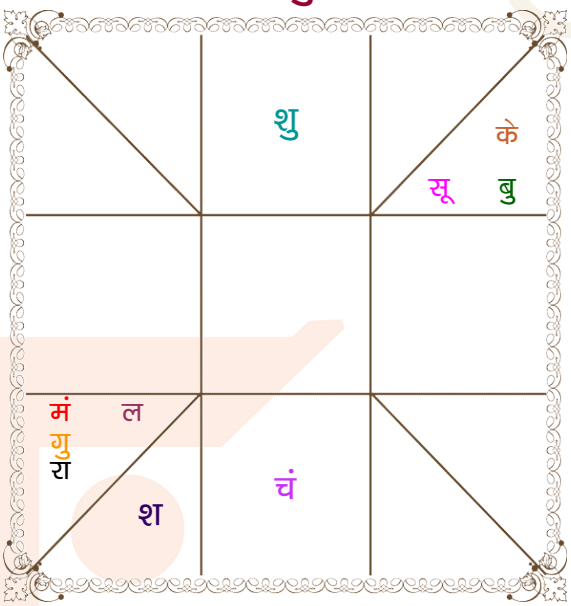

विंशोत्तरी
गुरु 9वर्ष 3मा 23दि

गुरु

07/03/1980

30/06/2093

गुरु	30/06/1989
शनि	30/06/2008
बुध	30/06/2025
केतु	30/06/2032
शुक्र	30/06/2052
सूर्य	30/06/2058
चन्द्र	30/06/2068
मंगल	01/07/2075
राहु	30/06/2093

योगिनी
धान्या 1वर्ष 8मा 29दि

भद्रिका

05/12/2021

05/12/2026

भद्रिका	16/08/2022
उल्का	16/06/2023
सिद्धा	05/06/2024
संकटा	16/07/2025
मंगला	05/09/2025
पिंगला	15/12/2025
धान्या	16/05/2026
भ्रामरी	05/12/2026

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			सिंह	27:10:57	341:32:27	उ०फाल्गुनी	1	12	सूर्य	सूर्य	सूर्य	---
सूर्य			कुंभ	23:33:23	01:00:01	पू०भाद्रपद	2	25	शनि	गुरु	शनि	शत्रु राशि
चंद्र			तुला	25:34:18	12:12:06	विशाखा	2	16	शुक्र	गुरु	बुध	सम राशि
मंगल	व		सिंह	07:52:00	00:21:13	मघा	3	10	सूर्य	केतु	गुरु	मित्र राशि
बुध	व	अ	कुंभ	20:53:03	01:00:49	पू०भाद्रपद	1	25	शनि	गुरु	गुरु	सम राशि
गुरु	व		सिंह	10:11:04	00:07:30	मघा	4	10	सूर्य	केतु	शनि	मित्र राशि
शुक्र			मेष	07:17:38	01:07:33	अश्विनी	3	1	मंगल	केतु	राहु	सम राशि
शनि	व		कन्या	00:35:10	00:04:42	उ०फाल्गुनी	2	12	बुध	सूर्य	राहु	मित्र राशि
राहु	व		सिंह	05:33:30	00:02:29	मघा	2	10	सूर्य	केतु	राहु	शत्रु राशि
केतु	व		कुंभ	05:33:30	00:02:29	धनिष्ठा	4	23	शनि	मंगल	चंद्र	शत्रु राशि
हर्ष	व		वृश्चि	01:58:06	00:00:23	विशाखा	4	16	मंगल	गुरु	राहु	---
नेप			वृश्चि	29:00:56	00:00:35	ज्येष्ठा	4	18	मंगल	बुध	शनि	---
प्लूटो	व		कन्या	27:41:37	00:01:19	चित्रा	2	14	बुध	मंगल	गुरु	---
दशम भाव			वृष	27:27:51	--	मृगशिरा	--	5	शुक्र	मंगल	गुरु	--

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:34:40

लग्न-चलित

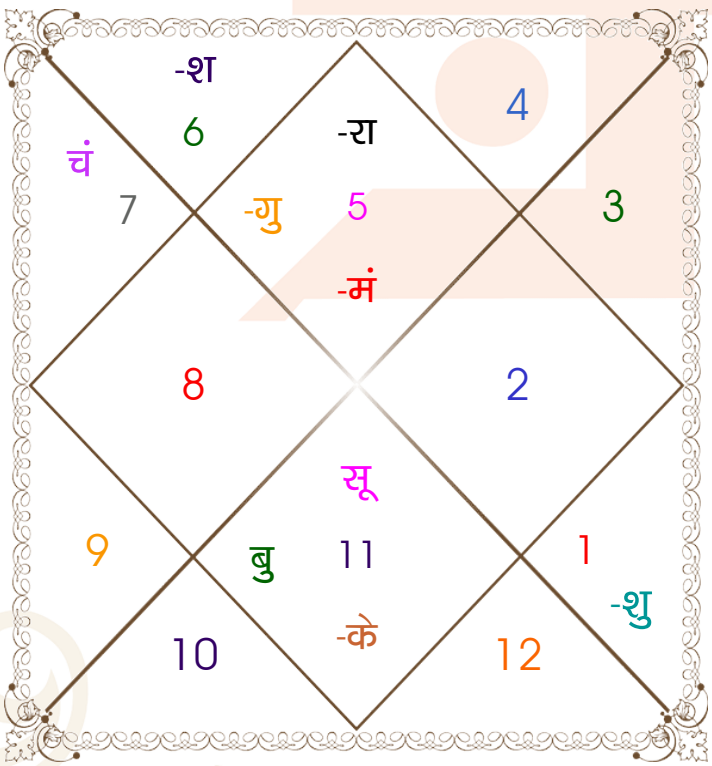

चन्द्र कुंडली

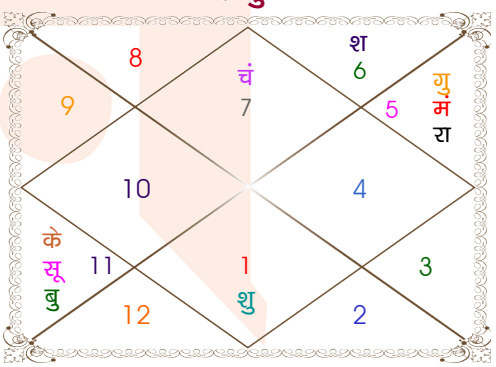

नवमांश कुंडली

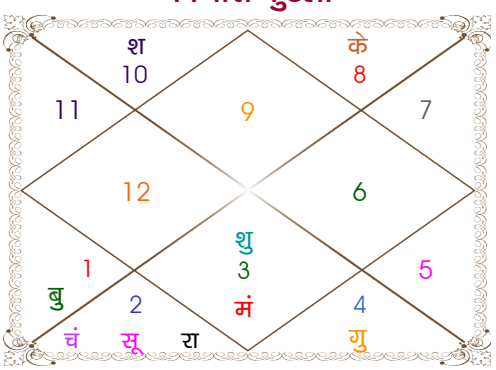

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	सिंह	12:13:46	सिंह	27:10:57
2	कन्या	12:13:46	कन्या	27:16:35
3	तुला	12:19:24	तुला	27:22:13
4	वृश्चिक	12:25:02	वृश्चिक	27:27:51
5	धनु	12:25:02	धनु	27:22:13
6	मकर	12:19:24	मकर	27:16:35
7	कुम्भ	12:13:46	कुम्भ	27:10:57
8	मीन	12:13:46	मीन	27:16:35
9	मेष	12:19:24	मेष	27:22:13
10	वृष	12:25:02	वृष	27:27:51
11	मिथुन	12:25:02	मिथुन	27:22:13
12	कर्क	12:19:24	कर्क	27:16:35

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	सिंह	27:10:57
2	कन्या	26:24:15
3	तुला	26:59:18
4	वृश्चिक	27:27:51
5	धनु	27:35:18
6	मकर	27:40:06
7	कुम्भ	27:10:57
8	मीन	26:24:15
9	मेष	26:59:18
10	वृष	27:27:51
11	मिथुन	27:35:18
12	कर्क	27:40:06

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा
पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा
पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति

चलित कुंडली

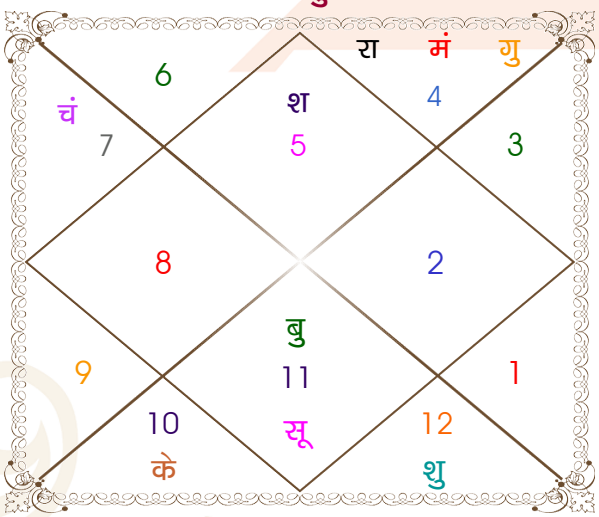

भाव कुंडली

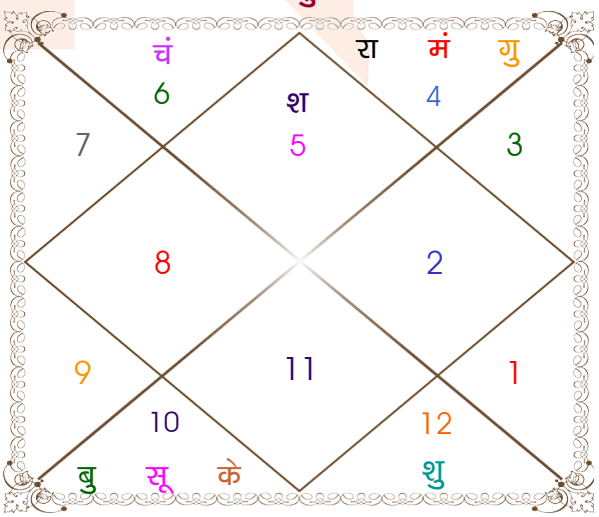

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------			-------- अवस्था --------			
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	अमात्य	पितृ	वृद्ध	खल	कौतुक	2.97	26 %
चंद्र	आत्मा	मातृ	मृत	शक्त	सभा	0.19	32 %
मंगल	पुत्र	भ्रातृ	कुमार	मुदित	भोजन	0.27	27 %
बुध	भ्रातृ	ज्ञाति	वृद्ध	विकल	सभा	0.00	45 %
गुरु	मातृ	धन	कुमार	मुदित	कौतुक	5.63	44 %
शुक्र	ज्ञाति	कलत्र	कुमार	शान्त	भोजन	3.77	39 %
शनि	कलत्र	आयु	मृत	मुदित	नेत्रपाणि	3.63	49 %
राहु	---	ज्ञान	बाल	खल	सभा	0.00	0 %
केतु	---	मोक्ष	बाल	खल	भोजन	0.00	44 %
कुल						16.46	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा
पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा
पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति

चलित कुंडली

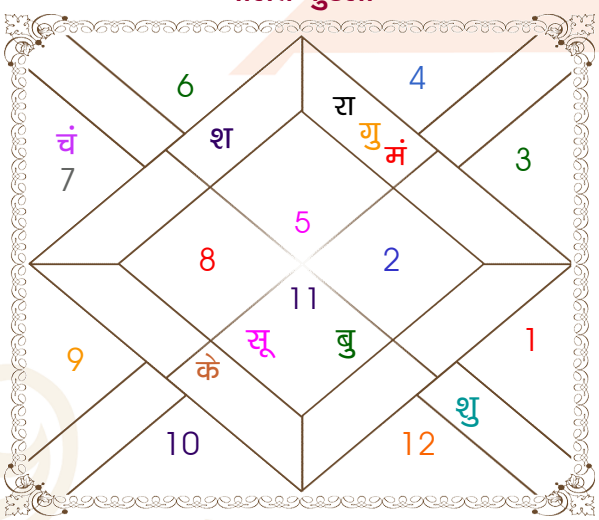

लग्न-चलित

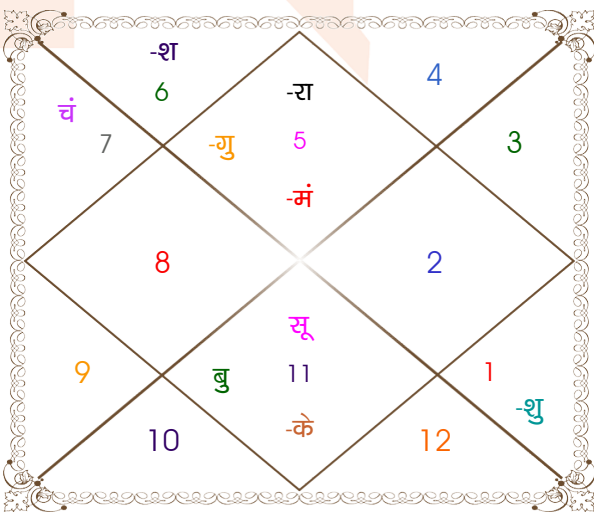

सुदर्शन चक्र

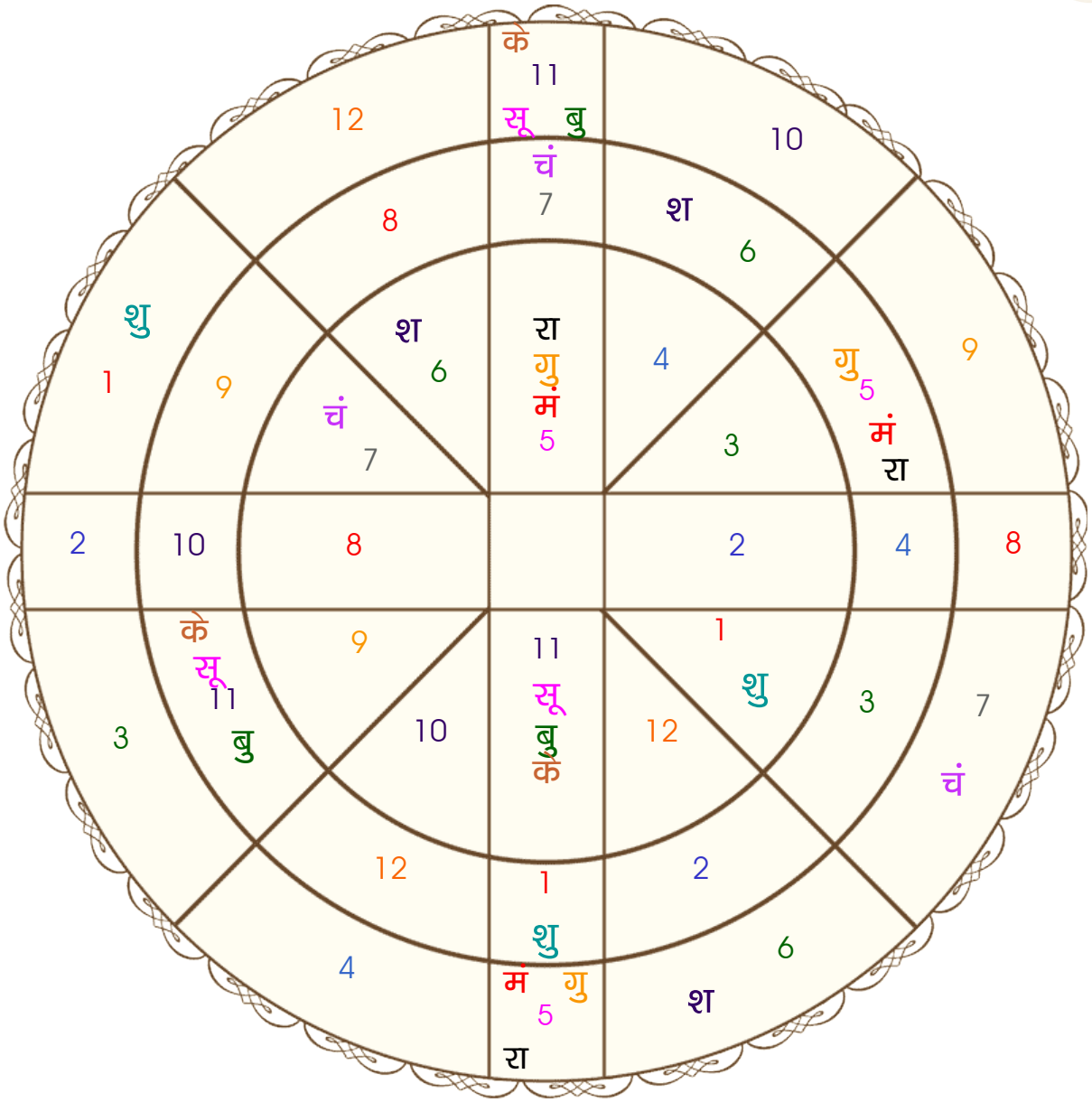

नोटः सुदर्शन चक्र कमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

भोग्य दशा काल : गुरु 9 वर्ष 2 मास 9 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		कुंभ	23:39:24	शनि	गुरु	शनि	गुरु
चंद्र		तुला	25:40:19	शुक्र	गुरु	बुध	शनि
मंगल	व	सिंह	07:58:01	सूर्य	केतु	गुरु	शनि
बुध	व	कुंभ	20:59:04	शनि	गुरु	गुरु	शुक्र
गुरु	व	सिंह	10:17:05	सूर्य	केतु	शनि	शुक्र
शुक्र		मेष	07:23:39	मंगल	केतु	राहु	चंद्र
शनि	व	कन्या	00:41:10	बुध	सूर्य	राहु	शुक्र
राहु	व	सिंह	05:39:31	सूर्य	केतु	राहु	राहु
केतु	व	कुंभ	05:39:31	शनि	मंगल	चंद्र	मंगल
हर्ष	व	वृश्चि	02:04:06	मंगल	गुरु	राहु	शनि
नेप		वृश्चि	29:06:57	मंगल	बुध	शनि	चंद्र
प्लूटो	व	कन्या	27:47:37	बुध	मंगल	गुरु	राहु

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	सिंह	27:16:57	सूर्य	सूर्य	सूर्य	शुक्र
2	कन्या	26:30:16	बुध	मंगल	गुरु	शनि
3	तुला	27:05:19	शुक्र	गुरु	शुक्र	चंद्र
4	वृश्चि	27:33:52	मंगल	बुध	गुरु	मंगल
5	धनु	27:41:19	गुरु	सूर्य	चंद्र	गुरु
6	मक	27:46:07	शनि	मंगल	गुरु	राहु
7	कुंभ	27:16:57	शनि	गुरु	शुक्र	मंगल
8	मीन	26:30:16	गुरु	बुध	गुरु	शनि
9	मेष	27:05:19	मंगल	सूर्य	सूर्य	शनि
10	वृष	27:33:52	शुक्र	मंगल	गुरु	मंगल
11	मिथु	27:41:19	बुध	गुरु	शुक्र	गुरु
12	कर्क	27:46:07	चंद्र	बुध	गुरु	राहु

के.पी. अयनांश : 23:28:39

फॉरच्युना : मेष 29:17:52

लग्न कुंडली

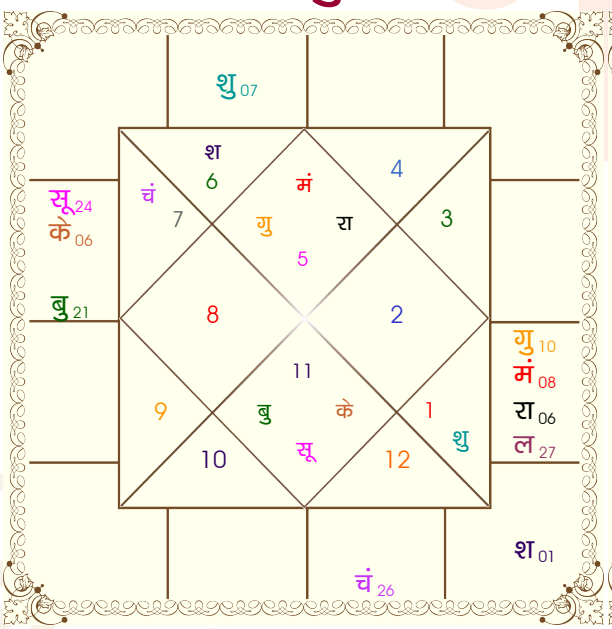

भाव कुंडली

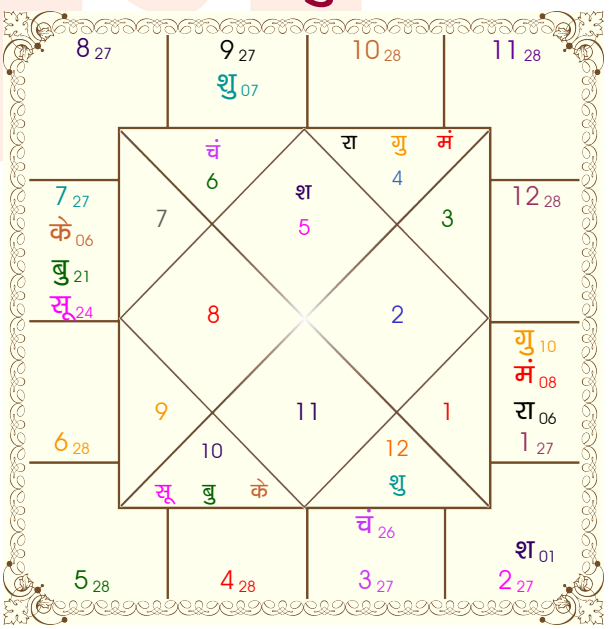

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	सूर्य- शनि+
2	चंद्र, बुध-
3	शुक्र-
4	मंगल- केतु-
5	सूर्य- चंद्र- बुध- गुरु-
6	सूर्य, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि+ राहु, केतु,
7	शनि-
8	सूर्य- चंद्र- बुध- गुरु- शुक्र,
9	मंगल- केतु-
10	शुक्र-
11	बुध-
12	सूर्य, चंद्र+ मंगल, बुध, गुरु, राहु, केतु,

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	1- 5- 6, 8- 12,
चंद्र	2, 5- 8- 12+
मंगल	4- 6, 9- 12,
बुध	2- 5- 6, 8- 11- 12,
गुरु	5- 6, 8- 12,
शुक्र	3- 6, 8, 10-
शनि	1+ 6+ 7-
राहु	6, 12,
केतु	4- 6, 9- 12,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	सूर्य
लग्न राशि स्वामी	सूर्य
राशि नक्षत्र स्वामी	गुरु
राशि स्वामी	शुक्र
वार स्वामी	शुक्र
लग्न अन्तर स्वामी	सूर्य
राशि अन्तर स्वामी	बुध

कारकत्व-सारिणी

भाव	स्थित ग्रह के नक्षत्र में	स्थित ग्रह	स्वामी के नक्षत्र में	स्वामी
1	--	श	श	सू
2	--	चं	--	बु
3	--	--	--	शु
4	--	--	के	मं
5	--	--	सू चं बु	गु
6	मं गु शु श रा	सू बु के	--	श
7	--	--	--	श
8	--	शु	सू चं बु	गु
9	--	--	के	मं
10	--	--	--	शु
11	--	--	--	बु
12	सू चं बु के	मं गु रा	--	चं

ग्रह कारक सारिणी-1

ग्रह	भावाधिपति	नक्षत्राधिपति	स्थित	भाव
सूर्य	1	1,5,9	कुम्भ	6
चंद्र	12	---	तुला	2
मंगल	4,9	2,6,10	सिंह	12
बुध	2,11	4,8,12	कुम्भ	6
गुरु	5,8	3,7,11	सिंह	12
शुक्र	3,10	---	मेष	8
शनि	6,7	---	कन्या	1
राहु	---	---	सिंह	12
केतु	---	---	कुम्भ	6

ग्रह कारक सारिणी-2

ग्रह	भावाधि भाव	नक्षत्राधि भाव	स्थित भाव	स्वामित्व	अन्तर स्वामी	स्थित भाव
सूर्य	5,8	3,7,11	12	6,7	---	1
चंद्र	5,8	3,7,11	12	2,11	4,8,12	6
मंगल	---	---	6	5,8	3,7,11	12
बुध	5,8	3,7,11	12	5,8	3,7,11	12
गुरु	---	---	6	6,7	---	1
शुक्र	---	---	6	---	---	12
शनि	1	1,5,9	6	---	---	12
राहु	---	---	6	---	---	12
केतु	4,9	2,6,10	12	12	---	2

ग्रह दृष्टि विचार

दृष्य ग्रह

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्ष	नेप	प्लूटो
	323.56	205.57	127.87	320.88	130.18	7.29	150.59	125.56	305.56	211.97	239.02	177.69
सूर्य	--	--	--	युति	सप्त	--	सप्त	--	--	--	--	--
323.56	0.00	0.00	0.00	9.61	1.70	0.00	7.41	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
चंद्र	पंच	--	--	पंच	--	--	--	--	--	युति	--	--
205.57	2.59	0.00	0.00	1.01	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.84	0.00	0.00
मंगल	8वां	4था	--	सप्त	युति	--	--	युति	सप्त	4था	--	--
127.87	0.72	2.79	0.00	2.06	9.71	0.00	0.00	9.71	9.71	8.15	0.00	0.00
बुध	युति	--	सप्त	--	सप्त	--	सप्त	--	--	--	--	--
320.88	9.61	0.00	2.06	0.00	4.35	0.00	5.27	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
गुरु	सप्त	--	युति	सप्त	--	9वां	--	युति	सप्त	--	5वां	--
130.18	1.70	0.00	9.71	4.35	0.00	9.55	0.00	8.85	8.85	0.00	3.91	0.00
शुक्र	--	--	पंच	--	पंच	--	--	पंच	--	--	--	सप्त
7.29	0.00	0.00	2.97	0.00	2.18	0.00	0.00	2.70	0.00	0.00	0.00	5.36
शनि	सप्त	3रा	--	सप्त	--	--	--	--	--	3रा	चतु	--
150.59	7.41	8.65	0.00	5.27	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.90	2.75	0.00
राहु	--	--	युति	--	युति	--	--	--	सप्त	चतु	--	--
125.56	0.00	0.00	9.71	0.00	8.85	0.00	0.00	0.00	10.00	1.77	0.00	0.00
केतु	--	--	सप्त	--	सप्त	तृती	--	सप्त	--	--	--	--
305.56	0.00	0.00	9.71	0.00	8.85	2.70	0.00	10.00	0.00	0.00	0.00	0.00
हर्ष	--	युति	--	--	--	--	--	--	चतु	--	--	--
211.97	0.00	7.84	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	1.77	0.00	0.00	0.00
नेप	चतु	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--
239.02	0.42	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	तृती	--
177.69	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.36	0.00	0.00	0.00	0.00	2.82	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव मध्य दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	147.18	177.28	207.37	237.46	267.37	297.28	327.18	357.28	27.37	57.46	87.37	117.28
सूर्य	--	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	--
323.56	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.29	0.00	1.62	1.56	1.62	0.00
चंद्र	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--
205.57	0.00	0.00	9.82	0.00	2.67	2.71	2.74	0.00	9.82	0.00	0.00	0.00
मंगल	--	--	--	--	--	सप्त	8वां	--	--	--	--	युति
127.87	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	4.46	4.37	0.00	0.00	0.00	0.00	4.46
बुध	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	--
320.88	7.90	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.90	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
गुरु	--	--	--	5वां	--	सप्त	--	9वां	--	--	--	युति
130.18	0.00	0.00	0.00	2.36	0.00	2.17	0.00	2.17	0.00	0.00	0.00	2.17
शुक्र	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	--
7.29	0.00	4.98	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	4.98	0.00	0.00	0.00	0.00
शनि	युति	--	3रा	चतु	पंच	--	--	--	--	10वा	--	--
150.59	9.37	0.00	9.44	2.05	2.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.47	0.00	0.00
राहु	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति
125.56	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.47	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.47
केतु	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त
305.56	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.47	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.47
हर्ष	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--
211.97	0.00	0.00	8.86	0.00	1.08	1.01	0.94	0.00	8.86	0.00	0.00	0.00
नेप	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	--	सप्त	--	--
239.02	0.00	0.00	0.00	9.87	0.00	2.69	2.66	2.69	0.00	9.87	0.00	0.00
प्लूटो	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	षष्ठ	सप्त	--	--	--	--
177.69	0.00	9.99	0.00	2.99	2.99	2.98	0.69	9.99	0.00	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	147.18	176.40	206.99	237.46	267.59	297.67	327.18	356.40	26.99	57.46	87.59	117.67
सूर्य	--	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	--
323.56	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.29	0.00	1.87	1.56	1.48	0.00
चंद्र	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	षष्ठ	सप्त	--	--	--
205.57	0.00	0.00	9.89	0.00	2.59	2.56	2.74	0.26	9.89	0.00	0.00	0.00
मंगल	--	--	--	--	--	सप्त	8वां	--	--	--	--	युति
127.87	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	4.82	4.37	0.00	0.00	0.00	0.00	4.82
बुध	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	--
320.88	7.90	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.90	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
गुरु	--	--	--	5वां	--	सप्त	--	9वां	--	--	--	युति
130.18	0.00	0.00	0.00	2.36	0.00	2.57	0.00	1.27	0.00	0.00	0.00	2.57
शुक्र	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	--
7.29	0.00	4.17	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	4.17	0.00	0.00	0.00	0.00
शनि	युति	--	3रा	चतु	पंच	--	--	--	--	10वा	--	--
150.59	9.37	0.00	9.30	2.05	2.12	0.00	0.00	0.00	0.00	9.47	0.00	0.00
राहु	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति
125.56	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.78	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.78
केतु	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त
305.56	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.78	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.78
हर्ष	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--
211.97	0.00	0.00	8.67	0.00	1.23	1.29	0.94	0.00	8.67	0.00	0.00	0.00
नेप	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	--	सप्त	--	--
239.02	0.00	0.00	0.00	9.87	0.00	2.82	2.66	2.33	0.00	9.87	0.00	0.00
प्लूटो	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	षष्ठ	सप्त	--	--	--	--
177.69	0.00	9.91	0.00	2.99	3.00	3.00	0.69	9.91	0.00	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

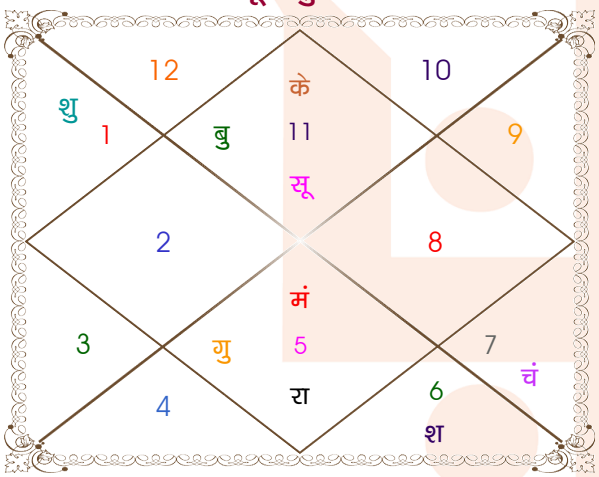

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

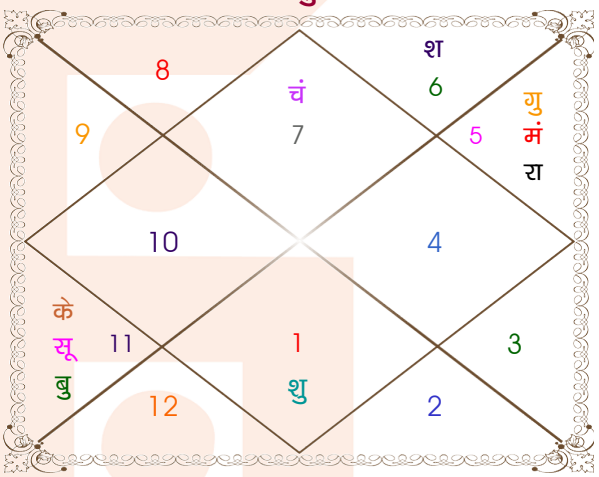

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

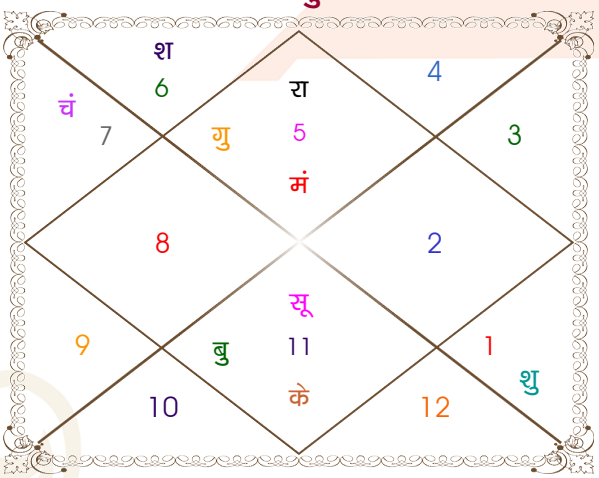

देह विचारः

होरा कुंडली

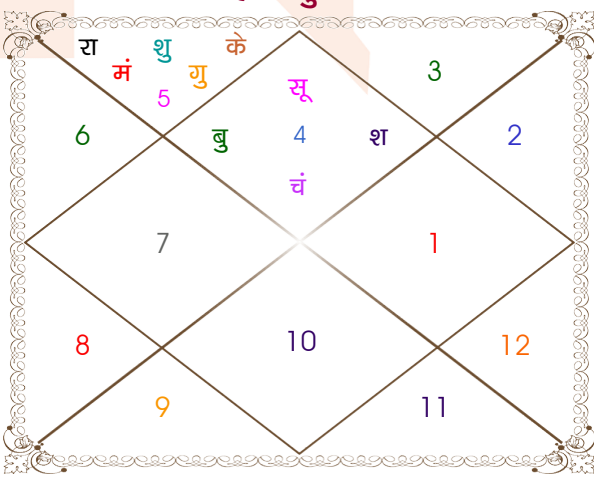

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

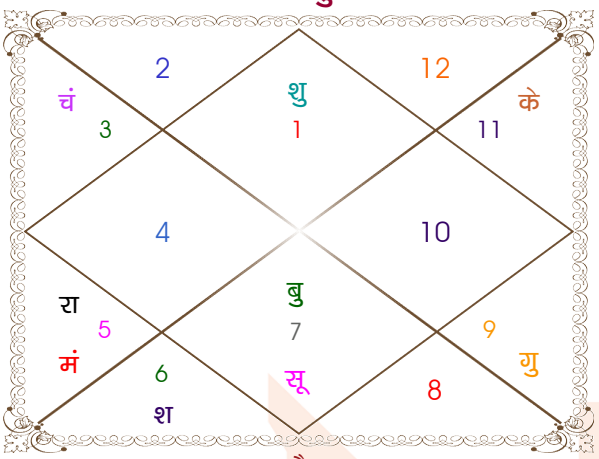

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

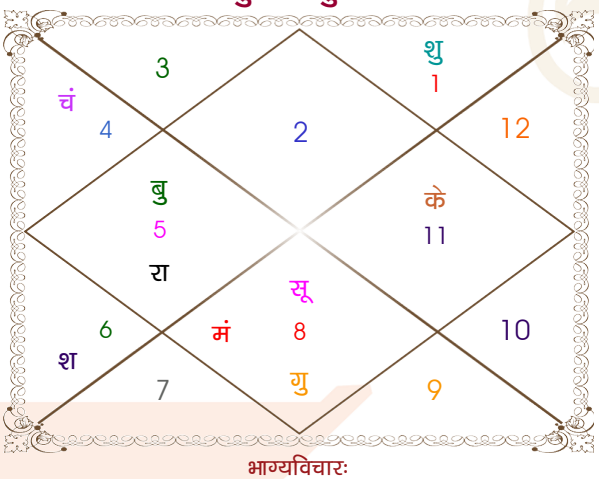

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

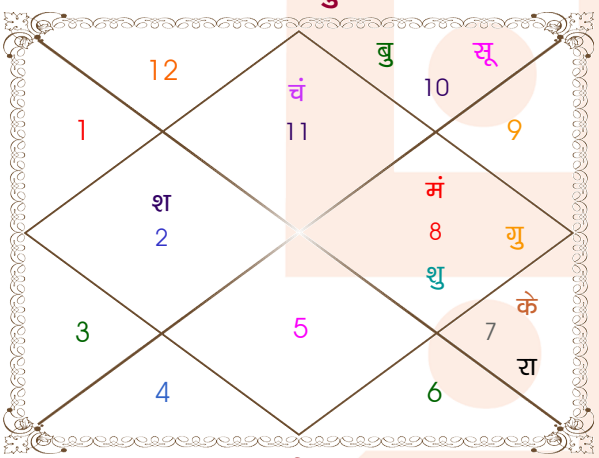

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

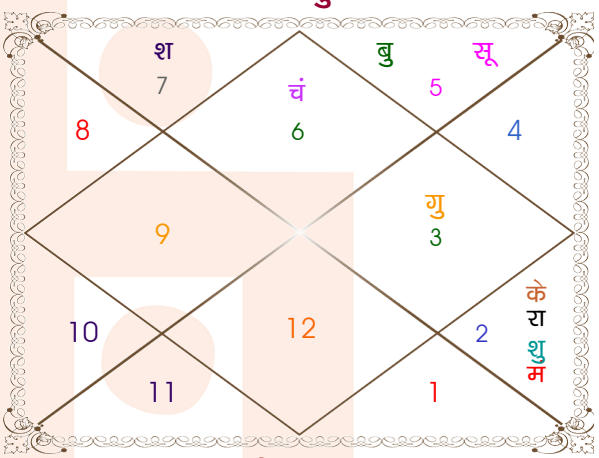

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

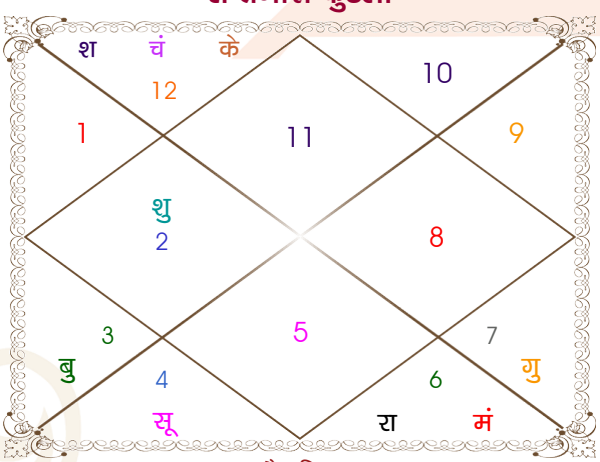

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

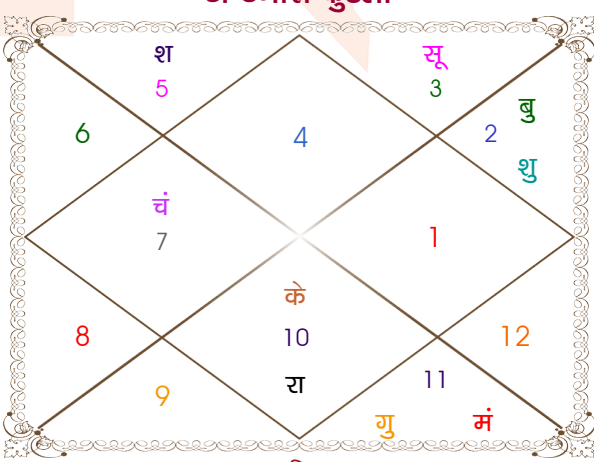

आयुविचारः

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

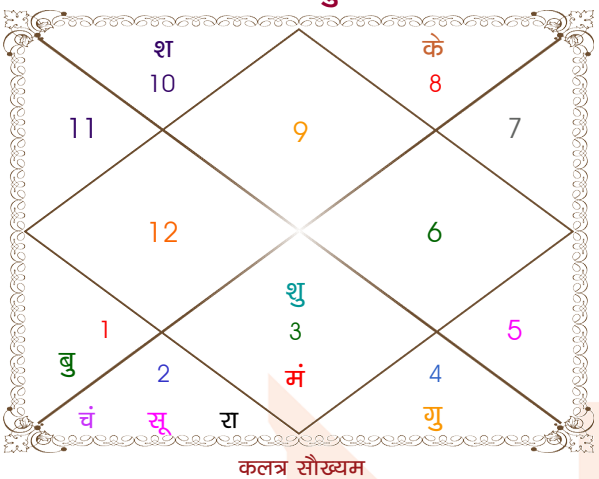

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

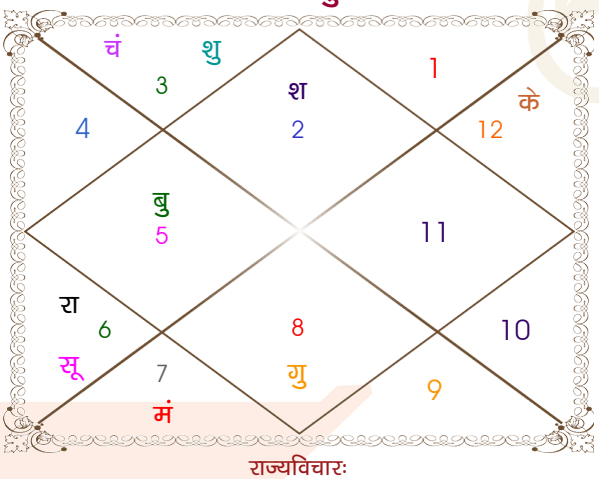

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

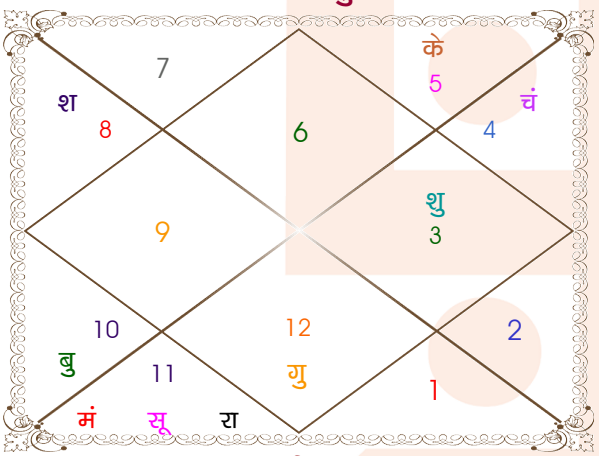

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

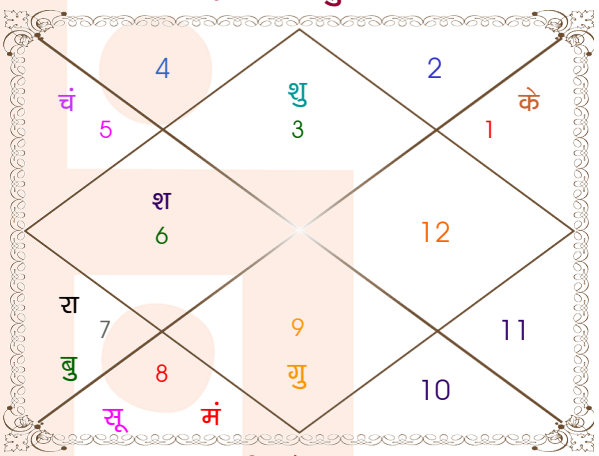

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

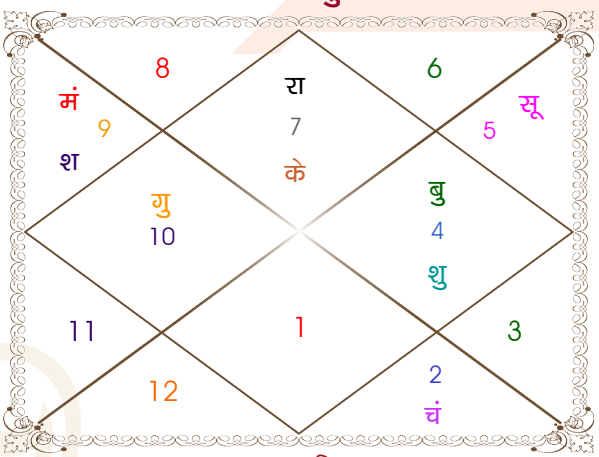

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

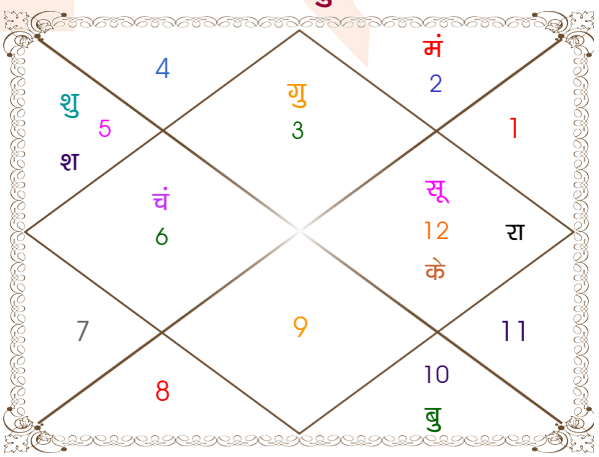

उपासनाज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

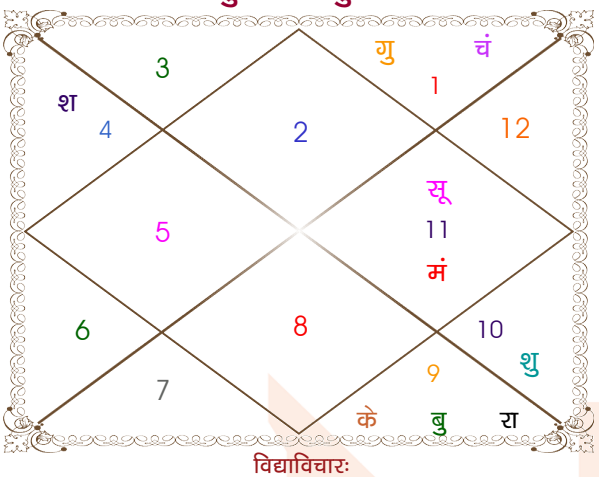

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

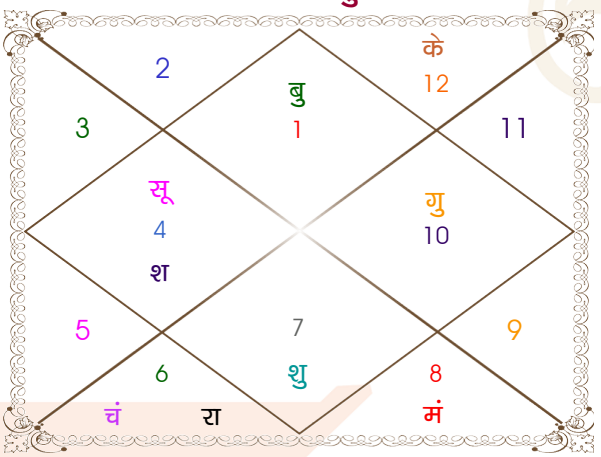

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

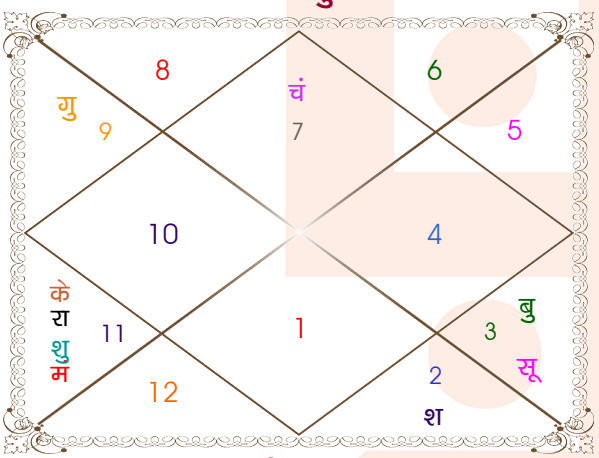

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

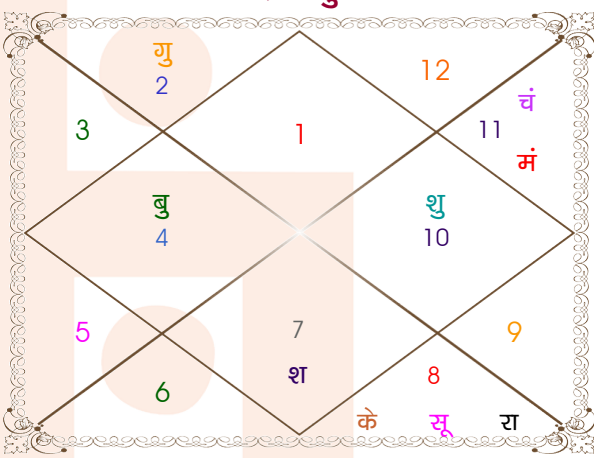

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

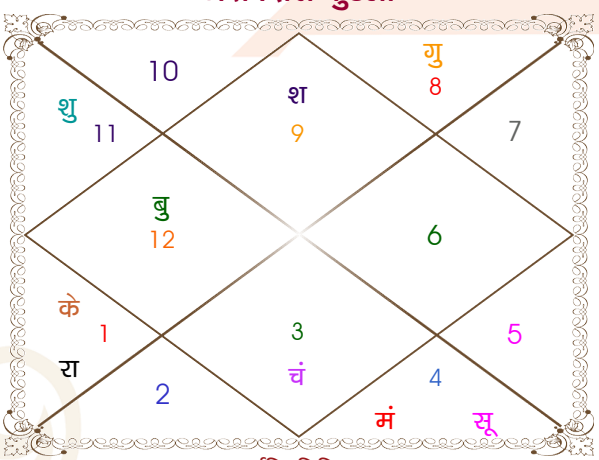

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

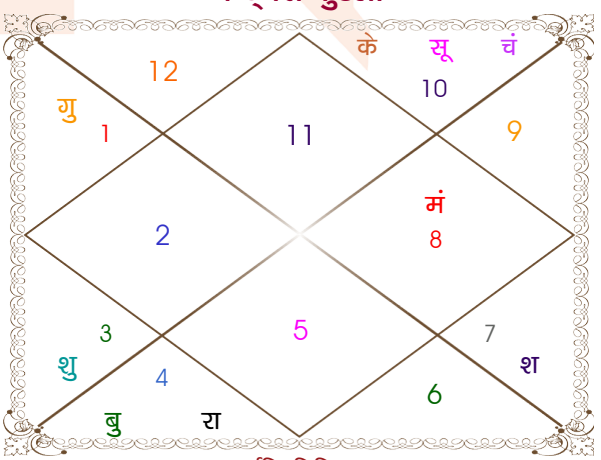

सर्वास्थितिविचारः

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	सिंह	कुंभ	तुला	सिंह	कुंभ	सिंह	मेष	कन्या	सिंह	कुंभ
होरा	कर्क	कर्क	कर्क	सिंह	कर्क	सिंह	सिंह	कर्क	सिंह	सिंह
द्रेष्काण	मेष	तुला	मिथु	सिंह	तुला	धनु	मेष	कन्या	सिंह	कुंभ
चतुर्थांश	वृष	वृश्चि	कर्क	वृश्चि	सिंह	वृश्चि	मेष	कन्या	सिंह	कुंभ
सप्तमांश	कुंभ	कर्क	मीन	कन्या	मिथु	तुला	वृष	मीन	कन्या	मीन
नवमांश	धनु	वृष	वृष	मिथु	मेष	कर्क	मिथु	मक	वृष	वृश्चि
दशमांश	वृष	कन्या	मिथु	तुला	सिंह	वृश्चि	मिथु	वृष	कन्या	मीन
द्वादशांश	मिथु	वृश्चि	सिंह	वृश्चि	तुला	धनु	मिथु	कन्या	तुला	मेष
षोडशांश	तुला	सिंह	वृष	धनु	कर्क	मक	कर्क	धनु	तुला	तुला
विंशांश	मिथु	मीन	कन्या	वृष	मक	मिथु	सिंह	सिंह	मीन	मीन
चतुर्विंशांश	वृष	कुंभ	मेष	कुंभ	धनु	मेष	मक	कर्क	धनु	धनु
सप्तविंशांश	मेष	कर्क	कन्या	वृश्चि	मेष	मक	तुला	कर्क	कन्या	मीन
त्रिंशांश	तुला	मिथु	तुला	कुंभ	मिथु	धनु	कुंभ	वृष	कुंभ	कुंभ
खवेदांश	मेष	वृश्चि	कुंभ	कुंभ	कर्क	वृष	मक	तुला	वृश्चि	वृश्चि
अक्षवेदांश	धनु	कर्क	मिथु	कर्क	मीन	वृश्चि	कुंभ	धनु	मेष	मेष
षष्ट्यंश	कुंभ	मक	मक	वृश्चि	कर्क	मेष	मिथु	तुला	कर्क	मक

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	0 ---	0 ---	1 ---	1 ---
चन्द्र	2 किंसुक	2 किंसुक	3 उत्तम	4 नागपुष्प
मंगल	1 ---	1 ---	2 पारिजात	4 नागपुष्प
बुध	1 ---	2 किंसुक	2 पारिजात	2 भेदक
गुरु	4 चामर	4 चामर	4 गोपुर	4 नागपुष्प
शुक्र	0 ---	1 ---	1 ---	2 भेदक
शनि	1 ---	1 ---	2 पारिजात	3 कुसुम
राहु	0 ---	1 ---	2 पारिजात	3 कुसुम
केतु	0 ---	1 ---	2 पारिजात	5 कन्दुक

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	8.35	9.20	10.00	10.75	15.50	11.30	12.50	7.40	6.75
सप्तवर्ग	8.60	10.05	9.50	11.83	14.18	12.65	12.88	7.53	6.88
दशवर्ग	8.30	11.25	12.65	10.03	12.85	13.50	11.50	8.65	7.03
षोडशवर्ग	8.78	10.70	12.43	8.20	12.70	12.45	12.13	8.28	7.68

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	शत्रु	---	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु
मंगल	शत्रु	मित्र	---	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु
बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	---	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु
गुरु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	---	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु
शुक्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	शत्रु	मित्र
शनि	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	सम	सम	शत्रु	सम	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु
चंद्र	सम	---	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	सम	अधिशत्रु
मंगल	सम	अतिमित्र	---	अधिशत्रु	सम	शत्रु	मित्र	अधिशत्रु	सम
बुध	सम	अधिशत्रु	शत्रु	---	शत्रु	अतिमित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु
गुरु	सम	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	---	अधिशत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु
शुक्र	सम	अधिशत्रु	शत्रु	अतिमित्र	शत्रु	---	सम	सम	अतिमित्र
शनि	अधिशत्रु	सम	सम	सम	मित्र	सम	---	अतिमित्र	अधिशत्रु
राहु	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	अतिमित्र	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	अतिमित्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु	---

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	45	2	3	8	48	57	44
सप्तवर्गज बल	43	71	71	114	129	98	83
ओजयुग्मक बल	15	15	30	30	15	0	0
केन्द्र बल	60	15	60	60	60	15	30
द्रेष्काण बल	0	15	15	0	0	0	0
कुल स्थान बल	163	119	180	212	253	169	156
कुल दिग्बल	29	49	37	2	54	17	1
नतोन्नत बल	29	31	31	60	29	29	31
पक्ष बल	21	79	21	21	39	39	21
त्रिभाग बल	0	60	0	0	60	0	0
अब्द बल	0	0	0	0	0	0	15
मास बल	0	0	0	0	0	0	30
वार बल	0	0	0	0	0	45	0
होरा बल	0	0	60	0	0	0	0
अयन बल	47	53	44	38	43	45	27
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	97	222	156	119	172	159	123
कुल चेष्टाबल	0	0	57	59	56	27	59
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	-3	-5	-6	-2	-9	-12	-26
कुल षट्बल	345	436	440	416	560	403	322
रूप षट्बल	5.7	7.3	7.3	6.9	9.3	6.7	5.4
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.1	1.2	1.5	1.0	1.4	1.2	1.1
संबंधित पद	5	4	1	7	2	3	6

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	33.83	9.87	13.65	21.78	52.02	39.27	50.55
कष्ट फल	23.04	34.48	13.72	7.13	6.80	10.60	4.61

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	345	416	403	440	560	322	322	560	440	403	416	436
भावदिग्बल	30	50	40	30	10	40	0	20	50	60	40	20
भावदृष्टि बल	45	47	52	20	41	36	33	16	70	45	21	23
कुल भाव बल	419	513	496	489	611	397	354	596	560	509	478	480
रूप भाव बल	7.0	8.6	8.3	8.2	10.2	6.6	5.9	9.9	9.3	8.5	8.0	8.0
संबंधित पद	10	4	6	7	1	11	12	2	3	5	9	8

षट्बल ग्राफ

स्थान बल

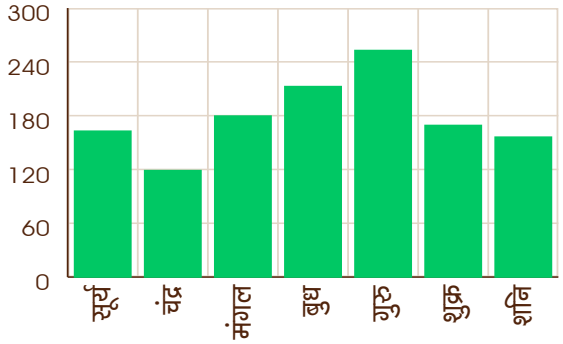

दिग्बल

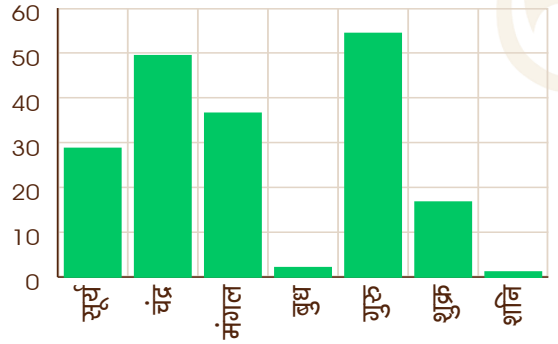

कालबल

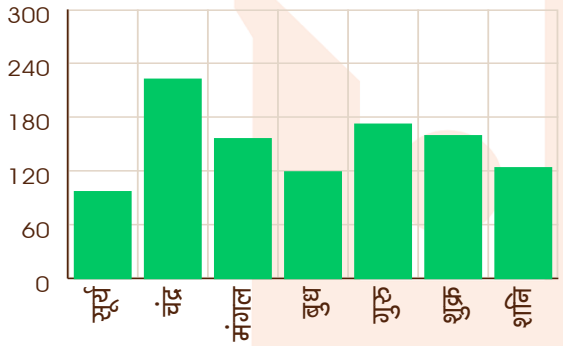

चेष्टाबल

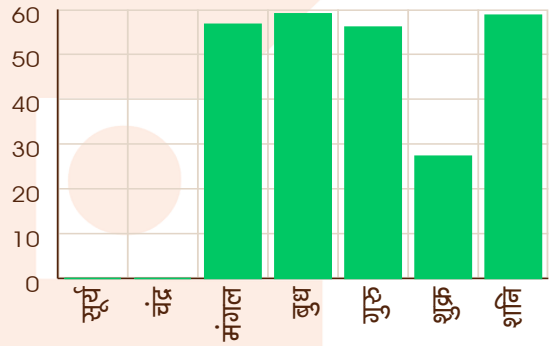

नैसर्गिक बल

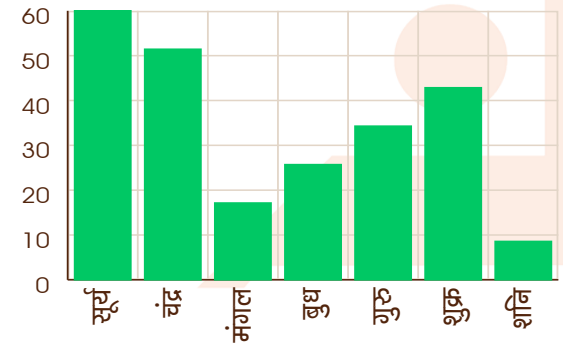

दृग्बल

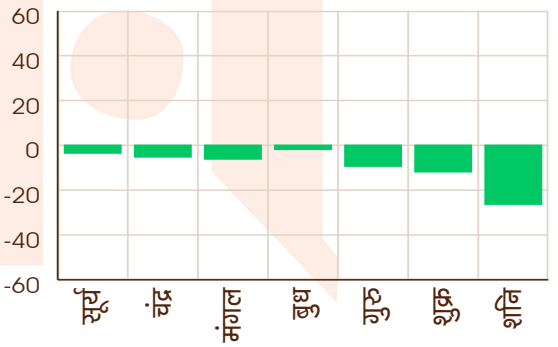

रूप षट्बल

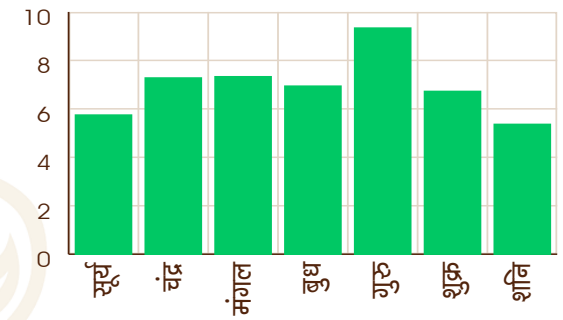

न्यूनतम षट्बल

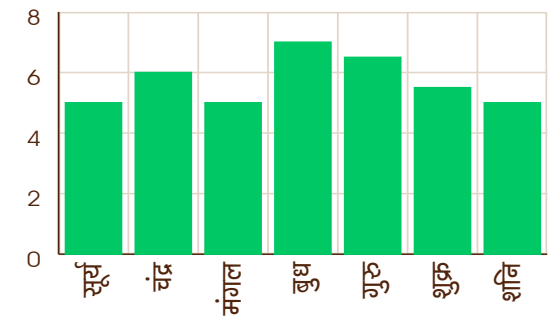

भाव बल ग्राफ

भावाधिपति बल

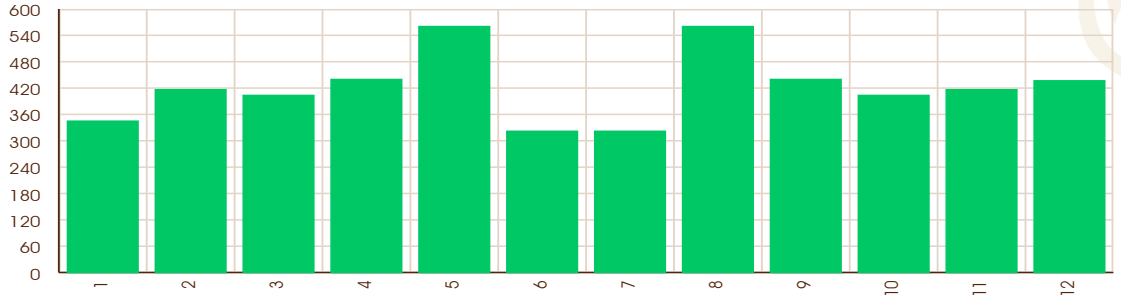

भावदिग्बल

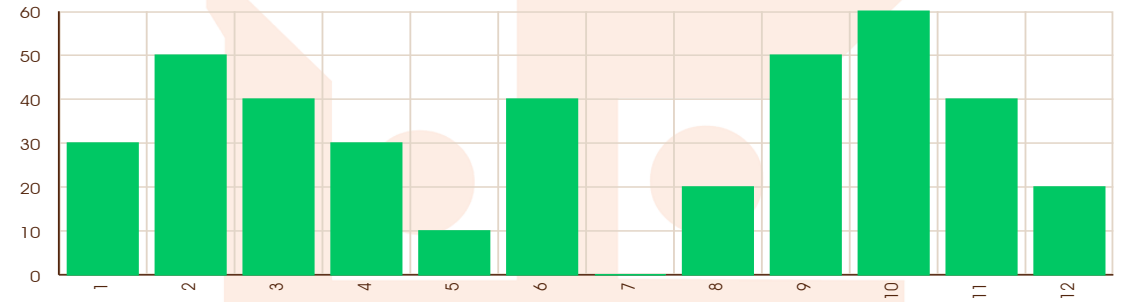

भावदृष्टि बल

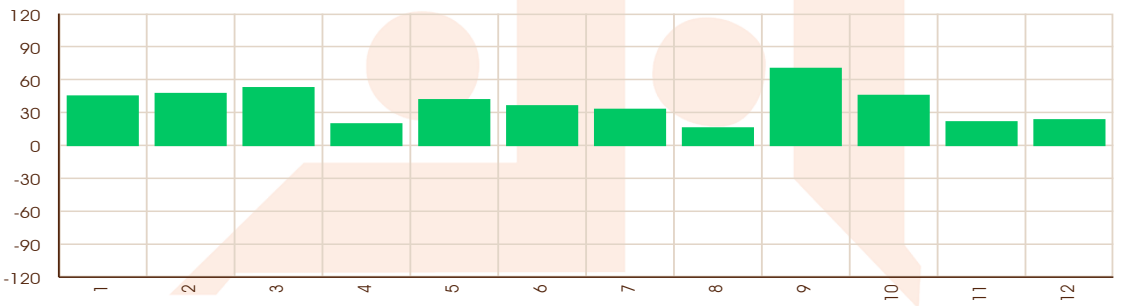

भाव बल

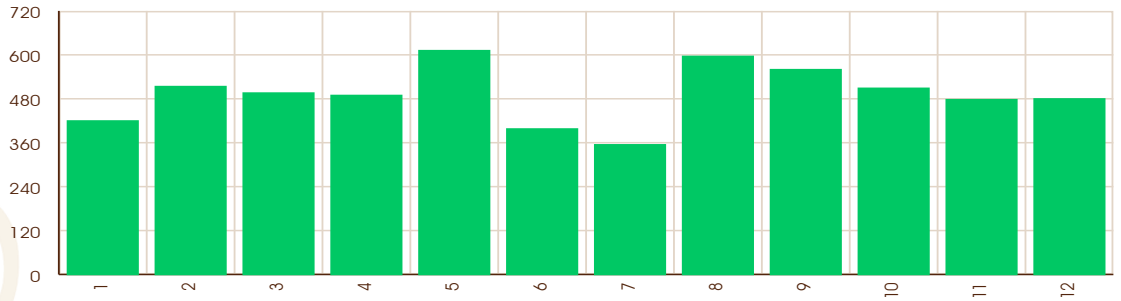

षट्बल तथा भावबल ग्राफ

रूप षट्बल

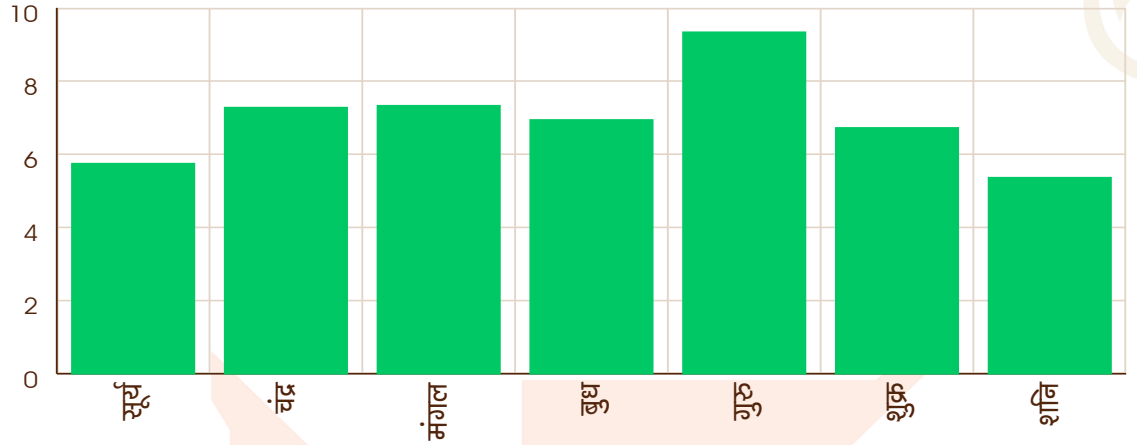

इष्ट - कष्ट फल

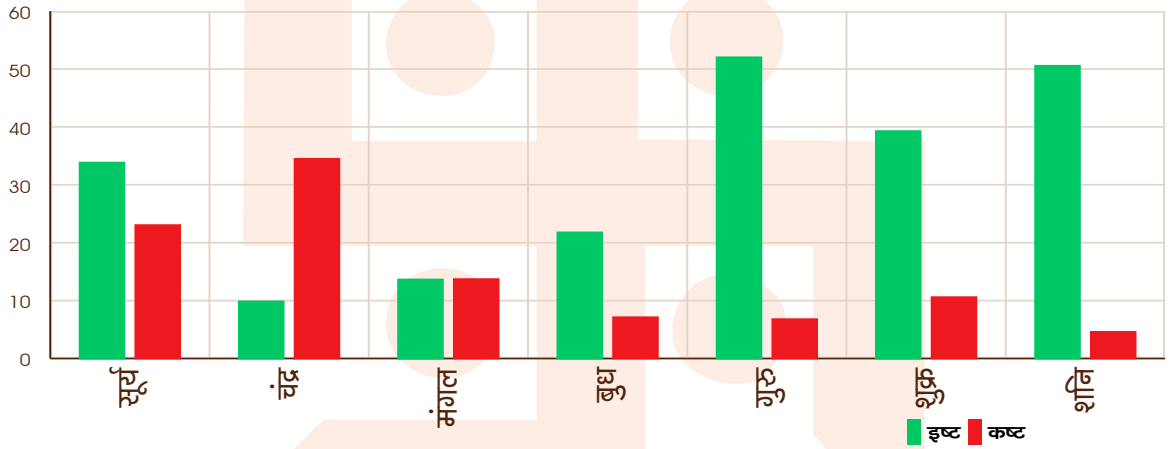

रूप भाव बल

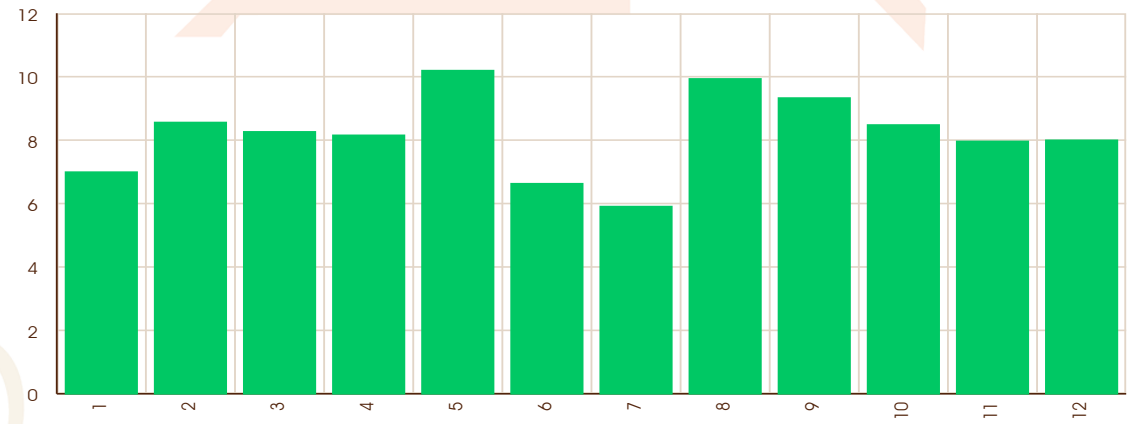

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	सिंह	27:10:57	--	--	उ०फाल्गुनी	1	12
गुलिक	गु	मेष	17:47:32	--	--	भरणी	2	2
काल	का	वृष	11:53:22	--	--	रोहिणी	1	4
मृत्यु	मृ	मिथु	23:37:05	--	--	पुनर्वसु	2	7
यमघंटक	यम	सिंह	03:43:10	--	--	मघा	2	10
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	कर्क	13:28:23	--	--	पुष्य	4	8
धूम	धू	कर्क	06:53:23	--	--	पुष्य	2	8
व्यतिपात	व्य	धनु	23:06:37	--	--	पूर्वाषाढ़ा	3	20
परिवेश	परि	मिथु	23:06:37	उच्च	--	पुनर्वसु	1	7
इन्द्रचाप	इ	मक	06:53:23	--	--	उत्तराषाढ़ा	4	21
उपकेतु	उप	मक	23:33:23	--	--	धनिष्ठा	1	23

प्राणपद	:	वृश्चि	15:06:09	कारकाँश लग्न	:	वृष	20:08:41
भाव लग्न	:	सिंह	24:38:02	होरा लग्न	:	कुंभ	25:42:40
घटी लग्न	:	सिंह	28:56:35	वर्णद लग्न	:	धनु	07:06:23

उपग्रह कुंडली

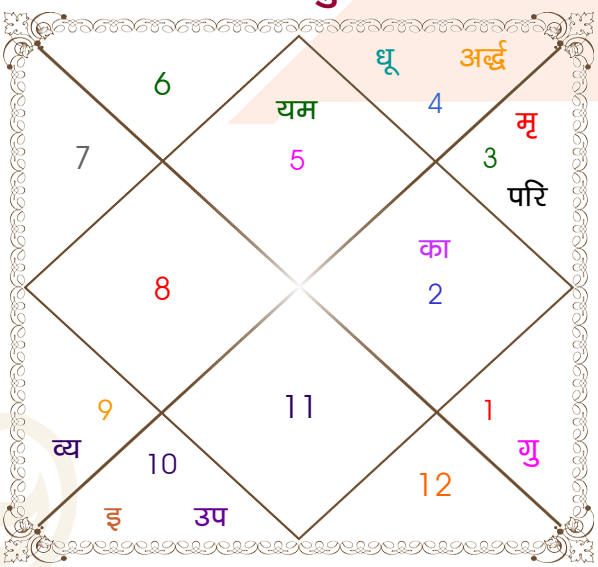

आरूढ़ कुंडली

षन्नाडी चक्र

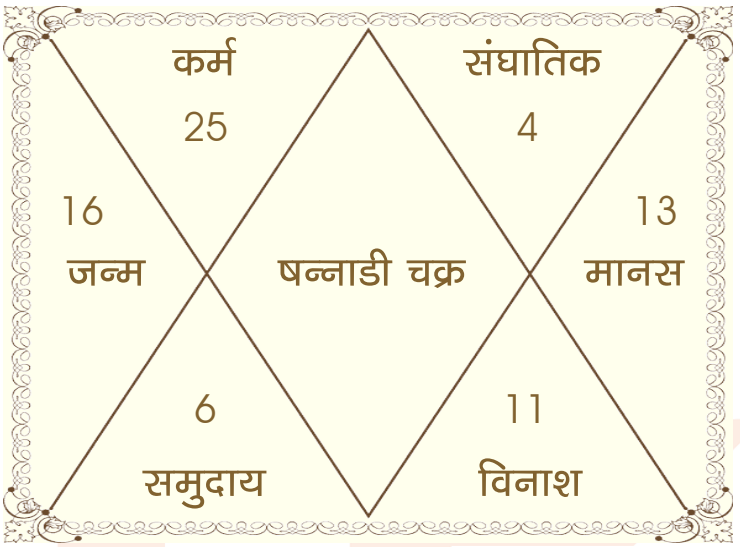

त्रिपाप चक्र

प्रथम चक्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितीय चक्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
तृतीय चक्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
केतु पताकी	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु
केतु कुंडली	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र
गुरु कुंडली	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल

प्रथम चक्र	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
द्वितीय चक्र	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
तृतीय चक्र	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
केतु पताकी	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य
केतु कुंडली	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र
गुरु कुंडली	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध

प्रथम चक्र	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
द्वितीय चक्र	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
तृतीय चक्र	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
केतु पताकी	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध
केतु कुंडली	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र
गुरु कुंडली	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुल
शनि	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	8
गुरु	0	0	1	0	1	0	0	0	0	0	1	1	4
मंगल	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	3
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	7
चंद्र	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	4
लग्न	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	6
कुल	2	5	4	4	5	4	3	4	5	4	5	3	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	कुल
शनि	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	4
गुरु	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	7
मंगल	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	1	6
सूर्य	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	1	1	6
शुक्र	1	0	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0	7
बुध	0	1	1	0	1	0	1	1	1	0	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	4
कुल	4	4	5	4	4	2	3	4	6	4	5	4	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	कुल
शनि	0	1	0	0	1	0	0	1	1	1	1	1	7
गुरु	0	0	0	0	0	1	0	0	0	1	1	1	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	1	1	5
शुक्र	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	0	4
बुध	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	4
चंद्र	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	3
लग्न	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	5
कुल	3	3	1	3	4	2	2	4	3	4	6	4	39

बुध का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुल
शनि	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	8
गुरु	0	1	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	4
मंगल	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	8
सूर्य	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	5
शुक्र	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	0	1	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	6
लग्न	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	7
कुल	3	5	4	5	7	6	4	3	3	5	4	5	54

गुरु का अष्टकवर्ग

	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	कुल
शनि	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	0	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	1	1	1	1	1	0	1	1	1	1	0	0	9
शुक्र	1	1	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	6
बुध	0	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	8
चंद्र	1	0	0	1	0	0	1	0	1	0	1	0	5
लग्न	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	9
कुल	7	5	3	7	4	3	8	4	3	6	5	1	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	1	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0	0	7
गुरु	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	5
मंगल	1	0	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	6
सूर्य	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	0	0	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	0	5
चंद्र	0	1	1	0	1	1	1	1	1	1	1	0	9
लग्न	1	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	8
कुल	6	4	7	4	3	3	4	5	7	5	2	2	52

शनि का अष्टकवर्ग

	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	4
मंगल	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	1	0	6
सूर्य	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	7
शुक्र	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	0	3
बुध	1	1	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	6
चंद्र	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	3
लग्न	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	1	6
कुल	3	3	4	5	5	3	3	0	3	3	4	3	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	कुल
शनि	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	6
गुरु	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	9
मंगल	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	5
सूर्य	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	6
शुक्र	1	0	0	1	1	0	0	0	1	1	1	1	7
बुध	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	7
चंद्र	1	1	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	4	4	2	5	6	4	3	2	3	6	5	5	49

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	3	3	4	3	3	3	4	5	5	3	3	39
गुरु	3	6	5	1	7	5	3	7	4	3	8	4	56
मंगल	3	4	6	4	3	3	1	3	4	2	2	4	39
सूर्य	4	4	5	4	3	4	5	4	5	3	2	5	48
शुक्र	6	4	7	4	3	3	4	5	7	5	2	2	52
बुध	4	5	7	6	4	3	3	5	4	5	3	5	54
चंद्र	3	4	6	4	5	4	4	4	5	4	4	2	49
बिन्दु	23	30	39	27	28	25	23	32	34	27	24	25	337
रेखा	33	26	17	29	28	31	33	24	22	29	32	31	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	0	1	3	0	0	1	5	2	0	0	12
गुरु	0	3	2	0	4	2	0	6	1	0	5	3	26
मंगल	0	2	5	1	0	1	0	0	1	0	1	1	12
सूर्य	1	1	3	0	0	1	3	0	2	0	0	1	12
शुक्र	3	1	5	2	0	0	2	3	4	2	0	0	22
बुध	0	2	4	1	0	0	0	0	0	2	0	0	9
चंद्र	0	0	2	2	2	0	0	2	2	0	0	0	10
रेखा	4	9	21	7	9	4	5	12	15	6	6	5	103

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	0	1	3	0	0	1	5	2	0	0	12
गुरु	0	3	0	0	4	2	0	6	1	0	5	2	23
मंगल	0	2	4	1	0	1	0	0	0	0	1	0	9
सूर्य	1	0	2	0	0	1	3	0	1	0	0	1	9
शुक्र	3	0	5	2	0	0	2	0	4	2	0	0	18
बुध	0	2	4	1	0	0	0	0	0	2	0	0	9
चंद्र	0	0	2	2	2	0	0	2	2	0	0	0	10
रेखा	4	7	17	7	9	4	5	9	13	6	6	3	90

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	70	78	72	66	216	129	97
ग्रह पिंड	27	36	15	0	132	31	54
शोध्य पिंड	97	114	87	66	348	160	151

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

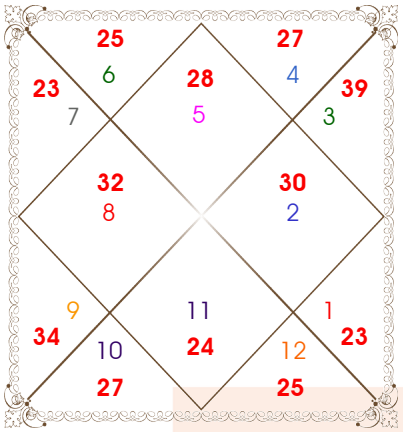

सूर्य का अष्टकवर्ग

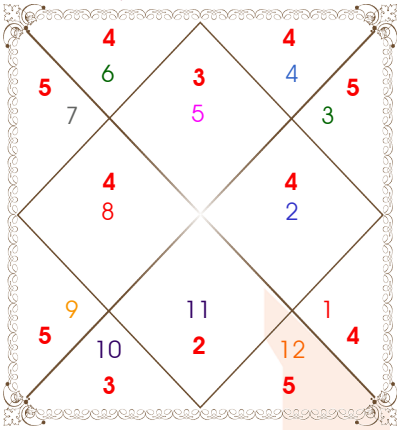

चंद्र का अष्टकवर्ग

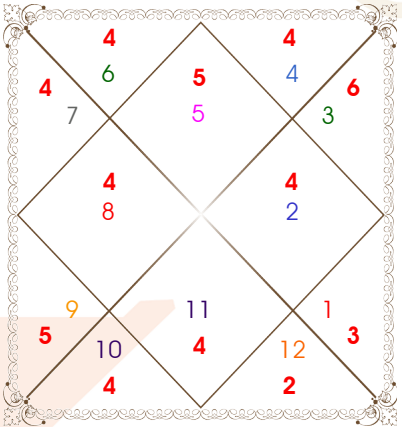

मंगल का अष्टकवर्ग

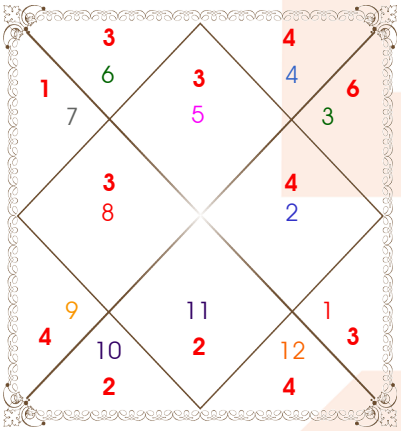

बुध का अष्टकवर्ग

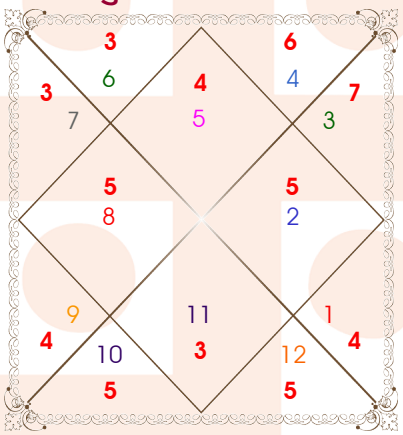

गुरू का अष्टकवर्ग

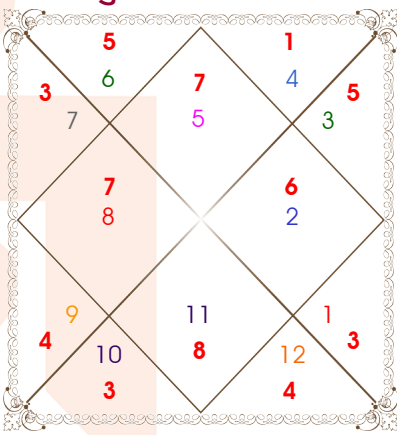

शुक्र का अष्टकवर्ग

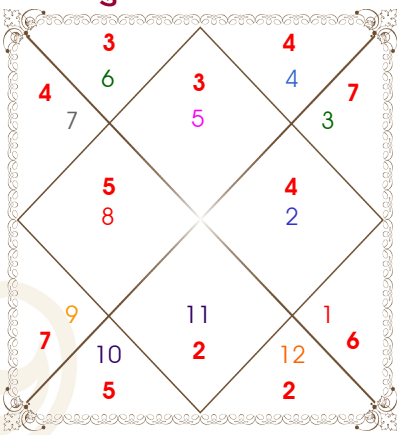

शनि का अष्टकवर्ग

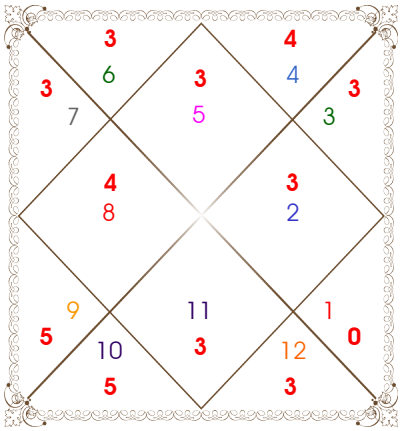

लग्न का अष्टकवर्ग

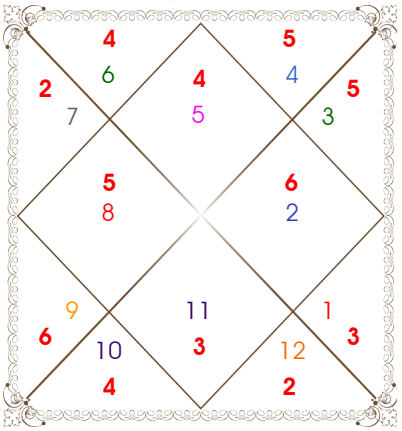

भिन्नाष्टक ग्राफ

सूर्य

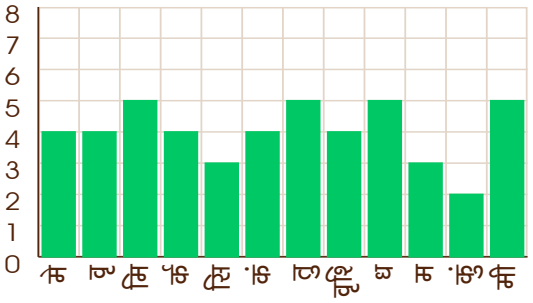

चन्द्र

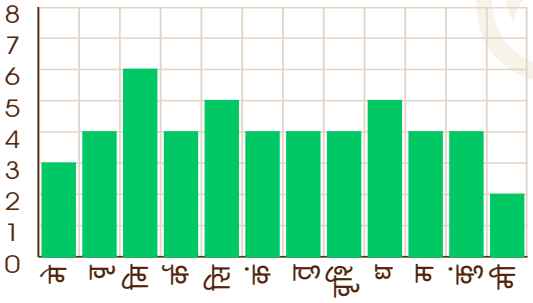

मंगल

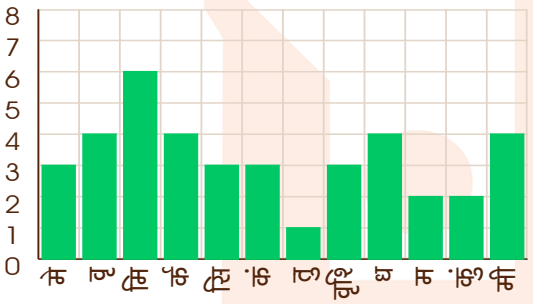

बुध

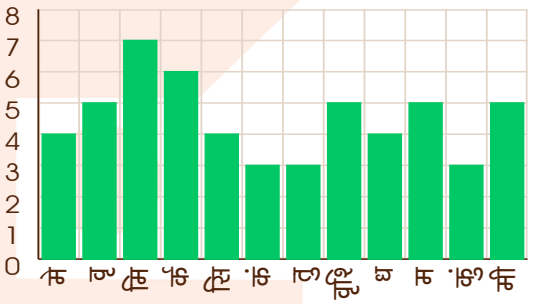

गुरु

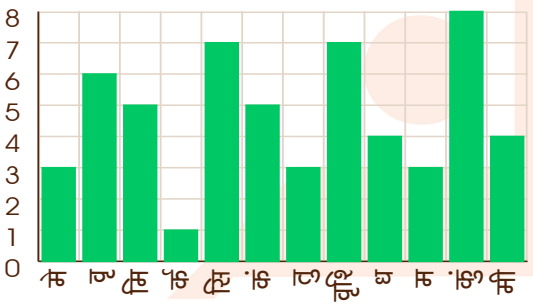

शुक्र

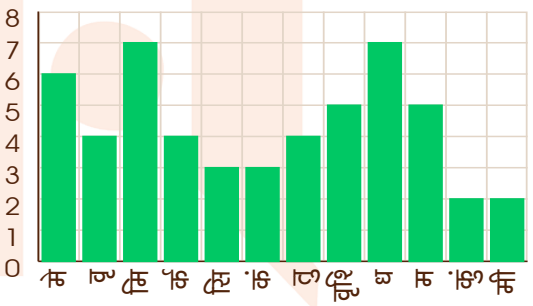

शनि

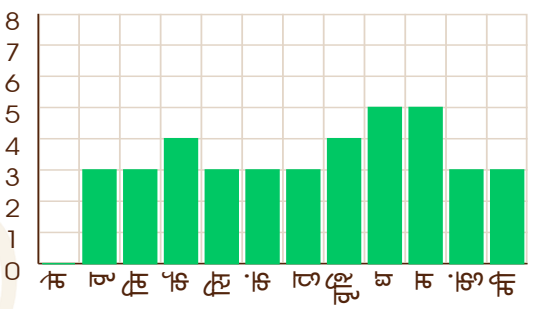

लग्न

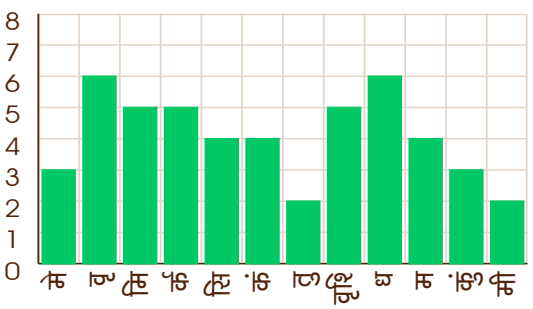

अष्टकवर्ग ग्राफ

सर्वाष्टकवर्ग

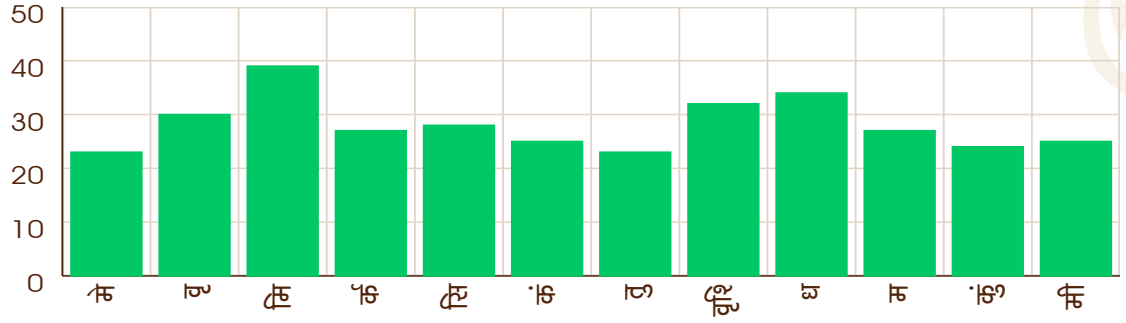

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

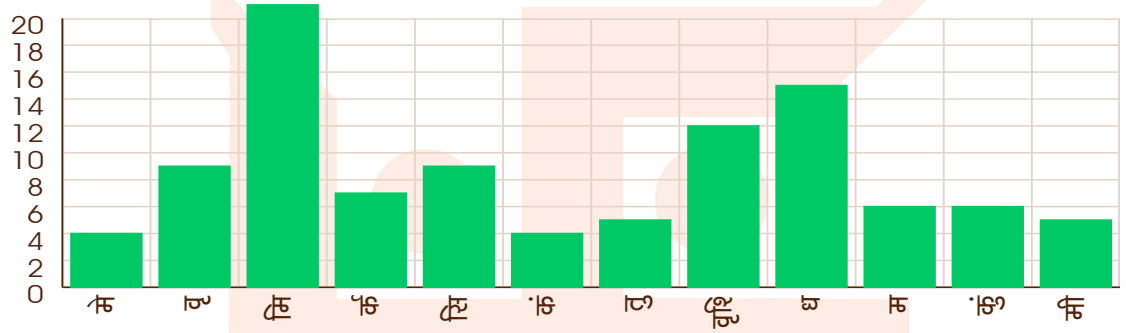

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

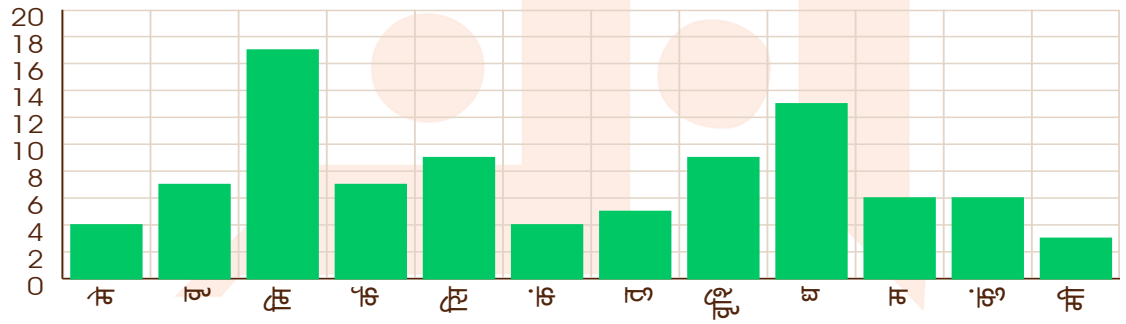

शोध्य पिंड

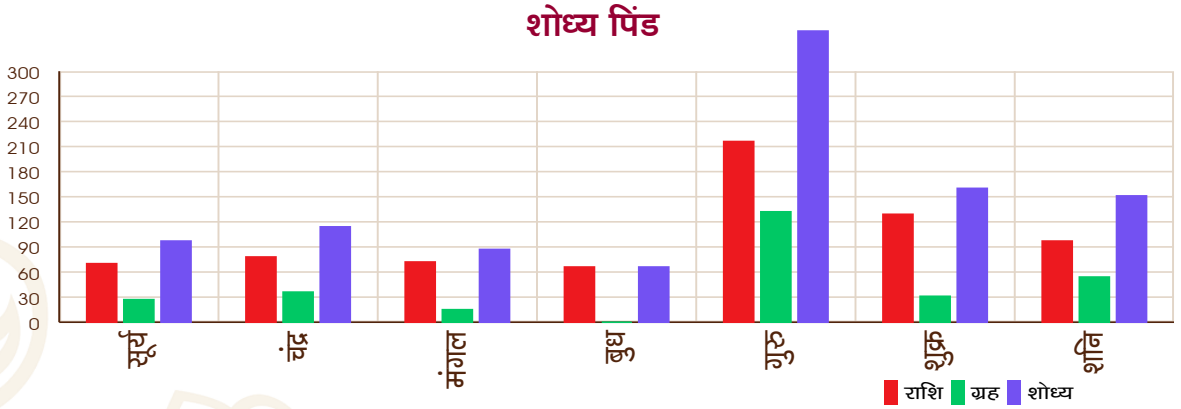

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : गुरु 9 वर्ष 3 मास 23 दिन

गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष	
07/03/1980		30/06/1989		30/06/2008		30/06/2025		30/06/2032	
30/06/1989		30/06/2008		30/06/2025		30/06/2032		30/06/2052	
	00/00/0000	शनि	03/07/1992	बुध	27/11/2010	केतु	26/11/2025	शुक्र	30/10/2035
	07/03/1980	बुध	13/03/1995	केतु	24/11/2011	शुक्र	27/01/2027	सूर्य	30/10/2036
बुध	06/06/1980	केतु	21/04/1996	शुक्र	24/09/2014	सूर्य	03/06/2027	चंद्र	30/06/2038
केतु	13/05/1981	शुक्र	22/06/1999	सूर्य	31/07/2015	चंद्र	02/01/2028	मंगल	31/08/2039
शुक्र	12/01/1984	सूर्य	03/06/2000	चंद्र	30/12/2016	मंगल	31/05/2028	राहु	30/08/2042
सूर्य	30/10/1984	चंद्र	02/01/2002	मंगल	27/12/2017	राहु	18/06/2029	गुरु	30/04/2045
चंद्र	01/03/1986	मंगल	11/02/2003	राहु	15/07/2020	गुरु	25/05/2030	शनि	30/06/2048
मंगल	05/02/1987	राहु	18/12/2005	गुरु	21/10/2022	शनि	04/07/2031	बुध	01/05/2051
राहु	30/06/1989	गुरु	30/06/2008	शनि	30/06/2025	बुध	30/06/2032	केतु	30/06/2052

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष	
30/06/2052		30/06/2058		30/06/2068		01/07/2075		30/06/2093	
30/06/2058		30/06/2068		01/07/2075		30/06/2093		00/00/0000	
सूर्य	18/10/2052	चंद्र	01/05/2059	मंगल	26/11/2068	राहु	13/03/2078	गुरु	18/08/2095
चंद्र	18/04/2053	मंगल	30/11/2059	राहु	15/12/2069	गुरु	06/08/2080	शनि	01/03/2098
मंगल	24/08/2053	राहु	31/05/2061	गुरु	21/11/2070	शनि	12/06/2083	बुध	08/03/2100
राहु	19/07/2054	गुरु	30/09/2062	शनि	30/12/2071	बुध	30/12/2085		00/00/0000
गुरु	07/05/2055	शनि	30/04/2064	बुध	27/12/2072	केतु	17/01/2087		00/00/0000
शनि	18/04/2056	बुध	30/09/2065	केतु	25/05/2073	शुक्र	17/01/2090		00/00/0000
बुध	22/02/2057	केतु	01/05/2066	शुक्र	25/07/2074	सूर्य	12/12/2090		00/00/0000
केतु	30/06/2057	शुक्र	30/12/2067	सूर्य	30/11/2074	चंद्र	12/06/2092		00/00/0000
शुक्र	30/06/2058	सूर्य	30/06/2068	चंद्र	01/07/2075	मंगल	30/06/2093		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल गुरु 9 वर्ष 3 मा 10 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र	
07/03/1980		06/06/1980		13/05/1981		12/01/1984		30/10/1984	
06/06/1980		13/05/1981		12/01/1984		30/10/1984		01/03/1986	
	00/00/0000	केतु	26/06/1980	शुक्र	22/10/1981	सूर्य	26/01/1984	चंद्र	09/12/1984
	00/00/0000	शुक्र	21/08/1980	सूर्य	10/12/1981	चंद्र	20/02/1984	मंगल	07/01/1985
	00/00/0000	सूर्य	07/09/1980	चंद्र	01/03/1982	मंगल	08/03/1984	राहु	21/03/1985
	00/00/0000	चंद्र	06/10/1980	मंगल	27/04/1982	राहु	20/04/1984	गुरु	25/05/1985
	00/00/0000	मंगल	26/10/1980	राहु	20/09/1982	गुरु	29/05/1984	शनि	10/08/1985
	00/00/0000	राहु	16/12/1980	गुरु	28/01/1983	शनि	15/07/1984	बुध	18/10/1985
	00/00/0000	गुरु	30/01/1981	शनि	01/07/1983	बुध	25/08/1984	केतु	15/11/1985
	07/03/1980	शनि	25/03/1981	बुध	16/11/1983	केतु	11/09/1984	शुक्र	04/02/1986
शनि	06/06/1980	बुध	13/05/1981	केतु	12/01/1984	शुक्र	30/10/1984	सूर्य	01/03/1986

गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु	
01/03/1986		05/02/1987		30/06/1989		03/07/1992		13/03/1995	
05/02/1987		30/06/1989		03/07/1992		13/03/1995		21/04/1996	
मंगल	21/03/1986	राहु	16/06/1987	शनि	21/12/1989	बुध	19/11/1992	केतु	06/04/1995
राहु	11/05/1986	गुरु	11/10/1987	बुध	26/05/1990	केतु	16/01/1993	शुक्र	12/06/1995
गुरु	25/06/1986	शनि	27/02/1988	केतु	29/07/1990	शुक्र	29/06/1993	सूर्य	02/07/1995
शनि	18/08/1986	बुध	30/06/1988	शुक्र	28/01/1991	सूर्य	17/08/1993	चंद्र	05/08/1995
बुध	05/10/1986	केतु	20/08/1988	सूर्य	24/03/1991	चंद्र	07/11/1993	मंगल	29/08/1995
केतु	25/10/1986	शुक्र	13/01/1989	चंद्र	24/06/1991	मंगल	03/01/1994	राहु	29/10/1995
शुक्र	21/12/1986	सूर्य	26/02/1989	मंगल	27/08/1991	राहु	30/05/1994	गुरु	22/12/1995
सूर्य	07/01/1987	चंद्र	10/05/1989	राहु	08/02/1992	गुरु	09/10/1994	शनि	24/02/1996
चंद्र	05/02/1987	मंगल	30/06/1989	गुरु	03/07/1992	शनि	13/03/1995	बुध	21/04/1996

शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु	
21/04/1996		22/06/1999		03/06/2000		02/01/2002		11/02/2003	
22/06/1999		03/06/2000		02/01/2002		11/02/2003		18/12/2005	
शुक्र	31/10/1996	सूर्य	09/07/1999	चंद्र	21/07/2000	मंगल	26/01/2002	राहु	17/07/2003
सूर्य	28/12/1996	चंद्र	07/08/1999	मंगल	24/08/2000	राहु	27/03/2002	गुरु	03/12/2003
चंद्र	03/04/1997	मंगल	27/08/1999	राहु	18/11/2000	गुरु	20/05/2002	शनि	15/05/2004
मंगल	09/06/1997	राहु	18/10/1999	गुरु	03/02/2001	शनि	23/07/2002	बुध	10/10/2004
राहु	30/11/1997	गुरु	03/12/1999	शनि	06/05/2001	बुध	19/09/2002	केतु	10/12/2004
गुरु	03/05/1998	शनि	27/01/2000	बुध	27/07/2001	केतु	12/10/2002	शुक्र	01/06/2005
शनि	02/11/1998	बुध	17/03/2000	केतु	30/08/2001	शुक्र	19/12/2002	सूर्य	23/07/2005
बुध	15/04/1999	केतु	06/04/2000	शुक्र	04/12/2001	सूर्य	08/01/2003	चंद्र	18/10/2005
केतु	22/06/1999	शुक्र	03/06/2000	सूर्य	02/01/2002	चंद्र	11/02/2003	मंगल	18/12/2005

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य	
18/12/2005		30/06/2008		27/11/2010		24/11/2011		24/09/2014	
30/06/2008		27/11/2010		24/11/2011		24/09/2014		31/07/2015	
गुरु	20/04/2006	बुध	02/11/2008	केतु	18/12/2010	शुक्र	14/05/2012	सूर्य	09/10/2014
शनि	14/09/2006	केतु	23/12/2008	शुक्र	16/02/2011	सूर्य	05/07/2012	चंद्र	04/11/2014
बुध	23/01/2007	शुक्र	19/05/2009	सूर्य	06/03/2011	चंद्र	29/09/2012	मंगल	22/11/2014
केतु	18/03/2007	सूर्य	02/07/2009	चंद्र	05/04/2011	मंगल	29/11/2012	राहु	08/01/2015
शुक्र	19/08/2007	चंद्र	13/09/2009	मंगल	27/04/2011	राहु	03/05/2013	गुरु	18/02/2015
सूर्य	04/10/2007	मंगल	03/11/2009	राहु	20/06/2011	गुरु	18/09/2013	शनि	08/04/2015
चंद्र	20/12/2007	राहु	15/03/2010	गुरु	07/08/2011	शनि	01/03/2014	बुध	22/05/2015
मंगल	12/02/2008	गुरु	10/07/2010	शनि	04/10/2011	बुध	25/07/2014	केतु	09/06/2015
राहु	30/06/2008	शनि	27/11/2010	बुध	24/11/2011	केतु	24/09/2014	शुक्र	31/07/2015

बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि	
31/07/2015		30/12/2016		27/12/2017		15/07/2020		21/10/2022	
30/12/2016		27/12/2017		15/07/2020		21/10/2022		30/06/2025	
चंद्र	12/09/2015	मंगल	20/01/2017	राहु	16/05/2018	गुरु	03/11/2020	शनि	26/03/2023
मंगल	12/10/2015	राहु	15/03/2017	गुरु	17/09/2018	शनि	14/03/2021	बुध	12/08/2023
राहु	29/12/2015	गुरु	02/05/2017	शनि	11/02/2019	बुध	09/07/2021	केतु	08/10/2023
गुरु	07/03/2016	शनि	29/06/2017	बुध	23/06/2019	केतु	26/08/2021	शुक्र	20/03/2024
शनि	28/05/2016	बुध	19/08/2017	केतु	16/08/2019	शुक्र	11/01/2022	सूर्य	08/05/2024
बुध	09/08/2016	केतु	09/09/2017	शुक्र	19/01/2020	सूर्य	22/02/2022	चंद्र	29/07/2024
केतु	09/09/2016	शुक्र	09/11/2017	सूर्य	05/03/2020	चंद्र	02/05/2022	मंगल	25/09/2024
शुक्र	04/12/2016	सूर्य	27/11/2017	चंद्र	22/05/2020	मंगल	19/06/2022	राहु	19/02/2025
सूर्य	30/12/2016	चंद्र	27/12/2017	मंगल	15/07/2020	राहु	21/10/2022	गुरु	30/06/2025

केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगल	
30/06/2025		26/11/2025		27/01/2027		03/06/2027		02/01/2028	
26/11/2025		27/01/2027		03/06/2027		02/01/2028		31/05/2028	
केतु	09/07/2025	शुक्र	05/02/2026	सूर्य	02/02/2027	चंद्र	21/06/2027	मंगल	11/01/2028
शुक्र	03/08/2025	सूर्य	27/02/2026	चंद्र	13/02/2027	मंगल	04/07/2027	राहु	02/02/2028
सूर्य	10/08/2025	चंद्र	03/04/2026	मंगल	20/02/2027	राहु	04/08/2027	गुरु	22/02/2028
चंद्र	23/08/2025	मंगल	28/04/2026	राहु	11/03/2027	गुरु	02/09/2027	शनि	17/03/2028
मंगल	31/08/2025	राहु	01/07/2026	गुरु	28/03/2027	शनि	06/10/2027	बुध	07/04/2028
राहु	23/09/2025	गुरु	27/08/2026	शनि	17/04/2027	बुध	05/11/2027	केतु	16/04/2028
गुरु	13/10/2025	शनि	02/11/2026	बुध	06/05/2027	केतु	17/11/2027	शुक्र	11/05/2028
शनि	05/11/2025	बुध	02/01/2027	केतु	13/05/2027	शुक्र	23/12/2027	सूर्य	18/05/2028
बुध	26/11/2025	केतु	27/01/2027	शुक्र	03/06/2027	सूर्य	02/01/2028	चंद्र	31/05/2028

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध		शुक्र - शुक्र	
31/05/2028		18/06/2029		25/05/2030		04/07/2031		30/06/2032	
18/06/2029		25/05/2030		04/07/2031		30/06/2032		30/10/2035	
राहु	27/07/2028	गुरु	03/08/2029	शनि	28/07/2030	बुध	24/08/2031	शुक्र	19/01/2033
गुरु	16/09/2028	शनि	25/09/2029	बुध	23/09/2030	केतु	14/09/2031	सूर्य	21/03/2033
शनि	16/11/2028	बुध	13/11/2029	केतु	17/10/2030	शुक्र	14/11/2031	चंद्र	30/06/2033
बुध	09/01/2029	केतु	03/12/2029	शुक्र	23/12/2030	सूर्य	02/12/2031	मंगल	09/09/2033
केतु	01/02/2029	शुक्र	28/01/2030	सूर्य	13/01/2031	चंद्र	01/01/2032	राहु	11/03/2034
शुक्र	06/04/2029	सूर्य	15/02/2030	चंद्र	15/02/2031	मंगल	22/01/2032	गुरु	20/08/2034
सूर्य	25/04/2029	चंद्र	15/03/2030	मंगल	11/03/2031	राहु	16/03/2032	शनि	01/03/2035
चंद्र	27/05/2029	मंगल	04/04/2030	राहु	11/05/2031	गुरु	04/05/2032	बुध	20/08/2035
मंगल	18/06/2029	राहु	25/05/2030	गुरु	04/07/2031	शनि	30/06/2032	केतु	30/10/2035

शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु	
30/10/2035		30/10/2036		30/06/2038		31/08/2039		30/08/2042	
30/10/2036		30/06/2038		31/08/2039		30/08/2042		30/04/2045	
सूर्य	18/11/2035	चंद्र	19/12/2036	मंगल	25/07/2038	राहु	11/02/2040	गुरु	07/01/2043
चंद्र	18/12/2035	मंगल	24/01/2037	राहु	27/09/2038	गुरु	06/07/2040	शनि	10/06/2043
मंगल	08/01/2036	राहु	25/04/2037	गुरु	23/11/2038	शनि	27/12/2040	बुध	26/10/2043
राहु	03/03/2036	गुरु	15/07/2037	शनि	30/01/2039	बुध	31/05/2041	केतु	22/12/2043
गुरु	21/04/2036	शनि	20/10/2037	बुध	31/03/2039	केतु	03/08/2041	शुक्र	02/06/2044
शनि	18/06/2036	बुध	14/01/2038	केतु	25/04/2039	शुक्र	01/02/2042	सूर्य	20/07/2044
बुध	09/08/2036	केतु	19/02/2038	शुक्र	05/07/2039	सूर्य	28/03/2042	चंद्र	09/10/2044
केतु	30/08/2036	शुक्र	31/05/2038	सूर्य	26/07/2039	चंद्र	27/06/2042	मंगल	05/12/2044
शुक्र	30/10/2036	सूर्य	30/06/2038	चंद्र	31/08/2039	मंगल	30/08/2042	राहु	30/04/2045

शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र	
30/04/2045		30/06/2048		01/05/2051		30/06/2052		18/10/2052	
30/06/2048		01/05/2051		30/06/2052		18/10/2052		18/04/2053	
शनि	31/10/2045	बुध	24/11/2048	केतु	26/05/2051	सूर्य	05/07/2052	चंद्र	02/11/2052
बुध	12/04/2046	केतु	23/01/2049	शुक्र	05/08/2051	चंद्र	15/07/2052	मंगल	12/11/2052
केतु	19/06/2046	शुक्र	14/07/2049	सूर्य	26/08/2051	मंगल	21/07/2052	राहु	10/12/2052
शुक्र	29/12/2046	सूर्य	04/09/2049	चंद्र	01/10/2051	राहु	06/08/2052	गुरु	03/01/2053
सूर्य	24/02/2047	चंद्र	29/11/2049	मंगल	25/10/2051	गुरु	21/08/2052	शनि	01/02/2053
चंद्र	01/06/2047	मंगल	29/01/2050	राहु	28/12/2051	शनि	07/09/2052	बुध	27/02/2053
मंगल	07/08/2047	राहु	03/07/2050	गुरु	23/02/2052	बुध	23/09/2052	केतु	10/03/2053
राहु	28/01/2048	गुरु	18/11/2050	शनि	01/05/2052	केतु	29/09/2052	शुक्र	09/04/2053
गुरु	30/06/2048	शनि	01/05/2051	बुध	30/06/2052	शुक्र	18/10/2052	सूर्य	18/04/2053

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध	
18/04/2053		24/08/2053		19/07/2054		07/05/2055		18/04/2056	
24/08/2053		19/07/2054		07/05/2055		18/04/2056		22/02/2057	
मंगल	26/04/2053	राहु	12/10/2053	गुरु	27/08/2054	शनि	01/07/2055	बुध	01/06/2056
राहु	15/05/2053	गुरु	25/11/2053	शनि	12/10/2054	बुध	19/08/2055	केतु	19/06/2056
गुरु	01/06/2053	शनि	16/01/2054	बुध	22/11/2054	केतु	08/09/2055	शुक्र	10/08/2056
शनि	21/06/2053	बुध	04/03/2054	केतु	09/12/2054	शुक्र	05/11/2055	सूर्य	25/08/2056
बुध	09/07/2053	केतु	23/03/2054	शुक्र	27/01/2055	सूर्य	22/11/2055	चंद्र	20/09/2056
केतु	17/07/2053	शुक्र	17/05/2054	सूर्य	11/02/2055	चंद्र	21/12/2055	मंगल	08/10/2056
शुक्र	07/08/2053	सूर्य	02/06/2054	चंद्र	07/03/2055	मंगल	11/01/2056	राहु	24/11/2056
सूर्य	13/08/2053	चंद्र	30/06/2054	मंगल	24/03/2055	राहु	03/03/2056	गुरु	04/01/2057
चंद्र	24/08/2053	मंगल	19/07/2054	राहु	07/05/2055	गुरु	18/04/2056	शनि	22/02/2057

सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु	
22/02/2057		30/06/2057		30/06/2058		01/05/2059		30/11/2059	
30/06/2057		30/06/2058		01/05/2059		30/11/2059		31/05/2061	
केतु	02/03/2057	शुक्र	30/08/2057	चंद्र	26/07/2058	मंगल	13/05/2059	राहु	20/02/2060
शुक्र	23/03/2057	सूर्य	17/09/2057	मंगल	13/08/2058	राहु	14/06/2059	गुरु	03/05/2060
सूर्य	30/03/2057	चंद्र	18/10/2057	राहु	27/09/2058	गुरु	13/07/2059	शनि	29/07/2060
चंद्र	09/04/2057	मंगल	08/11/2057	गुरु	07/11/2058	शनि	15/08/2059	बुध	15/10/2060
मंगल	17/04/2057	राहु	02/01/2058	शनि	25/12/2058	बुध	15/09/2059	केतु	15/11/2060
राहु	06/05/2057	गुरु	20/02/2058	बुध	06/02/2059	केतु	27/09/2059	शुक्र	15/02/2061
गुरु	23/05/2057	शनि	18/04/2058	केतु	24/02/2059	शुक्र	02/11/2059	सूर्य	14/03/2061
शनि	12/06/2057	बुध	09/06/2058	शुक्र	16/04/2059	सूर्य	12/11/2059	चंद्र	29/04/2061
बुध	30/06/2057	केतु	30/06/2058	सूर्य	01/05/2059	चंद्र	30/11/2059	मंगल	31/05/2061

चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र	
31/05/2061		30/09/2062		30/04/2064		30/09/2065		01/05/2066	
30/09/2062		30/04/2064		30/09/2065		01/05/2066		30/12/2067	
गुरु	04/08/2061	शनि	30/12/2062	बुध	12/07/2064	केतु	12/10/2065	शुक्र	10/08/2066
शनि	20/10/2061	बुध	22/03/2063	केतु	12/08/2064	शुक्र	16/11/2065	सूर्य	10/09/2066
बुध	28/12/2061	केतु	25/04/2063	शुक्र	06/11/2064	सूर्य	27/11/2065	चंद्र	30/10/2066
केतु	25/01/2062	शुक्र	30/07/2063	सूर्य	02/12/2064	चंद्र	15/12/2065	मंगल	05/12/2066
शुक्र	16/04/2062	सूर्य	28/08/2063	चंद्र	14/01/2065	मंगल	27/12/2065	राहु	06/03/2067
सूर्य	11/05/2062	चंद्र	16/10/2063	मंगल	13/02/2065	राहु	28/01/2066	गुरु	26/05/2067
चंद्र	20/06/2062	मंगल	18/11/2063	राहु	02/05/2065	गुरु	26/02/2066	शनि	31/08/2067
मंगल	19/07/2062	राहु	13/02/2064	गुरु	10/07/2065	शनि	31/03/2066	बुध	25/11/2067
राहु	30/09/2062	गुरु	30/04/2064	शनि	30/09/2065	बुध	01/05/2066	केतु	30/12/2067

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु		मंगल - शनि	
30/12/2067		30/06/2068		26/11/2068		15/12/2069		21/11/2070	
30/06/2068		26/11/2068		15/12/2069		21/11/2070		30/12/2071	
सूर्य	08/01/2068	मंगल	09/07/2068	राहु	23/01/2069	गुरु	29/01/2070	शनि	24/01/2071
चंद्र	24/01/2068	राहु	31/07/2068	गुरु	15/03/2069	शनि	24/03/2070	बुध	22/03/2071
मंगल	03/02/2068	गुरु	20/08/2068	शनि	15/05/2069	बुध	11/05/2070	केतु	15/04/2071
राहु	02/03/2068	शनि	13/09/2068	बुध	08/07/2069	केतु	31/05/2070	शुक्र	21/06/2071
गुरु	26/03/2068	बुध	04/10/2068	केतु	30/07/2069	शुक्र	27/07/2070	सूर्य	11/07/2071
शनि	24/04/2068	केतु	12/10/2068	शुक्र	02/10/2069	सूर्य	13/08/2070	चंद्र	14/08/2071
बुध	20/05/2068	शुक्र	06/11/2068	सूर्य	21/10/2069	चंद्र	11/09/2070	मंगल	07/09/2071
केतु	31/05/2068	सूर्य	14/11/2068	चंद्र	22/11/2069	मंगल	30/09/2070	राहु	06/11/2071
शुक्र	30/06/2068	चंद्र	26/11/2068	मंगल	15/12/2069	राहु	21/11/2070	गुरु	30/12/2071

मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र	
30/12/2071		27/12/2072		25/05/2073		25/07/2074		30/11/2074	
27/12/2072		25/05/2073		25/07/2074		30/11/2074		01/07/2075	
बुध	20/02/2072	केतु	04/01/2073	शुक्र	04/08/2073	सूर्य	31/07/2074	चंद्र	17/12/2074
केतु	12/03/2072	शुक्र	29/01/2073	सूर्य	25/08/2073	चंद्र	11/08/2074	मंगल	30/12/2074
शुक्र	11/05/2072	सूर्य	06/02/2073	चंद्र	30/09/2073	मंगल	18/08/2074	राहु	31/01/2075
सूर्य	29/05/2072	चंद्र	18/02/2073	मंगल	24/10/2073	राहु	07/09/2074	गुरु	28/02/2075
चंद्र	28/06/2072	मंगल	27/02/2073	राहु	27/12/2073	गुरु	24/09/2074	शनि	03/04/2075
मंगल	20/07/2072	राहु	21/03/2073	गुरु	22/02/2074	शनि	14/10/2074	बुध	03/05/2075
राहु	12/09/2072	गुरु	10/04/2073	शनि	01/05/2074	बुध	01/11/2074	केतु	16/05/2075
गुरु	30/10/2072	शनि	04/05/2073	बुध	30/06/2074	केतु	08/11/2074	शुक्र	20/06/2075
शनि	27/12/2072	बुध	25/05/2073	केतु	25/07/2074	शुक्र	30/11/2074	सूर्य	01/07/2075

राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु	
01/07/2075		13/03/2078		06/08/2080		12/06/2083		30/12/2085	
13/03/2078		06/08/2080		12/06/2083		30/12/2085		17/01/2087	
राहु	26/11/2075	गुरु	08/07/2078	शनि	17/01/2081	बुध	22/10/2083	केतु	21/01/2086
गुरु	05/04/2076	शनि	24/11/2078	बुध	14/06/2081	केतु	16/12/2083	शुक्र	26/03/2086
शनि	08/09/2076	बुध	28/03/2079	केतु	14/08/2081	शुक्र	19/05/2084	सूर्य	14/04/2086
बुध	26/01/2077	केतु	18/05/2079	शुक्र	03/02/2082	सूर्य	05/07/2084	चंद्र	16/05/2086
केतु	25/03/2077	शुक्र	11/10/2079	सूर्य	27/03/2082	चंद्र	20/09/2084	मंगल	08/06/2086
शुक्र	05/09/2077	सूर्य	24/11/2079	चंद्र	22/06/2082	मंगल	14/11/2084	राहु	04/08/2086
सूर्य	24/10/2077	चंद्र	05/02/2080	मंगल	22/08/2082	राहु	02/04/2085	गुरु	24/09/2086
चंद्र	14/01/2078	मंगल	27/03/2080	राहु	25/01/2083	गुरु	04/08/2085	शनि	24/11/2086
मंगल	13/03/2078	राहु	06/08/2080	गुरु	12/06/2083	शनि	30/12/2085	बुध	17/01/2087

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

केतु - शुक्र - शुक्र		केतु - शुक्र - सूर्य		केतु - शुक्र - चंद्र		केतु - शुक्र - मंगल	
26/11/2025 21:17		05/02/2026 21:47		27/02/2026 05:08		03/04/2026 17:23	
05/02/2026 21:47		27/02/2026 05:08		03/04/2026 17:23		28/04/2026 13:57	
शुक्र	08/12/2025 17:22	सूर्य	06/02/2026 23:21	चंद्र	02/03/2026 04:09	मंगल	05/04/2026 04:11
सूर्य	12/12/2025 06:35	चंद्र	08/02/2026 17:57	मंगल	04/03/2026 05:52	राहु	08/04/2026 21:40
चंद्र	18/12/2025 04:38	मंगल	09/02/2026 23:47	राहु	09/03/2026 13:42	गुरु	12/04/2026 05:12
मंगल	22/12/2025 08:03	राहु	13/02/2026 04:29	गुरु	14/03/2026 07:20	शनि	16/04/2026 03:40
राहु	01/01/2026 23:44	गुरु	16/02/2026 00:40	शनि	19/03/2026 22:16	बुध	19/04/2026 16:11
गुरु	11/01/2026 11:00	शनि	19/02/2026 09:38	बुध	24/03/2026 23:00	केतु	21/04/2026 02:59
शनि	22/01/2026 16:53	बुध	22/02/2026 10:04	केतु	27/03/2026 00:43	शुक्र	25/04/2026 06:24
बुध	01/02/2026 18:21	केतु	23/02/2026 15:54	शुक्र	01/04/2026 22:46	सूर्य	26/04/2026 12:14
केतु	05/02/2026 21:47	शुक्र	27/02/2026 05:08	सूर्य	03/04/2026 17:23	चंद्र	28/04/2026 13:57

केतु - शुक्र - राहु		केतु - शुक्र - गुरु		केतु - शुक्र - शनि		केतु - शुक्र - बुध	
28/04/2026 13:57		01/07/2026 12:00		27/08/2026 07:36		02/11/2026 18:53	
01/07/2026 12:00		27/08/2026 07:36		02/11/2026 18:53		02/01/2027 03:42	
राहु	08/05/2026 04:04	गुरु	09/07/2026 01:49	शनि	06/09/2026 23:59	बुध	11/11/2026 08:08
गुरु	16/05/2026 16:36	शनि	18/07/2026 01:43	बुध	16/09/2026 13:23	केतु	14/11/2026 20:38
शनि	26/05/2026 19:29	बुध	26/07/2026 02:54	केतु	20/09/2026 11:50	शुक्र	24/11/2026 22:07
बुध	04/06/2026 20:49	केतु	29/07/2026 10:26	शुक्र	01/10/2026 17:43	सूर्य	27/11/2026 22:33
केतु	08/06/2026 14:18	शुक्र	07/08/2026 21:42	सूर्य	05/10/2026 02:41	चंद्र	02/12/2026 23:17
शुक्र	19/06/2026 05:58	सूर्य	10/08/2026 17:53	चंद्र	10/10/2026 17:37	मंगल	06/12/2026 11:48
सूर्य	22/06/2026 10:41	चंद्र	15/08/2026 11:31	मंगल	14/10/2026 16:05	राहु	15/12/2026 13:08
चंद्र	27/06/2026 18:31	मंगल	18/08/2026 19:04	राहु	24/10/2026 18:58	गुरु	23/12/2026 14:18
मंगल	01/07/2026 12:00	राहु	27/08/2026 07:36	गुरु	02/11/2026 18:53	शनि	02/01/2027 03:42

केतु - शुक्र - केतु		केतु - सूर्य - सूर्य		केतु - सूर्य - चंद्र		केतु - सूर्य - मंगल	
02/01/2027 03:42		27/01/2027 00:17		02/02/2027 09:41		13/02/2027 01:21	
27/01/2027 00:17		02/02/2027 09:41		13/02/2027 01:21		20/02/2027 12:20	
केतु	03/01/2027 14:30	सूर्य	27/01/2027 07:57	चंद्र	03/02/2027 06:59	मंगल	13/02/2027 11:48
शुक्र	07/01/2027 17:56	चंद्र	27/01/2027 20:44	मंगल	03/02/2027 21:54	राहु	14/02/2027 14:39
सूर्य	08/01/2027 23:46	मंगल	28/01/2027 05:41	राहु	05/02/2027 12:15	गुरु	15/02/2027 14:30
चंद्र	11/01/2027 01:28	राहु	29/01/2027 04:41	गुरु	06/02/2027 22:21	शनि	16/02/2027 18:51
मंगल	12/01/2027 12:16	गुरु	30/01/2027 01:09	शनि	08/02/2027 14:49	बुध	17/02/2027 20:12
राहु	16/01/2027 05:46	शनि	31/01/2027 01:26	बुध	10/02/2027 03:03	केतु	18/02/2027 06:38
गुरु	19/01/2027 13:18	बुध	31/01/2027 23:10	केतु	10/02/2027 17:58	शुक्र	19/02/2027 12:28
शनि	23/01/2027 11:46	केतु	01/02/2027 08:07	शुक्र	12/02/2027 12:34	सूर्य	19/02/2027 21:25
बुध	27/01/2027 00:17	शुक्र	02/02/2027 09:41	सूर्य	13/02/2027 01:21	चंद्र	20/02/2027 12:20

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

केतु - सूर्य - राहु	
20/02/2027 12:20	
11/03/2027 16:33	
राहु	23/02/2027 09:22
गुरु	25/02/2027 22:43
शनि	28/02/2027 23:35
बुध	03/03/2027 16:47
केतु	04/03/2027 19:38
शुक्र	08/03/2027 00:20
सूर्य	08/03/2027 23:21
चंद्र	10/03/2027 13:42
मंगल	11/03/2027 16:33

केतु - सूर्य - गुरु	
11/03/2027 16:33	
28/03/2027 17:37	
गुरु	13/03/2027 23:05
शनि	16/03/2027 15:52
बुध	19/03/2027 01:49
केतु	20/03/2027 01:40
शुक्र	22/03/2027 21:51
सूर्य	23/03/2027 18:19
चंद्र	25/03/2027 04:24
मंगल	26/03/2027 04:16
राहु	28/03/2027 17:37

केतु - सूर्य - शनि	
28/03/2027 17:37	
17/04/2027 23:24	
शनि	31/03/2027 22:32
बुध	03/04/2027 19:21
केतु	04/04/2027 23:42
शुक्र	08/04/2027 08:40
सूर्य	09/04/2027 08:57
चंद्र	11/04/2027 01:26
मंगल	12/04/2027 05:46
राहु	15/04/2027 06:38
गुरु	17/04/2027 23:24

केतु - सूर्य - बुध	
17/04/2027 23:24	
06/05/2027 02:03	
बुध	20/04/2027 12:59
केतु	21/04/2027 14:20
शुक्र	24/04/2027 14:47
सूर्य	25/04/2027 12:31
चंद्र	27/04/2027 00:44
मंगल	28/04/2027 02:05
राहु	30/04/2027 19:17
गुरु	03/05/2027 05:14
शनि	06/05/2027 02:03

केतु - सूर्य - केतु	
06/05/2027 02:03	
13/05/2027 13:02	
केतु	06/05/2027 12:30
शुक्र	07/05/2027 18:19
सूर्य	08/05/2027 03:16
चंद्र	08/05/2027 18:11
मंगल	09/05/2027 04:38
राहु	10/05/2027 07:28
गुरु	11/05/2027 07:20
शनि	12/05/2027 11:40
बुध	13/05/2027 13:02

केतु - सूर्य - शुक्र	
13/05/2027 13:02	
03/06/2027 20:23	
शुक्र	17/05/2027 02:15
सूर्य	18/05/2027 03:49
चंद्र	19/05/2027 22:26
मंगल	21/05/2027 04:16
राहु	24/05/2027 08:58
गुरु	27/05/2027 05:09
शनि	30/05/2027 14:06
बुध	02/06/2027 14:33
केतु	03/06/2027 20:23

केतु - चंद्र - चंद्र	
03/06/2027 20:23	
21/06/2027 14:30	
चंद्र	05/06/2027 07:53
मंगल	06/06/2027 08:45
राहु	09/06/2027 00:40
गुरु	11/06/2027 09:29
शनि	14/06/2027 04:57
बुध	16/06/2027 17:19
केतु	17/06/2027 18:10
शुक्र	20/06/2027 17:12
सूर्य	21/06/2027 14:30

केतु - चंद्र - मंगल	
21/06/2027 14:30	
04/07/2027 00:47	
मंगल	22/06/2027 07:54
राहु	24/06/2027 04:39
गुरु	25/06/2027 20:25
शनि	27/06/2027 19:39
बुध	29/06/2027 13:54
केतु	30/06/2027 07:18
शुक्र	02/07/2027 09:01
सूर्य	02/07/2027 23:56
चंद्र	04/07/2027 00:47

केतु - चंद्र - राहु	
04/07/2027 00:47	
04/08/2027 23:49	
राहु	08/07/2027 19:51
गुरु	13/07/2027 02:07
शनि	18/07/2027 03:33
बुध	22/07/2027 16:13
केतु	24/07/2027 12:58
शुक्र	29/07/2027 20:48
सूर्य	31/07/2027 11:09
चंद्र	03/08/2027 03:04
मंगल	04/08/2027 23:49

केतु - चंद्र - गुरु	
04/08/2027 23:49	
02/09/2027 09:37	
गुरु	08/08/2027 18:43
शनि	13/08/2027 06:40
बुध	17/08/2027 07:16
केतु	18/08/2027 23:02
शुक्र	23/08/2027 16:40
सूर्य	25/08/2027 02:45
चंद्र	27/08/2027 11:34
मंगल	29/08/2027 03:21
राहु	02/09/2027 09:37

केतु - चंद्र - शनि	
02/09/2027 09:37	
06/10/2027 03:15	
शनि	07/09/2027 17:48
बुध	12/09/2027 12:30
केतु	14/09/2027 11:44
शुक्र	20/09/2027 02:40
सूर्य	21/09/2027 19:09
चंद्र	24/09/2027 14:37
मंगल	26/09/2027 13:51
राहु	01/10/2027 15:18
गुरु	06/10/2027 03:15

केतु - चंद्र - बुध	
06/10/2027 03:15	
05/11/2027 07:40	
बुध	10/10/2027 09:53
केतु	12/10/2027 04:08
शुक्र	17/10/2027 04:52
सूर्य	18/10/2027 17:05
चंद्र	21/10/2027 05:27
मंगल	22/10/2027 23:43
राहु	27/10/2027 12:23
गुरु	31/10/2027 12:58
शनि	05/11/2027 07:40

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

केतु - चंद्र - केतु	
05/11/2027 07:40	
17/11/2027 17:57	
केतु	06/11/2027 01:04
शुक्र	08/11/2027 02:47
सूर्य	08/11/2027 17:42
चंद्र	09/11/2027 18:33
मंगल	10/11/2027 11:57
राहु	12/11/2027 08:42
गुरु	14/11/2027 00:28
शनि	15/11/2027 23:42
बुध	17/11/2027 17:57

केतु - चंद्र - शुक्र	
17/11/2027 17:57	
23/12/2027 06:12	
शुक्र	23/11/2027 16:00
सूर्य	25/11/2027 10:36
चंद्र	28/11/2027 09:38
मंगल	30/11/2027 11:20
राहु	05/12/2027 19:11
गुरु	10/12/2027 12:49
शनि	16/12/2027 03:45
बुध	21/12/2027 04:29
केतु	23/12/2027 06:12

केतु - चंद्र - सूर्य	
23/12/2027 06:12	
02/01/2028 21:53	
सूर्य	23/12/2027 18:59
चंद्र	24/12/2027 16:17
मंगल	25/12/2027 07:12
राहु	26/12/2027 21:33
गुरु	28/12/2027 07:39
शनि	30/12/2027 00:08
बुध	31/12/2027 12:21
केतु	01/01/2028 03:16
शुक्र	02/01/2028 21:53

केतु - मंगल - मंगल	
02/01/2028 21:53	
11/01/2028 14:41	
मंगल	03/01/2028 10:03
राहु	04/01/2028 17:23
गुरु	05/01/2028 21:13
शनि	07/01/2028 06:17
बुध	08/01/2028 11:51
केतु	09/01/2028 00:02
शुक्र	10/01/2028 10:50
सूर्य	10/01/2028 21:17
चंद्र	11/01/2028 14:41

केतु - मंगल - राहु	
11/01/2028 14:41	
02/02/2028 23:36	
राहु	14/01/2028 23:13
गुरु	17/01/2028 22:48
शनि	21/01/2028 11:49
बुध	24/01/2028 15:53
केतु	25/01/2028 23:12
शुक्र	29/01/2028 16:41
सूर्य	30/01/2028 19:32
चंद्र	01/02/2028 16:16
मंगल	02/02/2028 23:36

केतु - मंगल - गुरु	
02/02/2028 23:36	
22/02/2028 20:51	
गुरु	05/02/2028 15:14
शनि	08/02/2028 18:48
बुध	11/02/2028 14:24
केतु	12/02/2028 18:15
शुक्र	16/02/2028 01:47
सूर्य	17/02/2028 01:39
चंद्र	18/02/2028 17:26
मंगल	19/02/2028 21:16
राहु	22/02/2028 20:51

केतु - मंगल - शनि	
22/02/2028 20:51	
17/03/2028 11:36	
शनि	26/02/2028 14:35
बुध	29/02/2028 22:53
केतु	02/03/2028 07:56
शुक्र	06/03/2028 06:24
सूर्य	07/03/2028 10:44
चंद्र	09/03/2028 09:58
मंगल	10/03/2028 19:01
राहु	14/03/2028 08:02
गुरु	17/03/2028 11:36

केतु - मंगल - बुध	
17/03/2028 11:36	
07/04/2028 14:41	
बुध	20/03/2028 11:26
केतु	21/03/2028 17:01
शुक्र	25/03/2028 05:32
सूर्य	26/03/2028 06:53
चंद्र	28/03/2028 01:09
मंगल	29/03/2028 06:44
राहु	01/04/2028 10:47
गुरु	04/04/2028 06:24
शनि	07/04/2028 14:41

केतु - मंगल - केतु	
07/04/2028 14:41	
16/04/2028 07:29	
केतु	08/04/2028 02:52
शुक्र	09/04/2028 13:40
सूर्य	10/04/2028 00:07
चंद्र	10/04/2028 17:31
मंगल	11/04/2028 05:41
राहु	12/04/2028 13:01
गुरु	13/04/2028 16:51
शनि	15/04/2028 01:55
बुध	16/04/2028 07:29

केतु - मंगल - शुक्र	
16/04/2028 07:29	
11/05/2028 04:04	
शुक्र	20/04/2028 10:55
सूर्य	21/04/2028 16:45
चंद्र	23/04/2028 18:28
मंगल	25/04/2028 05:16
राहु	28/04/2028 22:45
गुरु	02/05/2028 06:18
शनि	06/05/2028 04:45
बुध	09/05/2028 17:16
केतु	11/05/2028 04:04

केतु - मंगल - सूर्य	
11/05/2028 04:04	
18/05/2028 15:02	
सूर्य	11/05/2028 13:01
चंद्र	12/05/2028 03:56
मंगल	12/05/2028 14:22
राहु	13/05/2028 17:13
गुरु	14/05/2028 17:05
शनि	15/05/2028 21:25
बुध	16/05/2028 22:46
केतु	17/05/2028 09:13
शुक्र	18/05/2028 15:02

केतु - मंगल - चंद्र	
18/05/2028 15:02	
31/05/2028 01:20	
चंद्र	19/05/2028 15:54
मंगल	20/05/2028 09:18
राहु	22/05/2028 06:02
गुरु	23/05/2028 21:49
शनि	25/05/2028 21:02
बुध	27/05/2028 15:18
केतु	28/05/2028 08:42
शुक्र	30/05/2028 10:25
सूर्य	31/05/2028 01:20

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

केतु - राहु - राहु	
31/05/2028 01:20	
27/07/2028 13:58	
राहु	08/06/2028 16:25
गुरु	16/06/2028 08:31
शनि	25/06/2028 11:07
बुध	03/07/2028 14:42
केतु	06/07/2028 23:14
शुक्र	16/07/2028 13:21
सूर्य	19/07/2028 10:23
चंद्र	24/07/2028 05:26
मंगल	27/07/2028 13:58

केतु - राहु - गुरु	
27/07/2028 13:58	
16/09/2028 17:13	
गुरु	03/08/2028 09:36
शनि	11/08/2028 11:55
बुध	18/08/2028 17:46
केतु	21/08/2028 17:22
शुक्र	30/08/2028 05:54
सूर्य	01/09/2028 19:16
चंद्र	06/09/2028 01:32
मंगल	09/09/2028 01:07
राहु	16/09/2028 17:13

केतु - राहु - शनि	
16/09/2028 17:13	
16/11/2028 10:34	
शनि	26/09/2028 07:57
बुध	04/10/2028 22:25
केतु	08/10/2028 11:26
शुक्र	18/10/2028 14:19
सूर्य	21/10/2028 15:11
चंद्र	26/10/2028 16:38
मंगल	30/10/2028 05:39
राहु	08/11/2028 08:15
गुरु	16/11/2028 10:34

केतु - राहु - बुध	
16/11/2028 10:34	
09/01/2029 18:30	
बुध	24/11/2028 03:17
केतु	27/11/2028 07:21
शुक्र	06/12/2028 08:40
सूर्य	09/12/2028 01:52
चंद्र	13/12/2028 14:32
मंगल	16/12/2028 18:36
राहु	24/12/2028 22:11
गुरु	01/01/2029 04:03
शनि	09/01/2029 18:30

केतु - राहु - केतु	
09/01/2029 18:30	
01/02/2029 03:25	
केतु	11/01/2029 01:49
शुक्र	14/01/2029 19:18
सूर्य	15/01/2029 22:09
चंद्र	17/01/2029 18:54
मंगल	19/01/2029 02:13
राहु	22/01/2029 10:45
गुरु	25/01/2029 10:21
शनि	28/01/2029 23:21
बुध	01/02/2029 03:25

केतु - राहु - शुक्र	
01/02/2029 03:25	
06/04/2029 01:28	
शुक्र	11/02/2029 19:06
सूर्य	14/02/2029 23:48
चंद्र	20/02/2029 07:38
मंगल	24/02/2029 01:07
राहु	05/03/2029 15:14
गुरु	14/03/2029 03:46
शनि	24/03/2029 06:40
बुध	02/04/2029 07:59
केतु	06/04/2029 01:28

केतु - राहु - सूर्य	
06/04/2029 01:28	
25/04/2029 05:41	
सूर्य	07/04/2029 00:29
चंद्र	08/04/2029 14:50
मंगल	09/04/2029 17:41
राहु	12/04/2029 14:43
गुरु	15/04/2029 04:04
शनि	18/04/2029 04:56
बुध	20/04/2029 22:08
केतु	22/04/2029 00:59
शुक्र	25/04/2029 05:41

केतु - राहु - चंद्र	
25/04/2029 05:41	
27/05/2029 04:43	
चंद्र	27/04/2029 21:36
मंगल	29/04/2029 18:21
राहु	04/05/2029 13:24
गुरु	08/05/2029 19:40
शनि	13/05/2029 21:07
बुध	18/05/2029 09:47
केतु	20/05/2029 06:31
शुक्र	25/05/2029 14:21
सूर्य	27/05/2029 04:43

केतु - राहु - मंगल	
27/05/2029 04:43	
18/06/2029 13:38	
मंगल	28/05/2029 12:02
राहु	31/05/2029 20:34
गुरु	03/06/2029 20:09
शनि	07/06/2029 09:10
बुध	10/06/2029 13:14
केतु	11/06/2029 20:33
शुक्र	15/06/2029 14:02
सूर्य	16/06/2029 16:53
चंद्र	18/06/2029 13:38

केतु - गुरु - गुरु	
18/06/2029 13:38	
03/08/2029 00:30	
गुरु	24/06/2029 15:05
शनि	01/07/2029 19:48
बुध	08/07/2029 06:20
केतु	10/07/2029 21:59
शुक्र	18/07/2029 11:47
सूर्य	20/07/2029 18:20
चंद्र	24/07/2029 13:14
मंगल	27/07/2029 04:52
राहु	03/08/2029 00:30

केतु - गुरु - शनि	
03/08/2029 00:30	
25/09/2029 23:56	
शनि	11/08/2029 13:37
बुध	19/08/2029 05:08
केतु	22/08/2029 08:42
शुक्र	31/08/2029 08:36
सूर्य	03/09/2029 01:22
चंद्र	07/09/2029 13:19
मंगल	10/09/2029 16:53
राहु	18/09/2029 19:12
गुरु	25/09/2029 23:56

केतु - गुरु - बुध	
25/09/2029 23:56	
13/11/2029 06:59	
बुध	02/10/2029 20:08
केतु	05/10/2029 15:44
शुक्र	13/10/2029 16:55
सूर्य	16/10/2029 02:52
चंद्र	20/10/2029 03:27
मंगल	22/10/2029 23:04
राहु	30/10/2029 04:56
गुरु	05/11/2029 15:28
शनि	13/11/2029 06:59

विंशोत्तरी दशा - प्राण

केतु - शुक्र - शुक्र - केतु	
01/02/2026 18:21	
05/02/2026 21:47	
केतु	02/02/2026 00:09
शुक्र	02/02/2026 16:43
सूर्य	02/02/2026 21:41
चंद्र	03/02/2026 05:59
मंगल	03/02/2026 11:47
राहु	04/02/2026 02:41
गुरु	04/02/2026 15:57
शनि	05/02/2026 07:41
बुध	05/02/2026 21:47

केतु - शुक्र - सूर्य - सूर्य	
05/02/2026 21:47	
06/02/2026 23:21	
सूर्य	05/02/2026 23:03
चंद्र	06/02/2026 01:11
मंगल	06/02/2026 02:41
राहु	06/02/2026 06:31
गुरु	06/02/2026 09:55
शनि	06/02/2026 13:58
बुध	06/02/2026 17:35
केतु	06/02/2026 19:05
शुक्र	06/02/2026 23:21

केतु - शुक्र - सूर्य - चंद्र	
06/02/2026 23:21	
08/02/2026 17:57	
चंद्र	07/02/2026 02:54
मंगल	07/02/2026 05:23
राहु	07/02/2026 11:46
गुरु	07/02/2026 17:27
शनि	08/02/2026 00:12
बुध	08/02/2026 06:14
केतु	08/02/2026 08:43
शुक्र	08/02/2026 15:50
सूर्य	08/02/2026 17:57

केतु - शुक्र - सूर्य - मंगल	
08/02/2026 17:57	
09/02/2026 23:47	
मंगल	08/02/2026 19:42
राहु	09/02/2026 00:10
गुरु	09/02/2026 04:09
शनि	09/02/2026 08:52
बुध	09/02/2026 13:06
केतु	09/02/2026 14:50
शुक्र	09/02/2026 19:48
सूर्य	09/02/2026 21:18
चंद्र	09/02/2026 23:47

केतु - शुक्र - सूर्य - राहु	
09/02/2026 23:47	
13/02/2026 04:29	
राहु	10/02/2026 11:17
गुरु	10/02/2026 21:31
शनि	11/02/2026 09:40
बुध	11/02/2026 20:32
केतु	12/02/2026 01:00
शुक्र	12/02/2026 13:47
सूर्य	12/02/2026 17:37
चंद्र	13/02/2026 00:01
मंगल	13/02/2026 04:29

केतु - शुक्र - सूर्य - गुरु	
13/02/2026 04:29	
16/02/2026 00:40	
गुरु	13/02/2026 13:35
शनि	14/02/2026 00:22
बुध	14/02/2026 10:02
केतु	14/02/2026 14:01
शुक्र	15/02/2026 01:22
सूर्य	15/02/2026 04:47
चंद्र	15/02/2026 10:28
मंगल	15/02/2026 14:26
राहु	16/02/2026 00:40

केतु - शुक्र - सूर्य - शनि	
16/02/2026 00:40	
19/02/2026 09:38	
शनि	16/02/2026 13:29
बुध	17/02/2026 00:57
केतु	17/02/2026 05:41
शुक्र	17/02/2026 19:10
सूर्य	17/02/2026 23:13
चंद्र	18/02/2026 05:58
मंगल	18/02/2026 10:41
राहु	18/02/2026 22:50
गुरु	19/02/2026 09:38

केतु - शुक्र - सूर्य - बुध	
19/02/2026 09:38	
22/02/2026 10:04	
बुध	19/02/2026 19:54
केतु	20/02/2026 00:07
शुक्र	20/02/2026 12:12
सूर्य	20/02/2026 15:49
चंद्र	20/02/2026 21:51
मंगल	21/02/2026 02:05
राहु	21/02/2026 12:57
गुरु	21/02/2026 22:36
शनि	22/02/2026 10:04

केतु - शुक्र - सूर्य - केतु	
22/02/2026 10:04	
23/02/2026 15:54	
केतु	22/02/2026 11:49
शुक्र	22/02/2026 16:47
सूर्य	22/02/2026 18:17
चंद्र	22/02/2026 20:46
मंगल	22/02/2026 22:30
राहु	23/02/2026 02:59
गुरु	23/02/2026 06:57
शनि	23/02/2026 11:41
बुध	23/02/2026 15:54

केतु - शुक्र - सूर्य - शुक्र	
23/02/2026 15:54	
27/02/2026 05:08	
शुक्र	24/02/2026 06:06
सूर्य	24/02/2026 10:22
चंद्र	24/02/2026 17:28
मंगल	24/02/2026 22:26
राहु	25/02/2026 11:13
गुरु	25/02/2026 22:35
शनि	26/02/2026 12:05
बुध	27/02/2026 00:09
केतु	27/02/2026 05:08

केतु - शुक्र - चंद्र - चंद्र	
27/02/2026 05:08	
02/03/2026 04:09	
चंद्र	27/02/2026 11:03
मंगल	27/02/2026 15:11
राहु	28/02/2026 01:50
गुरु	28/02/2026 11:19
शनि	28/02/2026 22:33
बुध	01/03/2026 08:37
केतु	01/03/2026 12:46
शुक्र	02/03/2026 00:36
सूर्य	02/03/2026 04:09

केतु - शुक्र - चंद्र - मंगल	
02/03/2026 04:09	
04/03/2026 05:52	
मंगल	02/03/2026 07:03
राहु	02/03/2026 14:30
गुरु	02/03/2026 21:08
शनि	03/03/2026 05:00
बुध	03/03/2026 12:03
केतु	03/03/2026 14:57
शुक्र	03/03/2026 23:14
सूर्य	04/03/2026 01:43
चंद्र	04/03/2026 05:52

विंशोत्तरी दशा - प्राण

केतु - शुक्र - चंद्र - राहु	
04/03/2026 05:52	
09/03/2026 13:42	
राहु	05/03/2026 01:02
गुरु	05/03/2026 18:05
शनि	06/03/2026 14:19
बुध	07/03/2026 08:26
केतु	07/03/2026 15:53
शुक्र	08/03/2026 13:12
सूर्य	08/03/2026 19:35
चंद्र	09/03/2026 06:15
मंगल	09/03/2026 13:42

केतु - शुक्र - चंद्र - गुरु	
09/03/2026 13:42	
14/03/2026 07:20	
गुरु	10/03/2026 04:51
शनि	10/03/2026 22:51
बुध	11/03/2026 14:56
केतु	11/03/2026 21:34
शुक्र	12/03/2026 16:30
सूर्य	12/03/2026 22:11
चंद्र	13/03/2026 07:40
मंगल	13/03/2026 14:17
राहु	14/03/2026 07:20

केतु - शुक्र - चंद्र - शनि	
14/03/2026 07:20	
19/03/2026 22:16	
शनि	15/03/2026 04:42
बुध	15/03/2026 23:49
केतु	16/03/2026 07:41
शुक्र	17/03/2026 06:11
सूर्य	17/03/2026 12:55
चंद्र	18/03/2026 00:10
मंगल	18/03/2026 08:02
राहु	19/03/2026 04:17
गुरु	19/03/2026 22:16

केतु - शुक्र - चंद्र - बुध	
19/03/2026 22:16	
24/03/2026 23:00	
बुध	20/03/2026 15:23
केतु	20/03/2026 22:25
शुक्र	21/03/2026 18:32
सूर्य	22/03/2026 00:35
चंद्र	22/03/2026 10:38
मंगल	22/03/2026 17:41
राहु	23/03/2026 11:48
गुरु	24/03/2026 03:53
शनि	24/03/2026 23:00

केतु - शुक्र - चंद्र - केतु	
24/03/2026 23:00	
27/03/2026 00:43	
केतु	25/03/2026 01:54
शुक्र	25/03/2026 10:12
सूर्य	25/03/2026 12:41
चंद्र	25/03/2026 16:49
मंगल	25/03/2026 19:43
राहु	26/03/2026 03:11
गुरु	26/03/2026 09:48
शनि	26/03/2026 17:41
बुध	27/03/2026 00:43

केतु - शुक्र - चंद्र - शुक्र	
27/03/2026 00:43	
01/04/2026 22:46	
शुक्र	28/03/2026 00:24
सूर्य	28/03/2026 07:30
चंद्र	28/03/2026 19:20
मंगल	29/03/2026 03:37
राहु	30/03/2026 00:56
गुरु	30/03/2026 19:52
शनि	31/03/2026 18:21
बुध	01/04/2026 14:29
केतु	01/04/2026 22:46

केतु - शुक्र - चंद्र - सूर्य	
01/04/2026 22:46	
03/04/2026 17:23	
सूर्य	02/04/2026 00:54
चंद्र	02/04/2026 04:27
मंगल	02/04/2026 06:56
राहु	02/04/2026 13:19
गुरु	02/04/2026 19:00
शनि	03/04/2026 01:45
बुध	03/04/2026 07:47
केतु	03/04/2026 10:16
शुक्र	03/04/2026 17:23

केतु - शुक्र - मंगल - मंगल	
03/04/2026 17:23	
05/04/2026 04:11	
मंगल	03/04/2026 19:24
राहु	04/04/2026 00:38
गुरु	04/04/2026 05:16
शनि	04/04/2026 10:47
बुध	04/04/2026 15:42
केतु	04/04/2026 17:44
शुक्र	04/04/2026 23:32
सूर्य	05/04/2026 01:17
चंद्र	05/04/2026 04:11

केतु - शुक्र - मंगल - राहु	
05/04/2026 04:11	
08/04/2026 21:40	
राहु	05/04/2026 17:36
गुरु	06/04/2026 05:32
शनि	06/04/2026 19:42
बुध	07/04/2026 08:23
केतु	07/04/2026 13:36
शुक्र	08/04/2026 04:31
सूर्य	08/04/2026 08:59
चंद्र	08/04/2026 16:27
मंगल	08/04/2026 21:40

केतु - शुक्र - मंगल - गुरु	
08/04/2026 21:40	
12/04/2026 05:12	
गुरु	09/04/2026 08:16
शनि	09/04/2026 20:52
बुध	10/04/2026 08:08
केतु	10/04/2026 12:46
शुक्र	11/04/2026 02:02
सूर्य	11/04/2026 06:00
चंद्र	11/04/2026 12:38
मंगल	11/04/2026 17:16
राहु	12/04/2026 05:12

केतु - शुक्र - मंगल - शनि	
12/04/2026 05:12	
16/04/2026 03:40	
शनि	12/04/2026 20:10
बुध	13/04/2026 09:33
केतु	13/04/2026 15:03
शुक्र	14/04/2026 06:48
सूर्य	14/04/2026 11:31
चंद्र	14/04/2026 19:23
मंगल	15/04/2026 00:54
राहु	15/04/2026 15:04
गुरु	16/04/2026 03:40

केतु - शुक्र - मंगल - बुध	
16/04/2026 03:40	
19/04/2026 16:11	
बुध	16/04/2026 15:38
केतु	16/04/2026 20:34
शुक्र	17/04/2026 10:39
सूर्य	17/04/2026 14:53
चंद्र	17/04/2026 21:55
मंगल	18/04/2026 02:51
राहु	18/04/2026 15:32
गुरु	19/04/2026 02:48
शनि	19/04/2026 16:11

षोडशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : सूर्य 6 वर्ष 4 मास 25 दिन

सूर्य 11 वर्ष		मंगल 12 वर्ष		गुरु 13 वर्ष		शनि 14 वर्ष		केतु 15 वर्ष	
07/03/1980		02/08/1986		02/08/1998		02/08/2011		02/08/2025	
02/08/1986		02/08/1998		02/08/2011		02/08/2025		02/08/2040	
	00/00/0000	मंगल	30/10/1987	गुरु	16/01/2000	शनि	11/04/2013	केतु	11/07/2027
	00/00/0000	गुरु	04/03/1989	शनि	11/08/2001	केतु	01/02/2015	चंद्र	05/08/2029
	07/03/1980	शनि	15/08/1990	केतु	17/04/2003	चंद्र	06/01/2017	बुध	17/10/2031
शनि	29/04/1980	केतु	03/03/1992	चंद्र	31/01/2005	बुध	25/01/2019	शुक्र	13/02/2034
केतु	01/10/1981	चंद्र	29/10/1993	बुध	28/12/2006	शुक्र	29/03/2021	सूर्य	18/07/2035
चंद्र	08/04/1983	बुध	02/08/1995	शुक्र	03/01/2009	सूर्य	27/07/2022	मंगल	03/02/2037
बुध	17/11/1984	शुक्र	13/06/1997	सूर्य	29/03/2010	मंगल	07/01/2024	गुरु	10/10/2038
शुक्र	02/08/1986	सूर्य	02/08/1998	मंगल	02/08/2011	गुरु	02/08/2025	शनि	02/08/2040

चंद्र 16 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शुक्र 18 वर्ष		सूर्य 11 वर्ष	
02/08/2040		02/08/2056		02/08/2073		02/08/2091	
02/08/2056		02/08/2073		02/08/2091		00/00/0000	
चंद्र	17/10/2042	बुध	29/01/2059	शुक्र	18/05/2076	सूर्य	17/08/2092
बुध	19/02/2045	शुक्र	18/09/2061	सूर्य	01/02/2078	मंगल	07/10/2093
शुक्र	15/08/2047	सूर्य	30/04/2063	मंगल	13/12/2079	गुरु	31/12/2094
सूर्य	19/02/2049	मंगल	31/01/2065	गुरु	18/12/2081	शनि	07/03/2096
मंगल	17/10/2050	गुरु	28/12/2066	शनि	20/02/2084		00/00/0000
गुरु	02/08/2052	शनि	16/01/2069	केतु	19/06/2086		00/00/0000
शनि	08/07/2054	केतु	29/03/2071	चंद्र	12/12/2088		00/00/0000
केतु	02/08/2056	चंद्र	02/08/2073	बुध	02/08/2091		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
षोडशोत्तरी दशा पूरे 116 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - शनि		सूर्य - केतु		सूर्य - चंद्र		सूर्य - बुध		सूर्य - शुक्र	
07/03/1980		29/04/1980		01/10/1981		08/04/1983		17/11/1984	
29/04/1980		01/10/1981		08/04/1983		17/11/1984		02/08/1986	
	00/00/0000	केतु	05/07/1980	चंद्र	16/12/1981	बुध	03/07/1983	शुक्र	21/02/1985
	00/00/0000	चंद्र	15/09/1980	बुध	07/03/1982	शुक्र	03/10/1983	सूर्य	22/04/1985
	00/00/0000	बुध	30/11/1980	शुक्र	01/06/1982	सूर्य	27/11/1983	मंगल	25/06/1985
	00/00/0000	शुक्र	19/02/1981	सूर्य	24/07/1982	मंगल	27/01/1984	गुरु	03/09/1985
	00/00/0000	सूर्य	09/04/1981	मंगल	19/09/1982	गुरु	02/04/1984	शनि	17/11/1985
	00/00/0000	मंगल	02/06/1981	गुरु	20/11/1982	शनि	12/06/1984	केतु	06/02/1986
	07/03/1980	गुरु	30/07/1981	शनि	26/01/1983	केतु	27/08/1984	चंद्र	03/05/1986
गुरु	29/04/1980	शनि	01/10/1981	केतु	08/04/1983	चंद्र	17/11/1984	बुध	02/08/1986

मंगल - मंगल		मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - केतु		मंगल - चंद्र	
02/08/1986		30/10/1987		04/03/1989		15/08/1990		03/03/1992	
30/10/1987		04/03/1989		15/08/1990		03/03/1992		29/10/1993	
मंगल	18/09/1986	गुरु	24/12/1987	शनि	07/05/1989	केतु	27/10/1990	चंद्र	26/05/1992
गुरु	08/11/1986	शनि	21/02/1988	केतु	14/07/1989	चंद्र	13/01/1991	बुध	22/08/1992
शनि	02/01/1987	केतु	24/04/1988	चंद्र	25/09/1989	बुध	06/04/1991	शुक्र	24/11/1992
केतु	01/03/1987	चंद्र	01/07/1988	बुध	11/12/1989	शुक्र	03/07/1991	सूर्य	21/01/1993
चंद्र	03/05/1987	बुध	11/09/1988	शुक्र	04/03/1990	सूर्य	26/08/1991	मंगल	24/03/1993
बुध	08/07/1987	शुक्र	26/11/1988	सूर्य	23/04/1990	मंगल	24/10/1991	गुरु	31/05/1993
शुक्र	17/09/1987	सूर्य	12/01/1989	मंगल	16/06/1990	गुरु	26/12/1991	शनि	12/08/1993
सूर्य	30/10/1987	मंगल	04/03/1989	गुरु	15/08/1990	शनि	03/03/1992	केतु	29/10/1993

मंगल - बुध		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		गुरु - गुरु		गुरु - शनि	
29/10/1993		02/08/1995		13/06/1997		02/08/1998		16/01/2000	
02/08/1995		13/06/1997		02/08/1998		16/01/2000		11/08/2001	
बुध	31/01/1994	शुक्र	16/11/1995	सूर्य	22/07/1997	गुरु	01/10/1998	शनि	25/03/2000
शुक्र	11/05/1994	सूर्य	19/01/1996	मंगल	03/09/1997	शनि	04/12/1998	केतु	08/06/2000
सूर्य	11/07/1994	मंगल	30/03/1996	गुरु	19/10/1997	केतु	11/02/1999	चंद्र	26/08/2000
मंगल	15/09/1994	गुरु	14/06/1996	शनि	09/12/1997	चंद्र	25/04/1999	बुध	18/11/2000
गुरु	26/11/1994	शनि	04/09/1996	केतु	31/01/1998	बुध	12/07/1999	शुक्र	14/02/2001
शनि	12/02/1995	केतु	01/12/1996	चंद्र	30/03/1998	शुक्र	03/10/1999	सूर्य	10/04/2001
केतु	06/05/1995	चंद्र	05/03/1997	बुध	30/05/1998	सूर्य	22/11/1999	मंगल	08/06/2001
चंद्र	02/08/1995	बुध	13/06/1997	शुक्र	02/08/1998	मंगल	16/01/2000	गुरु	11/08/2001

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - केतु		गुरु - चंद्र		गुरु - बुध		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य	
11/08/2001		17/04/2003		31/01/2005		28/12/2006		03/01/2009	
17/04/2003		31/01/2005		28/12/2006		03/01/2009		29/03/2010	
केतु	30/10/2001	चंद्र	17/07/2003	बुध	13/05/2005	शुक्र	21/04/2007	सूर्य	15/02/2009
चंद्र	22/01/2002	बुध	21/10/2003	शुक्र	29/08/2005	सूर्य	30/06/2007	मंगल	02/04/2009
बुध	22/04/2002	शुक्र	30/01/2004	सूर्य	03/11/2005	मंगल	15/09/2007	गुरु	23/05/2009
शुक्र	27/07/2002	सूर्य	01/04/2004	मंगल	14/01/2006	गुरु	06/12/2007	शनि	16/07/2009
सूर्य	23/09/2002	मंगल	08/06/2004	गुरु	02/04/2006	शनि	04/03/2008	केतु	12/09/2009
मंगल	25/11/2002	गुरु	21/08/2004	शनि	25/06/2006	केतु	07/06/2008	चंद्र	13/11/2009
गुरु	02/02/2003	शनि	08/11/2004	केतु	23/09/2006	चंद्र	17/09/2008	बुध	18/01/2010
शनि	17/04/2003	केतु	31/01/2005	चंद्र	28/12/2006	बुध	03/01/2009	शुक्र	29/03/2010

गुरु - मंगल		शनि - शनि		शनि - केतु		शनि - चंद्र		शनि - बुध	
29/03/2010		02/08/2011		11/04/2013		01/02/2015		06/01/2017	
02/08/2011		11/04/2013		01/02/2015		06/01/2017		25/01/2019	
मंगल	19/05/2010	शनि	16/10/2011	केतु	05/07/2013	चंद्र	09/05/2015	बुध	26/04/2017
गुरु	13/07/2010	केतु	04/01/2012	चंद्र	04/10/2013	बुध	20/08/2015	शुक्र	20/08/2017
शनि	10/09/2010	चंद्र	29/03/2012	बुध	09/01/2014	शुक्र	08/12/2015	सूर्य	30/10/2017
केतु	13/11/2010	बुध	27/06/2012	शुक्र	22/04/2014	सूर्य	13/02/2016	मंगल	16/01/2018
चंद्र	20/01/2011	शुक्र	01/10/2012	सूर्य	23/06/2014	मंगल	26/04/2016	गुरु	10/04/2018
बुध	02/04/2011	सूर्य	29/11/2012	मंगल	31/08/2014	गुरु	14/07/2016	शनि	09/07/2018
शुक्र	17/06/2011	मंगल	31/01/2013	गुरु	13/11/2014	शनि	07/10/2016	केतु	14/10/2018
सूर्य	02/08/2011	गुरु	11/04/2013	शनि	01/02/2015	केतु	06/01/2017	चंद्र	25/01/2019

शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - मंगल		शनि - गुरु		केतु - केतु	
25/01/2019		29/03/2021		27/07/2022		07/01/2024		02/08/2025	
29/03/2021		27/07/2022		07/01/2024		02/08/2025		11/07/2027	
शुक्र	29/05/2019	सूर्य	14/05/2021	मंगल	20/09/2022	गुरु	11/03/2024	केतु	01/11/2025
सूर्य	12/08/2019	मंगल	03/07/2021	गुरु	18/11/2022	शनि	19/05/2024	चंद्र	07/02/2026
मंगल	02/11/2019	गुरु	26/08/2021	शनि	21/01/2023	केतु	01/08/2024	बुध	22/05/2026
गुरु	30/01/2020	शनि	24/10/2021	केतु	30/03/2023	चंद्र	19/10/2024	शुक्र	09/09/2026
शनि	05/05/2020	केतु	26/12/2021	चंद्र	11/06/2023	बुध	11/01/2025	सूर्य	15/11/2026
केतु	15/08/2020	चंद्र	03/03/2022	बुध	28/08/2023	शुक्र	10/04/2025	मंगल	27/01/2027
चंद्र	03/12/2020	बुध	13/05/2022	शुक्र	18/11/2023	सूर्य	04/06/2025	गुरु	17/04/2027
बुध	29/03/2021	शुक्र	27/07/2022	सूर्य	07/01/2024	मंगल	02/08/2025	शनि	11/07/2027

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - चंद्र		केतु - बुध		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - मंगल	
11/07/2027		05/08/2029		17/10/2031		13/02/2034		18/07/2035	
05/08/2029		17/10/2031		13/02/2034		18/07/2035		03/02/2037	
चंद्र	24/10/2027	बुध	01/12/2029	शुक्र	26/02/2032	सूर्य	03/04/2034	मंगल	14/09/2035
बुध	11/02/2028	शुक्र	04/04/2030	सूर्य	16/05/2032	मंगल	27/05/2034	गुरु	17/11/2035
शुक्र	08/06/2028	सूर्य	19/06/2030	मंगल	12/08/2032	गुरु	24/07/2034	शनि	24/01/2036
सूर्य	18/08/2028	मंगल	10/09/2030	गुरु	16/11/2032	शनि	25/09/2034	केतु	06/04/2036
मंगल	04/11/2028	गुरु	09/12/2030	शनि	26/02/2033	केतु	01/12/2034	चंद्र	24/06/2036
गुरु	28/01/2029	शनि	16/03/2031	केतु	16/06/2033	चंद्र	11/02/2035	बुध	15/09/2036
शनि	29/04/2029	केतु	28/06/2031	चंद्र	12/10/2033	बुध	28/04/2035	शुक्र	12/12/2036
केतु	05/08/2029	चंद्र	17/10/2031	बुध	13/02/2034	शुक्र	18/07/2035	सूर्य	03/02/2037

केतु - गुरु		केतु - शनि		चंद्र - चंद्र		चंद्र - बुध		चंद्र - शुक्र	
03/02/2037		10/10/2038		02/08/2040		17/10/2042		19/02/2045	
10/10/2038		02/08/2040		17/10/2042		19/02/2045		15/08/2047	
गुरु	13/04/2037	शनि	29/12/2038	चंद्र	21/11/2040	बुध	19/02/2043	शुक्र	10/07/2045
शनि	26/06/2037	केतु	25/03/2039	बुध	19/03/2041	शुक्र	02/07/2043	सूर्य	04/10/2045
केतु	14/09/2037	चंद्र	24/06/2039	शुक्र	22/07/2041	सूर्य	21/09/2043	मंगल	06/01/2046
चंद्र	07/12/2037	बुध	29/09/2039	सूर्य	06/10/2041	मंगल	19/12/2043	गुरु	17/04/2046
बुध	07/03/2038	शुक्र	09/01/2040	मंगल	29/12/2041	गुरु	24/03/2044	शनि	05/08/2046
शुक्र	11/06/2038	सूर्य	12/03/2040	गुरु	29/03/2042	शनि	05/07/2044	केतु	30/11/2046
सूर्य	08/08/2038	मंगल	20/05/2040	शनि	04/07/2042	केतु	24/10/2044	चंद्र	04/04/2047
मंगल	10/10/2038	गुरु	02/08/2040	केतु	17/10/2042	चंद्र	19/02/2045	बुध	15/08/2047

चंद्र - सूर्य		चंद्र - मंगल		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - केतु	
15/08/2047		19/02/2049		17/10/2050		02/08/2052		08/07/2054	
19/02/2049		17/10/2050		02/08/2052		08/07/2054		02/08/2056	
सूर्य	07/10/2047	मंगल	23/04/2049	गुरु	29/12/2050	शनि	26/10/2052	केतु	14/10/2054
मंगल	03/12/2047	गुरु	29/06/2049	शनि	18/03/2051	केतु	25/01/2053	चंद्र	26/01/2055
गुरु	03/02/2048	शनि	10/09/2049	केतु	11/06/2051	चंद्र	02/05/2053	बुध	17/05/2055
शनि	10/04/2048	केतु	28/11/2049	चंद्र	09/09/2051	बुध	14/08/2053	शुक्र	11/09/2055
केतु	21/06/2048	चंद्र	19/02/2050	बुध	14/12/2051	शुक्र	01/12/2053	सूर्य	22/11/2055
चंद्र	05/09/2048	बुध	19/05/2050	शुक्र	25/03/2052	सूर्य	06/02/2054	मंगल	08/02/2056
बुध	25/11/2048	शुक्र	20/08/2050	सूर्य	26/05/2052	मंगल	20/04/2054	गुरु	02/05/2056
शुक्र	19/02/2049	सूर्य	17/10/2050	मंगल	02/08/2052	गुरु	08/07/2054	शनि	02/08/2056

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - बुध		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - मंगल		बुध - गुरु	
02/08/2056		29/01/2059		18/09/2061		30/04/2063		31/01/2065	
29/01/2059		18/09/2061		30/04/2063		31/01/2065		28/12/2066	
बुध	13/12/2056	शुक्र	27/06/2059	सूर्य	13/11/2061	मंगल	05/07/2063	गुरु	19/04/2065
शुक्र	03/05/2057	सूर्य	26/09/2059	मंगल	13/01/2062	गुरु	15/09/2063	शनि	12/07/2065
सूर्य	28/07/2057	मंगल	04/01/2060	गुरु	20/03/2062	शनि	02/12/2063	केतु	10/10/2065
मंगल	31/10/2057	गुरु	21/04/2060	शनि	30/05/2062	केतु	23/02/2064	चंद्र	14/01/2066
गुरु	10/02/2058	शनि	15/08/2060	केतु	14/08/2062	चंद्र	22/05/2064	बुध	26/04/2066
शनि	30/05/2058	केतु	18/12/2060	चंद्र	03/11/2062	बुध	24/08/2064	शुक्र	12/08/2066
केतु	25/09/2058	चंद्र	30/04/2061	बुध	29/01/2063	शुक्र	01/12/2064	सूर्य	17/10/2066
चंद्र	29/01/2059	बुध	18/09/2061	शुक्र	30/04/2063	सूर्य	31/01/2065	मंगल	28/12/2066

बुध - शनि		बुध - केतु		बुध - चंद्र		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य	
28/12/2066		16/01/2069		29/03/2071		02/08/2073		18/05/2076	
16/01/2069		29/03/2071		02/08/2073		18/05/2076		01/02/2078	
शनि	29/03/2067	केतु	29/04/2069	चंद्र	26/07/2071	शुक्र	07/01/2074	सूर्य	16/07/2076
केतु	03/07/2067	चंद्र	18/08/2069	बुध	28/11/2071	सूर्य	14/04/2074	मंगल	19/09/2076
चंद्र	15/10/2067	बुध	14/12/2069	शुक्र	09/04/2072	मंगल	28/07/2074	गुरु	28/11/2076
बुध	02/02/2068	शुक्र	17/04/2070	सूर्य	29/06/2072	गुरु	20/11/2074	शनि	11/02/2077
शुक्र	28/05/2068	सूर्य	02/07/2070	मंगल	26/09/2072	शनि	23/03/2075	केतु	02/05/2077
सूर्य	07/08/2068	मंगल	24/09/2070	गुरु	31/12/2072	केतु	02/08/2075	चंद्र	27/07/2077
मंगल	24/10/2068	गुरु	23/12/2070	शनि	13/04/2073	चंद्र	21/12/2075	बुध	27/10/2077
गुरु	16/01/2069	शनि	29/03/2071	केतु	02/08/2073	बुध	18/05/2076	शुक्र	01/02/2078

शुक्र - मंगल		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - केतु		शुक्र - चंद्र	
01/02/2078		13/12/2079		18/12/2081		20/02/2084		19/06/2086	
13/12/2079		18/12/2081		20/02/2084		19/06/2086		12/12/2088	
मंगल	12/04/2078	गुरु	04/03/2080	शनि	24/03/2082	केतु	09/06/2084	चंद्र	22/10/2086
गुरु	27/06/2078	शनि	01/06/2080	केतु	05/07/2082	चंद्र	04/10/2084	बुध	04/03/2087
शनि	17/09/2078	केतु	04/09/2080	चंद्र	22/10/2082	बुध	06/02/2085	शुक्र	23/07/2087
केतु	14/12/2078	चंद्र	15/12/2080	बुध	16/02/2083	शुक्र	18/06/2085	सूर्य	17/10/2087
चंद्र	18/03/2079	बुध	02/04/2081	शुक्र	19/06/2083	सूर्य	06/09/2085	मंगल	19/01/2088
बुध	26/06/2079	शुक्र	25/07/2081	सूर्य	02/09/2083	मंगल	03/12/2085	गुरु	29/04/2088
शुक्र	09/10/2079	सूर्य	03/10/2081	मंगल	23/11/2083	गुरु	08/03/2086	शनि	17/08/2088
सूर्य	13/12/2079	मंगल	18/12/2081	गुरु	20/02/2084	शनि	19/06/2086	केतु	12/12/2088

त्रिभगी दशा

भोग्य दशा काल : गुरु 6 वर्ष 2 मास 15 दिन

गुरु 11 वर्ष		शनि 13 वर्ष		बुध 11 वर्ष		केतु 5 वर्ष		शुक्र 13 वर्ष	
07/03/1980		23/05/1986		22/01/1999		23/05/2010		22/01/2015	
23/05/1986		22/01/1999		23/05/2010		22/01/2015		23/05/2028	
	00/00/0000	शनि	25/05/1988	बुध	30/08/2000	केतु	31/08/2010	शुक्र	12/04/2017
	07/03/1980	बुध	11/03/1990	केतु	29/04/2001	शुक्र	11/06/2011	सूर्य	12/12/2017
बुध	07/05/1980	केतु	06/12/1990	शुक्र	20/03/2003	सूर्य	04/09/2011	चंद्र	22/01/2019
केतु	20/12/1980	शुक्र	15/01/1993	सूर्य	13/10/2003	चंद्र	24/01/2012	मंगल	02/11/2019
शुक्र	30/09/1982	सूर्य	03/09/1993	चंद्र	22/09/2004	मंगल	02/05/2012	राहु	01/11/2021
सूर्य	13/04/1983	चंद्र	24/09/1994	मंगल	21/05/2005	राहु	13/01/2013	गुरु	13/08/2023
चंद्र	03/03/1984	मंगल	21/06/1995	राहु	01/02/2007	गुरु	28/08/2013	शनि	22/09/2025
मंगल	16/10/1984	राहु	15/05/1997	गुरु	06/08/2008	शनि	25/05/2014	बुध	13/08/2027
राहु	23/05/1986	गुरु	22/01/1999	शनि	23/05/2010	बुध	22/01/2015	केतु	23/05/2028

सूर्य 4 वर्ष		चंद्र 7 वर्ष		मंगल 5 वर्ष		राहु 12 वर्ष		गुरु 11 वर्ष	
23/05/2028		23/05/2032		22/01/2039		22/09/2043		22/09/2055	
23/05/2032		22/01/2039		22/09/2043		22/09/2055		00/00/0000	
सूर्य	04/08/2028	चंद्र	12/12/2032	मंगल	01/05/2039	राहु	11/07/2045	गुरु	23/02/2057
चंद्र	04/12/2028	मंगल	03/05/2033	राहु	12/01/2040	गुरु	15/02/2047	शनि	02/11/2058
मंगल	27/02/2029	राहु	03/05/2034	गुरु	26/08/2040	शनि	09/01/2049	बुध	07/03/2060
राहु	04/10/2029	गुरु	24/03/2035	शनि	23/05/2041	बुध	22/09/2050		00/00/0000
गुरु	17/04/2030	शनि	12/04/2036	बुध	19/01/2042	केतु	05/06/2051		00/00/0000
शनि	04/12/2030	बुध	23/03/2037	केतु	29/04/2042	शुक्र	04/06/2053		00/00/0000
बुध	29/06/2031	केतु	12/08/2037	शुक्र	07/02/2043	सूर्य	09/01/2054		00/00/0000
केतु	22/09/2031	शुक्र	22/09/2038	सूर्य	03/05/2043	चंद्र	10/01/2055		00/00/0000
शुक्र	23/05/2032	सूर्य	22/01/2039	चंद्र	22/09/2043	मंगल	22/09/2055		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
त्रिभगी दशा पूरे 80 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र	
07/03/1980		07/05/1980		20/12/1980		30/09/1982		13/04/1983	
07/05/1980		20/12/1980		30/09/1982		13/04/1983		03/03/1984	
00/00/0000	केतु	20/05/1980	शुक्र	07/04/1981	सूर्य	10/10/1982	चंद्र	10/05/1983
00/00/0000	शुक्र	27/06/1980	सूर्य	09/05/1981	चंद्र	26/10/1982	मंगल	29/05/1983
00/00/0000	सूर्य	08/07/1980	चंद्र	03/07/1981	मंगल	06/11/1982	राहु	17/07/1983
00/00/0000	चंद्र	27/07/1980	मंगल	09/08/1981	राहु	06/12/1982	गुरु	29/08/1983
00/00/0000	मंगल	09/08/1980	राहु	15/11/1981	गुरु	01/01/1983	शनि	19/10/1983
00/00/0000	राहु	12/09/1980	गुरु	09/02/1982	शनि	31/01/1983	बुध	04/12/1983
00/00/0000	गुरु	13/10/1980	शनि	23/05/1982	बुध	28/02/1983	केतु	23/12/1983
07/03/1980	शनि	18/11/1980	बुध	23/08/1982	केतु	11/03/1983	शुक्र	15/02/1984
शनि 07/05/1980	बुध	20/12/1980	केतु	30/09/1982	शुक्र	13/04/1983	सूर्य	03/03/1984

गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु	
03/03/1984		16/10/1984		23/05/1986		25/05/1988		11/03/1990	
16/10/1984		23/05/1986		25/05/1988		11/03/1990		06/12/1990	
मंगल	16/03/1984	राहु	12/01/1985	शनि	16/09/1986	बुध	26/08/1988	केतु	27/03/1990
राहु	19/04/1984	गुरु	30/03/1985	बुध	29/12/1986	केतु	03/10/1988	शुक्र	11/05/1990
गुरु	19/05/1984	शनि	01/07/1985	केतु	10/02/1987	शुक्र	20/01/1989	सूर्य	24/05/1990
शनि	24/06/1984	बुध	22/09/1985	शुक्र	12/06/1987	सूर्य	22/02/1989	चंद्र	16/06/1990
बुध	26/07/1984	केतु	26/10/1985	सूर्य	18/07/1987	चंद्र	17/04/1989	मंगल	02/07/1990
केतु	09/08/1984	शुक्र	31/01/1986	चंद्र	18/09/1987	मंगल	26/05/1989	राहु	11/08/1990
शुक्र	16/09/1984	सूर्य	01/03/1986	मंगल	30/10/1987	राहु	01/09/1989	गुरु	16/09/1990
सूर्य	27/09/1984	चंद्र	19/04/1986	राहु	17/02/1988	गुरु	27/11/1989	शनि	29/10/1990
चंद्र	16/10/1984	मंगल	23/05/1986	गुरु	25/05/1988	शनि	11/03/1990	बुध	06/12/1990

शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु	
06/12/1990		15/01/1993		03/09/1993		24/09/1994		21/06/1995	
15/01/1993		03/09/1993		24/09/1994		21/06/1995		15/05/1997	
शुक्र	14/04/1991	सूर्य	27/01/1993	चंद्र	06/10/1993	मंगल	10/10/1994	राहु	03/10/1995
सूर्य	22/05/1991	चंद्र	15/02/1993	मंगल	28/10/1993	राहु	19/11/1994	गुरु	04/01/1996
चंद्र	25/07/1991	मंगल	01/03/1993	राहु	25/12/1993	गुरु	25/12/1994	शनि	22/04/1996
मंगल	08/09/1991	राहु	04/04/1993	गुरु	14/02/1994	शनि	06/02/1995	बुध	30/07/1996
राहु	02/01/1992	गुरु	05/05/1993	शनि	16/04/1994	बुध	16/03/1995	केतु	08/09/1996
गुरु	14/04/1992	शनि	11/06/1993	बुध	10/06/1994	केतु	01/04/1995	शुक्र	02/01/1997
शनि	14/08/1992	बुध	13/07/1993	केतु	03/07/1994	शुक्र	16/05/1995	सूर्य	06/02/1997
बुध	01/12/1992	केतु	27/07/1993	शुक्र	05/09/1994	सूर्य	29/05/1995	चंद्र	04/04/1997
केतु	15/01/1993	शुक्र	03/09/1993	सूर्य	24/09/1994	चंद्र	21/06/1995	मंगल	15/05/1997

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य	
15/05/1997		22/01/1999		30/08/2000		29/04/2001		20/03/2003	
22/01/1999		30/08/2000		29/04/2001		20/03/2003		13/10/2003	
गुरु	05/08/1997	बुध	15/04/1999	केतु	13/09/2000	शुक्र	22/08/2001	सूर्य	30/03/2003
शनि	11/11/1997	केतु	19/05/1999	शुक्र	24/10/2000	सूर्य	25/09/2001	चंद्र	16/04/2003
बुध	06/02/1998	शुक्र	25/08/1999	सूर्य	05/11/2000	चंद्र	22/11/2001	मंगल	28/04/2003
केतु	14/03/1998	सूर्य	23/09/1999	चंद्र	25/11/2000	मंगल	01/01/2002	राहु	29/05/2003
शुक्र	25/06/1998	चंद्र	11/11/1999	मंगल	09/12/2000	राहु	14/04/2002	गुरु	26/06/2003
सूर्य	26/07/1998	मंगल	15/12/1999	राहु	14/01/2001	गुरु	15/07/2002	शनि	29/07/2003
चंद्र	15/09/1998	राहु	12/03/2000	गुरु	15/02/2001	शनि	02/11/2002	बुध	27/08/2003
मंगल	21/10/1998	गुरु	29/05/2000	शनि	25/03/2001	बुध	07/02/2003	केतु	08/09/2003
राहु	22/01/1999	शनि	30/08/2000	बुध	29/04/2001	केतु	20/03/2003	शुक्र	13/10/2003

बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि	
13/10/2003		22/09/2004		21/05/2005		01/02/2007		06/08/2008	
22/09/2004		21/05/2005		01/02/2007		06/08/2008		23/05/2010	
चंद्र	10/11/2003	मंगल	06/10/2004	राहु	22/08/2005	गुरु	15/04/2007	शनि	18/11/2008
मंगल	30/11/2003	राहु	11/11/2004	गुरु	13/11/2005	शनि	12/07/2007	बुध	18/02/2009
राहु	21/01/2004	गुरु	13/12/2004	शनि	19/02/2006	बुध	28/09/2007	केतु	29/03/2009
गुरु	07/03/2004	शनि	20/01/2005	बुध	18/05/2006	केतु	30/10/2007	शुक्र	16/07/2009
शनि	01/05/2004	बुध	23/02/2005	केतु	23/06/2006	शुक्र	30/01/2008	सूर्य	18/08/2009
बुध	19/06/2004	केतु	10/03/2005	शुक्र	05/10/2006	सूर्य	27/02/2008	चंद्र	11/10/2009
केतु	09/07/2004	शुक्र	19/04/2005	सूर्य	05/11/2006	चंद्र	13/04/2008	मंगल	19/11/2009
शुक्र	04/09/2004	सूर्य	01/05/2005	चंद्र	27/12/2006	मंगल	15/05/2008	राहु	25/02/2010
सूर्य	22/09/2004	चंद्र	21/05/2005	मंगल	01/02/2007	राहु	06/08/2008	गुरु	23/05/2010

केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगल	
23/05/2010		31/08/2010		11/06/2011		04/09/2011		24/01/2012	
31/08/2010		11/06/2011		04/09/2011		24/01/2012		02/05/2012	
केतु	29/05/2010	शुक्र	17/10/2010	सूर्य	15/06/2011	चंद्र	16/09/2011	मंगल	30/01/2012
शुक्र	15/06/2010	सूर्य	31/10/2010	चंद्र	22/06/2011	मंगल	24/09/2011	राहु	14/02/2012
सूर्य	20/06/2010	चंद्र	24/11/2010	मंगल	27/06/2011	राहु	15/10/2011	गुरु	27/02/2012
चंद्र	28/06/2010	मंगल	10/12/2010	राहु	10/07/2011	गुरु	03/11/2011	शनि	14/03/2012
मंगल	04/07/2010	राहु	22/01/2011	गुरु	21/07/2011	शनि	26/11/2011	बुध	28/03/2012
राहु	19/07/2010	गुरु	01/03/2011	शनि	04/08/2011	बुध	16/12/2011	केतु	03/04/2012
गुरु	01/08/2010	शनि	15/04/2011	बुध	16/08/2011	केतु	24/12/2011	शुक्र	19/04/2012
शनि	17/08/2010	बुध	25/05/2011	केतु	21/08/2011	शुक्र	17/01/2012	सूर्य	24/04/2012
बुध	31/08/2010	केतु	11/06/2011	शुक्र	04/09/2011	सूर्य	24/01/2012	चंद्र	02/05/2012

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध		शुक्र - शुक्र	
02/05/2012		13/01/2013		28/08/2013		25/05/2014		22/01/2015	
13/01/2013		28/08/2013		25/05/2014		22/01/2015		12/04/2017	
राहु	10/06/2012	गुरु	12/02/2013	शनि	10/10/2013	बुध	28/06/2014	शुक्र	06/06/2015
गुरु	14/07/2012	शनि	20/03/2013	बुध	17/11/2013	केतु	13/07/2014	सूर्य	17/07/2015
शनि	23/08/2012	बुध	22/04/2013	केतु	03/12/2013	शुक्र	22/08/2014	चंद्र	22/09/2015
बुध	29/09/2012	केतु	05/05/2013	शुक्र	17/01/2014	सूर्य	03/09/2014	मंगल	09/11/2015
केतु	14/10/2012	शुक्र	12/06/2013	सूर्य	31/01/2014	चंद्र	23/09/2014	राहु	09/03/2016
शुक्र	25/11/2012	सूर्य	23/06/2013	चंद्र	22/02/2014	मंगल	07/10/2014	गुरु	26/06/2016
सूर्य	08/12/2012	चंद्र	12/07/2013	मंगल	10/03/2014	राहु	12/11/2014	शनि	01/11/2016
चंद्र	29/12/2012	मंगल	25/07/2013	राहु	19/04/2014	गुरु	15/12/2014	बुध	24/02/2017
मंगल	13/01/2013	राहु	28/08/2013	गुरु	25/05/2014	शनि	22/01/2015	केतु	12/04/2017

शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु	
12/04/2017		12/12/2017		22/01/2019		02/11/2019		01/11/2021	
12/12/2017		22/01/2019		02/11/2019		01/11/2021		13/08/2023	
सूर्य	25/04/2017	चंद्र	15/01/2018	मंगल	07/02/2019	राहु	19/02/2020	गुरु	27/01/2022
चंद्र	15/05/2017	मंगल	07/02/2018	राहु	22/03/2019	गुरु	27/05/2020	शनि	10/05/2022
मंगल	29/05/2017	राहु	09/04/2018	गुरु	29/04/2019	शनि	19/09/2020	बुध	10/08/2022
राहु	05/07/2017	गुरु	02/06/2018	शनि	13/06/2019	बुध	01/01/2021	केतु	17/09/2022
गुरु	06/08/2017	शनि	06/08/2018	बुध	23/07/2019	केतु	13/02/2021	शुक्र	03/01/2023
शनि	14/09/2017	बुध	02/10/2018	केतु	09/08/2019	शुक्र	14/06/2021	सूर्य	04/02/2023
बुध	18/10/2017	केतु	26/10/2018	शुक्र	25/09/2019	सूर्य	21/07/2021	चंद्र	30/03/2023
केतु	01/11/2017	शुक्र	01/01/2019	सूर्य	09/10/2019	चंद्र	20/09/2021	मंगल	07/05/2023
शुक्र	12/12/2017	सूर्य	22/01/2019	चंद्र	02/11/2019	मंगल	01/11/2021	राहु	13/08/2023

शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र	
13/08/2023		22/09/2025		13/08/2027		23/05/2028		04/08/2028	
22/09/2025		13/08/2027		23/05/2028		04/08/2028		04/12/2028	
शनि	13/12/2023	बुध	28/12/2025	केतु	29/08/2027	सूर्य	26/05/2028	चंद्र	14/08/2028
बुध	31/03/2024	केतु	07/02/2026	शुक्र	16/10/2027	चंद्र	01/06/2028	मंगल	21/08/2028
केतु	15/05/2024	शुक्र	02/06/2026	सूर्य	30/10/2027	मंगल	06/06/2028	राहु	08/09/2028
शुक्र	20/09/2024	सूर्य	06/07/2026	चंद्र	22/11/2027	राहु	17/06/2028	गुरु	25/09/2028
सूर्य	29/10/2024	चंद्र	02/09/2026	मंगल	09/12/2027	गुरु	26/06/2028	शनि	14/10/2028
चंद्र	01/01/2025	मंगल	12/10/2026	राहु	21/01/2028	शनि	08/07/2028	बुध	31/10/2028
मंगल	15/02/2025	राहु	23/01/2027	गुरु	28/02/2028	बुध	18/07/2028	केतु	07/11/2028
राहु	11/06/2025	गुरु	25/04/2027	शनि	13/04/2028	केतु	23/07/2028	शुक्र	27/11/2028
गुरु	22/09/2025	शनि	13/08/2027	बुध	23/05/2028	शुक्र	04/08/2028	सूर्य	04/12/2028

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध	
04/12/2028		27/02/2029		04/10/2029		17/04/2030		04/12/2030	
27/02/2029		04/10/2029		17/04/2030		04/12/2030		29/06/2031	
मंगल	09/12/2028	राहु	01/04/2029	गुरु	30/10/2029	शनि	23/05/2030	बुध	02/01/2031
राहु	21/12/2028	गुरु	30/04/2029	शनि	30/11/2029	बुध	25/06/2030	केतु	14/01/2031
गुरु	02/01/2029	शनि	04/06/2029	बुध	27/12/2029	केतु	09/07/2030	शुक्र	18/02/2031
शनि	15/01/2029	बुध	05/07/2029	केतु	08/01/2030	शुक्र	16/08/2030	सूर्य	28/02/2031
बुध	27/01/2029	केतु	17/07/2029	शुक्र	09/02/2030	सूर्य	28/08/2030	चंद्र	18/03/2031
केतु	01/02/2029	शुक्र	23/08/2029	सूर्य	19/02/2030	चंद्र	16/09/2030	मंगल	30/03/2031
शुक्र	15/02/2029	सूर्य	03/09/2029	चंद्र	07/03/2030	मंगल	30/09/2030	राहु	30/04/2031
सूर्य	20/02/2029	चंद्र	21/09/2029	मंगल	19/03/2030	राहु	03/11/2030	गुरु	27/05/2031
चंद्र	27/02/2029	मंगल	04/10/2029	राहु	17/04/2030	गुरु	04/12/2030	शनि	29/06/2031

सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु	
29/06/2031		22/09/2031		23/05/2032		12/12/2032		03/05/2033	
22/09/2031		23/05/2032		12/12/2032		03/05/2033		03/05/2034	
केतु	04/07/2031	शुक्र	02/11/2031	चंद्र	09/06/2032	मंगल	20/12/2032	राहु	27/06/2033
शुक्र	18/07/2031	सूर्य	14/11/2031	मंगल	21/06/2032	राहु	10/01/2033	गुरु	14/08/2033
सूर्य	22/07/2031	चंद्र	04/12/2031	राहु	21/07/2032	गुरु	29/01/2033	शनि	11/10/2033
चंद्र	30/07/2031	मंगल	19/12/2031	गुरु	17/08/2032	शनि	21/02/2033	बुध	02/12/2033
मंगल	04/08/2031	राहु	24/01/2032	शनि	18/09/2032	बुध	13/03/2033	केतु	23/12/2033
राहु	16/08/2031	गुरु	26/02/2032	बुध	17/10/2032	केतु	21/03/2033	शुक्र	22/02/2034
गुरु	28/08/2031	शनि	04/04/2032	केतु	29/10/2032	शुक्र	14/04/2033	सूर्य	12/03/2034
शनि	10/09/2031	बुध	09/05/2032	शुक्र	02/12/2032	सूर्य	21/04/2033	चंद्र	12/04/2034
बुध	22/09/2031	केतु	23/05/2032	सूर्य	12/12/2032	चंद्र	03/05/2033	मंगल	03/05/2034

चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र	
03/05/2034		24/03/2035		12/04/2036		23/03/2037		12/08/2037	
24/03/2035		12/04/2036		23/03/2037		12/08/2037		22/09/2038	
गुरु	15/06/2034	शनि	24/05/2035	बुध	31/05/2036	केतु	31/03/2037	शुक्र	19/10/2037
शनि	06/08/2034	बुध	17/07/2035	केतु	20/06/2036	शुक्र	24/04/2037	सूर्य	08/11/2037
बुध	21/09/2034	केतु	09/08/2035	शुक्र	17/08/2036	सूर्य	01/05/2037	चंद्र	12/12/2037
केतु	10/10/2034	शुक्र	12/10/2035	सूर्य	03/09/2036	चंद्र	13/05/2037	मंगल	05/01/2038
शुक्र	03/12/2034	सूर्य	31/10/2035	चंद्र	02/10/2036	मंगल	21/05/2037	राहु	06/03/2038
सूर्य	19/12/2034	चंद्र	02/12/2035	मंगल	22/10/2036	राहु	12/06/2037	गुरु	30/04/2038
चंद्र	15/01/2035	मंगल	25/12/2035	राहु	13/12/2036	गुरु	01/07/2037	शनि	03/07/2038
मंगल	03/02/2035	राहु	21/02/2036	गुरु	28/01/2037	शनि	23/07/2037	बुध	29/08/2038
राहु	24/03/2035	गुरु	12/04/2036	शनि	23/03/2037	बुध	12/08/2037	केतु	22/09/2038

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु		मंगल - शनि	
22/09/2038		22/01/2039		01/05/2039		12/01/2040		26/08/2040	
22/01/2039		01/05/2039		12/01/2040		26/08/2040		23/05/2041	
सूर्य	28/09/2038	मंगल	28/01/2039	राहु	09/06/2039	गुरु	11/02/2040	शनि	08/10/2040
चंद्र	08/10/2038	राहु	11/02/2039	गुरु	13/07/2039	शनि	18/03/2040	बुध	15/11/2040
मंगल	15/10/2038	गुरु	25/02/2039	शनि	22/08/2039	बुध	19/04/2040	केतु	01/12/2040
राहु	03/11/2038	शनि	12/03/2039	बुध	27/09/2039	केतु	03/05/2040	शुक्र	15/01/2041
गुरु	19/11/2038	बुध	27/03/2039	केतु	12/10/2039	शुक्र	09/06/2040	सूर्य	28/01/2041
शनि	08/12/2038	केतु	01/04/2039	शुक्र	24/11/2039	सूर्य	21/06/2040	चंद्र	20/02/2041
बुध	25/12/2038	शुक्र	18/04/2039	सूर्य	07/12/2039	चंद्र	10/07/2040	मंगल	08/03/2041
केतु	01/01/2039	सूर्य	23/04/2039	चंद्र	28/12/2039	मंगल	23/07/2040	राहु	17/04/2041
शुक्र	22/01/2039	चंद्र	01/05/2039	मंगल	12/01/2040	राहु	26/08/2040	गुरु	23/05/2041

मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र	
23/05/2041		19/01/2042		29/04/2042		07/02/2043		03/05/2043	
19/01/2042		29/04/2042		07/02/2043		03/05/2043		22/09/2043	
बुध	26/06/2041	केतु	25/01/2042	शुक्र	15/06/2042	सूर्य	11/02/2043	चंद्र	15/05/2043
केतु	10/07/2041	शुक्र	11/02/2042	सूर्य	29/06/2042	चंद्र	18/02/2043	मंगल	23/05/2043
शुक्र	20/08/2041	सूर्य	16/02/2042	चंद्र	23/07/2042	मंगल	23/02/2043	राहु	14/06/2043
सूर्य	01/09/2041	चंद्र	24/02/2042	मंगल	09/08/2042	राहु	08/03/2043	गुरु	03/07/2043
चंद्र	21/09/2041	मंगल	02/03/2042	राहु	20/09/2042	गुरु	19/03/2043	शनि	25/07/2043
मंगल	05/10/2041	राहु	17/03/2042	गुरु	28/10/2042	शनि	02/04/2043	बुध	14/08/2043
राहु	10/11/2041	गुरु	30/03/2042	शनि	12/12/2042	बुध	14/04/2043	केतु	22/08/2043
गुरु	12/12/2041	शनि	15/04/2042	बुध	21/01/2043	केतु	19/04/2043	शुक्र	15/09/2043
शनि	19/01/2042	बुध	29/04/2042	केतु	07/02/2043	शुक्र	03/05/2043	सूर्य	22/09/2043

राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु	
22/09/2043		11/07/2045		15/02/2047		09/01/2049		22/09/2050	
11/07/2045		15/02/2047		09/01/2049		22/09/2050		05/06/2051	
राहु	30/12/2043	गुरु	27/09/2045	शनि	05/06/2047	बुध	07/04/2049	केतु	07/10/2050
गुरु	27/03/2044	शनि	28/12/2045	बुध	11/09/2047	केतु	13/05/2049	शुक्र	19/11/2050
शनि	09/07/2044	बुध	21/03/2046	केतु	22/10/2047	शुक्र	25/08/2049	सूर्य	01/12/2050
बुध	10/10/2044	केतु	24/04/2046	शुक्र	14/02/2048	सूर्य	25/09/2049	चंद्र	23/12/2050
केतु	17/11/2044	शुक्र	30/07/2046	सूर्य	20/03/2048	चंद्र	16/11/2049	मंगल	07/01/2051
शुक्र	07/03/2045	सूर्य	29/08/2046	चंद्र	17/05/2048	मंगल	22/12/2049	राहु	14/02/2051
सूर्य	09/04/2045	चंद्र	16/10/2046	मंगल	26/06/2048	राहु	25/03/2050	गुरु	20/03/2051
चंद्र	02/06/2045	मंगल	19/11/2046	राहु	09/10/2048	गुरु	16/06/2050	शनि	29/04/2051
मंगल	11/07/2045	राहु	15/02/2047	गुरु	09/01/2049	शनि	22/09/2050	बुध	05/06/2051

अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 15 वर्ष 2 मास 20 दिन

बुध 17 वर्ष		शनि 10 वर्ष		गुरु 19 वर्ष		राहु 12 वर्ष		शुक्र 21 वर्ष	
07/03/1980		29/05/1995		28/05/2005		28/05/2024		28/05/2036	
29/05/1995		28/05/2005		28/05/2024		28/05/2036		28/05/2057	
बुध	30/01/1981	शनि	01/05/1996	गुरु	30/09/2008	राहु	27/09/2025	शुक्र	28/06/2040
शनि	28/08/1982	गुरु	03/02/1998	राहु	10/11/2010	शुक्र	27/01/2028	सूर्य	28/08/2041
गुरु	24/08/1985	राहु	15/03/1999	शुक्र	22/07/2014	सूर्य	27/09/2028	चंद्र	28/07/2044
राहु	15/07/1987	शुक्र	23/02/2001	सूर्य	11/08/2015	चंद्र	29/05/2030	मंगल	16/02/2046
शुक्र	04/11/1990	सूर्य	14/09/2001	चंद्र	01/04/2018	मंगल	18/04/2031	बुध	08/06/2049
सूर्य	15/10/1991	चंद्र	03/02/2003	मंगल	28/08/2019	बुध	08/03/2033	शनि	19/05/2051
चंद्र	23/02/1994	मंगल	31/10/2003	बुध	25/08/2022	शनि	18/04/2034	गुरु	27/01/2055
मंगल	29/05/1995	बुध	28/05/2005	शनि	28/05/2024	गुरु	28/05/2036	राहु	28/05/2057

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 15 वर्ष		मंगल 8 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
28/05/2057		29/05/2063		29/05/2078		29/05/2086	
29/05/2063		29/05/2078		29/05/2086		00/00/0000	
सूर्य	27/09/2057	चंद्र	28/06/2065	मंगल	31/12/2078	बुध	07/03/2088
चंद्र	28/07/2058	मंगल	08/08/2066	बुध	04/04/2080		00/00/0000
मंगल	07/01/2059	बुध	17/12/2068	शनि	31/12/2080		00/00/0000
बुध	18/12/2059	शनि	08/05/2070	गुरु	29/05/2082		00/00/0000
शनि	08/07/2060	गुरु	27/12/2072	राहु	18/04/2083		00/00/0000
गुरु	28/07/2061	राहु	28/08/2074	शुक्र	06/11/2084		00/00/0000
राहु	29/03/2062	शुक्र	28/07/2077	सूर्य	18/04/2085		00/00/0000
शुक्र	29/05/2063	सूर्य	29/05/2078	चंद्र	29/05/2086		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - बुध		बुध - शनि		बुध - गुरु		बुध - राहु		बुध - शुक्र	
07/03/1980		30/01/1981		28/08/1982		24/08/1985		15/07/1987	
30/01/1981		28/08/1982		24/08/1985		15/07/1987		04/11/1990	
	00/00/0000	शनि	24/03/1981	गुरु	08/03/1983	राहु	09/11/1985	शुक्र	06/03/1988
	00/00/0000	गुरु	03/07/1981	राहु	07/07/1983	शुक्र	23/03/1986	सूर्य	12/05/1988
	00/00/0000	राहु	05/09/1981	शुक्र	05/02/1984	सूर्य	30/04/1986	चंद्र	27/10/1988
	07/03/1980	शुक्र	26/12/1981	सूर्य	06/04/1984	चंद्र	04/08/1986	मंगल	24/01/1989
शुक्र	13/05/1980	सूर्य	27/01/1982	चंद्र	04/09/1984	मंगल	24/09/1986	बुध	02/08/1989
सूर्य	06/07/1980	चंद्र	17/04/1982	मंगल	24/11/1984	बुध	11/01/1987	शनि	22/11/1989
चंद्र	19/11/1980	मंगल	29/05/1982	बुध	15/05/1985	शनि	16/03/1987	गुरु	22/06/1990
मंगल	30/01/1981	बुध	28/08/1982	शनि	24/08/1985	गुरु	15/07/1987	राहु	04/11/1990

बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल		शनि - शनि		शनि - गुरु	
04/11/1990		15/10/1991		23/02/1994		29/05/1995		01/05/1996	
15/10/1991		23/02/1994		29/05/1995		01/05/1996		03/02/1998	
सूर्य	23/11/1990	चंद्र	11/02/1992	मंगल	29/03/1994	शनि	29/06/1995	गुरु	22/08/1996
चंद्र	10/01/1991	मंगल	15/04/1992	बुध	09/06/1994	गुरु	28/08/1995	राहु	02/11/1996
मंगल	04/02/1991	बुध	29/08/1992	शनि	22/07/1994	राहु	04/10/1995	शुक्र	06/03/1997
बुध	30/03/1991	शनि	17/11/1992	गुरु	11/10/1994	शुक्र	09/12/1995	सूर्य	11/04/1997
शनि	01/05/1991	गुरु	18/04/1993	राहु	01/12/1994	सूर्य	28/12/1995	चंद्र	09/07/1997
गुरु	01/07/1991	राहु	22/07/1993	शुक्र	28/02/1995	चंद्र	13/02/1996	मंगल	26/08/1997
राहु	08/08/1991	शुक्र	06/01/1994	सूर्य	26/03/1995	मंगल	09/03/1996	बुध	05/12/1997
शुक्र	15/10/1991	सूर्य	23/02/1994	चंद्र	29/05/1995	बुध	01/05/1996	शनि	03/02/1998

शनि - राहु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल	
03/02/1998		15/03/1999		23/02/2001		14/09/2001		03/02/2003	
15/03/1999		23/02/2001		14/09/2001		03/02/2003		31/10/2003	
राहु	20/03/1998	शुक्र	01/08/1999	सूर्य	06/03/2001	चंद्र	23/11/2001	मंगल	23/02/2003
शुक्र	07/06/1998	सूर्य	09/09/1999	चंद्र	03/04/2001	मंगल	31/12/2001	बुध	07/04/2003
सूर्य	29/06/1998	चंद्र	17/12/1999	मंगल	18/04/2001	बुध	20/03/2002	शनि	02/05/2003
चंद्र	25/08/1998	मंगल	07/02/2000	बुध	20/05/2001	शनि	06/05/2002	गुरु	18/06/2003
मंगल	24/09/1998	बुध	29/05/2000	शनि	08/06/2001	गुरु	04/08/2002	राहु	18/07/2003
बुध	26/11/1998	शनि	03/08/2000	गुरु	14/07/2001	राहु	29/09/2002	शुक्र	09/09/2003
शनि	03/01/1999	गुरु	06/12/2000	राहु	05/08/2001	शुक्र	06/01/2003	सूर्य	24/09/2003
गुरु	15/03/1999	राहु	23/02/2001	शुक्र	14/09/2001	सूर्य	03/02/2003	चंद्र	31/10/2003

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - बुध		गुरु - गुरु		गुरु - राहु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य	
31/10/2003		28/05/2005		30/09/2008		10/11/2010		22/07/2014	
28/05/2005		30/09/2008		10/11/2010		22/07/2014		11/08/2015	
बुध	30/01/2004	गुरु	29/12/2005	राहु	25/12/2008	शुक्र	31/07/2011	सूर्य	12/08/2014
शनि	23/03/2004	राहु	14/05/2006	शुक्र	24/05/2009	सूर्य	14/10/2011	चंद्र	05/10/2014
गुरु	02/07/2004	शुक्र	06/01/2007	सूर्य	06/07/2009	चंद्र	18/04/2012	मंगल	02/11/2014
राहु	04/09/2004	सूर्य	15/03/2007	चंद्र	21/10/2009	मंगल	27/07/2012	बुध	02/01/2015
शुक्र	25/12/2004	चंद्र	01/09/2007	मंगल	17/12/2009	बुध	24/02/2013	शनि	07/02/2015
सूर्य	26/01/2005	मंगल	30/11/2007	बुध	17/04/2010	शनि	29/06/2013	गुरु	15/04/2015
चंद्र	16/04/2005	बुध	09/06/2008	शनि	28/06/2010	गुरु	22/02/2014	राहु	28/05/2015
मंगल	28/05/2005	शनि	30/09/2008	गुरु	10/11/2010	राहु	22/07/2014	शुक्र	11/08/2015

गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - बुध		गुरु - शनि		राहु - राहु	
11/08/2015		01/04/2018		28/08/2019		25/08/2022		28/05/2024	
01/04/2018		28/08/2019		25/08/2022		28/05/2024		27/09/2025	
चंद्र	23/12/2015	मंगल	09/05/2018	बुध	16/02/2020	शनि	23/10/2022	राहु	21/07/2024
मंगल	04/03/2016	बुध	29/07/2018	शनि	27/05/2020	गुरु	13/02/2023	शुक्र	24/10/2024
बुध	02/08/2016	शनि	15/09/2018	गुरु	05/12/2020	राहु	25/04/2023	सूर्य	20/11/2024
शनि	31/10/2016	गुरु	14/12/2018	राहु	06/04/2021	शुक्र	28/08/2023	चंद्र	27/01/2025
गुरु	18/04/2017	राहु	09/02/2019	शुक्र	04/11/2021	सूर्य	03/10/2023	मंगल	04/03/2025
राहु	03/08/2017	शुक्र	20/05/2019	सूर्य	04/01/2022	चंद्र	31/12/2023	बुध	19/05/2025
शुक्र	07/02/2018	सूर्य	18/06/2019	चंद्र	05/06/2022	मंगल	17/02/2024	शनि	03/07/2025
सूर्य	01/04/2018	चंद्र	28/08/2019	मंगल	25/08/2022	बुध	28/05/2024	गुरु	27/09/2025

राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल		राहु - बुध	
27/09/2025		27/01/2028		27/09/2028		29/05/2030		18/04/2031	
27/01/2028		27/09/2028		29/05/2030		18/04/2031		08/03/2033	
शुक्र	12/03/2026	सूर्य	10/02/2028	चंद्र	20/12/2028	मंगल	22/06/2030	बुध	05/08/2031
सूर्य	28/04/2026	चंद्र	15/03/2028	मंगल	04/02/2029	बुध	12/08/2030	शनि	08/10/2031
चंद्र	25/08/2026	मंगल	02/04/2028	बुध	10/05/2029	शनि	11/09/2030	गुरु	06/02/2032
मंगल	27/10/2026	बुध	10/05/2028	शनि	06/07/2029	गुरु	07/11/2030	राहु	23/04/2032
बुध	10/03/2027	शनि	02/06/2028	गुरु	21/10/2029	राहु	13/12/2030	शुक्र	04/09/2032
शनि	28/05/2027	गुरु	14/07/2028	राहु	27/12/2029	शुक्र	14/02/2031	सूर्य	12/10/2032
गुरु	25/10/2027	राहु	11/08/2028	शुक्र	25/04/2030	सूर्य	04/03/2031	चंद्र	16/01/2033
राहु	27/01/2028	शुक्र	27/09/2028	सूर्य	29/05/2030	चंद्र	18/04/2031	मंगल	08/03/2033

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - शनि		राहु - गुरु		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र	
08/03/2033		18/04/2034		28/05/2036		28/06/2040		28/08/2041	
18/04/2034		28/05/2036		28/06/2040		28/08/2041		28/07/2044	
शनि	15/04/2033	गुरु	01/09/2034	शुक्र	14/03/2037	सूर्य	21/07/2040	चंद्र	23/01/2042
गुरु	25/06/2033	राहु	25/11/2034	सूर्य	05/06/2037	चंद्र	18/09/2040	मंगल	12/04/2042
राहु	09/08/2033	शुक्र	24/04/2035	चंद्र	29/12/2037	मंगल	20/10/2040	बुध	26/09/2042
शुक्र	27/10/2033	सूर्य	06/06/2035	मंगल	19/04/2038	बुध	26/12/2040	शनि	03/01/2043
सूर्य	19/11/2033	चंद्र	21/09/2035	बुध	09/12/2038	शनि	04/02/2041	गुरु	09/07/2043
चंद्र	14/01/2034	मंगल	17/11/2035	शनि	26/04/2039	गुरु	19/04/2041	राहु	05/11/2043
मंगल	13/02/2034	बुध	18/03/2036	गुरु	14/01/2040	राहु	06/06/2041	शुक्र	30/05/2044
बुध	18/04/2034	शनि	28/05/2036	राहु	28/06/2040	शुक्र	28/08/2041	सूर्य	28/07/2044

शुक्र - मंगल		शुक्र - बुध		शुक्र - शनि		शुक्र - गुरु		शुक्र - राहु	
28/07/2044		16/02/2046		08/06/2049		19/05/2051		27/01/2055	
16/02/2046		08/06/2049		19/05/2051		27/01/2055		28/05/2057	
मंगल	08/09/2044	बुध	25/08/2046	शनि	12/08/2049	गुरु	11/01/2052	राहु	02/05/2055
बुध	07/12/2044	शनि	15/12/2046	गुरु	15/12/2049	राहु	09/06/2052	शुक्र	15/10/2055
शनि	28/01/2045	गुरु	15/07/2047	राहु	04/03/2050	शुक्र	26/02/2053	सूर्य	01/12/2055
गुरु	08/05/2045	राहु	27/11/2047	शुक्र	20/07/2050	सूर्य	12/05/2053	चंद्र	28/03/2056
राहु	10/07/2045	शुक्र	18/07/2048	सूर्य	29/08/2050	चंद्र	16/11/2053	मंगल	30/05/2056
शुक्र	29/10/2045	सूर्य	23/09/2048	चंद्र	05/12/2050	मंगल	24/02/2054	बुध	12/10/2056
सूर्य	29/11/2045	चंद्र	10/03/2049	मंगल	27/01/2051	बुध	24/09/2054	शनि	29/12/2056
चंद्र	16/02/2046	मंगल	08/06/2049	बुध	19/05/2051	शनि	27/01/2055	गुरु	28/05/2057

सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - बुध		सूर्य - शनि	
28/05/2057		27/09/2057		28/07/2058		07/01/2059		18/12/2059	
27/09/2057		28/07/2058		07/01/2059		18/12/2059		08/07/2060	
सूर्य	04/06/2057	चंद्र	08/11/2057	मंगल	10/08/2058	बुध	02/03/2059	शनि	06/01/2060
चंद्र	21/06/2057	मंगल	01/12/2057	बुध	04/09/2058	शनि	03/04/2059	गुरु	10/02/2060
मंगल	30/06/2057	बुध	18/01/2058	शनि	19/09/2058	गुरु	03/06/2059	राहु	04/03/2060
बुध	19/07/2057	शनि	15/02/2058	गुरु	18/10/2058	राहु	11/07/2059	शुक्र	12/04/2060
शनि	31/07/2057	गुरु	10/04/2058	राहु	05/11/2058	शुक्र	16/09/2059	सूर्य	24/04/2060
गुरु	21/08/2057	राहु	13/05/2058	शुक्र	06/12/2058	सूर्य	05/10/2059	चंद्र	22/05/2060
राहु	03/09/2057	शुक्र	12/07/2058	सूर्य	15/12/2058	चंद्र	22/11/2059	मंगल	06/06/2060
शुक्र	27/09/2057	सूर्य	28/07/2058	चंद्र	07/01/2059	मंगल	18/12/2059	बुध	08/07/2060

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - गुरु		सूर्य - राहु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल	
08/07/2060		28/07/2061		29/03/2062		29/05/2063		28/06/2065	
28/07/2061		29/03/2062		29/05/2063		28/06/2065		08/08/2066	
गुरु	14/09/2060	राहु	24/08/2061	शुक्र	20/06/2062	चंद्र	12/09/2063	मंगल	28/07/2065
राहु	26/10/2060	शुक्र	11/10/2061	सूर्य	13/07/2062	मंगल	07/11/2063	बुध	30/09/2065
शुक्र	09/01/2061	सूर्य	24/10/2061	चंद्र	10/09/2062	बुध	06/03/2064	शनि	06/11/2065
सूर्य	31/01/2061	चंद्र	27/11/2061	मंगल	12/10/2062	शनि	15/05/2064	गुरु	17/01/2066
चंद्र	25/03/2061	मंगल	15/12/2061	बुध	18/12/2062	गुरु	26/09/2064	राहु	03/03/2066
मंगल	23/04/2061	बुध	22/01/2062	शनि	27/01/2063	राहु	20/12/2064	शुक्र	21/05/2066
बुध	23/06/2061	शनि	14/02/2062	गुरु	12/04/2063	शुक्र	17/05/2065	सूर्य	12/06/2066
शनि	28/07/2061	गुरु	29/03/2062	राहु	29/05/2063	सूर्य	28/06/2065	चंद्र	08/08/2066

चंद्र - बुध		चंद्र - शनि		चंद्र - गुरु		चंद्र - राहु		चंद्र - शुक्र	
08/08/2066		17/12/2068		08/05/2070		27/12/2072		28/08/2074	
17/12/2068		08/05/2070		27/12/2072		28/08/2074		28/07/2077	
बुध	21/12/2066	शनि	02/02/2069	गुरु	25/10/2070	राहु	05/03/2073	शुक्र	23/03/2075
शनि	11/03/2067	गुरु	02/05/2069	राहु	09/02/2071	शुक्र	01/07/2073	सूर्य	21/05/2075
गुरु	10/08/2067	राहु	28/06/2069	शुक्र	15/08/2071	सूर्य	04/08/2073	चंद्र	16/10/2075
राहु	14/11/2067	शुक्र	04/10/2069	सूर्य	08/10/2071	चंद्र	28/10/2073	मंगल	03/01/2076
शुक्र	29/04/2068	सूर्य	01/11/2069	चंद्र	19/02/2072	मंगल	12/12/2073	बुध	19/06/2076
सूर्य	16/06/2068	चंद्र	11/01/2070	मंगल	30/04/2072	बुध	17/03/2074	शनि	25/09/2076
चंद्र	14/10/2068	मंगल	17/02/2070	बुध	29/09/2072	शनि	13/05/2074	गुरु	01/04/2077
मंगल	17/12/2068	बुध	08/05/2070	शनि	27/12/2072	गुरु	28/08/2074	राहु	28/07/2077

चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - बुध		मंगल - शनि		मंगल - गुरु	
28/07/2077		29/05/2078		31/12/2078		04/04/2080		31/12/2080	
29/05/2078		31/12/2078		04/04/2080		31/12/2080		29/05/2082	
सूर्य	14/08/2077	मंगल	14/06/2078	बुध	13/03/2079	शनि	29/04/2080	गुरु	31/03/2081
चंद्र	25/09/2077	बुध	18/07/2078	शनि	25/04/2079	गुरु	16/06/2080	राहु	27/05/2081
मंगल	18/10/2077	शनि	07/08/2078	गुरु	15/07/2079	राहु	16/07/2080	शुक्र	04/09/2081
बुध	05/12/2077	गुरु	14/09/2078	राहु	04/09/2079	शुक्र	06/09/2080	सूर्य	03/10/2081
शनि	02/01/2078	राहु	08/10/2078	शुक्र	03/12/2079	सूर्य	21/09/2080	चंद्र	13/12/2081
गुरु	25/02/2078	शुक्र	19/11/2078	सूर्य	28/12/2079	चंद्र	29/10/2080	मंगल	20/01/2082
राहु	30/03/2078	सूर्य	01/12/2078	चंद्र	01/03/2080	मंगल	18/11/2080	बुध	11/04/2082
शुक्र	29/05/2078	चंद्र	31/12/2078	मंगल	04/04/2080	बुध	31/12/2080	शनि	29/05/2082

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : धान्या 1 वर्ष 8 मास 29 दिन

धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष	
07/03/1980		05/12/1981		05/12/1985		05/12/1990		05/12/1996	
05/12/1981		05/12/1985		05/12/1990		05/12/1996		06/12/2003	
	00/00/0000	भ्राम	16/05/1982	भद्रि	16/08/1986	उल्क	06/12/1991	सिद्ध	16/04/1998
	00/00/0000	भद्रि	05/12/1982	उल्क	16/06/1987	सिद्ध	04/02/1993	संक	05/11/1999
	07/03/1980	उल्क	06/08/1983	सिद्ध	05/06/1988	संक	06/06/1994	मंग	15/01/2000
उल्क	05/06/1980	सिद्ध	16/05/1984	संक	16/07/1989	मंग	06/08/1994	पिंग	05/06/2000
सिद्ध	04/01/1981	संक	06/04/1985	मंग	05/09/1989	पिंग	05/12/1994	धांय	04/01/2001
संक	05/09/1981	मंग	16/05/1985	पिंग	15/12/1989	धांय	06/06/1995	भ्राम	15/10/2001
मंग	05/10/1981	पिंग	05/08/1985	धांय	16/05/1990	भ्राम	05/02/1996	भद्रि	06/10/2002
पिंग	05/12/1981	धांय	05/12/1985	भ्राम	05/12/1990	भद्रि	05/12/1996	उल्क	06/12/2003

संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष	
06/12/2003		06/12/2011		05/12/2012		05/12/2014		05/12/2017	
06/12/2011		05/12/2012		05/12/2014		05/12/2017		05/12/2021	
संक	15/09/2005	मंग	16/12/2011	पिंग	14/01/2013	धांय	07/03/2015	भ्राम	16/05/2018
मंग	05/12/2005	पिंग	05/01/2012	धांय	16/03/2013	भ्राम	06/07/2015	भद्रि	05/12/2018
पिंग	16/05/2006	धांय	05/02/2012	भ्राम	06/06/2013	भद्रि	06/12/2015	उल्क	06/08/2019
धांय	15/01/2007	भ्राम	16/03/2012	भद्रि	15/09/2013	उल्क	05/06/2016	सिद्ध	16/05/2020
भ्राम	06/12/2007	भद्रि	06/05/2012	उल्क	15/01/2014	सिद्ध	04/01/2017	संक	06/04/2021
भद्रि	14/01/2009	उल्क	06/07/2012	सिद्ध	06/06/2014	संक	05/09/2017	मंग	16/05/2021
उल्क	16/05/2010	सिद्ध	15/09/2012	संक	15/11/2014	मंग	05/10/2017	पिंग	05/08/2021
सिद्ध	06/12/2011	संक	05/12/2012	मंग	05/12/2014	पिंग	05/12/2017	धांय	05/12/2021

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष	
05/12/2021		05/12/2026		05/12/2032		06/12/2039		06/12/2047	
05/12/2026		05/12/2032		06/12/2039		06/12/2047		05/12/2048	
भद्रि	16/08/2022	उल्क	06/12/2027	सिद्ध	16/04/2034	संक	15/09/2041	मंग	16/12/2047
उल्क	16/06/2023	सिद्ध	04/02/2029	संक	05/11/2035	मंग	05/12/2041	पिंग	05/01/2048
सिद्ध	05/06/2024	संक	06/06/2030	मंग	15/01/2036	पिंग	16/05/2042	धांय	05/02/2048
संक	16/07/2025	मंग	06/08/2030	पिंग	05/06/2036	धांय	15/01/2043	भ्राम	16/03/2048
मंग	05/09/2025	पिंग	05/12/2030	धांय	04/01/2037	भ्राम	06/12/2043	भद्रि	06/05/2048
पिंग	15/12/2025	धांय	06/06/2031	भ्राम	15/10/2037	भद्रि	14/01/2045	उल्क	06/07/2048
धांय	16/05/2026	भ्राम	05/02/2032	भद्रि	06/10/2038	उल्क	16/05/2046	सिद्ध	15/09/2048
भ्राम	05/12/2026	भद्रि	05/12/2032	उल्क	06/12/2039	सिद्ध	06/12/2047	संक	05/12/2048

पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष	
05/12/2048		05/12/2050		05/12/2053		05/12/2057		05/12/2062	
05/12/2050		05/12/2053		05/12/2057		05/12/2062		05/12/2068	
पिंग	14/01/2049	धांय	07/03/2051	भ्राम	16/05/2054	भद्रि	16/08/2058	उल्क	06/12/2063
धांय	16/03/2049	भ्राम	06/07/2051	भद्रि	05/12/2054	उल्क	16/06/2059	सिद्ध	04/02/2065
भ्राम	06/06/2049	भद्रि	06/12/2051	उल्क	06/08/2055	सिद्ध	05/06/2060	संक	06/06/2066
भद्रि	15/09/2049	उल्क	05/06/2052	सिद्ध	16/05/2056	संक	16/07/2061	मंग	06/08/2066
उल्क	15/01/2050	सिद्ध	04/01/2053	संक	06/04/2057	मंग	05/09/2061	पिंग	05/12/2066
सिद्ध	06/06/2050	संक	05/09/2053	मंग	16/05/2057	पिंग	15/12/2061	धांय	06/06/2067
संक	15/11/2050	मंग	05/10/2053	पिंग	05/08/2057	धांय	16/05/2062	भ्राम	05/02/2068
मंग	05/12/2050	पिंग	05/12/2053	धांय	05/12/2057	भ्राम	05/12/2062	भद्रि	05/12/2068

सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
05/12/2068		06/12/2075		06/12/2083		05/12/2084		05/12/2086	
06/12/2075		06/12/2083		05/12/2084		05/12/2086		00/00/0000	
सिद्ध	16/04/2070	संक	15/09/2077	मंग	16/12/2083	पिंग	14/01/2085	धांय	07/03/2087
संक	05/11/2071	मंग	05/12/2077	पिंग	05/01/2084	धांय	16/03/2085	भ्राम	06/07/2087
मंग	15/01/2072	पिंग	16/05/2078	धांय	05/02/2084	भ्राम	06/06/2085	भद्रि	06/12/2087
पिंग	05/06/2072	धांय	15/01/2079	भ्राम	16/03/2084	भद्रि	15/09/2085	उल्क	07/03/2088
धांय	04/01/2073	भ्राम	06/12/2079	भद्रि	06/05/2084	उल्क	15/01/2086		00/00/0000
भ्राम	15/10/2073	भद्रि	14/01/2081	उल्क	06/07/2084	सिद्ध	06/06/2086		00/00/0000
भद्रि	06/10/2074	उल्क	16/05/2082	सिद्ध	15/09/2084	संक	15/11/2086		00/00/0000
उल्क	06/12/2075	सिद्ध	06/12/2083	संक	05/12/2084	मंग	05/12/2086		00/00/0000

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

भद्रि - धांय		भद्रि - भ्राम		उल्क - उल्क		उल्क - सिद्ध		उल्क - संक	
15/12/2025		16/05/2026		05/12/2026		06/12/2027		04/02/2029	
16/05/2026		05/12/2026		06/12/2027		04/02/2029		06/06/2030	
धांय	28/12/2025	भ्राम	08/06/2026	उल्क	04/02/2027	सिद्ध	27/02/2028	संक	23/05/2029
भ्राम	14/01/2026	भद्रि	06/07/2026	सिद्ध	16/04/2027	संक	31/05/2028	मंग	06/06/2029
भद्रि	04/02/2026	उल्क	09/08/2026	संक	06/07/2027	मंग	12/06/2028	पिंग	03/07/2029
उल्क	01/03/2026	सिद्ध	17/09/2026	मंग	17/07/2027	पिंग	06/07/2028	धांय	12/08/2029
सिद्ध	31/03/2026	संक	02/11/2026	पिंग	06/08/2027	धांय	10/08/2028	भ्राम	05/10/2029
संक	04/05/2026	मंग	07/11/2026	धांय	05/09/2027	भ्राम	27/09/2028	भद्रि	12/12/2029
मंग	08/05/2026	पिंग	18/11/2026	भ्राम	16/10/2027	भद्रि	25/11/2028	उल्क	03/03/2030
पिंग	16/05/2026	धांय	05/12/2026	भद्रि	06/12/2027	उल्क	04/02/2029	सिद्ध	06/06/2030

उल्क - मंग		उल्क - पिंग		उल्क - धांय		उल्क - भ्राम		उल्क - भद्रि	
06/06/2030		06/08/2030		05/12/2030		06/06/2031		05/02/2032	
06/08/2030		05/12/2030		06/06/2031		05/02/2032		05/12/2032	
मंग	07/06/2030	पिंग	12/08/2030	धांय	21/12/2030	भ्राम	03/07/2031	भद्रि	18/03/2032
पिंग	11/06/2030	धांय	23/08/2030	भ्राम	10/01/2031	भद्रि	06/08/2031	उल्क	08/05/2032
धांय	16/06/2030	भ्राम	05/09/2030	भद्रि	04/02/2031	उल्क	15/09/2031	सिद्ध	06/07/2032
भ्राम	23/06/2030	भद्रि	22/09/2030	उल्क	07/03/2031	सिद्ध	02/11/2031	संक	11/09/2032
भद्रि	01/07/2030	उल्क	12/10/2030	सिद्ध	11/04/2031	संक	26/12/2031	मंग	20/09/2032
उल्क	11/07/2030	सिद्ध	05/11/2030	संक	22/05/2031	मंग	02/01/2032	पिंग	07/10/2032
सिद्ध	23/07/2030	संक	02/12/2030	मंग	27/05/2031	पिंग	15/01/2032	धांय	01/11/2032
संक	06/08/2030	मंग	05/12/2030	पिंग	06/06/2031	धांय	05/02/2032	भ्राम	05/12/2032

सिद्ध - सिद्ध		सिद्ध - संक		सिद्ध - मंग		सिद्ध - पिंग		सिद्ध - धांय	
05/12/2032		16/04/2034		05/11/2035		15/01/2036		05/06/2036	
16/04/2034		05/11/2035		15/01/2036		05/06/2036		04/01/2037	
सिद्ध	12/03/2033	संक	20/08/2034	मंग	07/11/2035	पिंग	23/01/2036	धांय	23/06/2036
संक	30/06/2033	मंग	05/09/2034	पिंग	11/11/2035	धांय	04/02/2036	भ्राम	17/07/2036
मंग	14/07/2033	पिंग	07/10/2034	धांय	17/11/2035	भ्राम	20/02/2036	भद्रि	15/08/2036
पिंग	10/08/2033	धांय	23/11/2034	भ्राम	25/11/2035	भद्रि	10/03/2036	उल्क	20/09/2036
धांय	21/09/2033	भ्राम	25/01/2035	भद्रि	05/12/2035	उल्क	03/04/2036	सिद्ध	31/10/2036
भ्राम	15/11/2033	भद्रि	14/04/2035	उल्क	17/12/2035	सिद्ध	01/05/2036	संक	18/12/2036
भद्रि	23/01/2034	उल्क	18/07/2035	सिद्ध	30/12/2035	संक	01/06/2036	मंग	24/12/2036
उल्क	16/04/2034	सिद्ध	05/11/2035	संक	15/01/2036	मंग	05/06/2036	पिंग	04/01/2037

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

सिद्ध - भ्राम		सिद्ध - भद्रि		सिद्ध - उल्क		संक - संक		संक - मंग	
04/01/2037		15/10/2037		06/10/2038		06/12/2039		15/09/2041	
15/10/2037		06/10/2038		06/12/2039		15/09/2041		05/12/2041	
भ्राम	05/02/2037	भद्रि	04/12/2037	उल्क	16/12/2038	संक	28/04/2040	मंग	17/09/2041
भद्रि	16/03/2037	उल्क	01/02/2038	सिद्ध	08/03/2039	मंग	16/05/2040	पिंग	22/09/2041
उल्क	03/05/2037	सिद्ध	11/04/2038	संक	11/06/2039	पिंग	21/06/2040	धांय	29/09/2041
सिद्ध	27/06/2037	संक	29/06/2038	मंग	23/06/2039	धांय	14/08/2040	भ्राम	08/10/2041
संक	29/08/2037	मंग	09/07/2038	पिंग	17/07/2039	भ्राम	25/10/2040	भद्रि	19/10/2041
मंग	06/09/2037	पिंग	28/07/2038	धांय	21/08/2039	भद्रि	24/01/2041	उल्क	01/11/2041
पिंग	22/09/2037	धांय	27/08/2038	भ्राम	07/10/2039	उल्क	12/05/2041	सिद्ध	17/11/2041
धांय	15/10/2037	भ्राम	06/10/2038	भद्रि	06/12/2039	सिद्ध	15/09/2041	संक	05/12/2041

संक - पिंग		संक - धांय		संक - भ्राम		संक - भद्रि		संक - उल्क	
05/12/2041		16/05/2042		15/01/2043		06/12/2043		14/01/2045	
16/05/2042		15/01/2043		06/12/2043		14/01/2045		16/05/2046	
पिंग	14/12/2041	धांय	06/06/2042	भ्राम	20/02/2043	भद्रि	31/01/2044	उल्क	06/04/2045
धांय	28/12/2041	भ्राम	03/07/2042	भद्रि	06/04/2043	उल्क	08/04/2044	सिद्ध	09/07/2045
भ्राम	15/01/2042	भद्रि	06/08/2042	उल्क	30/05/2043	सिद्ध	26/06/2044	संक	26/10/2045
भद्रि	06/02/2042	उल्क	15/09/2042	सिद्ध	01/08/2043	संक	24/09/2044	मंग	08/11/2045
उल्क	05/03/2042	सिद्ध	02/11/2042	संक	13/10/2043	मंग	05/10/2044	पिंग	05/12/2045
सिद्ध	06/04/2042	संक	26/12/2042	मंग	22/10/2043	पिंग	28/10/2044	धांय	15/01/2046
संक	12/05/2042	मंग	01/01/2043	पिंग	09/11/2043	धांय	30/11/2044	भ्राम	10/03/2046
मंग	16/05/2042	पिंग	15/01/2043	धांय	06/12/2043	भ्राम	14/01/2045	भद्रि	16/05/2046

संक - सिद्ध		मंग - मंग		मंग - पिंग		मंग - धांय		मंग - भ्राम	
16/05/2046		06/12/2047		16/12/2047		05/01/2048		05/02/2048	
06/12/2047		16/12/2047		05/01/2048		05/02/2048		16/03/2048	
सिद्ध	04/09/2046	मंग	06/12/2047	पिंग	17/12/2047	धांय	08/01/2048	भ्राम	09/02/2048
संक	08/01/2047	पिंग	07/12/2047	धांय	19/12/2047	भ्राम	11/01/2048	भद्रि	15/02/2048
मंग	24/01/2047	धांय	07/12/2047	भ्राम	21/12/2047	भद्रि	15/01/2048	उल्क	21/02/2048
पिंग	25/02/2047	भ्राम	08/12/2047	भद्रि	24/12/2047	उल्क	20/01/2048	सिद्ध	29/02/2048
धांय	13/04/2047	भद्रि	10/12/2047	उल्क	27/12/2047	सिद्ध	26/01/2048	संक	09/03/2048
भ्राम	15/06/2047	उल्क	12/12/2047	सिद्ध	31/12/2047	संक	02/02/2048	मंग	10/03/2048
भद्रि	02/09/2047	सिद्ध	14/12/2047	संक	05/01/2048	मंग	03/02/2048	पिंग	13/03/2048
उल्क	06/12/2047	संक	16/12/2047	मंग	05/01/2048	पिंग	05/02/2048	धांय	16/03/2048

कालचक्र दशा

भोग्य दशा काल : धनु 4 वर्ष 3 मास 5 दिन
कुल दशाकाल : 83 वर्ष
तिथि : विशाखा - 2 अपसव्य
देह : तुला जीव : कन्या

धनु 10 वर्ष		वृश्चिक 7 वर्ष		तुला 16 वर्ष		कन्या 9 वर्ष		तुला 16 वर्ष	
07/03/1980		13/06/1984		13/06/1991		13/06/2007		13/06/2016	
13/06/1984		13/06/1991		13/06/2007		13/06/2016		13/06/2032	
	00/00/0000	वृश्चि	14/01/1985	तुला	14/07/1994	कन्या	04/06/2008	तुला	14/07/2019
	00/00/0000	तुला	22/05/1986	कन्या	08/04/1996	तुला	27/02/2010	वृश्चि	18/11/2020
	00/00/0000	कन्या	23/02/1987	तुला	09/05/1999	वृश्चि	02/12/2010	मीन	23/10/2022
	07/03/1980	तुला	30/06/1988	वृश्चि	13/09/2000	मीन	02/01/2012	कुंभ	01/08/2023
तुला	08/06/1981	वृश्चि	01/02/1989	मीन	18/08/2002	कुंभ	08/06/2012	मक	08/05/2024
वृश्चि	12/04/1982	मीन	06/12/1989	कुंभ	27/05/2003	मक	14/11/2012	धनु	12/04/2026
मीन	27/06/1983	कुंभ	08/04/1990	मक	03/03/2004	धनु	15/12/2013	वृश्चि	18/08/2027
कुंभ	20/12/1983	मक	09/08/1990	धनु	05/02/2006	वृश्चि	18/09/2014	तुला	18/09/2030
मक	13/06/1984	धनु	13/06/1991	वृश्चि	13/06/2007	तुला	13/06/2016	कन्या	13/06/2032

वृश्चिक 7 वर्ष		मीन 10 वर्ष		कुम्भ 4 वर्ष		मकर 4 वर्ष		धनु 10 वर्ष	
13/06/2032		13/06/2039		13/06/2049		13/06/2053		13/06/2057	
13/06/2039		13/06/2049		13/06/2053		13/06/2057		00/00/0000	
वृश्चि	14/01/2033	मीन	26/08/2040	कुंभ	22/08/2049	मक	22/08/2053	धनु	27/08/2058
मीन	18/11/2033	कुंभ	18/02/2041	मक	01/11/2049	धनु	14/02/2054	वृश्चि	01/07/2059
कुंभ	21/03/2034	मक	13/08/2041	धनु	26/04/2050	वृश्चि	17/06/2054	तुला	04/06/2061
मक	23/07/2034	धनु	27/10/2042	वृश्चि	27/08/2050	तुला	26/03/2055	कन्या	05/07/2062
धनु	27/05/2035	वृश्चि	01/09/2043	तुला	05/06/2051	कन्या	01/09/2055	तुला	08/03/2063
वृश्चि	28/12/2035	तुला	05/08/2045	कन्या	10/11/2051	तुला	08/06/2056		00/00/0000
तुला	04/05/2037	कन्या	05/09/2046	तुला	18/08/2052	वृश्चि	09/10/2056		00/00/0000
कन्या	05/02/2038	तुला	09/08/2048	वृश्चि	19/12/2052	मीन	03/04/2057		00/00/0000
तुला	13/06/2039	वृश्चि	13/06/2049	मीन	13/06/2053	कुंभ	13/06/2057		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

तुला - धनु		तुला - वृश्चि		तुला - तुला		तुला - कन्या		वृश्चि - वृश्चि	
08/05/2024		12/04/2026		18/08/2027		18/09/2030		13/06/2032	
12/04/2026		18/08/2027		18/09/2030		13/06/2032		14/01/2033	
धनु	01/08/2024	वृश्चि	24/05/2026	तुला	22/03/2028	कन्या	26/11/2030	वृश्चि	01/07/2032
वृश्चि	30/09/2024	तुला	27/08/2026	कन्या	23/07/2028	तुला	28/03/2031	मीन	27/07/2032
तुला	12/02/2025	कन्या	19/10/2026	तुला	25/02/2029	वृश्चि	20/05/2031	कुंभ	06/08/2032
कन्या	30/04/2025	तुला	22/01/2027	वृश्चि	31/05/2029	मीन	05/08/2031	मक	17/08/2032
तुला	12/09/2025	वृश्चि	05/03/2027	मीन	14/10/2029	कुंभ	04/09/2031	धनु	11/09/2032
वृश्चि	11/11/2025	मीन	03/05/2027	कुंभ	07/12/2029	मक	05/10/2031	वृश्चि	30/09/2032
मीन	04/02/2026	कुंभ	27/05/2027	मक	30/01/2030	धनु	20/12/2031	तुला	10/11/2032
कुंभ	10/03/2026	मक	20/06/2027	धनु	15/06/2030	वृश्चि	11/02/2032	कन्या	04/12/2032
मक	12/04/2026	धनु	18/08/2027	वृश्चि	18/09/2030	तुला	13/06/2032	तुला	14/01/2033

वृश्चि - मीन		वृश्चि - कुंभ		वृश्चि - मक		वृश्चि - धनु		वृश्चि - वृश्चि	
14/01/2033		18/11/2033		21/03/2034		23/07/2034		27/05/2035	
18/11/2033		21/03/2034		23/07/2034		27/05/2035		28/12/2035	
मीन	20/02/2033	कुंभ	24/11/2033	मक	27/03/2034	धनु	29/08/2034	वृश्चि	14/06/2035
कुंभ	07/03/2033	मक	30/11/2033	धनु	11/04/2034	वृश्चि	24/09/2034	तुला	25/07/2035
मक	22/03/2033	धनु	15/12/2033	वृश्चि	22/04/2034	तुला	22/11/2034	कन्या	18/08/2035
धनु	28/04/2033	वृश्चि	25/12/2033	तुला	15/05/2034	कन्या	26/12/2034	तुला	28/09/2035
वृश्चि	24/05/2033	तुला	18/01/2034	कन्या	29/05/2034	तुला	23/02/2035	वृश्चि	17/10/2035
तुला	22/07/2033	कन्या	31/01/2034	तुला	21/06/2034	वृश्चि	21/03/2035	मीन	12/11/2035
कन्या	25/08/2033	तुला	24/02/2034	वृश्चि	02/07/2034	मीन	27/04/2035	कुंभ	22/11/2035
तुला	23/10/2033	वृश्चि	07/03/2034	मीन	17/07/2034	कुंभ	12/05/2035	मक	02/12/2035
वृश्चि	18/11/2033	मीन	21/03/2034	कुंभ	23/07/2034	मक	27/05/2035	धनु	28/12/2035

वृश्चि - तुला		वृश्चि - कन्या		वृश्चि - तुला		मीन - मीन		मीन - कुंभ	
28/12/2035		04/05/2037		05/02/2038		13/06/2039		26/08/2040	
04/05/2037		05/02/2038		13/06/2039		26/08/2040		18/02/2041	
तुला	01/04/2036	कन्या	03/06/2037	तुला	11/05/2038	मीन	05/08/2039	कुंभ	04/09/2040
कन्या	25/05/2036	तुला	27/07/2037	वृश्चि	22/06/2038	कुंभ	27/08/2039	मक	12/09/2040
तुला	28/08/2036	वृश्चि	19/08/2037	मीन	20/08/2038	मक	17/09/2039	धनु	04/10/2040
वृश्चि	08/10/2036	मीन	21/09/2037	कुंभ	13/09/2038	धनु	09/11/2039	वृश्चि	18/10/2040
मीन	07/12/2036	कुंभ	05/10/2037	मक	07/10/2038	वृश्चि	16/12/2039	तुला	21/11/2040
कुंभ	30/12/2036	मक	18/10/2037	धनु	05/12/2038	तुला	10/03/2040	कन्या	10/12/2040
मक	23/01/2037	धनु	21/11/2037	वृश्चि	16/01/2039	कन्या	26/04/2040	तुला	13/01/2041
धनु	24/03/2037	वृश्चि	14/12/2037	तुला	21/04/2039	तुला	20/07/2040	वृश्चि	28/01/2041
वृश्चि	04/05/2037	तुला	05/02/2038	कन्या	13/06/2039	वृश्चि	26/08/2040	मीन	18/02/2041

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

मीन - मक		मीन - धनु		मीन - वृश्चि		मीन - तुला		मीन - कन्या	
18/02/2041		13/08/2041		27/10/2042		01/09/2043		05/08/2045	
13/08/2041		27/10/2042		01/09/2043		05/08/2045		05/09/2046	
मक	27/02/2041	धनु	05/10/2041	वृश्चि	22/11/2042	तुला	14/01/2044	कन्या	17/09/2045
धनु	20/03/2041	वृश्चि	12/11/2041	तुला	21/01/2043	कन्या	31/03/2044	तुला	02/12/2045
वृश्चि	04/04/2041	तुला	04/02/2042	कन्या	23/02/2043	तुला	13/08/2044	वृश्चि	04/01/2046
तुला	08/05/2041	कन्या	24/03/2042	तुला	24/04/2043	वृश्चि	12/10/2044	मीन	21/02/2046
कन्या	27/05/2041	तुला	17/06/2042	वृश्चि	20/05/2043	मीन	05/01/2045	कुंभ	12/03/2046
तुला	30/06/2041	वृश्चि	24/07/2042	मीन	26/06/2043	कुंभ	07/02/2045	मक	31/03/2046
वृश्चि	15/07/2041	मीन	15/09/2042	कुंभ	11/07/2043	मक	13/03/2045	धनु	18/05/2046
मीन	05/08/2041	कुंभ	06/10/2042	मक	25/07/2043	धनु	06/06/2045	वृश्चि	20/06/2046
कुंभ	13/08/2041	मक	27/10/2042	धनु	01/09/2043	वृश्चि	05/08/2045	तुला	05/09/2046

मीन - तुला		मीन - वृश्चि		कुंभ - कुंभ		कुंभ - मक		कुंभ - धनु	
05/09/2046		09/08/2048		13/06/2049		22/08/2049		01/11/2049	
09/08/2048		13/06/2049		22/08/2049		01/11/2049		26/04/2050	
तुला	18/01/2047	वृश्चि	04/09/2048	कुंभ	16/06/2049	मक	26/08/2049	धनु	22/11/2049
वृश्चि	19/03/2047	मीन	11/10/2048	मक	20/06/2049	धनु	03/09/2049	वृश्चि	07/12/2049
मीन	12/06/2047	कुंभ	26/10/2048	धनु	28/06/2049	वृश्चि	09/09/2049	तुला	10/01/2050
कुंभ	16/07/2047	मक	10/11/2048	वृश्चि	04/07/2049	तुला	23/09/2049	कन्या	29/01/2050
मक	18/08/2047	धनु	17/12/2048	तुला	18/07/2049	कन्या	30/09/2049	तुला	04/03/2050
धनु	11/11/2047	वृश्चि	12/01/2049	कन्या	25/07/2049	तुला	14/10/2049	वृश्चि	18/03/2050
वृश्चि	10/01/2048	तुला	12/03/2049	तुला	08/08/2049	वृश्चि	20/10/2049	मीन	09/04/2050
तुला	24/05/2048	कन्या	14/04/2049	वृश्चि	14/08/2049	मीन	28/10/2049	कुंभ	17/04/2050
कन्या	09/08/2048	तुला	13/06/2049	मीन	22/08/2049	कुंभ	01/11/2049	मक	26/04/2050

कुंभ - वृश्चि		कुंभ - तुला		कुंभ - कन्या		कुंभ - तुला		कुंभ - वृश्चि	
26/04/2050		27/08/2050		05/06/2051		10/11/2051		18/08/2052	
27/08/2050		05/06/2051		10/11/2051		18/08/2052		19/12/2052	
वृश्चि	06/05/2050	तुला	20/10/2050	कन्या	22/06/2051	तुला	03/01/2052	वृश्चि	28/08/2052
तुला	30/05/2050	कन्या	20/11/2050	तुला	22/07/2051	वृश्चि	27/01/2052	मीन	12/09/2052
कन्या	12/06/2050	तुला	13/01/2051	वृश्चि	05/08/2051	मीन	01/03/2052	कुंभ	18/09/2052
तुला	06/07/2050	वृश्चि	06/02/2051	मीन	24/08/2051	कुंभ	14/03/2052	मक	24/09/2052
वृश्चि	16/07/2050	मीन	12/03/2051	कुंभ	31/08/2051	मक	28/03/2052	धनु	09/10/2052
मीन	31/07/2050	कुंभ	25/03/2051	मक	08/09/2051	धनु	01/05/2052	वृश्चि	19/10/2052
कुंभ	06/08/2050	मक	08/04/2051	धनु	27/09/2051	वृश्चि	25/05/2052	तुला	12/11/2052
मक	12/08/2050	धनु	12/05/2051	वृश्चि	10/10/2051	तुला	18/07/2052	कन्या	25/11/2052
धनु	27/08/2050	वृश्चि	05/06/2051	तुला	10/11/2051	कन्या	18/08/2052	तुला	19/12/2052

चर दशा

भोग्य दशा काल : सिंह 6 वर्ष 0 मास 0 दिन

सिंह 6 वर्ष	
07/03/1980	
08/03/1986	
कन्या	06/09/1980
तुला	08/03/1981
वृश्चि	06/09/1981
धनु	08/03/1982
मक	06/09/1982
कुंभ	08/03/1983
मीन	07/09/1983
मेष	07/03/1984
वृष	06/09/1984
मिथु	08/03/1985
कर्क	06/09/1985
सिंह	08/03/1986

कन्या 7 वर्ष	
08/03/1986	
08/03/1993	
तुला	07/10/1986
वृश्चि	08/05/1987
धनु	07/12/1987
मक	07/07/1988
कुंभ	05/02/1989
मीन	06/09/1989
मेष	07/04/1990
वृष	06/11/1990
मिथु	07/06/1991
कर्क	06/01/1992
सिंह	06/08/1992
कन्या	08/03/1993

तुला 6 वर्ष	
08/03/1993	
08/03/1999	
वृश्चि	06/09/1993
धनु	08/03/1994
मक	06/09/1994
कुंभ	08/03/1995
मीन	07/09/1995
मेष	07/03/1996
वृष	06/09/1996
मिथु	08/03/1997
कर्क	06/09/1997
सिंह	08/03/1998
कन्या	06/09/1998
तुला	08/03/1999

वृश्चिक 9 वर्ष	
08/03/1999	
07/03/2008	
तुला	07/12/1999
कन्या	06/09/2000
सिंह	07/06/2001
कर्क	08/03/2002
मिथु	07/12/2002
वृष	07/09/2003
मेष	07/06/2004
मीन	08/03/2005
कुंभ	06/12/2005
मक	06/09/2006
धनु	07/06/2007
वृश्चि	07/03/2008

धनु 8 वर्ष	
07/03/2008	
07/03/2016	
वृश्चि	06/11/2008
तुला	07/07/2009
कन्या	08/03/2010
सिंह	06/11/2010
कर्क	08/07/2011
मिथु	07/03/2012
वृष	06/11/2012
मेष	07/07/2013
मीन	08/03/2014
कुंभ	06/11/2014
मक	08/07/2015
धनु	07/03/2016

मकर 4 वर्ष	
07/03/2016	
07/03/2020	
धनु	07/07/2016
वृश्चि	06/11/2016
तुला	08/03/2017
कन्या	07/07/2017
सिंह	06/11/2017
कर्क	08/03/2018
मिथु	08/07/2018
वृष	06/11/2018
मेष	08/03/2019
मीन	08/07/2019
कुंभ	07/11/2019
मक	07/03/2020

कुम्भ 6 वर्ष	
07/03/2020	
08/03/2026	
मीन	06/09/2020
मेष	08/03/2021
वृष	06/09/2021
मिथु	08/03/2022
कर्क	06/09/2022
सिंह	08/03/2023
कन्या	07/09/2023
तुला	07/03/2024
वृश्चि	06/09/2024
धनु	08/03/2025
मक	06/09/2025
कुंभ	08/03/2026

मीन 7 वर्ष	
08/03/2026	
08/03/2033	
मेष	07/10/2026
वृष	08/05/2027
मिथु	07/12/2027
कर्क	07/07/2028
सिंह	05/02/2029
कन्या	06/09/2029
तुला	07/04/2030
वृश्चि	06/11/2030
धनु	07/06/2031
मक	06/01/2032
कुंभ	06/08/2032
मीन	08/03/2033

मेष 4 वर्ष	
08/03/2033	
08/03/2037	
वृष	07/07/2033
मिथु	06/11/2033
कर्क	08/03/2034
सिंह	08/07/2034
कन्या	06/11/2034
तुला	08/03/2035
वृश्चि	08/07/2035
धनु	07/11/2035
मक	07/03/2036
कुंभ	07/07/2036
मीन	06/11/2036
मेष	08/03/2037

वृष 11 वर्ष	
08/03/2037	
07/03/2048	
मेष	05/02/2038
मीन	06/01/2039
कुंभ	07/12/2039
मक	06/11/2040
धनु	07/10/2041
वृश्चि	06/09/2042
तुला	07/08/2043
कन्या	07/07/2044
सिंह	07/06/2045
कर्क	08/05/2046
मिथु	07/04/2047
वृष	07/03/2048

मिथुन 8 वर्ष	
07/03/2048	
07/03/2056	
वृष	06/11/2048
मेष	07/07/2049
मीन	08/03/2050
कुंभ	06/11/2050
मक	08/07/2051
धनु	07/03/2052
वृश्चि	06/11/2052
तुला	07/07/2053
कन्या	08/03/2054
सिंह	06/11/2054
कर्क	08/07/2055
मिथु	07/03/2056

कर्क 9 वर्ष	
07/03/2056	
08/03/2065	
मिथु	06/12/2056
वृष	06/09/2057
मेष	07/06/2058
मीन	08/03/2059
कुंभ	07/12/2059
मक	06/09/2060
धनु	07/06/2061
वृश्चि	08/03/2062
तुला	07/12/2062
कन्या	07/09/2063
सिंह	07/06/2064
कर्क	08/03/2065

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

चर दशा - प्रत्यन्तर

कुंभ - कुंभ	
06/09/2025	
08/03/2026	
मीन	21/09/2025
मेष	07/10/2025
वृष	22/10/2025
मिथु	06/11/2025
कर्क	21/11/2025
सिंह	06/12/2025
कन्या	22/12/2025
तुला	06/01/2026
वृश्चि	21/01/2026
धनु	05/02/2026
मक	21/02/2026
कुंभ	08/03/2026

मीन - मेष	
08/03/2026	
07/10/2026	
वृष	26/03/2026
मिथु	12/04/2026
कर्क	30/04/2026
सिंह	18/05/2026
कन्या	05/06/2026
तुला	22/06/2026
वृश्चि	10/07/2026
धनु	28/07/2026
मक	15/08/2026
कुंभ	01/09/2026
मीन	19/09/2026
मेष	07/10/2026

मीन - वृष	
07/10/2026	
08/05/2027	
मेष	25/10/2026
मीन	11/11/2026
कुंभ	29/11/2026
मक	17/12/2026
धनु	04/01/2027
वृश्चि	21/01/2027
तुला	08/02/2027
कन्या	26/02/2027
सिंह	16/03/2027
कर्क	02/04/2027
मिथु	20/04/2027
वृष	08/05/2027

मीन - मिथु	
08/05/2027	
07/12/2027	
वृष	26/05/2027
मेष	12/06/2027
मीन	30/06/2027
कुंभ	18/07/2027
मक	05/08/2027
धनु	22/08/2027
वृश्चि	09/09/2027
तुला	27/09/2027
कन्या	15/10/2027
सिंह	01/11/2027
कर्क	19/11/2027
मिथु	07/12/2027

मीन - कर्क	
07/12/2027	
07/07/2028	
मिथु	25/12/2027
वृष	11/01/2028
मेष	29/01/2028
मीन	16/02/2028
कुंभ	05/03/2028
मक	23/03/2028
धनु	09/04/2028
वृश्चि	27/04/2028
तुला	15/05/2028
कन्या	02/06/2028
सिंह	19/06/2028
कर्क	07/07/2028

मीन - सिंह	
07/07/2028	
05/02/2029	
कन्या	25/07/2028
तुला	12/08/2028
वृश्चि	29/08/2028
धनु	16/09/2028
मक	04/10/2028
कुंभ	22/10/2028
मीन	08/11/2028
मेष	26/11/2028
वृष	14/12/2028
मिथु	01/01/2029
कर्क	18/01/2029
सिंह	05/02/2029

मीन - कन्या	
05/02/2029	
06/09/2029	
तुला	23/02/2029
वृश्चि	13/03/2029
धनु	30/03/2029
मक	17/04/2029
कुंभ	05/05/2029
मीन	23/05/2029
मेष	09/06/2029
वृष	27/06/2029
मिथु	15/07/2029
कर्क	02/08/2029
सिंह	19/08/2029
कन्या	06/09/2029

मीन - तुला	
06/09/2029	
07/04/2030	
वृश्चि	24/09/2029
धनु	12/10/2029
मक	29/10/2029
कुंभ	16/11/2029
मीन	04/12/2029
मेष	22/12/2029
वृष	08/01/2030
मिथु	26/01/2030
कर्क	13/02/2030
सिंह	03/03/2030
कन्या	20/03/2030
तुला	07/04/2030

मीन - वृश्चि	
07/04/2030	
06/11/2030	
तुला	25/04/2030
कन्या	13/05/2030
सिंह	30/05/2030
कर्क	17/06/2030
मिथु	05/07/2030
वृष	23/07/2030
मेष	10/08/2030
मीन	27/08/2030
कुंभ	14/09/2030
मक	02/10/2030
धनु	20/10/2030
वृश्चि	06/11/2030

मीन - धनु	
06/11/2030	
07/06/2031	
वृश्चि	24/11/2030
तुला	12/12/2030
कन्या	30/12/2030
सिंह	16/01/2031
कर्क	03/02/2031
मिथु	21/02/2031
वृष	11/03/2031
मेष	28/03/2031
मीन	15/04/2031
कुंभ	03/05/2031
मक	21/05/2031
धनु	07/06/2031

मीन - मक	
07/06/2031	
06/01/2032	
धनु	25/06/2031
वृश्चि	13/07/2031
तुला	31/07/2031
कन्या	17/08/2031
सिंह	04/09/2031
कर्क	22/09/2031
मिथु	10/10/2031
वृष	27/10/2031
मेष	14/11/2031
मीन	02/12/2031
कुंभ	20/12/2031
मक	06/01/2032

मीन - कुंभ	
06/01/2032	
06/08/2032	
मीन	24/01/2032
मेष	11/02/2032
वृष	29/02/2032
मिथु	17/03/2032
कर्क	04/04/2032
सिंह	22/04/2032
कन्या	10/05/2032
तुला	27/05/2032
वृश्चि	14/06/2032
धनु	02/07/2032
मक	20/07/2032
कुंभ	06/08/2032

मीन - मीन	
06/08/2032	
08/03/2033	
मेष	24/08/2032
वृष	11/09/2032
मिथु	29/09/2032
कर्क	16/10/2032
सिंह	03/11/2032
कन्या	21/11/2032
तुला	09/12/2032
वृश्चि	27/12/2032
धनु	13/01/2033
मक	31/01/2033
कुंभ	18/02/2033
मीन	08/03/2033

मेष - वृष	
08/03/2033	
07/07/2033	
मेष	18/03/2033
मीन	28/03/2033
कुंभ	07/04/2033
मक	17/04/2033
धनु	27/04/2033
वृश्चि	07/05/2033
तुला	18/05/2033
कन्या	28/05/2033
सिंह	07/06/2033
कर्क	17/06/2033
मिथु	27/06/2033
वृष	07/07/2033

मेष - मिथु	
07/07/2033	
06/11/2033	
वृष	17/07/2033
मेष	28/07/2033
मीन	07/08/2033
कुंभ	17/08/2033
मक	27/08/2033
धनु	06/09/2033
वृश्चि	16/09/2033
तुला	26/09/2033
कन्या	07/10/2033
सिंह	17/10/2033
कर्क	27/10/2033
मिथु	06/11/2033

चर दशा - प्रत्यन्तर

मेष - कर्क		मेष - सिंह		मेष - कन्या		मेष - तुला		मेष - वृश्चि	
06/11/2033		08/03/2034		08/07/2034		06/11/2034		08/03/2035	
08/03/2034		08/07/2034		06/11/2034		08/03/2035		08/07/2035	
मिथु	16/11/2033	कन्या	18/03/2034	तुला	18/07/2034	वृश्चि	16/11/2034	तुला	18/03/2035
वृष	26/11/2033	तुला	28/03/2034	वृश्चि	28/07/2034	धनु	27/11/2034	कन्या	28/03/2035
मेष	06/12/2033	वृश्चि	07/04/2034	धनु	07/08/2034	मक	07/12/2034	सिंह	07/04/2035
मीन	17/12/2033	धनु	17/04/2034	मक	17/08/2034	कुंभ	17/12/2034	कर्क	18/04/2035
कुंभ	27/12/2033	मक	28/04/2034	कुंभ	27/08/2034	मीन	27/12/2034	मिथु	28/04/2035
मक	06/01/2034	कुंभ	08/05/2034	मीन	06/09/2034	मेष	06/01/2035	वृष	08/05/2035
धनु	16/01/2034	मीन	18/05/2034	मेष	17/09/2034	वृष	16/01/2035	मेष	18/05/2035
वृश्चि	26/01/2034	मेष	28/05/2034	वृष	27/09/2034	मिथु	26/01/2035	मीन	28/05/2035
तुला	05/02/2034	वृष	07/06/2034	मिथु	07/10/2034	कर्क	06/02/2035	कुंभ	07/06/2035
कन्या	15/02/2034	मिथु	17/06/2034	कर्क	17/10/2034	सिंह	16/02/2035	मक	17/06/2035
सिंह	26/02/2034	कर्क	27/06/2034	सिंह	27/10/2034	कन्या	26/02/2035	धनु	28/06/2035
कर्क	08/03/2034	सिंह	08/07/2034	कन्या	06/11/2034	तुला	08/03/2035	वृश्चि	08/07/2035

मेष - धनु		मेष - मक		मेष - कुंभ		मेष - मीन		मेष - मेष	
08/07/2035		07/11/2035		07/03/2036		07/07/2036		06/11/2036	
07/11/2035		07/03/2036		07/07/2036		06/11/2036		08/03/2037	
वृश्चि	18/07/2035	धनु	17/11/2035	मीन	17/03/2036	मेष	17/07/2036	वृष	16/11/2036
तुला	28/07/2035	वृश्चि	27/11/2035	मेष	28/03/2036	वृष	27/07/2036	मिथु	26/11/2036
कन्या	07/08/2035	तुला	07/12/2035	वृष	07/04/2036	मिथु	06/08/2036	कर्क	06/12/2036
सिंह	17/08/2035	कन्या	17/12/2035	मिथु	17/04/2036	कर्क	17/08/2036	सिंह	16/12/2036
कर्क	28/08/2035	सिंह	27/12/2035	कर्क	27/04/2036	सिंह	27/08/2036	कन्या	27/12/2036
मिथु	07/09/2035	कर्क	06/01/2036	सिंह	07/05/2036	कन्या	06/09/2036	तुला	06/01/2037
वृष	17/09/2035	मिथु	17/01/2036	कन्या	17/05/2036	तुला	16/09/2036	वृश्चि	16/01/2037
मेष	27/09/2035	वृष	27/01/2036	तुला	27/05/2036	वृश्चि	26/09/2036	धनु	26/01/2037
मीन	07/10/2035	मेष	06/02/2036	वृश्चि	07/06/2036	धनु	06/10/2036	मक	05/02/2037
कुंभ	17/10/2035	मीन	16/02/2036	धनु	17/06/2036	मक	16/10/2036	कुंभ	15/02/2037
मक	27/10/2035	कुंभ	26/02/2036	मक	27/06/2036	कुंभ	27/10/2036	मीन	25/02/2037
धनु	07/11/2035	मक	07/03/2036	कुंभ	07/07/2036	मीन	06/11/2036	मेष	08/03/2037

वृष - मेष		वृष - मीन		वृष - कुंभ		वृष - मक		वृष - धनु	
08/03/2037		05/02/2038		06/01/2039		07/12/2039		06/11/2040	
05/02/2038		06/01/2039		07/12/2039		06/11/2040		07/10/2041	
वृष	04/04/2037	मेष	05/03/2038	मीन	03/02/2039	धनु	04/01/2040	वृश्चि	04/12/2040
मिथु	02/05/2037	वृष	02/04/2038	मेष	03/03/2039	वृश्चि	01/02/2040	तुला	01/01/2041
कर्क	30/05/2037	मिथु	30/04/2038	वृष	31/03/2039	तुला	29/02/2040	कन्या	28/01/2041
सिंह	27/06/2037	कर्क	28/05/2038	मिथु	28/04/2039	कन्या	28/03/2040	सिंह	25/02/2041
कन्या	25/07/2037	सिंह	25/06/2038	कर्क	26/05/2039	सिंह	24/04/2040	कर्क	25/03/2041
तुला	22/08/2037	कन्या	23/07/2038	सिंह	23/06/2039	कर्क	22/05/2040	मिथु	22/04/2041
वृश्चि	19/09/2037	तुला	20/08/2038	कन्या	20/07/2039	मिथु	19/06/2040	वृष	20/05/2041
धनु	17/10/2037	वृश्चि	17/09/2038	तुला	17/08/2039	वृष	17/07/2040	मेष	17/06/2041
मक	14/11/2037	धनु	14/10/2038	वृश्चि	14/09/2039	मेष	14/08/2040	मीन	15/07/2041
कुंभ	12/12/2037	मक	11/11/2038	धनु	12/10/2039	मीन	11/09/2040	कुंभ	12/08/2041
मीन	08/01/2038	कुंभ	09/12/2038	मक	09/11/2039	कुंभ	09/10/2040	मक	09/09/2041
मेष	05/02/2038	मीन	06/01/2039	कुंभ	07/12/2039	मक	06/11/2040	धनु	07/10/2041

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	7
भाग्यांक	1
मित्र अंक	2, 3, 6, 7, 1
शत्रु अंक	4, 5, 8
शुभ वर्ष	25,34,43,52,61
शुभ दिन	मंगल, रवि, गुरु
शुभ ग्रह	मंगल, सूर्य, गुरु
मित्र राशि	मकर, मिथुन
मित्र लग्न	वृश्चिक, मेष, मिथुन
अनुकूल देवता	लक्ष्मी
शुभ रत्न	माणिक्य
शुभ उपरत्न	लाल हकीक, लाल तुर्मली
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	नारंगी
शुभ दिशा	पूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मूंगा, केसर, रक्तचन्दन
दान अन्न	गेहुँ
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मूंगा	मंगल	95%	स्वास्थ्य, भाग्योदय, सुख
माणिक्य	सूर्य	83%	दम्पति, स्वास्थ्य
हीरा	शुक्र	78%	भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति, पराक्रम
पुखराज	गुरु	75%	स्वास्थ्य, सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव
पन्ना	बुध	67%	दम्पति, धनार्जन, धन
गोमेद	राहु	66%	स्वास्थ्य, दम्पति
लहसुनिया	केतु	58%	दम्पति, धन
मोती	चंद्र	25%	पराक्रम हानि, व्यय
नीलम	शनि	9%	धन हानि, शत्रु व रोग, दाम्पत्य कष्ट

रत्न की शुभता

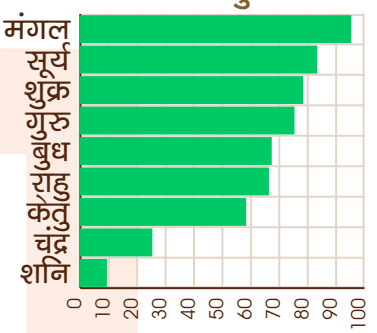

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
गुरु	30/06/1989	89%	38%	100%	55%	88%	66%	9%	66%	58%
शनि	30/06/2008	70%	0%	83%	73%	75%	84%	34%	72%	41%
बुध	30/06/2025	89%	0%	95%	80%	75%	84%	9%	66%	58%
केतु	30/06/2032	70%	0%	100%	67%	75%	84%	0%	53%	70%
शुक्र	30/06/2052	70%	0%	95%	73%	75%	91%	22%	72%	64%
सूर्य	30/06/2058	95%	38%	100%	67%	81%	66%	0%	53%	41%
चंद्र	30/06/2068	89%	50%	95%	73%	75%	78%	9%	53%	41%
मंगल	01/07/2075	89%	38%	100%	55%	81%	78%	9%	53%	64%
राहु	30/06/2093	70%	0%	83%	67%	75%	84%	22%	78%	41%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए मूंगा, माणिक्य, हीरा व पुखराज रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

मूंगा आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

माणिक्य आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

हीरा व पुखराज रत्न आपके कारक रत्न हैं। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए पन्ना, गोमेद एवं लहसुनिया रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

मोती रत्न आपके लिए नेष्ट है। अतः इसे न पहनना ही बेहतर है। इसे धारण करने से आपको मानसिक परेशानी एवं स्वास्थ्य हानि हो सकती है। अतः यदि इसे धारण करना हो तो इसकी अनुकूलता का परीक्षण अवश्य कर लें और विभिन्न दशाओं में इसकी अनुकूलता का परिक्षण करते रहें, क्योंकि यह रत्न आपके लिए किसी दशा या गोचर में विशेष कष्टकारी भी हो सकता है।

नीलम पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। इस रत्न का आप सर्वदा त्याग ही करें, क्योंकि किसी भी दशा या गोचर में इससे शुभ फल प्राप्त होने की आशा कम ही

है। इस रत्न को धारण करने से सामाजिक, आर्थिक व स्वास्थ्य पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल प्रथम भाव में स्थित है। मंगल रत्न मूंगा धारण कर आप अपने स्वास्थ्य को बेहतर बनाए रख सकते है। यह रत्न आपको पराक्रमी बनाये रखेगा और आपके साहस भाव को भी बढ़ायेगा। मूंगा रत्न आपके आत्मबल को ऊंच रख आपको कठिन से कठिन कार्य करने का सामथ्र्य देगा। समाज में आपको सम्मान और प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। मंगल अपनी पूर्ण दृष्टि से चतुर्थ, सप्तम एवं अष्टम भाव को देख रहा है। इसलिए मूंगा रत्न आपके लिए भूमि एवं वाहन सुख प्राप्त करने में सहयोगी होगा। इस रत्न को धारण करने से आपके आत्मविश्वास भाव में वृद्धि होगी। भूमि, भवन क्रय-विक्रय में सहयोग लाभ प्राप्त होगा।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में मंगल चतुर्थेश एवं नवमेश है। मंगल आपके लिए नवमेश होने के कारण शुभ ग्रह है। मंगल रत्न मूंगा धारण कर आप कर्म से भाग्य बदलने का प्रयास कर सकते है। मूंगा रत्न आपको धर्मपरायण व सौभाग्यशाली बना सकता है। इस रत्न के शुभ प्रभाव से आप माता सुख, भूमि व भवन पक्ष से सबल कर सकता है। आप यह रत्न धारण कर अपने दैनिक जीवन को गौरवशाली बना सकते है। इसके साथ ही रत्न धारण से आपके व्यवसायिक जीवन में सुख भाव बना रहेगा।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ऊँ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य सप्तम भाव में स्थित है। आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। यह रत्न धारण करने से आपके स्वाभिमान भाव में वृद्धि होगी। आपकी कठोरता में कमी होगी। माणिक्य रत्न आपको स्वतन्त्र कार्य करने के लिए प्रेरित कर सकता है। सूर्य रत्न धारण करने से आपके वैवाहिक जीवन में सामंजस्य स्थापित होगा। लाभ और उन्नति प्राप्त करने

के लिए आपको अपनी अनुशासन योग्यता में कमी करनी होगी। यह रत्न स्वतंत्र व्यापार में अधिकार क्षमता बढ़ायेगा। माणिक्य रत्न की शुभता आपमें निस्वार्थ भावना का विकास करेगी।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में सूर्य लग्न भाव के स्वामी है। लग्नेश सूर्य का रत्न माणिक्य धारण कर आप सूर्य शुभता प्राप्त कर सकते है। लग्नेश सर्वदा शुभ फलदायक होता है। इसलिए माणिक्य भी आपके लिए विशेष रूप से शुभ रत्न है। माणिक्य रत्न की शुभता से आप तेजस्वी, साहसी, स्वाभिमानी, प्रभावशाली व्यक्तित्व पा सकते है। रत्न का शुभ प्रभाव आपको अनुशासित जीवन, वैवाहिक जीवन को अनुकूलता दे सकता है। माणिक्य रत्न को आप सरकारी क्षेत्र से जुड़े कार्यो को शीघ्र से कराने के लिए भी धारण कर सकते है।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ऊँ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तद्पश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ है तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

हीरा

आपकी कुड़ली में शुक्र नवम भाव में स्थित है। शुक्र रत्न हीरा धारण करना आपके लिए शुभ फलकारी रहेगा। हीरा रत्न धारण से आप धार्मिक, शुद्धचित्त, परोपकारी और गुणवान व्यक्ति बनेंगे। रत्न प्रभाव से आपका धार्मिक विश्वास बढ़ेगा। पवित्र तीर्थ यात्राओं के आपको पर्याप्त अवसर मिलेंगे। हीरा रत्न आपको शुद्धचित्त, परोपकारी और गुणवान बनाएगा। हीरा रत्न दयालु, उदार, संतोषी जैसे गुणों से युक्त कर आपकी रुचि गायन, वादन और सिनेमा जैसी ललित कलाओं में आपकी सहभागिता बनाएगा। यह रत्न आपको एक अच्छा अभिनेता, काव्य नाटक पढने वाले और विद्या अध्ययन में निपुण बनाएगा।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में शुक्र तृतीय और दशम भाव के स्वामी है। अतः आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते है। हीरा रत्न धारण कर आप आकर्षक, कीर्तिवान, धैर्यवान, उदार, विनोदी एवं संतान से सुखी हो सकते है। तथा इस रत्न को धारण करने के बाद आजीविका क्षेत्र में आपको अच्छी नौकरी, व्यवसायिक सफलता, संगीत तथा कला क्षेत्रों से धन की प्राप्ति हो सकती है। यह रत्न शुभ होने के कारण आपको अभिनय, गायन एवं राजनीति क्षेत्र में अपनी योग्यता दिखाने के अवसर दे सकता है। पुरुषार्थ से कर्मक्षेत्र में सफलता पाने के लिए भी आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ऊँ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु लग्न भाव में स्थित है। गुरु रत्न पुखराज धारण करने से आपकी विद्वता, ज्ञान अर्जन योग्यता, विनम्रता भाव का विकास होगा। पुखराज रत्न आपके लिए जीवन रत्न है। शुभ कार्य निर्विघ्न पूर्ण होंगे। लग्नस्थ गुरू पंचम, सप्तम एवं नवम भाव को देखता है। अतः यह पुखराज रत्न संतान सुख को प्रबल करेगा। धार्मिक कार्यो में अभिरूचि देगा। पुखराज रत्न आपके लिए सुख, धन व यश प्रदायक सिद्ध हो सकता है। पुखराज रत्न आपके वैवाहिक जीवन को स्थिरता देगा। संतान स्वास्थ्य वृद्धि कर संतान सुख को बढ़ाएगा।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में गुरु पंचम भाव एवं अष्टम भाव के स्वामी है। पंचमेश गुरु लग्नेश सूर्य का मित्र है। अतः आप गुरु रत्न पुखराज धारण करें। पुखराज रत्न की शुभता आपकी आयु पर आने वाले कष्टों का निवारण कर सकती है। इस रत्न को धारण कर आप प्रीति विषय, आमोद-प्रमोद, सांसारिक सुख, संतान एवं ज्ञान को बढ़ा सकते है। रत्न की शुभता से आपको संतान प्राप्ति के योग बन सकते है। आप पुखराज रत्न कर गुरु ग्रह की शुभता प्राप्त कर सकते है। रत्न शुभता आपको गणित, ज्योतिश, धार्मिक ग्रंथ, वेद वेदान्त और दर्शन शास्त्र जैसे विषयों में आपकी रुचि जागृत कर सकता है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ऊँ बृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरुरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थो का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार है- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर 8 रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध सप्तम भाव में स्थित है। आपको बुध रत्न पन्ना धारण करना चाहिए। पन्ना रत्न आपको धनवान बनाएगा। रत्न शुभता से आपका विवाह कुलीन परिवार में होगा। यह रत्न आपको उदार और धार्मिक प्रवृति का रखेगा। आपके लिये यह शुभ रत्न होने के कारण इसे धारण कर आप विद्वान, लेखक या सम्पादक हो सकते है। पन्ना आपको शिल्पकला में निपुण, चतुर और विनोदी बनाएगा। रत्न शुभता से आप एक कुशल व्यवसायी बनेंगे। क्रय-विक्रय विषयों से आपको लाभ प्राप्त होगा। व्यावसायिक साझेदारी से आपके अनुकूल फल प्राप्त होंगे।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में बुध द्वितीय भाव एवं एकादश भाव के स्वामी है। आप बुध रत्न पन्ना धारण कर सकते है। पन्ना रत्न आपका संचित धन बढ़ा सकता है। पन्ना रत्न को धारण कर आप के परिवार में वृद्धि के योग बन सकते है। यह रत्न आपके कुटुंम्ब को एकसूत्र में बांधकर रख सकता है। पन्ना बुध आयेश का रत्न होने के कारण आपको बौद्धिक बल से धनार्जन करने के भरपूर अवसर दे सकता है। पन्ना रत्न की शुभता से आप को विभिन्न साधनों से आय प्राप्त हो सकती है। साथ ही इस रत्न को धारण कर आप अपनी वाकशक्ति में मधुरता एवं चतुरता दोनों का मिश्रण हो सकता है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ऊँ बुं बुधाय नमः का ९ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु लग्न भाव में स्थित है। अतः आपको राहु रत्न गोमेद धारण करना चाहिए। राहु रत्न गोमेद आपको मनस्वी एवं साहसी बनाएगा तथा रत्न आपके चातुर्य योग्यता को बढ़ायेगा। रत्न के शुभ प्रभाव से आपको विवाद में विजय, अध्ययनशीलता एवं कार्यकुशलता कौशल की प्राप्त होगी। लग्न भाव से राहु सप्तम को देख रहे है जिसके कारण गोमेद रत्न धारण करने से आपका वैवाहिक जीवन सुखमय हो सकता है। इस रत्न को धारण करने से आप भ्रम मुक्त जीवन का आनंद लेंगे।

राहु सिंह राशि में स्थित है व इसका स्वामी सूर्य सप्तम भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने से आपके वात रोगों में कमी होगी। यह रत्न आपके दाम्पत्य जीवन को

सुखमय बनाएगा। इस रत्न की शुभता से आपके अपने जीवनसाथी से स्नेह और सौहार्द के संबंध प्रगाढ़ होंगे। आपके स्वभाव में मधुरता आएगी। आप बंधुप्रिय, मधुर भाषी और स्वतंत्र व्यवसाय कार्य में सफल होंगे। इस रत्न से आपका अपने साझेदार और साथी पर विश्वास भाव मजबूत होगा। विदेश स्थानों से धन लाभ प्राप्त करना आपके लिए सहज होगा। एवं यह रत्न आपको विदेश में सम्मान दिलाएगा। आपको विदेश भ्रमण के अवसर प्राप्त होंगे।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ऊँ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु सप्तम भाव में स्थित है। आपको केतु रत्न लहसुनिया धारण करना चाहिए। केतु रत्न लहसुनिया आर्थिक मामलों में आपके लिए लाभदायक सिद्ध होगा। लहसुनिया रत्न धारण कर आप अपने दांपत्य जीवन को स्नेहयुक्त बनाये रखने में भी यह रत्न महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इस रत्न की शुभता से आपको धन का उत्तम सुख प्राप्त होगा। आपकी आर्थिक चिन्ताओं का अंत होगा। रत्न प्रभाव से आपकी यात्राएं सुखद एवं सफल होंगी। वात रोग, अंतडियों के रोग और वीर्य संबंधी रोगों में कमी हो सकती है।

केतु कुम्भ राशि में स्थित है तथा इसका स्वामी शनि दूसरे भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने पर स्व-कुटुम्ब के सुखों में वृद्धि होगी। यह रत्न आपको जनता व सरकार से सम्मान दिलाएगा। यह रत्न आपको मिथ्या वाद से बचाएगा। साथ ही यह रत्न आपके स्वाभिमान को बढ़ाएगा। रत्न शुभता से जमीन जायदाद के संग्रह में आपको सहयोग प्राप्त होगा। रत्न प्रभाव से आपको धनोपार्जन में सफलता मिलेगी एवं यह रत्न आपको मधुर, सौम्य और प्रिय बोलने का गुण प्रदान करेगा, आपकी संग्रह शक्ति बढ़ाएगा। इसके साथ ही आपकी आर्थिक स्थिति भी बेहतर होगी। इस रत्न को धारण करने पर आपको उत्तम भोजन सेवन की प्राप्ति हो सकती है। परहित में ही आपको आनंद का अनुभव होगा।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ऊँ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार है- सप्तधान्य,

नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे ल ॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र तीसरे भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः चंद्र रत्न मोती धारण करने पर आपको अपने आजीविका क्षेत्र में कई परिवर्तन करने पड़ सकते है। यात्रा से आपके स्वास्थ्य सुख में कमी हो सकती है। आपमें शौक, रुचियां और मित्रता में शीघ्र बदलाव करने की आदत आ सकती है. आपके पिता को कई बार अपने व्यापारिक साझेदार में बदलाव करने पड़ सकते हैं साथ ही उन्हें बहुत सारी यात्राएं करने का अवसर मिलेंगे। रत्न धारण से आप प्रसिद्धि पाने के लिए प्रयासरत रहेंगे.

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में चंद्र द्वादश भाव के स्वामी है। चंद्र रत्न मोती धारण से आपकी अस्वस्थता बढ़ सकती है। इस रत्न को धारण करने पर आपको व्यय से संबंधित चिंताएं अधिक हो सकती है। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपके दांपत्य जीवन में भी अनियमितता का कारण बन सकता है। रत्न धारण से आपके व्यावसायिक कार्यो में परेशानियां बनी रहेंगी। यह रत्न आपको शारीरिक दुर्बलता दे सकता है। कुसंगति के व्यक्ति आपको प्रिय हो सकते है। जल से शारीरिक हानि का भय आपको हो सकता है। रत्न प्रभाव नजला, जुकाम से आपको पीड़ित कर सकता है। आप क्रोधी, हठी एवं निराशाभाव युक्त हो सकते है। नेत्रादि रोग और कुटुम्ब के कारण आपके दुःख बढ़ सकते है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि दूसरे भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः नीलम रत्न धारण करना आपको आर्थिक पक्ष से कमजोर कर सकता है। सरकारी टैक्स आपकी मानसिक चिंताएं बढ़ा सकते है। व्यापारिक क्षेत्रों से मनोकूल परिणाम की कमी आपके संचय में कमी का कारण बन सकती है। कुछ नये पारिवारिक विवाद आपके सामने आ सकते है। शनि रत्न नीलम आपको आपके निवास स्थान से दूर लेकर जा सकता है। धन, सवारी तथा सुख प्राप्ति के साधन आपको शारीरिक कष्ट देकर जा सकते है। दूसरे भाव के शनि के रत्न प्रभाव से पैतृक सम्पति की हानि, भूमि भवन के मामलें कोर्ट कचहरी में तथा आय गति मंद हो सकती है। इस रत्न से कभी कभी आप कटुवक्ता भी हो सकते है। सदाचार और निष्ठा की कमी भी यह रत्न आपको दे सकता है।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में शनि षष्ठेश एवं सप्तमेश है। शनि का नीलम रत्न आपको शारीरिक, मानसिक एवं धन संबंधी कष्ट दे सकता है। यह रत्न आपको यात्रा में कष्ट दे सकता है। रत्न प्रभाव से आपकी स्वास्थ्य हानि हो सकती है। नीलम रत्न धारण करने के बाद आपको सामान्य उन्नति के लिए भी विशेष संघर्ष करना पड़ सकता है। इस रत्न को धारण करने

पर आपके शत्रु समय समय पर आपकी परेशानियां बढ़ा सकते है। आपको पैतृक ऋण देना पड़ सकता है। रत्न आपको दैनिक व्यवसाय में कठिनाईयां दे सकता है। आय व आयु दोनों के लिए यह रत्न अनुकूल फलदायी नहीं है। रत्न प्रभाव से आपका वैवाहिक जीवन कष्टमय हो सकता है।

दशानुसार रत्न विचार

केतु
(30/06/2025 - 30/06/2032)

केतु की दशा में आपका मूंगा, हीरा व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, लहसुनिया, पन्ना व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती व नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुक्र
(30/06/2032 - 30/06/2052)

शुक्र की दशा में आपका मूंगा, हीरा व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, गोमेद, माणिक्य व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम व मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(30/06/2052 - 30/06/2058)

सूर्य की दशा में आपका मूंगा, माणिक्य व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, हीरा व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया व मोती रत्न नेष्ट हैं और नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र
(30/06/2058 - 30/06/2068)

चन्द्र की दशा में आपका मूंगा, माणिक्य, हीरा व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, गोमेद व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल
(30/06/2068 - 01/07/2075)

मंगल की दशा में आपका मूंगा, माणिक्य, पुखराज व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, पन्ना व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती रत्न नेष्ट हैं और नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु
(01/07/2075 - 30/06/2093)

राहु की दशा में आपका हीरा, मूंगा, गोमेद व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य व पन्ना रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और नीलम व मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

दशा ग्राफ

गुरु - 30/06/1989

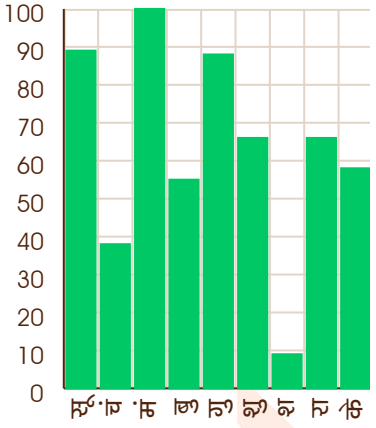

शनि - 30/06/2008

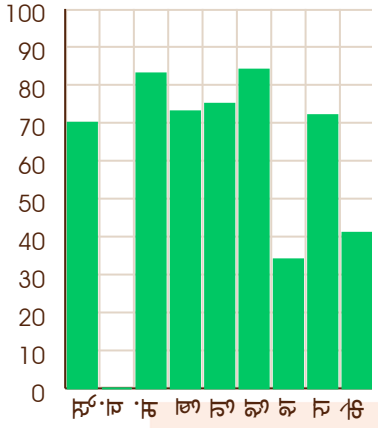

बुध - 30/06/2025

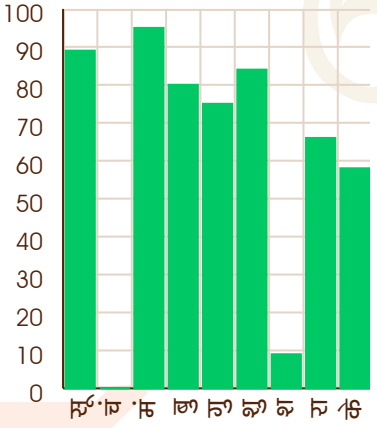

केतु - 30/06/2032

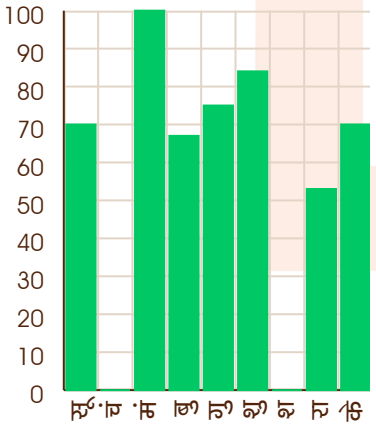

शुक्र - 30/06/2052

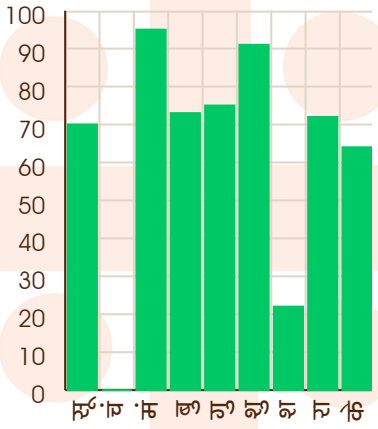

सूर्य - 30/06/2058

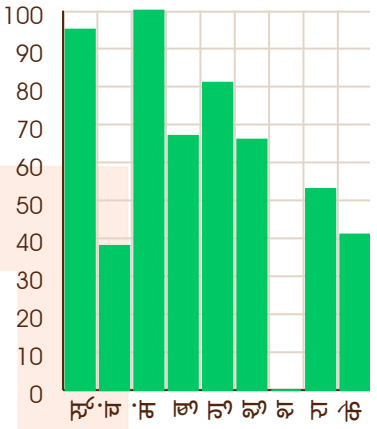

चन्द्र - 30/06/2068

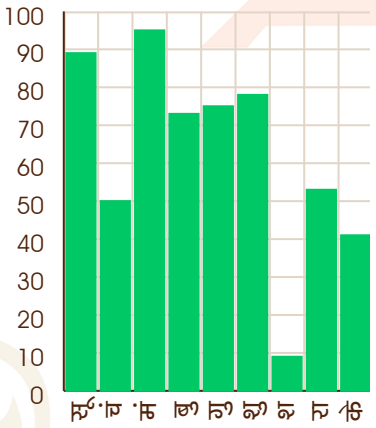

मंगल - 01/07/2075

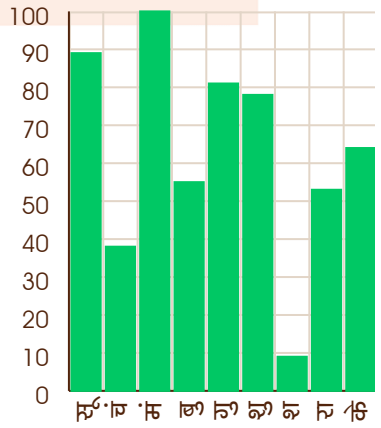

राहु - 30/06/2093

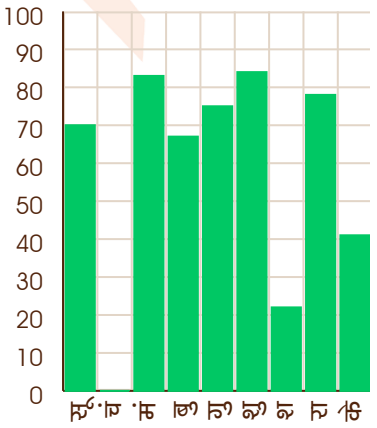

शुभ रत्न

ढठवसकझढथ्वदजझढस्मवच्सउभ्पदकप01झ010ध्झ आपका शुभ रत्न - माणिक्य ढध थ्वदजझढठवसकझ

आपका जन्म सिंह राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी सूर्य होता है। सूर्य सभी ग्रहों का राजा है, क्योंकि सभी ग्रह इसके चारों ओर अपनी अपनी कक्षा में चक्कर लगाते हैं। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः सिंह राशि के लग्न वाले जातकों को सिंह राशि के स्वामी ग्रह सूर्य को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। सूर्य ग्रह के लिये माणिक्य रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी सूर्य राजा का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को राजा से लाभ जैसे राजनीतिक क्षेत्र में सफलता, उच्च पदाधिकारी का सहयोग व उनसे सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को पिता का आशीर्वाद भी प्राप्त होता है। सूर्य ग्रह हृदय का प्रतिनिधि आत्मा आदि का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको हृदय से संबंधित रोग हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है।

माणिक्य रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि अनामिका अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में सूर्य की अंगुली मानी जाती है। माणिक्य रत्न सूर्य का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात रविवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल सूर्य की होरा में श्रेष्ठ होता है। रविवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय सूर्य की होरा का होता है। माणिक्य को यदि रविवार के साथ-साथ सूर्य के नक्षत्र अर्थात् कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनी और उत्तराषाढ़ा में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

माणिक्य को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर नारंगी रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, सूर्य के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण करना चाहिए।

सूर्य का मंत्र - ऊँ घृणि सूर्याय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि सूर्य से संबंधित पदार्थ जैसे सफेद चंदन, घी, लाल कपड़ा सवा मीटर का दान करें तो माणिक्य रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक

फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन सूर्य का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें या सूर्य को तांबे के पात्र से जल दें और सूर्य को नमस्कार करें तो यह माणिक्य रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक रविवार को आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ भी इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

सिंह लग्न वाले जातक यदि माणिक्य रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के ह्रदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली सिंह लग्न की है। आप अत्यंत तेजस्वी एवं आत्मविश्वासी हैं। अग्नि की ही भांति आप ऊर्जावान भी हैं किसी भी कार्य को करने से पीछे नहीं हटते हैं जो कार्य प्रारंभ करते हैं उसे पूरा करके ही बैठते हैं। नीतियाँ बनाना एवं उन पर कार्य करना आपको विशेष पसंद हो सकता है। अनुशासनहीनता आपको बर्दाश्त नहीं होती है। जो नियम आप बनाते हैं, उन पर स्वयं भी कार्य करते हैं और दूसरों से करवाते भी है। अपना मान सम्मान आपको बहुत प्रिय होता है। यदि किसी से कोई वादा करते हैं तो उसे निभाते हैं। स्थिर लग्न होने से आपके स्वभाव एवं व्यवहार में भी स्थिरता होती है। आप जो भी कहते हैं, उस पर अंत तक स्थिर रहते हैं। जिस भी कार्य को आप शुरू करते हैं उससे अंत तक जुडे रहते हैं। आप मानसिक और

प्रशासनिक कार्य अच्छे से करते हैं। इसके विपरीत हो सकता है की शारीरिक कार्य करना आपको अधिक पसंद न हो। आप जिनसे प्यार अथवा मित्रता करते हैं उस पर केवल अपना ही अधिकार समझते हैं और ये ईर्ष्या की हद तक होता है।

कुंडली के 6, 8 व 12 भाव त्रिक भाव कहलाते हैं। त्रिक भावों को शुभ भाव नहीं समझा जाता। इन भाव-भावेशों का सम्बन्ध जिन भी ग्रहों व भावेशों से बनता है उनकी शुभता में कमी आती हैं। त्रिक भावों को शुभ भाव नहीं समझा जाता। इन्हीं में से छठा भाव रोग, ऋण व सेवा भाव है। शत्रुओं का विचार करने के लिए भी इसी भाव का विश्लेषण किया जाता हैं। यह उपचय भाव भी है। इसके अलावा अर्थ भाव है। इस भाव के भावेश का अशुभ प्रभाव में होना, आपके स्वास्थ्य में कमी का कारण बन सकता हैं। दूसरा त्रिक भाव अष्टम भाव है। इस भाव से जिन विषयों का विचार किया जाता है, उन विषयों में आठंवा भाव आयु, दुर्घटना, आपरेशन, अपयश व नैतिक पतन हैं। इस भाव से व्यक्ति को मिलने वाला अपमान, पदच्युति, शोक, ऋण, मृत्यु तथा व्यक्ति के जीवन में आने वाली रुकावटें देखी जाती है। अंतिम त्रिक भाव द्वादश भाव है, द्वादश भाव से व्यय, हानियां, कारावास, बंधन, विदेश में जीवन आदि का विचार किया जाता हैं।

इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

आपके लग्न के लिए षष्ठ भाव व सप्तम भाव के स्वामी शनि है, शनि षष्ठेश है, इसलिए आपको वात-पित्त रोग हो सकते हैं। विवेक व बुद्धि से शत्रुओं पर विजय, विद्या व बुद्धि से अल्प लाभ, संतान से न्यून सुख, जीवन संकटमय, व्यय अधिक, पराक्रम वृद्धि, भाई बहनों से अल्प सुख का कारण बन सकता हैं।

अष्टम भाव व पंचम के गुरु आपको दीर्घायु, प्रभावशाली दिनचर्या, विद्या व बुद्धि का अल्प लाभ, संतान से कष्ट, विदेश स्थानों से लाभ, माता, भूमि व सम्पति से साधारण लाभ प्राप्ति के योग बना रहे हैं।

द्वादश के चन्द्र है। द्वादशेश चन्द्र मानसिक सुखों में कमी, माता सुख में कमी करता हैं, धन और प्रतिष्ठा की हानि होती हैं। इसके अतिरिक्त यह योग नजला-जुकाम और गुप्त शत्रुओं की वृद्धि करता हैं।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 2, 5, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए।

क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	07/03/1980-15/03/1980	27/07/1980-06/10/1982	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	06/10/1982-21/12/1984	01/06/1985-17/09/1985	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	21/12/1984-01/06/1985	17/09/1985-17/12/1987	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	21/03/1990-20/06/1990	15/12/1990-05/03/1993	15/10/1993-10/11/1993
अष्टम स्थानस्थ ढैया	07/06/2000-23/07/2002	08/01/2003-07/04/2003	----------

द्वितीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	10/09/2009-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	----------

तृतीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
साढेसाती द्वितीय ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044
साढेसाती तृतीय ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	धन
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	पराक्रम
साढेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	सुख हानि
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	शत्रु व रोग मुक्ति
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	व्यावसायिक उन्नति

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपके जन्मकाल में मंगल लग्न में स्थित है अतः जन्मकुंडली के अनुसार आप एक मांगलिक कन्या हैं परन्तु शास्त्रीय नियमानुसार आपकी कुंडली में मंगल दोष का प्रभाव खत्म हो जाता है। अतः ऐसे मंगल से आप जीवन में अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी एवं इसका आपके भावी दाम्पत्य जीवन पर किसी भी प्रकार का अशुभ प्रभाव नहीं पड़ेगा। अतः आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। परन्तु यदा कदा स्वाभाव में क्रोधाधिक्य की प्रवृत्ति विद्यमान रहेगी। मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में विलम्ब होने की संभावना तो है परन्तु विवाह संबंधी समस्त प्रक्रियाएं शान्त एवं सुखद वातावरण में सम्पन्न होंगी तथा इसमें अनावश्यक रूप से समस्याओं एवं कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़ेगा। विवाह के उपरान्त यदा कदा अल्प मात्रा में आपके पति का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है लेकिन इससे कोई हानि नहीं होगी तथा सामान्यतया वे स्वस्थ तथा अच्छे रहेंगे।

आपकी कुंडली में प्रथम भाव में स्थित मंगल की दृष्टि सुख भाव पर होने से जीवन में आवश्यक सुखोपभोग के साधनों से आप प्रायः सुसम्पन्न रहेंगी तथा प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग करेंगी। ये समस्त उपलब्धियां आपको परिश्रमपूर्वक ही प्राप्त होंगी। सप्तम भाव में मंगल की दृष्टि होने से आपका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा। यदा कदा आप लोगों (पति-पत्नी) में परस्पर सैद्धान्तिक मतभेदों एवं अनावश्यक वाद विवादों के कारण अल्प समय के लिए तनाव का वातावरण भी बनेगा। इसके साथ ही अष्टमभाव पर भी मंगल की पूर्ण दृष्टि से आप शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगी। यदा कदा आपके पति को शारीरिक रूप से अल्प मात्रा में कष्टानुभूति हो सकती है जीवन में कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अनावश्यक बाधाएं भी उत्पन्न हो सकती हैं लेकिन सामान्यतया आपका दाम्पत्यजीवन सुख आनन्दपूर्वक व्यतीत होगा एवं अपने वैवाहिक जीवन से आप पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगी।

अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखमय एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको ऐसे मंगली युवक से विवाह करना चाहिए जिसका शास्त्रानुसार उचित रूप से मांगलिक दोष भंग हो रहा हो। साथ ही आप किसी गैर मांगलिक युवक से भी विवाह कर सकती हैं। इस प्रकार समस्त दोषों का विचार करके यदि आप अपना दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करेंगी तो आपका जीवन प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा। साथ ही जीवन में आप समस्त भौतिक सुखसंसाधनों को अर्जित करेंगी एवं आर्थिक क्षेत्र में भी सुदृढ़ रहेंगी। साथ ही एक भाग्यशाली महिला हो कर आनन्दपूर्वक जीवन व्यतीत करेंगी तथा भाग्यबल से अपने जीवन के अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता अर्जित करेंगी।

इसके अतिरिक्त कुंडली मिलान के समय इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि जिस युवक की कुंडली में मंगल की स्थिति प्रथम भाव में हो उससे यत्नपूर्वक विवाह की उपेक्षा करनी चाहिए क्योंकि ऐसे मंगल से उसका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है जिससे सामाजिक एवं सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करने में समस्यायें उत्पन्न हो सकती हैं तथा दाम्पत्य जीवन के सुखोपभोग में भी व्यवधान हो सकता है। इसके अतिरिक्त अन्य भावों में स्थित मंगल जीवन के महत्वपूर्ण कार्यों एवं क्षेत्रों को प्रभावित नहीं करता है अतः ऐसा मंगल सुखी दाम्पत्य जीवन के लिए ग्राह्य है। यदि मांगलिक दोष भंग हो रहा हो तथा मंगल समान भाव में न हो तो ऐसी स्थिति में दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करने से सुख एवं प्रसन्नता की प्राप्ति होगी तथा जीवन में कभी भी अनावश्यक समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ेगा।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में अनन्त नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्य मान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। इसके कारण जातक को व्यक्तित्व निर्माण एवं आगे बढ़ने में आंशिक रूप से संघर्ष करना पड़ता है। कभी-कभी विरक्ति पैदा होती है। गृहस्थ जीवन कुछ अस्तव्यस्त रहता है। न्यायालय से थोड़ा बहुत नुकसान उठाना पड़ता है। वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी-कभी दुःखमय बन जाता है। जीवन में समय-समय पर आंशिक रूप में बाधाएँ आती हैं। परन्तु कालान्तर में सभी विघ्न-बाधाएँ दूर होती चली जाती हैं। जीवन में अनेक बार अपयश मिलने का भय बना रहता है। अपने रिश्तेदार नुकसान पहुँचाने की चेष्टा करते हैं, परन्तु उसमें वे सफल नहीं होते। जातक बार-बार अपने कार्य को बदलता है। परिणामस्वरूप आंशिक रूप में कभी क्षति उठानी पड़ती है। खासकर साहूकारी के व्यवसाय में नुकसान उठाता है। लेकिन जातक के जीवन में एक चमत्कारिक समय भी आता है। और समय-समय पर शुभ कार्य सम्पादित होते रहते हैं। आर्थिक स्थिति थोड़ा नाजुक होती है। इस योग के कारण जातक थोड़ा बहुत पराक्रमहीन, आलसी एवं नीचकर्म करने में तत्पर हो जाता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रूमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर,

रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।
- नवम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।
- त्रिक भाव का स्वामी लग्न में स्थित है और उस पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुडली में मंगल और गुरु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

आपकी कुंडली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राहमण और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो

आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक सात होने से अंक ज्योतिष के आधार पर आपका मूलांक सात होता है। अंक सात का अधिष्ठाता भारतीय मतानुसार केतु एवं पाश्चात्य मतानुसार नेपच्यून ग्रह को माना गया है। इन ग्रहों के थोड़े-बहुत प्रभाव आपके ऊपर आयेंगे। मूलांक सात के प्रभाववश आपके अन्दर कल्पना शक्ति की मात्रा अधिक रहेगी। काव्य रचना, गीत-संगीत सुनना, दूरदर्शन देखना आपकी अभिरुचि में समाहित रहेगा। ललित कलाओं, लेखन, साहित्य आदि में आपकी रुचि रहेगी। आर्थिक सफलताएं आपको अधिक नहीं मिलेंगी तथा धन संग्रह करना भी आपको मुश्किल लगेगा।

यात्रा, पर्यटन, सैर-सपाटा इत्यादि आपको विशेष अच्छा लगेगा। दूसरों के मन की बात समझने में आप निपुणता हासिल करेंगी एवं सामने वाले को अपनी ओर आकृष्ट करने की विशेष शक्ति भी आपके अन्दर रहेगी। धर्म के क्षेत्र में आप परिवर्तनशील विचारधारा की रहेंगी एवं पुरानी रुढ़ियों, रीतियों में अधिक रुचि नहीं लेंगी। आपको ऐसे रोजगार-व्यापार पसन्द आयेंगे, जिनमें यात्रायें होती रहती हों तथा दूर-दूर के देशों से सम्पर्क बना रहे।

आप ऐसा ही रोजगार चुनेंगी जिनमें यात्रा के अवसर अधिक मिलते रहें। अतीन्द्रिय ज्ञान की अधिकतावश जहाँ आप दूसरों के मन की बात को जान जायेंगी वहीं आपको स्वप्न भी अद्भूत प्रकार के आते रहेंगे। आपको विदेशों से, जहाज, मोटर इत्यादि वाहनों से विशेष लाभ प्राप्त होंगे।

भाग्यांक एक का अधिष्ठाता सूर्य ग्रह को माना गया है। इसके प्रभाव से आप अपने कार्यक्षेत्र में एक चतुर, बलवान, बुद्धिमान, राजसी ठाटबाट को पसन्द करने वाली स्पष्ट वक्ता होंगी। आप स्वभाव से गम्भीर, उदार हृदय, परोपकारी, सत्य के मार्ग पर चलने वाली यशस्वी तथा विरोधियों को परास्त करने में विश्वास रखने वाली शूरवीर महिला के रूप में पहचान स्थापित करेंगी। आपका जीवन चक्र एक मुखिया की भाँति संचालित होगा अर्थात आप हुकूमत पसन्द, स्वतंत्र तथा स्थिर विचारधारा पर निर्भीक चलेंगी। अहं या स्वाभिमान आपमें कूट-कूट कर भरा होगा।

आपकी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति, आपकी मेहनत से होगी। अधिकारों में वृद्धि होगी। सूर्य अग्नि तत्व का द्योतक होने से आपका तेज समाज के विभिन्न क्षेत्रों में व्याप्त होगा। जीवनी शक्ति आप में अच्छी रहेगी एवं दूसरों को प्रोत्साहित करने में कुशल रहेंगी। आपका भाग्य उच्च श्रेणी का होने से आप एक दिन अपने श्रम, लगन, स्थिर प्रकृतिवश सर्वोच्चता को प्राप्त करेंगी। सूर्य प्रकाशित ग्रह होने से आपको हमेशा प्रकाश में रहना सुखकर लगेगा और ऐसे ही कार्यक्षेत्र को पसन्द करेंगी, जिसमें नाम तथा यश दोनों ही मिलें।

आपका मूलांक 7 है तथा आपका भाग्यांक 1 है। मूलांक 7 का स्वामी नेपच्यून है तथा भाग्यांक 1 का स्वामी सूर्य है। मूलांक 7 और भाग्यांक 1 के बीच शत्रु संबंध है। इसके प्रभाववश आपको इन दोनों ही अंकों के मिलेजुले फल प्राप्त होंगे। सूर्य ग्रह के प्रभाव से आपकी सामाजिक स्थिति उच्च कोटि की होगी। मूलांक स्वामी नेपच्यून के प्रभाव से आपके

रोजगार-व्यापार के क्षेत्र में अचानक परिवर्तन होते रहेंगे। इन दोनों के संयुक्त प्रभाव से कभी आपको बहुत अच्छी सफलताएं मिलती रहेंगी, तो एकाध बार असफलताओं का सामना भी करना पड़ेगा। अपने कार्यक्षेत्र में आप सामने वाले व्यक्तियों को शीघ्र अपना बना लेने की कला में पारंगत रहेंगी। आपके अंदर अत्यधिक आकषर्ण शक्ति रहेगी, जो आपके रोजगार-व्यापार में आपके बहुत काम आएगी। इस वजह से आप अपने रोजगार में काफी नाम और सफलता प्राप्त करेंगी। यात्राओं का योग आपके जीवन में काफी मात्रा में रहेगा एवं कुछ एक यात्राएं आपको विशेष लाभ प्रदान करेंगी। आपकी सामाजिक स्थिति धीरे-धीरे बनती हुई मध्य अवस्था से काफी अच्छी बन जाएगी एवं आप एक लोकप्रिय महिला के रूप में ख्याति अर्जित करेंगी।

आपका भाग्योदय 28 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ हो कर 37 वर्ष की अवस्था पर आपको विशेष उन्नति प्राप्त होगी तथा 46 वर्ष की आयु पर आपका पूर्ण भाग्योदय होगा।

मूलांक 7 की मित्रता 2 एवं 6 से है तथा भाग्यांक 1 की मित्रता 4 एवं 8 से है। अतः आपके जीवन में 1, 2, 4, 6, 7, 8 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इससे आपके जीवन में प्रमुख घटनाए घटित होंगी।

आपके मूलांक का आपके भाग्यांक से शत्रु संबंध होने से मूलांक-भाग्यांक के शुभ फलों में थोड़ी-बहुत न्यूनता आएगी। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों, मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षों में घटित होंगी। जब कभी इन्ही अंकों की तारीख, मास, वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभवार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगी, तो पाएंगी कि काफी घटनाएं इन्ही अंकों के मास, वर्ष, या दिन घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्ही अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए जनवरी, फरवरी, अप्रैल, जून, जुलाई, अगस्त के माह विशेष घटनाक्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक के अंक से मेल स्थापित करें तथा एक ही स्थान पर सभी शुभ रहें।

मूलांक 7 एवं भाग्यांक 1 के प्रभाववश ईस्वी सन, जिनका योग 1, 2, 4, 6, 7, 8 होता है, आपके लिए विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 1, 2, 4, 6, 7, 8 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

1 . 10, 19, 28, 37, 46, 55, 64, 73
2 . 11, 20, 29, 38, 47, 56, 65, 74

4 . 13, 22, 31, 40, 42, 58, 67
6 . 15, 24, 33, 42, 51, 60, 69
7 . 16, 25, 34, 43, 52, 61, 70
8 . 17, 26, 35, 44, 53, 62, 71

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार बन जाएंगी।

अंक ज्योतिष उपाय विचार

अनुकूल समय

नेपच्यून (केतु) 21 जून से 25 जुलाई तक पाश्चात्य मत से, सूर्य कर्क राशि में रहता है तथा 16 जुलाई से 16 अगस्त तक, भारतीय मत से सूर्य कर्क राशि में रहता है। इस समय जल तत्व की वृद्धि होती है। अतः उपयुक्त समय मूलांक सात के लिए कोई भी नया कार्य या महत्वपूर्ण कार्य करने हेतु अधिक उपयुक्त रहता है।

अनुकूल दिवस

रविवार एवं सोमवार के दिवस में कोई भी महत्वपूर्ण कार्य, अपने किसी अधिकारी से मिलना, पत्र व्यवहार आदि के कार्य प्रारंभ करना आपके लिए अनुकूल हैं। आप अपना कोई भी कार्य इन्हीं दिवसों में प्रारंभ करें।

शुभ तारीखें

किसी भी अंग्रेजी माह के दिनांक 2, 6, 7, 11, 15, 16, 20, 24, 25 एवं 29 आपके लिए विशेष महत्वपूर्ण होंगे। इन तारीखों में आप कोई भी नया कार्य, रोजगार-व्यापार, पत्र लेखन या उच्च अथवा विशिष्ट अधिकारी से मिलने का कार्य संपन्न करेंगे तो वह अधिक सुविधाजनक एवं फलदायक रहेगा।

अशुभ तारीखें

आपके लिए अंग्रेजी माह की 1, 9, 10, 18, 19, 27 एवं 28 तारीखें प्रतिकूल हैं। इन तारीखों में रोजगार-व्यापार संबंधी कार्य, पत्र व्यवहार या कोई भी महत्वपूर्ण कार्य प्रारंभ करना आपके लिए अनुकूल नहीं हैं। अतः आप इन तिथियों के दुष्प्रभाव से बचें।

मित्रता या साझेदारी

आप अपनी मित्रता ऐसे व्यक्तियों से रखें जिनका जन्म 2, 6, 7, 11, 15, 16, 20, 24, 25 एवं 29 तारीखों को अथवा 16 जुलाई से 16 अगस्त के मध्य हुआ हो। ऐसे व्यक्तियों से आपकी मित्रता घनिष्ठ रहेगी तथा वे रोजगार, साझेदारी के क्षेत्र में सहायक सिद्ध होंगे। ऐसे व्यक्ति आपके लिए विश्वसनीय रहेंगे।

प्रेम संबंध एवं विवाह

यदि आपको प्रेम अथवा विवाह संबंधी संबंध स्थापित करना है तो आपके लिए ऐसी महिलाएं शुभ रहेंगी जिनका मूलांक 2, 6, 7 हो तथा जिनका जन्म किसी भी माह की 2, 6, 7, 11, 15, 16, 20, 24, 25 एवं 29 तारीखों में हुआ हो। ऐसी महिलाएं आपके लिए विशेष फलदायी रहेंगी।

अनुकूल रंग

आपके मूलांक को देखते हुए आपके लिए हरा काफूरी, सफेद, हल्का तिल रंग शुभ फलदायक होंगे। इसलिए आप वस्त्रों के चयन के समय इन रंगों का ध्यान रखें। ये रंग आपके रोजगार-व्यवसाय तथा स्वास्थ्य के लिए भी अनुकूल रहेंगे। इन्हीं रंगों के तकिये, चादर आदि आपके लिए ठीक रहेंगे। आप इन रंगों का रुमाल अपने पास रखें, जो आपके स्वास्थ्य तथा आपके लिए मंगलमय रहेगा।

वास्तु एवं निवास

आपको ऐसा भवन जिसका मूलांक या नामांक 7 हो तथा वह नैऋत्य कोण दिशा में स्थित हो शुभ रहेगा। यदि आप मकान बनवाते हैं या खरीदने के इच्छुक हैं तो आपके लिए नैऋत्य कोण दिशा उपयुक्त रहेगी तथा आप अपने सभी आवश्यक कार्य इसी दिशा की ओर करें। अपने घर का फर्नीचर काफूरी सफेद, हल्के नीले रंग का खरीदेंगे तो पूर्ण फलदायी रहेगा।

शुभ वाहन नं

आप यदि स्वयं का वाहन आदि खरीदने के इच्छुक हैं तो उसके पंजीकरण के लिए आपके अपने मूलांक तथा मूलांक के मित्र अंक से मेल स्थापित करने वाले अंक ही अच्छे रहेंगे। आपका मूलांक 7 है, तब आपके लिए शुभ अंक 2, 6, 7 हो तो अच्छा रहेगा, जैसे पंजीकरण क्रमांक 5236 =7 इत्यादि। यात्रा के वाहन, सीट क्रमांक के अंक भी यही होंगे तो आपकी यात्रा सफल रहेगी। यदि आप होटल में कमरा बुक करते हैं तब नंबर 106 = 7 आदि अंकों का चयन ही करें। यही आपके लिए हितकर रहेगा।

स्वास्थ्य तथा रोग

जब भी आपके जीवन में रोग की स्थिति आती है तब आपको पेट दर्द, छूत के रोग, पसीने की अधिकता तथा दुर्गंध, आमाशय दोष, कब्जियत, नींद न आना, भूख न लगना, गुप्तांग संबंधित रोग, वात तथा गठिया इत्यादि रोग होते हैं। रोग होने, अशुभ समय आने, कष्ट और विपत्ति के समय आपको नृसिंह भगवान की पूजा एवं उपासना करनी चाहिए।

व्यवसाय

तैराकी, अभिनय, फिल्म व्यवसाय, वायु सेवा, पर्यटन, ड्राइवर का कार्य, बाबूगिरी, जल जहाज के कार्य, पत्रकारिता, संपादन कार्य, रबर, टायर, ट्यूब, प्लास्टिक वर्क, ललित कला संबंधी कार्य, राज्याधिकारी, जासूसी, तरल पदार्थों का क्रय-विक्रय, जादू के कार्य, कूटनीतिक कार्य, नियंत्रक, भूमिगत पदार्थों का व्यवसाय एवं ट्रांसमीटर, रेडियो, अनुवादक आदि के कार्य।

व्रतोपवास

शनिवार को नेपच्यून अरिष्ट दोष निवारण हेतु व्रत करें। शनिवार को काले, नीले वस्त्र धारण कर, इक्कावन या उन्नीस शनिवारों को व्रत करें। शरीर में तेल मालिश, तेल दान तथा पीपल के वृक्ष की पूजा करें। शनि मंत्र का यथाशक्ति रुद्राक्ष माला पर जप करें।

अनुकूल रत्न या उपरत्न

आपके लिए लहसुनिया प्रमुख रत्न है। इसके न मिलने पर आप पीला हकीक भी धारण कर सकते हैं। इसे आप शुक्ल पक्ष में शनिवार के दिन, चौघड़िया मुहूर्त में, चांदी की अंगूठी में तीन से पांच रत्ती के लगभग, दाहिने हाथ की कनिष्ठा उंगली में त्वचा को स्पर्श करते हुए धारण करें।

अनुकूल देवता

आप केतु ग्रह की उपासना करें अथवा नृसिंह भगवान की आराधना करें। नृसिंह भगवान के मंत्र 'ओम् ह्रीं उग्रं वीरं महा विष्णुं ज्वलंत सर्वतोमुखं नृसिंह भीषणं भद्र मृत्यु मृत्युं नमाम्यहं ह्रीं' का नित्य जप करें। प्रतिदिन कम से कम एक सौ आठ मंत्र का जप करें तथा पूर्णिमा के दिन सत्यनारायण कथा का श्रवण करेंगे तो आप विभिन्न रोंगों तथा समस्याओं से मुक्त होंगे। यदि यह संभव न हो सके तो नृसिंह भगवान के चित्र का ही नित्य प्रातः दर्शन कर लिया करें।

ग्रह गायत्री मंत्र

आपके लिए केतु के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु, केतु गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

केतु गायत्री मंत्र – ऊँ पद्मंपुत्राय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो केतुः प्रचोदयात्।।

ग्रह ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर आप केतु का ध्यान करें, मन में केतु की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें।

पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।

ग्रह जप मंत्र

अशुभ केतु को अनुकूल बनाने हेतु केतु के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान एक सौ सत्तर माला का है। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे।

ऊँ सां सीं सौं सः केतवे नमः।। जप संख्या 17000।।

वनस्पति धारण

आप बुधवार के दिन एक इंच लंबी असंगध की जड़ ला कर आसमानी धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधें या चांदी के ताबीज में भर कर गले में धारण करें। इससे नेपच्यून/केतु के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

वनस्पति स्नान

आपको प्रत्येक बुधवार को एक बाल्टी या बर्तन में सहदेई, लज्जालु (लोबान), बला, मोथा, प्रियंगु और हिंगोठ आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से आपकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ केतु/नेपच्यून के प्रभाव क्षीण हो कर आपके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्राप्त होगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए आप कूठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारू, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध को मिला कर चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर, भगवान का स्मरण करते हुए स्नान करें तो ग्रहों की शांति और सुख-समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ

केतु की शांति के लिए योग्य व्यक्ति को केतु के पदार्थ कस्तूरी, तिल, छाग, काला वस्त्र, ध्वजा, सप्तधान्य, कंबल, उड़द, वैदुर्य मणि, काले पुष्प, तेल, सुवर्ण, लोहा, शस्त्र आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

यंत्र

केतु को अनुकूल बनाए रखने हेतु केतु यंत्र को भोज पत्र पर अष्टगंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) स्याही से लिख कर, सोने या तांबे के ताबीज में, धूप-दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या पीले धागे में, शनिवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।

लग्न फल

आपका जन्म उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र के प्रथम चरण में सिंह लग्न में हुआ था। उस क्षण मेदिनीय क्षितिज पर धनु राशि का नवमांश एवं मेष राशीय द्रेष्काण का भी उदय काल था। सिंह राशीय लग्नाकृति स्वरूप से यह स्पष्ट दृश्य हो रहा है कि आपको स्वच्छंदता पूर्वक आनंदप्रद प्रसन्नचित उत्तम जीवन व्यतीत करने का सुअवसर प्राप्त होगा।

आप शारीरिक रूप से हृष्ट, पुष्ट, मजबूत, मधुर भाषी होंगी। जिसके प्रभाव से सभी लोग आपको बहुत पसन्द करेंगे तथा आपसे संबंधित रहेंगे। आप अपने से संबंधित व्यक्तियों से लाभांवित रहेंगी। आपकी आखें विपरीत योनि के व्यक्तियों के दर्शन हेतु ललायित रहेगी। पुरुष सौन्दर्य आपको रूचिकर लगेगा। आप अपने पति को प्यार नहीं करेंगी। परन्तु अनुकूल अवसर प्राप्त कर इसे अच्छा मौका समझ कर अन्य को अपने विचारों में ग्रहण कर लेंगी।

आपका पारिवारिक जीवन निश्चित रूप से उत्तम रहेगा। आपके निकटतम सम्पर्क एवं प्रिय जन अर्थात् सगे संबंधी लोग न केवल आपके प्रति श्रद्धावान रहेंगे बल्कि आपकी प्रसन्नता एवं सन्तुष्टि हेतु पूर्ण समर्पित रहेंगे। फलस्वरूप आप अतिरिक्त समय निकालकर निश्चित रूपेण इन लोगों से मिलने का प्रयास करेंगी।

आप अपने ढंग से अपना जीवन निर्वाह करेंगी। आप अपने अभ्युदय एवं उत्तम लाभ हेतु अपने ज्ञान का विकास कर सकती हैं। आपके लिए उपयुक्त कार्य व्यवसाय हेतु प्रशासनिक सेवा सम्पादन कारिता, संचार माध्यम एवं शैक्षणिक कार्य व्यवसाय उत्तम प्रतीत होता है। लेकिन आपके लिए सर्वथा चमत्कारिक व्यवसाय वाणिज्य कार्य, लेखाकार्य अथवा अभियांत्रिकी कार्य उत्तम रहेगा।

आप जन्म प्रभाव से ही आदेश का सम्मान करेंगी। आपके अधीनस्थ सहायक आपके प्रति श्रद्धावान रह कर आपकी प्रशंसा करेंगे तथा आपके निर्देशन के अनुसार वे आपको देखेंगे।

कठिन श्रमयुक्त आपकी महत्वकांक्षा यदा-कदा कृतघ्नता युक्त हो जाती है तो आप अपने उद्देश्य की प्राप्ति हेतु अपनी गति में तीव्रता लाती हैं। आप सदैव अपने कार्य की पूर्णाहुति हेतु तत्पर रहती हैं तथा सम्पादित कार्य को पूर्ति लेने के साथ-साथ अन्य कार्य के प्रारम्भ करने की प्रक्रिया पूरी कर लेंगी। आपमें आश्चर्यजनक पर्यवेक्षण की प्रतिच्छाया विद्यमान रहती है। परिणामस्वरूप आप अपनी प्रशासनिक सीढ़ी के सहारे अपने कार्यस्थल पर सफलता की ओर अग्रसर हो सकती हैं।

आप स्वाभाविक रूप से धनोपार्जन करेंगी परन्तु इस धन की सुरक्षा किस प्रकार की जाय तथा किस प्रकार सुरक्षित रखा जाय, यह बिंदु विचारणीय है। क्योंकि आप मात्र उदार हृदय की ही नहीं है बल्कि आप आनन्द पूर्ण सुअवसर पर सम्पूर्ण खर्च का भार अपने ऊपर ले लेती हो तथा सदैव अपने लिए तथा अपने परिवार के लिए व्यय करेंगी। आप सदैव ही

जनसाधारण के मध्य अपनी छवि को प्रदर्शित करने के लिए सजग रहेंगी। आप अपने आवासीय रख-रखाव एवं आधुनिक साज शय्या को अपने यहां आगंतुकों की दृष्टि में प्रभावशाली प्रस्तुती हेतु सजग रहेंगी। ताकि आपका प्रभाव उत्तम दृश्य हो।

आपका स्वास्थ्य आवश्यकता के अनुरूप जैसा चाहिए वैसा नहीं रहेगा। लेकिन आपकी बहुमुखी कार्यकलाप के कारण संभव है कि आपका शरीरिक ह्रास हो जाय तथा आप पीठ के रोग, पाचन क्रिया की गड़बड़ी, एवं रक्तचाप संबंधी रोग से आक्रांत हो जाएं। अतः आप सीमा के अन्तर्गत ही सभी कार्य सम्पादन करें तथा सन्तोषजनक विश्राम ग्रहण करें। आप स्वयं चटपटी और मसालेदार भोजन एवं मध्यपान का परित्याग कर दें।

आपके लिए साप्ताहिक दिनों में भाग्यशाली दिन रविवार, मंगलवार, और गुरुवार का दिन किसी भी बड़े कार्यों को प्रारंभ करने के लिए उपयुक्त एवं ठीक है। परंतु बुधवार, शुक्रवार एवं शनिवार का दिन आपके नये कार्य-कलाप के प्रारंभ करने हेतु अनुपयुक्त हैं। कृपया इन तीन दिनों को अव्यवहारणीय समझे। सोमवार आप के लिए मध्य फलदायक है।

आपके लिए अंक 1, 4, 5, 6 एवं 9 अंक अनुकूल एवं प्रभावशाली है। परन्तु अंक 2, 7 एवं 8 अंक आपके हित अनुपयुक्त है।

आपके लिए भाग्यवर्द्धक रंग नारंगी, लाल एवं हरा रंग है। परन्तु रंग नीला, काला एवं सफेद रंग आपके लिए त्याज्य है।

ग्रह फल

सूर्य

सप्तम भाव में सूर्य हो तो जातक चिन्तायुक्त राज्य से अपमानित, आत्मरत, कठोर, स्वाभिमानी एवं विवाहित जीवन दुःखी होता है।

कुम्भ राशि में रवि हो तो जातक स्थिरचित्त, स्वार्थी, कार्यदक्ष, क्रोधी, दुःखी, निर्धन, अच्छा ज्योतिषी एवं मध्य अवस्था के पश्चात् सन्यास लेने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति सप्तम भाव में है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके शुभ प्रभाव से धनलाभ प्राप्त करने में वे सफल होंगे तथा जीवन में सर्वप्रकार से आपकी सहायता एवं सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके विवाह कराने में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा। साथ ही आप उनकी विश्वास पात्र भी होंगी।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी आज्ञा पालन में भी नित्य रूचिशील रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा कुछ सैद्धान्तिक मतभेद भी होंगे जिससे सम्बन्धों में क्षणिक तनाव एवं कटुता उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समयोपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उनकी सहायता करने के लिए भी तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगी।

चन्द्र

तृतीय,भाव में चन्द्रमा हो तो जातक आस्तिक, तपस्वी, प्रसन्नचित्त, कफरोगी, मधुरभाषी प्रेमी, भाईयों और बहिनों का रक्षक, साहसी, विद्वान, एवं कंजूस होता है।

तुला राशि में चन्द्रमा हो तो जातक दीर्घदेही, आस्तिक, अन्नदाता, धनवान्, जमींदार, कुशाबुद्धिवाला, चतुर, उच्चाकांक्षाओं से रहित, सन्तोषी एवं परोपकारी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक कष्ट नहीं होगा। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह की भावना रहेगी तथा जीवन में सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको निश्छल भाव से सहयोग प्रदान करेंगी। इसके साथ ही आप में शक्ति, साहस एवं पराक्रम का भाव भी उन्हीं के प्रोत्साहन से जागृत होगा। साथ ही आपको सुन्दर भोजन कराने के लिए भी वे नित्य उत्सुक एवं तत्पर रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति विशेष श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी बातों से सहमत होकर उनकी आज्ञा का पालन करेंगी। इसके साथ ही जीवन में सर्वप्रकार के तन, मन, धन से उनको सहयोग देने के लिए तत्पर रहेंगी अतः एक दूसरें के लिए आप शुभ एवं अनुकूल रहेंगी।

मंगल

लग्न (प्रथम) में मंगल हो तो जातक, चपल, क्रूर, महत्वाकांक्षी, विचार रहित, गुप्तरोगी, उतावला, लौहधातु एवं व्रणजन्य, कष्ट से युक्त, व्यवसायहानि, दुर्घटना की सम्भावना, दुःखी, निर्धन एवं साहसी होता है।

सिंह राशि में मंगल हो तो जातक शूरवीर, सदाचारी, कार्यनिपुण, स्नेहशील, परोपकारी, ज्योतिषी, गणितज्ञ, माता-पिता का आज्ञाकारी, गुरुजनों का आदर करने वाला, उदार एवं सफल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति प्रथम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक व्याकुलता से वे पीड़ित रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह का भाव भी विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे तथा जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही अन्य प्रकार से समय समय पर आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आपके हृदय में भी उनके प्रति स्नेह एवं सम्मान की भावना विद्यमान रहेगी। आपके संबंध प्रायः मधुर ही होंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण अल्प समय के लिए संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होंगे परन्तु कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। आप एक दूसरे से प्रायः सहमत रहेंगे एवं विश्वास भी करेंगे। इसके साथ ही आप भी हमेशा सुख दुःख में यथाशक्ति उनकी सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगी।

बुध

सातवेंभाव में बुध हो तो जातक सुन्दर, विद्वान्, कुलीन, व्यवसायकुशल, धनी, लेखक, सम्पादक, उदार, सुखी, अल्पवीर्य, दीर्घायु एवं धार्मिक होता है।

कुम्भ राशि में बुध हो तो जातक कुटुम्बहीन, दुःखी, अल्पधनी, झगड़ालू, प्रसिद्ध निर्बल स्वास्थ्य एवं प्रगति करने वाला होता है।

गुरु

लग्न (प्रथम) में गुरु हो तो जातक विद्वान् दीर्घायु, ज्योतिषी कार्यपरायण, लोकसेवक, तेजस्वी, प्रतिष्ठित, स्पष्टवक्ता, स्वाभिमानी, सुन्दर, सुखी, विनीत, पुत्रवान् धनवान्, राज्यमान, सुन्दर एवं धर्मात्मा होता है।

सिंह राशि में गुरु हो तो जातक धार्मिक, प्रेमी, कार्यकुशल, सभाचतुर शत्रुजित्, आकर्षकव्यक्तित्व, उच्चाकांक्षी, सक्रिय, सुखी, कुशाबुद्धि साहित्य की ओर झुकाव, लेखक एवं उच्च सरकारी पद पर आसीन होता है।

शुक्र

नवम भाव में शुक्र हो तो जातक धर्मात्मा, राजप्रिय, पवित्रतीर्थ यात्राओं का कर्ता, दयालु, प्रेमी, गृहसुखी, गुणी, चतुर एवं आस्तिक होता है।

मेष राशि में शुक्र हो तो जातक स्वप्न जगत में विचारने वाला, आवेशपूर्ण स्वभाव, अस्थिरमन, दुःखी, बुद्धिमान्, आरामतलब, दुराचारी, परस्त्रीरत, झगड़ालू विश्वास हीन एवं अधिक खर्च करने वाला होता है।

शनि

द्वितीय भाव में शनि हो तो जातक कटुभाषी, साधुद्वेषी, मुखरोगी, और कुम्भ या तुला का शनि हो तो धनी, लाभवान् एवं कुटुम्ब तथा भ्रातृवियोगी होता है।

कन्या राशि में शनि हो तो जातक मितभाषी, परोपकारी, लेखक, कवि, सम्पादक, धनवान्, बलवान्, निश्चित कार्य कर्त्ता, ईर्ष्यायलु स्वभाव, असभ्य, निर्बलस्वास्थ्य एवं पुराने विचारों वाला होता है।

राहु

लग्न (प्रथम) में राहु हो तो जातक कामी, दुर्बल, मनस्वी, अल्पसन्तति युक्त, राजद्वेषी, नीचकर्मरत दुष्ट, स्तकरोगी, स्वार्थी एवं बात-बात पर सन्देह करने वाला होता है।

सिंह राशि में राहु हो तो जातक चतुर, विचारक, सज्जन, नीति दक्ष एवं सत्पुरुष होता है।

केतु

सप्तम भाव में केतु हो तो जातक मतिमन्द, मूर्ख, दुखद विवाहित जीवन, पति-पत्नी में सम्बन्ध विच्छेद, शत्रुभीरु एवं सुखहीन होता है।

कुम्भ राशि में केतु हो तो जातक दुःखी, कर्णरोगी, भ्रमणशील, व्ययशील एवं साधारण धनी होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। सामान्यतया सिंह लग्न में उत्पन्न जातक साहसी तेजस्वी एवं पराक्रमी होते हैं। आत्मविश्वास के भाव से ये परिपूर्ण रहते हैं तथा अपनी बुद्धि एवं पराक्रम से जीवन में उन्नति तथा सफलता प्राप्त करते हैं। धनैश्वर्य वैभव एवं भौतिक सुख संसाधनों से ये प्रायः युक्त रहते हैं तथा जीवन में सुखपूर्वक इनका उपभोग करते हैं। ये जातक सिद्धांतवादी होते हैं तथा अपने सिद्धांतों की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। धार्मिकता का भाव भी इनमें रहता है तथा परोपकारी कार्यों के लिए भी ये प्रवृत रहते हैं। अतः ये पूर्ण विश्वास के योग्य होते हैं। राजनीति तथा कार्यक्षेत्र में ये किसी सम्मानित पद को अर्जित करते है तथा इनकी सामाजिक मान प्रतिष्ठा तथा यश भी दूर दूर तक विद्यमान रहता है। साथ ही नेतृत्व की क्षमता भी इनमें विद्यमान रहती है।

अतः इसके प्रभाव से आपका व्यक्तित्व आकर्षक होगा जिससे अन्य लोग आपसे प्रभावित होंगे। आप में निर्भीकता का भाव भी होगा तथा अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करके उनमें इच्छित सफलता अर्जित करेंगी जिससे आपको भौतिक सुखसंसाधनों की प्राप्ति होगी तथा उन्नति मार्ग भी प्रशस्त होंगे।

आपके मन में उदारता का भाव भी होगा तथा अन्य जनों के प्रति सहानुभूति का प्रदर्शन करेंगी। आप स्वपरिश्रम से जीवन में उन्नति करेंगी प्रतियोगिता के क्षेत्र में आप सफल होंगी तथा आपके शत्रु एवं प्रतिद्वन्दी आपसे प्रभावित रहेंगे। परन्तु आप अपने को अन्य जनों से श्रेष्ठ समझेंगे। यदि इस प्रवृति का त्याग कर सकें तो समाज में आपके प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

लग्न में बृहस्पति के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक शांति तथा सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। आपका स्वरूप सुदंर एवं आकर्षक होगा तथा अन्य लोग आपसे प्रभावित रहेंगी। शारीरिक बल से आप पूर्ण रहेंगी तथा उत्साह एवं परिश्रमपूर्वक आप अपने सांसारिक महत्व के कार्यों को सम्पन्न करेंगी जिससे आपके उन्नति एवं लाभ मार्ग प्रशस्त होंगे। राजनीति या अपने कार्य क्षेत्र में आप आदरणीय रहेंगी तथा किसी उच्च या प्रतिष्ठित पद को प्राप्त करके यश अर्जित करेंगी।

आप स्वभाव से गम्भीर तथा धैर्यवान रहेंगी तथा कार्यों को करने में अत्यंत ही कुशल होंगी। साथ ही सभा में अन्य जनों को अपने ओजस्वी व्यवहार से प्रभावित करने में समर्थ होंगी। पुत्र संतति से आप युक्त होंगी तथा पुत्र से आपको प्रसिद्धि भी प्राप्त होगी। आप एक विदुषी महिला होंगी तथा शास्त्रों का भी ज्ञान होगा। आप सत्कर्मों को करने में हमेशा रूचिशील होंगी तथा अवसरानुकूल इस पर अपना समय व्यतीत करेंगी तथा इन्हीं से आपको इच्छित सम्मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। साथ ही विचारशीलता के भाव से भी आप युक्त होंगी।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा समय समय पर धार्मिक कार्यकलापों तथा अनुष्ठानों को सम्पन्न करेंगी। इसी परिपेक्ष्य में सत्संग आदि में आपके रूचि रहेगी। मित्र वर्ग के आप प्रिय होंगी तथा उनसे आपको इच्छित सहयोग मिलता रहेगा। साथ ही जीवन में

समस्त सुखों को अर्जित करने में समर्थ रहेंगी तथा आनंदपूर्वक आपका समय व्यतीत होगा।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपकी जन्म कुंडली में द्वितीय भाव में कन्या राशि स्थित है जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप धन संग्रह के प्रति हमेशा यत्नशील रहेंगी तथा आपात्काल के लिए आप के पास कुछ न कुछ धन अवश्य रहेगा। आतिथ्य सत्कार की आपके मन में प्रबल भावना रहेगी तथा इससे आपको अत्यंत ही प्रसन्नता की प्राप्ति होगी। अतः समय समय पर अन्य जनों को अपने घर में आमंत्रित करती रहेंगी। आपका पारिवारिक जीवन सुख शान्ति से युक्त रहेगा तथा समृद्धि भी बनी रहेगी परन्तु पैतृक सम्पति को अल्प मात्रा में ही अर्जित करेंगी तथा जीवन में जो कुछ अर्जित करेंगी स्व परिश्रम तथा पराक्रम से करेंगी।

यह भाव वाणी का प्रतिनिधि भाव है तथा बुध ग्रह वाणी का प्रतिनिधिग्रह है। अतः इसके प्रभाव से आपकी वाणी में मृदुता तथा ओजस्विता का भाव विद्यमान रहेगा। इससे अन्य लोग आपसे प्रभावित तथा आकर्षित दौरान आपकी- ठोस तर्को से सहमत भी रहेंगे। इसके अतिरिक्त अपने विचारों को पूर्ण रूप से अभिव्यक्त करने में समर्थ रहेंगी। आप अधिकांश धन अपनी विद्वता से अर्जित करेंगी। तथा जीवन में अन्य भौतिक सुख संसाधन तथा स्वर्णादि धातुओं की भी प्राप्ति होगी। इस प्रकार धनऐश्वर्य से युक्त होकर अपना जीवन व्यतीत करेंगी।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप प्रसन्नचित महिला होंगी तथा स्मरण शाक्ति भी तीव्र रहेगी एवं दीर्घकाल तक किसी दृष्ट वस्तु को नहीं भूलेंगी। साथ ही ज्ञानार्जन भी शीघ्रता से करेंगी। जीवन में भाई बहिनों से युक्त रहेंगी तथा उनका पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही आप उनको अपनी ओर से पूर्ण सुख एवं सुविधाएं प्रदान करने के लिए सदैव तत्पर रहेगी परन्तु यदि कभी वे आपकी आज्ञा का पालन नहीं करते या प्रतिकूल व्यवहार करते है तो आप शीघ्र ही उत्तेजित हो जाएंगी परन्तु शीघ्र ही शान्त भी हो जाएंगी। साथ ही पारिवारिक शान्ति के लिए ऐसे अवसरों की उपेक्षा भी करेंगी।

आप एक साहसी तथा पराक्रमी महिला होंगी तथा उत्तेजना में कभी कोई महत्वपूर्ण निर्णय नहीं लेंगी। अपनी इसी बुद्धिमता के कारण आप धनवान होंगी तथा समाज में आदरणीय समझी जाएंगी। आपको संचार संबंधी महत्वपूर्ण उपकरणों की प्राप्ति होगी तथा टेलीफोन दूरदर्शन या वाहन आदि से युक्त रहकर सुखी एवं वैभवशाली जीवन व्यतीत करेंगी। आपको रोमांटिक संगीत प्रिय लगेगा तथा यदा कदा इससे मित्रों का मनोंरजन भी करेंगी। आपकी दूर समीप की यात्राएं भी होंगी तथा इनसे आपको लाभ एवं ख्याति प्राप्त होती रहेगी। साथ ही यात्रा के मध्य आपके नवीन मित्र बनेंगे। संबंधियों से आपको लाभ एवं सहयोग प्राप्त होता रहेगा। आपकी सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी एवं अध्ययन कार्य के प्रति भी रूचिशील रहेंगी। इसके अतिरिक्त आपका स्वभाव चंचल तथा संतति अल्प मात्रा में ही होगी। साथ ही सेवक वर्ग की बहुलता रहेगी तथा मित्रता का क्षेत्र भी विस्तृत रहेगा।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आपको जीवन में समस्त सांसारिक एवं भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगी। आप ऐश्वर्यशाली महिला होंगी तथा समाज में सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगी। इसके अतिरिक्त आधुनिक भौतिक उपकरणों एवं सुख संसाधनों से भी युक्त रहेंगी।

आप एक पराक्रमी एवं भाग्यशाली महिला होंगी तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को प्राप्त करेंगी। पिता से भी आपको प्रचुर मात्रा में चल एवं अचल संपत्ति की प्राप्ति होगी जिससे आपकी समृद्धि में वृद्धि होगी। चतुर्थेश मंगल के प्रभाव से आपको जमीन जायदाद संबंधी सम्पत्ति से शीघ्र एवं उचित लाभ के योग बनते है। अतः यदि आप इन क्षेत्रों में पूंजी निवेश करें तो प्रचुरमात्रा में लाभ अर्जित करने में समर्थ हो सकती है लेकिन विवादित सम्पत्ति का आपको कभी भी क्रय विक्रय नहीं करना चाहिए।

जीवन में आप उत्तम गृह से युक्त होंगी तथा यह विस्तृत क्षेत्र में होगा। यह आधुनिक उपकरणों एवं सजावट की वस्तुओं से सुसज्जित रहेगा। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा एवं पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगी लेकिन संबंधों में औपचारिक्ता रहेगी। इसके अतिरिक्त वाहन सुख भी उत्तम होगा तथा युवावस्था के बाद आप स्वयं के वाहन को आर्जित करके इसका उपभोग करेंगी।

आपकी माता जी तेजस्वी शिक्षित एवं बुद्धिमान महिला होंगी तथा पारिवारिक सदस्यों पर उनका पूर्ण प्रभाव रहेगा एवं सबका वह अपनी ओर से उचित देखभाल करेंगी। आपकी उन्नति में उनका विशेष योगदान रहेगा तथा समयानुसार उनसे आप वांछित नैतिक एवं आर्थिक सहयोग से लाभान्वित होती रहेंगी। आपका भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव होगा तथा सुख दुख में उनका पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी। इससे आपसी संबंधों में भी मधुरता बनी रहेगी।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपकी रूचि रहेगी तथा अपनी बुद्धिमता से आप प्रारंभिक कक्षाओं से ही अच्छे अंक अर्जित करने में समर्थ होंगी। आप स्नातक परीक्षा सम्मानित रूप से उतीर्ण करेंगी। इससे आपके मन में उत्साह की वृद्धि होगी तथा पूर्ण उत्साह के साथ आप भविष्य में उन्नति के लिए प्रयत्नशील होंगी। इसके अतिरिक्त आप किसी तकनीकी या व्यावसायिक शिक्षा में भी डिग्री अर्जित कर सकती हैं।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचम भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप उद्यमी, साहसी तथा पराक्रमी महिला होंगी। उच्चशिक्षा प्राप्त करने के लिए आप रूचिशील रहेंगी तथा यत्न पूर्वक इसमें सफलता प्राप्त करेंगी। आप धार्मिक विचारों से युक्त दार्शनिक प्रवृति तथा ईश्वर को मानने वाली महिला होंगी तथा धर्म एवं शास्त्र के अनुसार ही अपने अधिकाशं शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यो को सम्पन्न करेंगी। बृहस्पति के प्रभाव से आप मुक्त विचारों की महिला होगी तथा आत्मविश्वास का प्रबल भाव भी विद्यमान रहेगा जिससे जीवन में ख्याति तथा सम्मान अर्जित करेंगी। आपकी सीखने की शक्ति अत्यन्त ही तीव्र होगी तथा शीघ्र ही नवीन सिद्धांतों या विचारों को सृजन करने में समर्थ रहेंगी साथ ही अन्तर्ज्ञान भी सत्य ही सिद्ध रहेगा। आपके पति बुद्धिमान शांत स्वभाव तथा कार्य दक्ष होंगे तथा परस्पर एक दूसरे को पूर्ण विश्वास के साथ सहयोग प्रदान करेंगे जिससे दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा। आपकी ईश्वर के प्रति श्रद्धा तथा सम्मान के भाव की उन्नति वृद्धावस्था में होगी जिससे आप वांछित श्रखयाति तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। आपकी संतति संख्या सीमित रहेगी एवं शरीर से वे पूर्ण स्वस्थ बुद्धिमान होंगे तथा अपने क्षेत्र में वांछित सफलताएं अर्जित करेंगे। साथ ही वृद्धावस्था में आप की पूर्ण सेवा करेंगे तथा आपको किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। वैदिक ज्ञानार्जन या ज्योतिष के प्रति भी आपकी श्रद्धा रहेगी तथा यत्न पूर्वक इनका ज्ञान प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त आप वाहन आदि से सम्पन्न शत्रुनाशक, सज्जनों की सेवा करने वाली, योग्य तथा भाग्यशाली पुत्रों से युक्त रहेंगी तथा आनन्द पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगी।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आपको अपने कार्य क्षेत्र में मजबूत विपक्ष या शत्रु का सामना करना पड़ेगा। यदि आप किसी के साथ कार्य कर रही हों या स्वयं का कोई व्यवसाय चला रही हों तो सहयोगियों या साझेदार आदि से आपका विरोध या शत्रुता का भाव अपरिहार्य कारणों से उत्पन्न हो सकता है। वैसे आप एक व्यावहारिक महिला होंगी तथा यत्नपूर्वक किसी के साथ भी शत्रुता के भाव की उपेक्षा करेंगी परन्तु आपके कार्य कलापों से अन्य जन प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होंगे जिससे वे आपका विरोध करेंगे। इसी संदर्भ में कोई मुकद्दमे बाजी प्रारंभ हो सकती है परन्तु आप अपने धैर्य बुद्धिमता शान्ति तथा प्रतिभा से शत्रु या विरोधी पक्ष पर विजय प्राप्त करने में समर्थ रहेंगी तथा शत्रु की गतिविधियों से कभी भी विचलित नहीं होंगी।

आपकी सेवा करने के लिए आपके पास नौकर होंगे लेकिन उनकी संख्या अधिक रहेगी। अतः उनमें से कोई एक आपके लिए परेशानी पैदा कर सकता है। अतः नौकरों का चुनाव करते समय अत्यधिक सावधानी का पालन करना चाहिए। आपके संबन्धी भी आपके लिए कार्य क्षेत्र में यदा कदा हानिकारक सिद्ध हो सकते है तथा वे ही आपके वास्तविक शत्रु होंगे। अतः सोच समझकर अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

आप आवश्यकतानुसार सीमित व्यय करने की उत्सुक रहेंगी। अतः ऋण आदि लेने के अवसर बहुत कम आएंगे परन्तु युवास्था में स्थिति आ सकती है लेकिन आप उसका यथासमय भुगतान करने में समर्थ रहेंगी। मामा मामियों का आपके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा परन्तु आर्थिक सहयोग अल्प मात्रा में ही प्रदान करेंगे साथ ही मामाओं पर मामियों का अधिकार होगा। आर्थिक मुकद्दमे आपके लिए लाभदायक सिद्ध होंगे। यद्यपि आप मुकद्दमे आदि की उपेक्षा करेंगी तथा कोर्ट से बाहर ही मामलों खत्म करने की इच्छा रखेंगी। यदि ऐसा नहीं होगा तभी आप कोर्ट में जाएंगी। इस प्रकार आप स्वपराक्रम एवं प्रभाव से विरोधियों का दमन करके शान्ति पूर्वक अपने सांसारिक कार्यो को सम्पन्न करेंगी।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है तथा बुध भी सप्तम भाव को प्रभावित कर रहा है सामान्यतया कुम्भ राशि की सप्तम भाव में स्थिति से जातक का सहयोगी उग्रस्वभाव पित प्रकृति कुल में श्रेष्ठ व्ययशील एवं सेवकों से युक्त रहता है तथा बुध के प्रभाव से वह सुशील, बुद्धिमान एवं सांसारिक कार्य कलापों में दक्ष होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपके पति सुशील स्वभाव के बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा सांसारिक कार्य कलापों को बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगे। वह अपने कुल में श्रेष्ठ होंगे तथा बुध के प्रभाव से उनमें कर्तव्य परायणता का भाव भी विद्यमान होगा जिससे परिवार एवं समाज के प्रति अपने कर्तव्य का ईमानदारी से पालन करेंगे । इसके अतिरिक्त सहिष्णुता का भाव भी उनमें विद्य मान रहेगा।

आपके पति सुंदर एवं गौर वर्ण की आकर्षक व्यक्ति होंगे तथा उनका कद भी ऊंचा होगा। बुध के प्रभाव से उनका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय होगा तथा शरीर पुष्ट एवं बलिष्ठ होगा जिससे उनका सौन्दर्य एवं व्यक्तित्व आकर्षक बना रहेगा। साहित्य संगीत एवं कला के प्रति उनकी रूचि रहेगी तथा सुंदर एवं कलात्मक वस्तुओं के संग्रह में प्रवृत रहेंगे। इस प्रकार कला संगीत एवं सौन्दर्य का वह संगम होंगे।

आपका विवाह विज्ञापन के माध्यम से सम्पन्न होगा तथा आप अपनी इच्छा से भी प्रेम विवाह सम्पन्न कर सकती हैं। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा एवं परस्पर प्रेम आकर्षण तथा अपनत्व का भाव होगा साथ ही सुख दुख में एक दूसरे का पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। आप दोनों बुद्धिमान एवं शिक्षित होंगे तथा जीवन में मूल्यों तथा सिद्धांतों में समानता रहेगी। अतः आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी तथा जीवन प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

आपका विवाह किसी समृद्ध परिवार में होगा तथा ससुराल पक्ष धनवान एवं प्रभाशाली होगा। विवाह में मायके से आपको दहेज के रूप में प्रचुर मात्रा में धन सम्पति की प्राप्ति होगी एवं बहुमूल्य उपहार भी मिलेंगे। विवाह के बाद सास ससुर से आपके अच्छे संबंध रहेंगे तथा वे भी आपको पुत्रीवत स्नेह प्रदान करेंगे।

सास ससुर के प्रति आपके पति का प्रबल सेवा भाव रहेगा तथा अपनी ओर से उनका पूर्ण ध्यान रखेंगे। साले एवं सालियों को भी अपने मधुर स्वभाव तथा मृदुवाणी से प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रखेंगे तथा वे भी उन्हें वांछित सहयोग तथा सम्मान प्रदान करेंगे। इससे परिवार में सुख शांति बनी रहेगी।

व्यापार में साझेदारी के लिए स्थिति शुभ रहेगी तथा इससे आपको विशिष्ट लाभ एवं उन्नति की प्राप्ति होगी। संबंधी वर्ग से साझेदारी करने पर अतिरिक्त लाभ प्राप्त होगा।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप में अंतर्प्रज्ञा शक्ति विद्यमान रहेगी तथा आध्यात्म, ज्योतिष तथा तंत्र मंत्र आदि पर पूर्ण विश्वास रहेगा। साथ ही इसका उचित ज्ञान अर्जित करने में भी रूचिशील रहेंगी। आपकी पूर्वाभास तथा भविष्य वाणियां प्रायः सत्य ही सिद्ध होगी तथा प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से आप इससे लाभान्वित होती रहेंगी। आपको पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति अवश्य होगी तथा किसी वृद्ध जन की जायदाद भी आपके नाम हो सकती है। आप सामान्यतया सर्व प्रकार से खुशहाल रहेंगी तथा चल एवं अचल सम्पत्ति की स्वामिनी बनेंगी। आपके पास एक से अधिक आवास स्थल भी हो सकते हैं। आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखपूर्वक व्यतीत होगा एवं ससुराल पक्ष धनऐश्वर्य से युक्त रहेगा ।

बीमा आदि करवाने से आपको समय समय पर लाभ हो सकता है परन्तु दीर्घावधि की अपेक्षा लधुअवधि के बीमों से आपको शीघ्र एवं उचित लाभ की प्राप्ति हो सकती है तथा सम्बधित वस्तु की भी पूर्ण सुरक्षा रहेगी। अतः बीमा आपको अवश्य कराना चाहिए। आपकी कुंडली में चोरी आदि का कोई विशेष योग नहीं है। यद्यपि एक बार चोर अवश्य इसके लिए प्रयत्न करेंगे लेकिन किसी कीमती वस्तु को ले जाने में असफल रहेंगे अतः आपको अपनी बहुमूल्य वस्तुओं की पूर्ण सुरक्षा रखनी चाहिए। साथ ही दुर्घटना आदि की उपेक्षा के लिए आपको तेज वाहन नहीं चलाना चाहिए साथ तथा शारीरिक सुरक्षा के लिए सतर्क रहना चाहिए। आपकी आयु अच्छी रहेगी तथा सामान्यतया प्रसन्नता पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगी।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है अतः इसके प्रभाव से आप ईश्वर की सत्ता पर विश्वास करेंगी तथा धार्मिक एवं पारिवारिक परम्पराओं को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगी। आप प्रतिदिन ईश्वर का ध्यान अवश्य करेंगी परन्तु पूजा पाठ आदि में आपकी विशेष रूचि नहीं रहेगी क्योंकि आपके द्वारा यह विधान कुछ लोगों के द्वारा अपने स्वार्थ के लिए बनाया गया है। धार्मिक कार्यो पर व्यय करने में भी अत्यधिक सतर्कता का पालन करेंगी जिससे ऐसे मामलों में अन्य लोग आपको धोखा न दे सकें। आप ध्यान समाधि की भी इच्छुक रहेंगी। तीर्थ स्थानों की यात्रा में आपकी कोई विशेष रूचि नहीं रहेगी क्योंकि भीड़ भरे वातावरण आप अपने लिए असुविधा जनक समझती हैं। आपको शान्ति पूर्ण स्थान अच्छा लगेगा एवं आध्यात्मिक ग्रंथों का अध्ययन करने में भी रूचिशील रहेंगी। साथ ही अर्न्तप्रज्ञा शक्ति प्रबल रहेगी फलतः आपके द्वारा की गई भविष्य वाणियां प्रायः सत्य सिद्ध होंगी।

आप एक उच्च शिक्षा प्राप्त विदुषी होंगी तथा समाज में यथोचित मान सम्मान प्राप्त करेंगी। साथ ही अन्य लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। सौभाग्य से भी आप युक्त रहेंगी एवं विकट परिस्थितियों में भाग्यबल से समाधान हो जाएगा तथा आप सुरक्षा की अनुभूति करेंगी। लम्बी दूरी की यात्राओं से आपको लाभ सम्मान तथा विशिष्ट उपलब्धियां अर्जित होगी। पौत्रों से आपको खुशी एवं सहयोग मिलेगा। समाज में आप एक प्रतिष्ठित महिला होंगी तथा अपने पूर्व जन्म के पुण्यों से इस जीवन में सम्मान ऐश्वर्य एवं खुशहाली प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त आपके मन में सेवा की प्रवृति रहेगी तथा प्राणिमात्र की सेवा करके अपनी दयालुता का परिचय देंगी ।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। वृष राशि भूमितत्व युक्त राशि है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा जलतत्व ग्रह के प्रभाव से इसमें आप सामान्यतया परिवर्तन करती रहेंगी तथा ऐसे परिवर्तनों से आपको लाभ एवं उन्नति की प्राप्ति होगी जिससे आप मानसिक सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगी।

आजीविका में आपके लिए कला, संगीत, सिनेमा, नाटक, दूरदर्शन विभाग, इलैक्ट्रोनिक्स विभाग, न्याय विभाग, न्यायधीश, वकील, सचिव, सलाहकार, फिल्म निदेशक या कलाकार के रूप में कार्य करना शुभ एवं अनुकूल होगा। इन क्षेत्रों में यदि आप अपनी आजीविका प्रारंभ करेंगी तो आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों से सुरक्षित रहेंगी। अतः आप को उपरोक्त विभागों में ही अपने कार्यक्षेत्र का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए चांदी, सोना, हीरा आदि रत्न एवं धातु का कार्य, चतुष्पद या वाहन संबंधी क्रय विक्रय, आलंकारिक एवं मूल्यवान वस्त्रों का व्यापार, सौन्दर्य प्रसाधन संबंधी कार्य, सफेद वस्त्रों या रेशमी वस्त्रों का व्यापार एवं आयात निर्यात से भी लाभ होगा। साथ ही कीमती शराब, इलैक्ट्रोनिक्स उपकरण एवं फिल्म निर्माण का कार्य भी शुभ एवं अनुकूल रहेगा। अतः व्यापार से वांछित लाभ अर्जित करने के लिए आपको इन्हीं वस्तुओं या क्षेत्रों में व्यापार प्रारंभ करना चाहिए।

जीवन में आपको मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा किसी उच्चपद को भी प्राप्त करने में सफल होंगी। साथ ही सामाजिक सांस्कृतिक संस्थाओं एवं क्लब आदि में भी आप कोई सम्मानीय पदाधिकारी हो सकती है। इससे आपके सामाजिक प्रभाव में वृद्धि होगी तथा यश भी दूर दूर तक व्याप्त होगा। इसके साथ ही आप सामाजिक एवं राज्यस्तर पर कोई सम्मान भी प्राप्त कर सकती है।

आपके पिता सुंदर एवं आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होंगे तथा सामाजिक जन उनसे पूर्ण रूप से प्रभावित रहेंगे। वह बुद्धिमान शिक्षित एवं मनोरंजक प्रवृति के भी व्यक्ति होंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य तथा अपनत्व का भाव होगा एवं शिक्षा दीक्षा का वे उचित प्रबंध करेंगे। कार्यक्षेत्र में भी पिता से आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा एवं उनके प्रभाव से भी आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगी। आप दोनों के परस्पर संबंधों में मधुरता रहेगी तथा सैद्धान्तिक तथा वैचारिक समानता भी होगी। इसके अतिरिक्त पिता की आप आज्ञाकारी रहेंगी तथा जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को एक दूसरे के सहयोग एवं सलाह से सम्पन्न करेंगी। इस प्रकार आपका जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप एक महत्वाकांक्षी महिला होंगी तथा मन में विभिन्न प्रकार की इच्छाएं विद्यमान रहेंगी। साथ ही अपनी अधिकांश इच्छाओं तथा आकांक्षाओं को समय समय पर परिश्रम एवं पराक्रम से पूर्ण करने में सफल होंगी। अपनी चतुराई तथा कार्यकुशलता से आप सदैव उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगी। आप की प्रवृति सक्रिय रहेगी तथा विभिन्न प्रकार के कार्यो को करने से धन एवं लाभ अर्जित करेंगी। लेखन, कमीशन, प्रेस,समाचारपत्र तथा व्यापारादि से आप इच्छित लाभ एवं धन अर्जित कर सकती हैं। यदि आप कहीं भी कार्यरत नहीं तो आपके पति इनसे लाभ अर्जित करेंगे। आपका ज्येष्ठ भाइयों की अपेक्षा बहिनों से अधिक लगाव रहेगा तथा वे भी आपको यथोचित स्नेह एवं सुख प्रदान करने में तत्पर रहेंगी तथापि भाइयों से आपको समय समय पर सहयोग मिलता रहेगा ।

आपके मित्रों की संख्या अधिक रहेगी तथा मित्र मंडली की आप सम्मान्नीया सदस्या होंगी तथा इनके मध्य आनन्द की अनुभूति करेंगी। आपके समस्त मित्र शिक्षित चतुर एवं विद्वान होंगे जिससे परस्पर कई विषयों पर तर्क वितर्क करेंगे इससे आपके ज्ञान में वृद्धि होगी। समाज या अपने क्षेत्र में भी आप प्रतिष्ठत एवं ख्याति प्राप्त होंगी तथा सभी लोग आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। साथ ही लोगो की भलाई तथा सेवा के लिए हमेशा तत्पर रहेगी जिससे समय समय के साथ आपको किसी विशिष्ट सम्मान की प्राप्ति भी हो सकती है। इसके अतिरिक्त बुद्धिजीवी वर्ग से हमेशा प्रभावित रहेंगी तथा उनसे संबंध स्थापित करके प्रसन्नता प्राप्त करेंगी। इस प्रकार आपका सांसारिक जीवन सुख ऐश्वर्य से युक्त होकर व्यतीत होगा।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है अतः इसके प्रभाव से आप की प्रवृति धार्मिकता से युक्त रहेगी तथा तीर्थ यात्राओं पर आपका व्यय होगासाथ ही परोपकारी संबंधी कार्य तथा ब्राह्मणो की सेवार्थ आप किसी धार्मिक स्थल का निर्माण भी करवा सकती हैं। साथ ही कुआं, बगीचा या रास्ते आदि का निर्माण करके समाज में मान सम्मान अर्जित करेंगी। साथ ही परिवार एवं वच्चों के स्तर में वृद्धि पर भी आप इच्छित व्यय होगा।

आपका सामान्य व्यय अधिक मात्रा में होगा फलतः अवस्था के साथ साथ आपको आर्थिक परेशानी का सामना भी करना पड़ सकता है। आप एक स्वच्छंद प्रवृति की महिला होंगी तथा उनमुक्त हाथों से व्यय करेंगी एवं बिना अपनी आर्थिक स्थिति को देखे हुए अन्य जनों की सहायता के लिए तत्पर हो जाएगी इससे आपके प्रभाव तथा मान सम्मान में वृद्धि तो होगी परन्तु आर्थिक स्थिति पर इसका दुष्प्रभाव पड़ेगा अतः ऐसे कार्यो को आप यदि सोच समझकर सावधानी से सम्पन्न करेंगी तो आप ऐसी स्थिति से सुरक्षित हो सकती हैं। युवावस्था में आपको कई प्रकार से उतार चढ़ाव देखने पड़ेगे लेकिन व्यय जैसा भी करेंगी शुभ ही अधिक करेंगी।

आपकी दूर समीप की यात्राएं प्रायः सम्पन्न होती रहेंगी तथा इनसे आपको लाभ एवं सम्मान प्राप्त होगा। आपकी सामान्य यात्राएं व्यापार या कार्य क्षेत्र से संबंधित रहेगी तथापि भ्रमण आदि के लिए भी यात्राएं आदि होती रहेगी। साथ ही विदेश भ्रमण के योग भी बनते है तथा समयानुसार आप काफी समय तक वहां प्रवास भी कर सकती हैं। इस प्रकार आपका सामान्य समय सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

नक्षत्रफल

आपका जन्म विशाखा नक्षत्र के द्वितीय चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि तुला तथा राशि स्वामी शुक्र होगा। नक्षत्रानुसार आपकी नाड़ी अन्त्य, वर्ग सर्प, वर्ण शूद्र, गण राक्षस तथा योनि व्याघ्र होगी। नक्षत्र के अनुसार आपका जन्म नाम का प्रथमाक्षर "तु" या "तू" से प्रारम्भ होगा।

आप अपने पति पर हमेशा पूर्ण रूप से नियंत्रण करने में सफलता प्राप्त करेंगी। वे आपकी आज्ञा या सलाह के बिना कोई भी सांसारिक कार्यकलापों को सम्पन्न नही कर सकेंगे। इस प्रकार वे पूर्ण रूप से आपके वश में रहेंगे। आप छोटी छोटी वस्तुओं पर अभिमान का प्रदर्शन करेंगी जिससे समाज में आपके सम्मान में न्यूनता आएगी। आपकी सभी शत्रु आपसे पराजित दौरान आपकी- विरोध में किसी भी प्रकार का स्वर उठाने का साहस उनके अन्दर विद्यमान नही रहेगा।

गर्वी दारवशो जितारिरधिक क्रोधी विशाखोद्भवः।
जातक परिजातः

अर्थात् विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न जातक घमंड, हमेशा अपनी पत्नी के वश में रहने वाला, शत्रुओं को पराजित करने वाला तथा अत्यधिक क्रोधी स्वभाव का होता है।

आप कभी कभी अन्य सामाजिक जनों से अनावय्क रूप से ईर्ष्या तथा द्वेष का भाव रखेंगी। यदि कोई आपसे अच्छा काम करेगा या कोई उपलब्धि पाएगा तो आप उससे द्वेष करने लगेगी। दूसरों की वस्तुओं को देखकर आप कभी कभी अत्यन्त ही दीनता का प्रदर्शन करेंगी तथा उनके प्रति लोलूपता का भाव रखेंगी। आपका शरीर सुन्दर कान्तिमय होगा जिससे सभी लोग आपके स्वरूप से आकर्षित रहेंगे। बोलने में आप अत्यन्त ही प्रवीण होंगी तथा इसी वाक्पटुता के कारण अपने अधिकांश कार्यों को सफल बनाने में समर्थ होंगी।

ईर्ष्युर्लुब्धोः द्युतिमान्वचनपटुः कलहकृद्विशाखासु।।
बृहज्जातकम्

अर्थात विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न जातक ईर्ष्या तथा द्वेष करने वाला, लोभी, कान्तियुक्त, वाक्चतुर तथा कलहप्रिय होता है।

आपके मन में धर्म के प्रति श्रद्धा तथा निष्ठा का भाव विद्यमान रहेगा तथा देवताओं के प्रसन्न करने के लिए आप नित्य हवनादि धार्मिक कृत्यों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगी। साथ ही आपके सच्चे मित्र भी अल्प ही रहेंगे जो समय पर आपना सहयोग प्रदान करेंगे।

सदानुरक्तोग्निसुरक्रियायां धातुक्रियायामपि चोग्रसोम्यः।
यस्य प्रसूतौ च भवेद्विशाखा सखा न कस्यापि भवेन्मनुष्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न जातक देवादि पूजन के निमित हवनादि कार्यों में रत रहने वाला, धातुक्रिया में कभी उग्र तो कभी सौम्यता का प्रदर्शन करने वाला तथा किसी का भी मित्र नहीं होता है।

आपके हृदय में तथा दया एवं करूणा के भाव की न्यनता रहेगी। अन्य लोगों से समय समय पर आपके वाद विवाद तथा कलह सामान्य रूप से होते रहेंगे तथा अन्यजनों पुरूषवर्ग से भी आपके मित्रतापूर्ण घनिष्ठ संबंध रहेंगे।

अतिलुब्धोडतिमानी च निष्ठुरः कलहप्रियः।
विशाखायां नरो जातः वैश्याजन रतो भवेत।।
मानसागरी

अर्थात विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अति लोभी, घमंडी, निष्ठुर, झगड़ा करने वाला तथा अन्य स्त्रियों से संबंध रखने वाला होता है।

आप ताम्र पाद में पैदा हुई हैं। अतः आप आजीवन धनैश्वर्य से सर्वथा सम्पन्न रहेंगी एवं जीवन में धन का आपके पास अभाव नहीं रहेगा साथ ही सुखपूर्वक आप इसका उपभोग भी करेंगी। काव्य क्षेत्र में आप रूचिशील रहेंगी तथा इस क्षेत्र में सफलता भी अर्जित करेंगी। बन्धुवर्ग से आपके अत्यन्त ही मधुर संबंध रहेंगे तथा अपनी ओर से उन्हे प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। नवीन वस्त्रों को धारण करने में आप अत्यन्त ही रूचिशील रहेंगी तथा समय समय पर इसका संग्रह भी करेंगी। शरीर से आप पूर्ण बलशाली तथा स्वस्थ रहेंगी। आप एक पराक्रमी महिला होंगी तथा आपके प्रभुत्व को सभी लोग मन से स्वीकार करेंगे। साथ ही साहसिक कार्यों को करने में भी आप उत्सुक रहेंगी। जीवन में आप प्रायः प्रसन्नता की ही अनुभूति करेंगी लेकिन स्वभाव में कृपणता का भाव भी विद्यमान रहेगा। इसके अतिरिक्त आप एक विदुषी महिला होंगी तथा भाग्य से प्रबल रहेंगी।

तुला राशि में पैदा होने के कारण आपका शरीर तथा मुखमंडल सुन्दर रहेगा। आपकी नासिका उन्नत तथा नेत्र विशाल हुए होंगे। विभिन्अ आपके आप सुशोभित रहेंगी तथा जीवन में इनका उपभोग करेंगी। आप वाहन तथा जायदाद आदि से भी बलवती होकर इनसे पूर्ण मात्रा में धनार्जन करेंगी। आप एक पराक्रमी महिला होंगी तथा समाज में अधिकांश लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे एवं आपको उचित आदर भी प्रदान करेंगे। आप हमेशा धन तथा वैभव से सुसम्पन्न रहेंगी इनका आपके पास तनिक भी अभाव नही रहेगा। पति को आप पूर्ण रूप से अपने वश में रखेंगी तथा सभी सांसारिक कार्य आपकी ही सहमति से सम्पन्न होंगे। नाना प्रकार के कार्यों की आप ज्ञाता होंगी तथा दक्षता से इन्हे पूर्ण करेंगी। आप ब्राहमण तथा देवताओं के प्रति पूर्ण श्रद्धा अपने मन में रखेंगी। धन धान्यादि को संग्रह करने की प्रवृति से भी आप युक्त रहेंगी तथा यत्नपूर्वक इनका संग्रह करेंगी। इसके साथ ही बन्धु वर्ग के भलाई के कार्यों को भी आप यत्नपूर्वक करती रहेंगी।

उन्नासो व्यायताक्षः कृशवदनतनुर्भूरिदारो वृषाढ्यो।
गो भूम्यः शौचकरो वृषसमवृषणो विक्रमज्ञः क्रियेशः।।

भक्तो देवद्विजानां बहुविभवयुतः स्त्रीजितो हीनदेहो।
धान्यादानैकबुद्धिस्तुलिनि शशधरे बन्धुवर्गोपकारी।।
सारावली

आप ब्राहमण देवता तथा साधु सज्जनों की सेवा करने में हमेशा तत्पर रहेंगी। नाना प्रकार के शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त करके आप एक श्रेष्ठ विदूषी होंगी तथा शुद्धतापूर्ण जीवन व्यतीत करेंगी। आपका शरीर सुवासित रहेगा तथा शरीर के अन्य रहेंगे। घूमने तथा यात्राओं के प्रति आप अत्याधिक रूचिशील होंगी एवं अपने अधिकांश समय भ्रमण तथा यात्राओं में ही व्यतीत करेंगी। क्रय विक्रयादि करने में आप दक्ष रहेंगी। अपने समीपस्थ संबंधियों तथा बन्धु वर्ग को आप पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी परन्तु बाद में इन्ही लोगों के द्वारा आपको उपेक्षित भी होना पड़ेगा।

देवब्राहमणसाधुपूजनरतः प्राज्ञः शुचिः स्त्रीजितः।
प्रांशुश्चोन्नतनासिका कृशचलदगात्रो डटनोडर्थान्वितः।।
हीनाङ्गः क्रयविक्रयेषु कुशलो देवद्विनामा सरूक्।
बन्धूनामुपकारकृद्वि रूषतस्त्यक्तस्तु तैः सप्तमे।।
बृहज्जातकम्

आप में धैर्य की प्रधानता रहेगी तथा समस्त कार्यकलापो को धैर्यपूर्वक सम्पन्न करने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहेगी। आप न्याय प्रिय रहेगी तथा हमेशा निष्पक्ष रूप से न्याय का समर्थन करेंगी आपकी इसी प्रकृति को देखते हुए अन्य सामाजिक जन अपने विवादों के समाधान के लिए आपको मध्यस्थ या पंच नियुक्त करेंगे। आपकी पुत्र सन्तति अल्प अल्प सख्यां में रहेंगी तथा भाग्योदय भी काफी देर से होगा।

चलत्कृशाङ्गो डुतोडतभक्तो देवद्विजानामटनोद्विनामा।
प्रांशुश्च दक्षः क्रयविक्रयेषु धीरो डदयस्तौलिनि मध्यवादी।।
फलदीपिका

आप शारीरिक कद से मध्यम रहेंगी अर्थात् अधिक लम्बी होंगी न ठिगनी। राज्य के उच्चाधिकार प्राप्त वर्ग को खुश करने में कला में आप अत्यन्त ही दक्ष होंगी तथा उनसे पूर्ण सहयोग एवं सम्मान को प्राप्त करेंगी अतः आपके महत्वपूर्ण कार्य व्यवधान रहित सम्पन्न होंगे। लेकिन आप कभी अत्याधिक मात्रा में बोलेंगी। इससे अन्य जन आपसे अप्रसन्न रहेंगे। साथ ही आप ग्रहनक्षत्र के ज्ञान को प्रतिपादित शास्त्र या ज्योतिष की भी एक अच्छी विदुषी होंगी। इसके अतिरिक्त भाइयों तथा सेवकों के प्रति आप नित्य अनुराग की भावना रखेंगी।

भवति शिथिलगात्रो नातिदीर्घो न खर्वो।
जनपति परितोषी बान्धवेभ्यः प्रदाता।।
अतिशय बहुभाषी ज्योतिषां ज्ञान युक्तो।
भवति सः तुलाराशि बन्धुभृत्यानुरागी।।
जातक दीपिका

कभी कभी आप अनुचित अवसर पर अपने क्रोध को प्रकट करेंगी। इससे आप दुःखी भी होंगी एवं अतिरिक्त परेशानियों का भी सामना करेंगी। आप अत्यन्त ही प्रिय एवं मधुर वाणी का अपनी भाषा में उपयोग करेंगी। आप दीन दुःखियों के प्रति भी दयालु रहेंगी तथा यथा शक्ति उनकी सहायता करने के लिए सदैव तत्पर रहेंगी। आपके नेत्रों में भी चंचलता का बाहुल्य रहेगा आपके पास विषम धनागमन रहेगा जिससे आर्थिक स्थिति भी सामान्यतया विषम रहेगी। आप घर के अन्दर स्वयं को बलवती सऊझेंगी परन्तु घर से बाहर अत्यन्त ही निर्बलता का अहसास करेंगी। मित्रवर्ग में आप प्रिय एवं आदरणीय रहेंगी तथा विदेश में भी निवास करेंगी।

अस्थानरोषणो दुःखी मृदुभाषी कृपान्वितः।
चलाक्षश्चललक्ष्मीको गृहमध्येऽति विक्रमः।।
वाणिज्य दक्षो देवानां पूजको मित्रवत्सलः।
प्रवासी सुहृदयमिष्टस्तुला जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

नाना प्रकार के उत्तम वाहनों से आप सर्वदा युक्त रहकर जीवन में अपना सुखपूर्वक उपभोग करेंगी। आप स्वभाव से ही दानी होंगी तथा समयानुसार इस प्रवृति का समाज में प्रदर्शन करती रहेगी। आप अपने प्रिय की अत्यन्त ही प्रेमी रहेंगी। साथ धन वैभव से भी आप युक्त रहकर उसका सुखपूर्वक उपभोग करेंगी।

वृषतुरंग विक्रमविक्रमनद्विजसुरार्चनदानमना पुभान्।
शशिनि तौलिगते बहुदारभाग्विभवसंभव संचित विक्रमः।।
जातकाभरणम्

राक्षस गण में पैदा होने के कारण आप अधिक तथा व्यर्थ बोलने वाली प्रवृति की महिला होंगी। आपका मन मे दया भाव की अल्पता रहेगी। साहस से आप सदैव परिपूर्ण रहेंगी। तथा साहसिक कार्यों को करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके अधिकांश कार्य प्रवृति से सम्पन्न होंगे। आप अकारण शीघ्र ही क्रोधित भी हो जाया करेंगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा बल का आप में अभाव नही होगा। कभी कभी अन्य जनों से विवाद भी होता रहेगा। अतः सामाजिक जनों से प्रेम तथा विनम्रता पूर्वक व्यवहार करना चहिए।

आप जीवन में कभी कभी उन्माद तथा प्रमेह रोग से भी व्याकुल रह सकती हैं। आपका शारीरिक स्वरूप सुन्द होगा तथा कठोर वाणी का भी कभी कभी आप प्रयोग करेंगी जिससे लोग आपसे अप्रसन्न रहेंगे। अतः अपने सम्भाषण में यत्नपूर्वक मधुर शब्दो का ही प्रयोग करें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही

कोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगडू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

व्याघ्र योनि में उत्पन्न होने के कारण आप स्वछन्दता प्रिय रहेंगी तथा अपने अधिकांश कार्यों को बिना किसी हस्तक्षेप के करना पसन्द करेंगी। धनधान्यार्जन करने में आप तत्पर रहेंगी तथा संग्रह करने के प्रति भी विशेष सतर्क रहेंगी। अच्छी बातों को आप शीघ्र ही ग्रहण करने के लिए सदैव उत्सुक रहेंगी। अपने कार्य क्षेत्र में आप एक प्रभावी महिला रहेंगी तथा सभी लोग आपको उचित मान सम्मान प्रदान करेंगे क्यो कि आप इस कार्य में विशेष ज्ञाता प्राप्त रहेंगी। वैभव तथा ऐश्वर्य से भी आप सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगी परन्तु आप अपनी प्रशंसा स्वयं ही अपने मुहं से करने वाली होंगी अतः इससे आपके प्रभाव में न्यूनता आएगी।

स्वच्छन्दोडर्थरतो ग्राही दीक्षावान सः विभुः सदा।
आत्मस्तुतिपरो नित्यं व्याघ्रयोनि भवो नरः।।
मानसागरी

अर्थात् व्याघ्र योनि में उत्पन्न जातक स्वतंत्र प्रवृति वाला, अर्थसंग्रह में तत्पर, गुणों को ग्रहण करने वाला, दीक्षित, वैभव युक्त तथा अपने ही मुख से स्वयं अपनी प्रशंसा करने वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक कष्ट नहीं होगा। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह की भावना रहेगी तथा जीवन में सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको निश्छल भाव से सहयोग प्रदान करेंगी। इसके साथ ही आप में शक्ति, साहस एवं पराक्रम का भाव भी उन्हीं के प्रोत्साहन से जागृत होगा। साथ ही आपको सुन्दर भोजन कराने के लिए भी वे नित्य उत्सुक एवं तत्पर रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति विशेष श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी बातों से सहमत होकर उनकी आज्ञा का पालन करेंगी। इसके साथ ही जीवन में सर्वप्रकार के तन, मन, धन से उनको सहयोग देने के लिए तत्पर रहेंगी अतः एक दूसरें के लिए आप शुभ एवं अनुकूल रहेंगी।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति सप्तम भाव में है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके शुभ प्रभाव से धनलाभ प्राप्त करने में वे सफल होंगे तथा जीवन में सर्वप्रकार से आपकी सहायता एवं सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके विवाह कराने में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा। साथ ही आप उनकी विश्वास पात्र भी होंगी।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी आज्ञा पालन में भी नित्य रूचिशील रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा कुछ सैद्धान्तिक मतभेद भी होंगे जिससे सम्बन्धों में क्षणिक तनाव एवं कटुता उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समयोपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उनकी सहायता

करने के लिए भी तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगी।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति प्रथम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक व्याकुलता से वे पीडित रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह का भाव भी विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे तथा जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही अन्य प्रकार से समय समय पर आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आपके हृदय में भी उनके प्रति स्नेह एवं सम्मान की भावना विद्यमान रहेगी। आपके संबंध प्रायः मधुर ही होंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण अल्प समय के लिए संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होंगे परन्तु कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। आप एक दूसरे से प्रायः सहमत रहेंगे एवं विश्वास भी करेंगे। इसके साथ ही आप भी हमेशा सुख दुःख में यथाशक्ति उनकी सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगी।

आपके लिए माघ मास, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी तिथियां, शतमिषा नक्षत्र, शुक्ल योग, तैतिल करण, गुरूवार, चतुर्थ प्रहर तथा मीन राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अनिष्ट फल कारक होंगे। अतः आप 15 जनवरी से 14 फरवरी के मध्य 4,9,14 तिथियों, शतमिषा नक्षत्र शुक्ल योग तथा तैतिल करण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवग्रहनिर्माण, क्रय विक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करे। अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही गुरूवार चतुर्थ प्रहर तथा मीन राशि के चन्द्रमा को भी शुभकार्यों में व्याज्य ही रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा के प्रति भी विशेष ध्यान देना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अच्छा नहीं चल रहा हो मानसिक परेशानी, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में बाधाएं तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में असफलता प्राप्त हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी लक्ष्मी जी की उपासना करनी चीहए तथा श्रद्धापूर्वक शुक्रवार के उपवास भी करने चाहिए। साथ ही हीरा, सोना, श्वेत वस्त्र, श्वेत चन्दन, चावल, दूध इत्यादि पदार्थो का श्रद्धा से किसी सुपात्र को दान करना चाहिए इससे आपके अशुभ फल न्यून होंगे तथा मन को भी शान्ति प्राप्त होगी। इसके अतिरिक्त शुक्र के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 20000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए।

ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
मंत्र- ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।

लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उधृत किए जाते हैं।

स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति-रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्वऋण से मुक्त है।

मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते है। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का अपव्यय आदि अशुभ फल होते है।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख-दुःख का ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता हैं। मातृ ऋण वाले जातक

के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी-नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

निष्कर्ष

आपकी पत्री मातृऋण से मुक्त है।

पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू-टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने-जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने-बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

निष्कर्ष

आपकी पत्री पारिवारिक ऋण से मुक्त है।

कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्मय आदि काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन-दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम

ससुराल-ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षात में घाटा हो जाना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री कन्या बहन के ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है। सबसे बराबर-बराबर पीली कौडियां लेकर उसी दिन एक जगह इकटठी करके जला कर उनकी राख उसी समय जल में प्रवाहित कर देना।

पितृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती है।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री पितृऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन (एक-एक या पांच-पांच या दस-दस रुपये अधिक से अधिक जितने भी रुपये दे सकें) लेकर उसी दिन मंदिर में दान कर देना आदि।

स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का

उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात दूसरा विवाह होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री स्त्री ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर गऊ शाला में 100 गायों को चारा खिलाएं (उसमें कोई भी गाए अंगहीन न हो) आदि।

निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिढ़ियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री निर्दयी ऋण से मुक्त है।

आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों-करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी-ठगी-गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा-मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढ़ेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालो की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी-व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री आजन्मकृत ऋण से मुक्त है।

ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बिमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री ईश्वरीय ऋण से मुक्त है।

लाल किताब ग्रह फल

सूर्य

आपकी जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य है। इसकी वजह से आप सरकारी पद पर हैं तो आपका मिजाज गर्म होगा। जो आपको लाभ देगा। आपके पारिवारिक संबंध सौहार्दपूर्ण रहेंगे। आपके जन्म से पहले मां-बाप की आर्थिक स्थिति खराब परंतु जन्म के बाद ठीक हुई होगी। पराई ममता या दूसरा पुरुष साथ देगा। शरीर पर कोई बुरा असर नहीं पड़ेगा। आपका परिवार ठीक रहेगा। आपकी औलाद के पास धन रहेगा। आपके हौसले बुलंद रहेंगे। आप आला किस्म की महिला होंगी। आपको बिना यत्न बुजुर्गों का धन मिलेगा। आपके ससुराल वालों से संबंध अच्छे रहेंगे। आप धन की खूब बचत करेंगी। विवाह के बाद किस्मत चमकेगी, आपका पति के अतिरिक्त और भी पुरुष से मित्रता हो सकती है या दो विवाह भी हो सकते है। आपकी लड़की अच्छे घर में ब्याही जाएगी। भागीदारी के कामों से लाभ मिलेगा। आपकी ज्योतिष, कर्मकांड में रुचि रहेगी। अंत समय में आप अपने घर पर ही मौजूद रहेंगी।

यदि आपने भागीदार से झगड़ा किया, धन के लिए ससुराल वालों को तंग किया, झूठ-झूठ में विश्वास रखा, सरकार का टैक्स चुराया तो आपका सूर्य मंदा हो सकता है या किसी कारण वश सूर्य मंदा हो गया हो तो सूर्य के मंदे असर से ससुराल के खानदान का समय बिगड़ जाएगा। पति अस्वस्थ्य हो सकते हैं। 25 वर्ष तक पति का सुख मंदा रहेगा। यदि आप नौकरी या व्यापार करती हैं और स्वभाव गर्म होगा तो हानि होगी। सरकारी विभाग में नौकरी करती हैं तो गर्म स्वभाव रखना आपकी आदत होगी। कभी-कभी नर संतान से परेशानी रहेगी या आपके परिवार में लड़का नंगा या पागल हो सकता है। यदि आप चोरी-ठगी करेंगी तो आर्थिक स्थिति खराब होती जायेगी। ज्यादा गुस्सा करना, खुदगर्जी, खुशामदी बर्बादी की निशानी हो सकती है। आपके पैर में कुछ तकलीफ होगी। पति से झगड़ा, जुदाई या तलाक हो, ऐसी आशंका है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. नौकरी करते हैं या व्यापारी हैं तो गर्म मिजाज न रहें।
2. सरकारी विभाग में नौकरी करती हैं तो गर्म मिजाज रखें।

उपाय :

1. घर से काम पर जाते समय चीनी खाकर पानी पीकर जायें।
2. रात को रोटी पकाने के बाद गैस-चूल्हा या चूल्हे की आग दूध के छींटे देकर बुझावें। वह गैस चूल्हा/अंगीठी सूर्योदय से पहले न जलावें।

चन्द्र

आपकी जन्मकुंडली के तीसरे खाने में चंद्रमा पड़ा है। इसकी वजह से मैदाने जंग में हार या हानि नहीं होगी। आप मधुरभाषिणी, परिश्रमी, सच्चरित्र, मृत्युरक्षक एवं भातृ सुख से पूर्ण रहेंगी। चंद्रमा आपके सहायक हैं। चोरी से बचाव होगा। भाई से धन-दौलत प्राप्त होगी। जन्मदिन के बाद का हर तीसरा महीना श्रेष्ठ रहेगा। आप साहसी होंगी। हर प्रकार की शरारत का जवाब देने की आप में क्षमता होगी। आपके मन में शांति रहेगी। सांसारिक जीवन में भी आप योगी जैसे स्वभाव की होंगी। यदि आप साधू हो जाएं तो ऋद्धि-सिद्धि की साधना की मालकिन होंगी। गृहस्थी, धन-दौलत की भंडारी होंगी। आपके परिवार में स्त्रियों की संख्या अधिक होगी। आपके घर में पुरुषों की इज्जत होगी तो आपका भाग्योदय होगा। आपका पति से प्रेम और सेवा उत्तम फल देगी। कुदरत लंबे हाथों से आपकी मदद करेगी। गरीबों पर तरस खाएंगी। आपके पिता/ससुर को कम और माता/सास को अधिक सुख मिलेगा। माता-पिता/सास-ससुर में से एक की लंबी आयु होगी। दिमागी शक्ति अच्छी रहेगी। लड़की की शादी में उसके ससुराल वालों से पैसा लेना जहर जैसा असर देगा। आप सरकार या विद्यापीठ से सम्मानित होंगी। आपको शतरंज-तैराकी का शौक हो सकता है।

यदि आप होस्टल वार्डनर हैं और विद्यार्थियों का सामान खुर्द-बुर्द किया, रिश्तेदारों का विरोध किया, भाई-बहन का हिस्सा दबाया या ब्याही बहन का धन लेकर वापिस न किया तो आपका चंद्रमा मंदा हो सकता है या किसी कारण वश चंद्रमा मंदा हो गया हो तो चंद्रमा के मंदे असर से भाई-बहन को अपमानित किया या भाई-बहन को दुःखी किया तो आपके घर में चोरी का भय और यात्रा में हानि हो सकती है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. बहन-भाई/ननद से झगड़ा न करें।
2. यतीमों का सामान हड़प न करें।

उपाय :

1. लडकी/बहन के विवाह में कन्यादान करें।
2. लड़के के जन्म पर गुड़-गेहूं-तांबा दान करें।
3. लड़की के जन्म पर दूध-चावल-चांदी का दान करें।
4. दुर्गापाठ या कन्याओं की सेवा करें।

मंगल

आपकी जन्मकुंडली में पहले खाने में मंगल पड़ा है। इसकी वजह से आप अंदर-बाहर एक जैसी, संतान सुख से युक्त, और प्रसन्न रहेंगी। आप विद्वान, शूरवीर, एवं साहसी होंगी। आप बुरे के साथ भी नेकी करेंगी। आप नेकी छोड़ने से कलंकिनी बन जाएंगी। आप परिवार के भाग्य को जगाने वाली हैं। आप साधू-सन्यासी की सेवा करेंगी। 18 वर्ष के बाद

सरकारी सेवा में या सलाहकार के कामों में रुचि लेंगी। शत्रु से आप बचती रहेंगी। आप अगर नौकरी करती हैं तो 35-40 वर्ष की आयु तक ही नौकरी-व्यापार करेंगी। राज्य सरकार से लाभ मिलेगा। आप पलट कर आक्रमण करने वाली हैं। आपको छोटे बहन-भाई का सुख मिलेगा। आप 28 साल के बाद जीवन में उन्नति करेंगी। आप किसी की सच्चाई या नेकी को सदा याद रखेंगी। आपके उच्च पदाधिकारियों से अच्छे संबंध रहेंगे। लोहा, लकड़ी तथा मकान के कामों में लाभ पाएंगी। परिवार के लोगों के साथ मिल कर काम करें तो बहुत अच्छा रहेगा। आपके मुंह से निकली बुरी बात का दूसरों पर बुरा असर होगा। आपका आर्शीवाद लोगों को फलेगा।

यदि आपने मुफ्त माल या दान लिया, जूठन खाया और झूठ बोला, माता/सास को कष्ट दिया या माता/सास का विरोध किया, अपशब्द बोलने की आदत हो तो आपका मंगल मंदा हो सकता है या किसी कारण वश मंगल मंदा हो गया हो तो मंगल के मंदे असर से शारीरिक कष्ट की आशंका है। मुफ्त की चीजें नहीं फलेंगी। आलस्य से कई बार आप अपने बने-बनाये काम बिगाड़ सकती हैं। मानसिक रोग या तनाव हो सकता है। दुर्घटना का भय है, अतः वाहन चलाते समय सावधानी बरतें। आपकी माता/सास को आप्रेशन का भय है। भाई को परेशानी या आपको बहन के सुख का अभाव रहेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. मुफ्त का माल या दान न लेवें।
2. हाथी दांत घर में न रखें।

उपाय :

1. बड़ी बहन जीवित हो तो लाल रुमाल रखें।
2. भाई और पति के भाई की सेवा करें।

बुध

आपकी कुंडली में बुध सातवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप कुलीन होंगी। आप व्यवहार कुशल होंगी। आप प्रिंटिंग प्रेस, डाक्टर/कैमिस्ट के काम, रेडीमेड माल के व्यापार से धन कमाएंगी। नौकरी-व्यापार के लिए तो बुरा असर नहीं होगा। आप अपने काम धन्धे में 34 वर्ष की उम्र तक सफल हो सकेंगी। आपकी विदेश की यात्रा होगी। आप किसी भी प्रकार का काम करें, वह काम प्रारंभ होकर, बिखर जाएगा। आपका ससुराल पक्ष धनी और मजबूत होगा। आपकी तलवार में ताकत नहीं आपकी कलम में बड़ी शक्ति है। कोर्ट-मुकद्दमे में आपकी जीत होगी। आप दूसरों के लिए भी माफिक रहेंगी। आप अपने दोस्तों या परिचित लोगों की सहायिका होंगी। आपको दस्तकारी के काम, तकनीकी कार्य और लकड़ी के काम में उत्तम फल मिलेगा। आपका जीवन सुलझा हुआ होगा। विज्ञापन या स्वयंवर द्वारा विवाह का योग होता है। आपका पति उच्च परिवार से होगा।

यदि आपने साहुकारा किया, भाई/देवर/ननद के साथ साझेदारी की, पति से झगड़ा

किया, परपुरुष से चाल-चलन खराब किया तो आपका बुध मंदा हो सकता है या किसी कारण वश बुध मंदा हो गया हो तो बुध के मंदे असर से आपके देवर से घरेलू संबंध बनेंगे जिसके कारण आपकी बर्बादी का कारण बनेगा। आपके विवाह में गड़बड़ी होगी। अगर विवाह में देरी हो तो 34 वर्ष की आयु तक निश्चित विवाह हो जाएगा। पति से दूरी या तलाक तक की नौबत आ सकती है। आपके भाई-बंधु आपका विरोध करेंगे। झगड़ा-फसाद या मुकद्दमेबाजी या उलझन ज्यादा प्रभावी नहीं होगी। आपमें बुद्धि की कमी रहेगी। आपमें परिपक्वता देर से आयेगी। आप अपने परिवार को तोड़ सकती हैं।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. बिना सींग की गाय या बकरी न पालें।
2. हरी घास घर में न लगावें।

उपाय :

1. हीरा पहनें/ हीरे के अभाव में पन्ना भी पहन सकती हैं।
2. चीनी खा कर पानी पीकर कार्य शुरु करें।

गुरु

आपकी कुंडली में वृहस्पति पहले खाने में पड़ा है। जिसकी वजह से आप एक पढ़ी-लिखी या उपदेशिका या गुरु भी हो सकती हैं। आप विद्वान, अच्छी बुद्धि की संतान युक्त, शासन द्वारा सम्मान पाने वाली बड़प्पन से युक्त होंगी। विद्या के माध्यम से अपनी आजीविका चलाऐंगी। पैतृक/ससुराल धन से भी धनी होंगी। यदि आपकी शिक्षा कम भी होगी तो भी आपको धन प्राप्त होता रहेगा। आप पैसे की वजह से नहीं, करामाती गुण से सम्मान पाएंगी। आप ऊंचे लोगों के साथ रह कर अपनी दिमागी शक्ति और राजदरबार से संबंधित रह कर, सम्मान प्राप्त करेंगी। शादी के बाद आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी हो जाएगी और भाग्योदय होगा। आप अपनी कमाई से नया मकान बनवाएंगी। आपको बहुत जायदाद का लाभ होगा। आप स्वस्थ और प्रसन्न रहेंगी। उम्र बढ़ने के साथ-साथ सुख में भी वृद्धि होगी। आपके पति आपके आज्ञाकारी और सेवक रहेंगे।

यदि आपने विद्या अधूरी छोड़ दी, लोगों की व्यर्थ निंदा की, मुफ्त माल या दान आदि से जीवन व्यतीत करना शुरु किया, छोटी आयु में शराब-बीयर पीना शुरु कर दिया तो आपका वृहस्पति मंदा हो सकता है या किसी कारण वश वृहस्पति मंदा हो गया हो तो वृहस्पति के मंदे असर से अप्रत्याशित घटनाओं एवं अव्यवस्था से सतर्क रहें। विद्या में रुकावट, आपके पिता/ससुर की मौत दमा या दिल की बीमारी या मानसिक रोग से हो ऐसी आशंका है। आपको श्वास या दमे की बीमारी होगी। प्रथम पुत्र संतान की प्राप्ति से अशुभ फल प्राप्त होने की आशंका है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और

उपाय करें।

परहेज :
1. मुफ्त माल गिफ्ट या दान न लेवें।
2. किस्मत पर भरोसा रखें।

उपाय :
1. केसर/हल्दी का तिलक करें।
2. बुजुर्गों का आशीर्वाद लेवें।
3. विद्या बी. ए. या समकक्ष जरूर पढ़ें।

शुक्र

आपकी जन्मकुंडली में शुक्र नौंवे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपका भाग्य मंदा रहेगा। 25 वर्ष के बाद का समय अच्छा रहेगा। इसलिए 25 वर्ष की उम्र के बाद शादी करें। अमीरी होने के बाद भी परिश्रम से रोटी प्राप्त होगी। तीर्थयात्रा करना संतान के लिए शुभ है। आपके पास धन भी होगा। आप एक बुद्धिमान महिला की तरह हैं। आपको मन में शक्ति मिलेगी तथा धन-दौलत पर अच्छा असर पड़ेगा। नौकर-सेवकों से सुख मिलेगा।

यदि आपके घर में ढेक का वृक्ष, एल्युमिनीयम के बर्तन हुए, 25वें वर्ष में विवाह किया, छोटी आयु में मादक चीजों-द्रव्यों का प्रयोग किया तो आपका शुक्र मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शुक्र मंदा हो गया हो तो शुक्र के मंदे असर से विवाह के बाद से आपके पीछे दुःख लग जाएगा। पुरुष, धन-दौलत पर बुरा असर पड़ेगा, ऐसी आशंका है। आप दूसरों की मुसीबत और मंदी सेहत का जंजाल अपने ही गले लगा लेंगी। आप नशे की बुरी लत के कारण बिमारियों से तंग रहेंगी। आपकी धन-दौलत की बर्बादी का कारण भाई-बंधु बनेंगे। गुप्त रोग हो सकते हैं। लोगों से एतबार पर लेन-देन का फल मंदा हो सकता है। आपको खेती-बाड़ी से अच्छा लाभ नहीं होगा। आपके और आपके पति के लिए परेशानियां पैदा होंगी। आपके पास धन-दौलत इकट्ठी नहीं होगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. 25वें वर्ष विवाह न करावें।
2. एल्युमिनीयम का बर्तन प्रयोग न करें।

उपाय :
1. मकान बनावें तो नींव में चांदी के बर्तन में घहद भर कर रखें।
2. पति को चांदी के कड़े में तांबे की कील लगाकर दायें हाथ में पहनायें।

शनि

आपकी जन्मकुंडली में शनि दूसरे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपको पैतृक संपत्ति और ससुराल से लाभ रहेगा। आप मान-प्रतिष्ठा से युक्त होंगी। आप ईश्वर भक्त और पूजा-पाठ करने वाली होंगी। आप आजन्म मुखिया बनी रहेंगी। कमाई और खर्चा बराबर होगा। आप अपने पहले पुत्र का लालन-पालन अपने पिता को सौप दें तो आपके लिए फायदेमंद होगा। आपको जीवन में जीने की इच्छा प्रबल रहेगी। आप बाहर से देखने में प्रभावशाली नहीं लगेंगी परंतु आप शक्ति और अक्ल में बहुत बलवान होंगी। कभी-कभी आप इस दुनिया से सन्यास लेने को भी उत्सुक हो सकती हैं। आपको माता/सास का पूर्ण सुख मिलेगा। पिता/ससुर के सुख में न्यूनता आ सकती है। आप में अक्ल की बारीकी और आध्यात्मिक शक्ति होगी। कोयला, चमड़ा, मकान-मशीनरी के कामों से अधिक लाभ होगा।

यदि आपने मादक चीजों-द्रव्यों का सेवन किया, सांप को मारा या सांप के जहर बेचने या प्रयोग करने से संबंधित कार्य किये या कानी भैंस पाली तो आपका शनि मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शनि मंदा हो गया हो तो शनि के मंदे असर से आप विचारों की कच्ची, मुर्दादिल और पस्त हौसले वाली होंगी। 28वें और 39वें वर्ष की आयु रोग और बीमारी में बीत सकती है। आपकी किसी के साथ दुश्मनी भी हो सकती है। आपका तंबोला आदि खेलना आपके ससुराल के लिए बुरा हो सकता है। आपके विवाह के समय ससुराल में अग्निकांड हो सकता है। विद्या अधूरी रहे, ऐसी आशंका है। सगाई के दिन से ससुराल को हानि होना शुरु हो जायेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. माथे पर तिलक की जगह सरसों तेल न लगावें।
2. सांपों को न मारें।

उपाय :
1. नंगे पैर धर्म स्थान में जावें।
2. सांप को दूध पिलावें।

राहु

आपकी जन्मकुंडली के पहले खाने में राहु पड़ा है। इसकी वजह से आप धनवान तथा श्रेष्ठ शासनाधिकारी होंगी। अगर सरकारी अधिकारी हुईं तो राजदरबार में आपका बहुत सम्मान होगा। आपके ननिहाल वाले आपके जन्म के बाद अमीर होंगे। आपका जन्म ननिहाल या अस्पताल में हुआ होगा, या आकाश पर बादल छाये होंगे ऐसी आशंका है। 42 वर्ष की उम्र तक समय मध्यम रहेगा, जो कुछ भी बुरा हुआ होगा, इसके बाद बहुत अच्छा और शुभ रहेगा। आपका जन्म जिस घर में होगा उस घर के सामने के घर में उजाड़ हो जाएगा। आपकी रोजी-रोटी के लिये दूसरा काम भी चालू रहेगा। यदि एक काम या नौकरी छूटेगी तो दूसरी

नौकरी या व्यवसाय चालू हो जाएगा। आप धनी होंगी। आपको संतान सुख अवश्य मिलेगा अच्छी या बुरी। आपके लिए हर समय बोलते रहना अच्छी बात नहीं है। आपमें बेईमानी और धोखेबाजी की आदत भी विद्यमान रहेगी। जीवन में कई परिवर्तन आएंगे। माता/सास और मन की शांति के लिए शुभ रहेगा।

यदि आपने विवाह के बाद पिता से लोहा, बिजली का समान, काले-नीले कपड़े मुफ्त या दान में लिये, मकान के आंगन में धुआं किया, बिल्ली के जेर चमड़े के पर्स में रखी तो आपका राहु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश राहु मंदा हो गया हो तो राहु के मंदे असर से आपके बनते कामों में रुकावट, तरक्की कम मगर बदला-बदली अधिक बार होगी। 11-21-42 वर्ष आयु में पिता/ससुर के लिए समय अशुभ, परिवार में किसी को दमा-मिरगी का रोग हो सकता है। आप शरारती, आवारा और नास्तिक स्वभाव की होंगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. आंगन में धुआं न करें।
2. पेट मोटा न हो, विशेष ध्यान रखें।

उपाय :
1. धर्म स्थान में गुड़-गेहूं दान करें।
2. दूध से स्नान करें।

केतु

आपकी जन्मकुंडली के सातवें खाने में केतु पड़ा है। इसकी वजह से आप 24 वर्ष की उम्र से ही धन कमाने में जुट जाएंगी। जैसे-जैसे आपकी संतान की उम्र बढ़ती जाएगी वैसे-वैसे धन में बढ़ोत्तरी होती जाएगी। आजीविका का साधन बना रहेगा। रोजगार द्वारा अच्छी कमाई होगी। आपकी संतान बलशाली होगी। आप अपनी बात की पक्की होंगी। आप सब तरह से सुखी और संपन्न रहेंगी फिर भी पश्चात्ताप करते ही रहेंगी। आपकी संतान शेर का मुकाबला करने वाली होगी। आपके पति के जितनी संख्या में भाई-बहन होंगे उतनी ही संख्या में आपकी संतान होंगी। 34 वर्ष की आयु तक का समय कष्टमय रहेगा। परंतु इसके बाद सब कुछ ठीक हो जाएगा। धनधान्य में बरकत होगी। 24 साल की उम्र में इतना धन आएगा जो कि 40 वर्षों तक आने वाले समय के लिए काफी होगा। आपके दुश्मन आपका कुछ भी नहीं बिगाड़ेंगे। दुश्मन अपने आप तबाह हो जाएंगे। जीवन में कभी निराशा का सामना नहीं करना पड़ेगा।

यदि आपने हर समय लिखने का काम किया, झूठा वायदा किया, परपुरुष गमन किया। अपने पति से झगड़ा किया तो आपका केतु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश केतु मंदा हो गया हो तो केतु के मंदे असर से 7 वर्ष तक ननिहाल की हालत खराब, 34 वर्ष बाद सुख नष्ट होना शुरु हो जाएगा। झूठ बोलना, झूठा वायदा करना आपको अवनति देगा। शरीर में दर्द या बीमारी होगी। आपकी संतान पर भी विपरीत प्रभाव पड़ सकता है। आपका मन पति

और पुत्र के संबंध में अशांत रहेगा। आप अपनी जुबान से गंदी बातें बोलेंगी। आप अभिमान के कारण बर्बाद हो जाएंगी। किसी को दिया गया आश्वासन पूरा न करना आपके लिए हानिकारक होगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. परपुरुष से अनैतिक संबंध न रखें।
2. कलम से लिखने का अधिक काम न करें।

उपाय :

1. 4 केले 4 दिन जल में प्रवाह करें।
2. 4 नीबू 4 दिन जल में प्रवाह करें।

लाल किताब के उपाय

लाल किताब के उपाय कब और कैसे करें !

1. उपाय सूर्य निकलने के बाद सूर्य छिपने तक दिन के समय करें, रात के समय उपाय करना कई बार अशुभ फल दे सकता है। केवल चन्द्र ग्रहण का उपाय रात को किया जा सकता है।

2. उपाय शुरू करने के लिए किसी खास दिन सोमवार या मंगलवार आदि, सक्रांति, अमावस्या या पूर्णिमा आदि का कोई विचार नहीं होगा।

3. आप का कोई खून का संबंधी रिश्तेदार जैसे भाई-बहन, माता-पिता, दादा-दादी, पुत्र-पुत्री आदि में से उपाय कर सकता है जो फलदाई होगा।

4. एक दिन में केवल एक ही उपाय करें, एक दिन में दो उपाय करने से शुभ फल नहीं मिलता या किया हुआ उपाय निष्फल हो सकता है।

5. जो परहेज बताए जाये जैसे मांस-मछली न खावें, मदिरा का सेवन न करें, चाल-चलन ठीक रखें, झूठ न बोलें, जूठन न खावें न खिलावें, नियत में खोट न रखें, परस्त्री-परपुरुष से संबंध न करें, आदि का विशेष ध्यान रखें।

6. जो उपाय जिस समय के लिये लिखा है उसी समय तक करें, आगे यह उपाय बंद कर देवें।

7. यदि किसी कारण उपाय बीच में बंद करना पड़ जाय तो जिस दिन उपाय बन्द करना है उससे एक दिन पहले थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांध कर पास रख लें और जब दुवारा उपाय शुरू करना हो वह चावल धर्म स्थान में या चलते पानी में या किसी बाग-बगीचे आदि में गिरा कर उपाय फिर शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल मिलेगा।

8. हर उपाय 43 दिन या 43 सप्ताह या 43 मास या 43 वर्ष तक करना होता है, उपाय चलते समय बीच में टूट जाए चाहे 39वां दिन क्यों न हो सब निष्फल हो सकता है या शुभ फल में कमी रह सकती है।

9. जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रहों का वर्षफल कुण्डली में उपाय अपने जन्मदिन से लेकर 40-43 दिन के भीतर ही करें ।

10. घर में कोई सूतक (बच्चा जन्म हो) या पातक (कोई मर जाय) हो जाय तो 40 दिन उपाय नहीं करने चाहिये ।

11. बुजुर्गों के रीति -रिवाजों को न तोडें और संस्कार पूरें करें ।

इस वर्ष मीन राशि के शनि अष्टम भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु सप्तम भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशि में षष्ठ भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु एकादश भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें द्वादश भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें लग्न स्थान में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यरहेगा। शनि एवं राहु का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपको कार्यक्षेत्र में सफलता नहीं मिलेगी। गुप्त शत्रु व बिरोधी आपके कार्यों में रुकावटें डालने की कोशिश करेंगे। व्यापार को लेकर मानसिक परेशानी बनी रहेगी। इस समय के अंतराल मेंजल्द ही किसी पर भी विश्वास न करें और न हीजल्दबाजी में कोई महत्वपूर्ण निर्णय लें।

02जून के बाद समय और प्रभावित हो रहा है। उस समय आपके साथ धोखा या व्यापार में हानि हो सकती है। सोच को सकारात्मक बनाए रखें, क्योंकि वर्षान्त में राहु एवं गुरु ग्रह का गोचर एक साथ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको अपने व्यापार व कार्यक्षेत्र में लाभ मिलना शुरु हो जाएगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्धसामान्य रहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से धनागम बना रहेगा। आपको भाइयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। 02 जून के बाद समय का काफी प्रतिकूल हो रहा है।जीवनसाथी की बीमारी में आपका धन व्यय होगा। साथ ही कुछ ऐसे खर्च आजाएंगे जिससे आपका बजटबिगड़ सकता है।

किसी प्रकार के जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। लेन देन के मामले में हमेशा सावधान रहें। 31 अक्टूबर के बाद समय अनुकूल हो जाएगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि सेयह वर्षसामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में अधिक व्यस्तता के कारण अपने परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगेपरन्तु आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावारण बना रहेगा। भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी सामाजिक पद व प्रतिष्ठि में वृद्धि होगी।

02 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। उस समय परिवार में किसी बड़े व्यक्ति के साथ आप का वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकता है। अतः अच्छा यही होगा की आप अपनी सहन शक्ति को बढ़ाएं और उचित निर्णय लें। सप्तमस्थ राहु जीवनसाथी का

स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान परगुरु ग्रह केदृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। वे अपने बौद्धिक बल से अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। उनकी शिक्षा में भी सुधार होगा। नवविवाहित व्यक्तियों के गर्भाधान के लिए बहुत सुन्दर समय चल रहा है। आपके बच्चे का चौमुखी विकास होगा। उसकी उन्नति के सारे मार्ग प्रशस्त होंगेपरन्तु आपके दूसरे बच्चे के लिए समय अच्छा नहीं चल रहा है।

06 जून के बाद समय प्रभावित हो रहा है। आपके बच्चे को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है जिससे कारण उसकीशिक्षा-दीक्षा प्रभावित हो सकती है परन्तु 31 अक्टूबर के बाद समय फिर से अनुकूल हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण स्वास्थ्य संबंधित परेशानी उत्पन्न कर सकता है। अचानक स्वास्थ्य खराब हो सकता है परन्तु एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से आप जल्दी अच्छे हो जाएंगे।

02 जून के बाद छोटी मोटी बीमारियों से आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। आर्थिक मुद्दे या किसी और मुद्दे को ले कर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें। नहीं तो इन सबका नकारात्मक प्रभाव आपके सेहत पर पड़ेगा। द्वादशस्थ गुरु के जल तत्व राशि में होने के कारण कफ रोग या मौसमजनित बीमारियां हो सकती हैं। सुबह-सुबह व्यायाम करना या योग करना आपके लिए लाभप्रद सिद्ध होगा। 31 अक्टूबर के बाद आपका स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरु हो जाएगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध विद्यार्थियों के लिए अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान परगुरु के दृष्टि प्रभाव से उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों का अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेशहो जाएगा। व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले व्यक्तियों को अधिक परिश्रम के बाद सफलता मिलेगी।

02 जून के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। उस समय प्रतियोगिता पारीक्षार्थियों को प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के लिए लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। जिन व्यक्तियों को अभी तक नौकरी नहीं मिली है उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है। 24 नवम्बर के बाद छठे स्थान में राहु ग्रह का गोचर हो रहा है। उस समय आपको अपने करियर में सफलता प्राप्त होगी।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी। साथ ही 02 जून के बाद द्वादश स्थान केगुरु आपको विदेश यात्रा करा भी सकते

है।

चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से अपने घर से दूर रहने वाले जातकों की अपनी जन्म भुमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से आपका मन पूजा-पाठ के प्रति ज्यादा आकर्षित रहेगा। परमात्मा की भक्ति या मन्त्र पाठ में ज्यादा रूचि लेंगे। 02 जून के बाद गुरु का गोचर द्वादश स्थान में होगा। उस समय आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पुजारी की सेवा, सुश्रुषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत रखें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु अथवा काला कम्बल दान करें।
- गरीबों को भोजन कराएं।

मासिक फलादेश

जनवरी 2026 के लिए फलादेश

इस महीने में आपकी बुद्धि में निर्मलता रहेगी तथा अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगी। इस समय आपको विभिन्न प्रकार के द्रव्य पदार्थो की प्राप्ति होगी तथा पुत्र से भी आप सुख तथा सहयोग अर्जित करेंगी। साथ ही ज्ञानार्जन में भी आपकी रूचि रहेगी। इस मास में आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा आपकी प्रभुता तथा श्रेष्ठता को सभी लोग मन से स्वीकार करेंगे। इस समय आपके कई शुभ कार्य सम्पन्न होंगे तथा दूर से शुभ समाचार भी प्राप्त करेंगी जिससे आपका मन प्रसन्न रहेगा। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा श्रद्धा पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगी। इसके साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप उचित लाभ अर्जित करने में सफल रहेगी। इस समय समाज में भी आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इस प्रकार पूर्ण रूप से आप सन्तुष्ट रहेंगी।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप वातोत्पन्न रोगों से पीड़ित रहेंगी तथा इस समय आप किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगी जिससे बाद में आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि से भी धन हानि की संभावना रहेगी अतः सतर्कता पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें तथा शारीरिक सुरक्षा का भी ध्यान रखें।

फरवरी 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप सामान्यतया अशुभ फल ही प्राप्त करेंगी। अतः आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा शरीर में दुर्बलता विद्यमान रहेगी इस समय आपके शत्रु भी प्रबल होंगे तथा आपके लिए अनावश्यक बाधाएं उत्पन्न करेंगे जिससे आप उनसे भयभीत तथा चिन्तित रहेंगी। इस मास में आपके घर में चोरी भी हो सकती है अतः सतर्क रहना श्रेयकर रहेगा। साथ ही नौकरी या व्यापार में भी उच्चाधिकारी वर्ग की आज्ञा का पालन करने में तत्पर रहें अन्यथा आप किसी प्रकार से दण्डित भी हो सकती है। इस समय आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प मात्रा में ही सफल होंगे तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा फलतः आर्थिक रूप से भी आप शिथिल रहेंगी। इसके साथ ही आप किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगी जिससे आपकी प्रतिष्ठा में अल्पता आएगी।साथ ही मित्र एवं बन्धु वर्ग से आपके संबध अच्छे नहीं रहेंगे एवं आपकी आशाएं भी इस मास में कम ही पूर्ण होगी। अतः संयमपूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें।

साथ ही इस मास में आप वातजनित रोगों से शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगी तथा किसी ऐसे कार्य को भी करने के लिए तत्पर होंगी जिसके लिए आपको बाद में पछताना पड़ेगा। इस समय अग्नि के द्वारा भी आपकी धन हानि हो सकती है अतः बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें।

मार्च 2026 के लिए फलादेश

इस महीने में आप शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी। इस समय आप पति तथा बन्धुजनों से कष्ट प्राप्त करेंगी अथवा इनको किसी प्रकार का कष्ट हो सकता है। आपके शत्रु भी इस मास में बलवान रहेंगे फलतः आपके लिए वे समय समय पर समस्याएं उत्पन्न करेंगे जिससे आप उनसे भयभीत तथा चिन्तित रहेंगी। इस समय आप में लोलुपता के भाव की अधिकता रहेगी धन का व्यय भी अनावश्यक रूप से अधिक होगा जिससे आप आर्थिक दृष्टि से भी कमजोर होंगी। इस समय आपके मन में उत्साह के भाव की कमी स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होंगी। साथ ही शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा इससे आप दुर्बलता की अनुभूति भी करेंगी। मित्रों एवं बन्धुओं से आपके परस्पर अच्छे संबध नहीं रहेंगे तथा ये सभी लोग ऐसे समय में शत्रुओं की तरह व्यवहार करेंगे जिससे आप मानसिक कष्ट प्राप्त करेंगी। साथ ही पारिवारिक तथा अन्य जनों से भी वाद विवाद होते रहेंगे। अतः संयम पूर्वक समय को व्यतीत करें।

साथ ही इस मास में आप अशुभ फलों के साथ साथ आप शुभ फल भी अर्जित करेंगी। इससे आप पति एवं पुत्र से सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगी तथा इनसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगी। इसके अतिरिक्त इस मास में आप नवीन वस्त्र या आभूषणों आदि को भी प्राप्त करने में समर्थ हो सकेंगी।

अप्रैल 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप अशुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी ।अतः आप शत्रु पक्ष से चिन्तित एवं भयभीत रहेंगी तथा उनसे आप अनावश्यक कष्ट प्राप्त करेंगी। इस समय आपके घर में चोरी होने की भी संभावना रहेगी साथ ही धन का व्यय अधिक मात्रा में होगा जिससे आर्थिक रूप से भी आप कमजोर रहेंगी। इस समय शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में विध्न बाधाएं उत्पन्न होती रहेंगी तथा धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा भावना में न्यूनता आएगी अतः विधिपूर्वक आप धार्मिक वृतियों कापालन नहीं करेंगी आपका स्वास्थ्य भी इस समय अच्छा नहीं रहेगा जिससे शारीरिक बल में न्यूनता आएगी। इस मास में दूर की कोई यात्रा भी सम्पन्न कर सकते है। इसके अतिरिक्त सांसारिक कार्यो में भी आप कष्ट प्राप्त करेंगी तथा मुकद्दमे आदि में धन व्यय हो सकता है जिससे मानसिक रूप से आप अप्रसन्न तथा अशान्त रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप गर्मी या पित्तदोष से उत्पन्न रोग से पीड़ित रहेंगी तथा रक्त विकार होने की भी संभावना रहेगी। इसके अतिरिक्त अग्नि से भी आप धन हानि प्राप्त कर सकती है। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

मई 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही सुख एवं सौभाग्य प्रदान करने वाला रहेगा। इस समय आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगी जिससे आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ बनेगी। आपके उच्चाधिकारी आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे जिससे आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस

मास में यथा समय सिद्ध होंगे। इस समय आप अपने घर में किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन भी कर सकती है। संतति से भी आपको सुख तथा सहयोग प्राप्त होगा साथ ही देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा इनकी पूजा तथा सेवा करने में तत्पर रहेंगी। इस मास में आपकी कीर्ति दूर दूर तक फैलेगी तथा भाग्योदय संबधी कार्य यथा समय पूर्ण होंगे। आपकी बुद्धि भी इस समय निर्मल रहेगी तथा आप दूर समीप की किसी लाभदायक यात्रा को भी कर सकेंगी। बन्धु एवं मित्रों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा परस्पर वांछित सहयोग प्राप्त करेंगे। इस प्रकार समाज में सर्वत्र आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

साथ ही इस मास में आप पति से पूर्ण सहयोग तथा सुख प्राप्त करने में सफल रहेंगी। इस समय आप अपनी बुद्धि के द्वारा प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगी। इस प्रकार आप विविध सुखों का उपभोग करेंगी तथा समाज में आपके यश में भी वृद्धि होगी।

जून 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने कार्य क्षेत्र में पूर्ण सफलता तथा धनार्जन करने में सफल रहेंगी तथा अपने वरिष्ठ सहयोगी एवं उच्चाधिकारी वर्ग को सन्तुष्ट तथा प्रभावित करने में सफल रहेंगी साथ ही पदोन्नति भी प्राप्त कर सकेंगी। बन्धु तथा मित्र वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे आप पूर्ण सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगी साथ ही उनकी भलाई के लिए कार्य करने में भी आप तत्पर रहेंगी। आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी इस मास में सफल होंगे अतः मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव उत्पन्न होगा तथा उनकी पूजा तथा सेवा करने में तत्पर रहेंगी। इस मास में आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी श्रेष्ठता को स्वीकार करेंगे तथा दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि भी फैलेगी एवं अन्य प्रकार से भी आप लाभ अर्जित करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त इस महीने में आप नवीन गृह या स्थान की प्राप्ति भी कर सकती हैं।

साथ ही इस मास में आप पति से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगी एवं आपके अधिकाशं शुभ एवं महत्वपूर्ण इच्छाएं भी इस समय पूर्ण होंगी। इस प्रकार धन तथा सुख का उपभोग करते हुए प्रसन्नता पूर्वक आपका यह मास व्यतीत होगा।

जुलाई 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फल प्राप्त करने में सफल रहेंगी।साथ ही पुरूष वर्ग से लाभार्जन तथा सहयोग अर्जित करने में भाग्यशाली रहेंगी। इस समय आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे तथा आपकी आर्थिक स्थिति में भी सुदृढ़ता आएगी फलतः मानसिक रूप से भी आप प्रसन्नता तथा शान्ति की अनुभूति करेंगी। साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से समय समय पर आपको यथोचित लाभ होता रहेगा। इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा ज्ञानार्जन में भी आपकी रूचि उत्पन्न होगी। मित्र एवं बन्धु जनों से आपके मधुर संबध रहेंगे एवं उनसे पूर्ण सहयोग तथा लाभ भी होता रहेगा। आपको इच्छित द्रव्यों की प्राप्ति भी इस समय होगी तथा प्रसन्नता पूर्वक आप इनका उपभोग करेंगी।

संतति पक्ष से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगी। इसके अतिरिक्त सामाजिक जनों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा आपके रूके हुए कार्य भी इस मास में पूर्ण होंगे।

साथ ही इस मास में आप पति से पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगी। आपकी बुद्धि में भी इस समय निर्मलता का भाव रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं सुख का आप प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगी। इसके अतिरिक्त धर्मानुपालन में भी आप प्रवृत रहेगी तथा समाज में उचित सम्मान प्राप्त करने में सफल रहेंगी।

अगस्त 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ तथा अशुभ दोनों प्रकार के फलों को प्राप्त करेंगी जिसमें अशुभ फल अधिक मात्रा में होंगे। अतः इस समय आप धन व्यय अधिक मात्रा में करेंगी तथा दुष्ट जनों की संगति भी प्राप्त होगी। साथ ही आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी विशेष अच्छा नहीं रहेगा। इस मास में आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अत्यंत ही परिश्रम एवं पराक्रम करने पर भी अल्प मात्रा में ही सिद्ध हो सकेंगे फलतः मानसिक रूप से भी अशान्त तथा असन्तुष्ट रहेंगी। धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा का भाव नहीं रहेगा। साथ ही अन्य प्रकार से भी धन की हानि होने की संभावना है। मित्रों एवं संबधियों से आपके संबध अच्छे नहीं रहेंगे न ही उनसे कोई विशेष सहयोग प्राप्त होगा। इस मास में आप जो भी कार्य प्रारंभ करेंगी उसमें अनावश्यक रूप से विध्न बाधाएं आएंगी तथा शत्रु पक्ष से भी इस समय आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगी। इसके अतिरिक्त आपके महत्वपूर्ण कार्य भी इस मास में सिद्ध नहीं होंगे।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के मध्य शुभ फल भी प्राप्त होंगे। इससे आप श्रेष्ठजनों एवं उच्चाधिकारी वर्ग से लाभ एवं सहयोग अर्जित करेंगी तथा आपके कार्य क्षेत्र में भी विस्तार की संभावनाएं बनेगी। आप इस समय यात्रा भी कर सकती हैं। इसके अतिरिक्त नवीन वस्त्र या वस्तुओं को भी आप इस मास में अवश्य ही प्राप्त करेंगी।

सितम्बर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आप सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगी। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं मन भी शान्त एवं सन्तुष्ट रहेगा। इस मास में आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा दुश्मनों को पराजित करने में सफल रहेंगी। साथ ही लाभ मार्ग भी प्रशस्त रहेंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। नौकरी या व्यापार के अतिरिक्त अन्य स्त्रोतों से भी आप प्रचुर मात्रा में लाभार्जन करने में सफल रहेंगी। इस मास में आपके भाग्योदय संबधी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे साथ ही कोई विलम्बित महत्वपूर्ण कार्य भी सिद्ध होगा जिससे आपको हार्दिक प्रसन्नता की अनुभूति होगी। अपने बन्धु वर्ग तथा मित्रों से आपके घनिष्ठ संबध रहेंगे एवं उनसे आप यथोचित सुख एवं सहयोग भी प्राप्त करेंगी। साथ ही आपके सांसारिक कार्य भी इस मास में पूर्ण रूप से सम्पन्न होते रहेंगे। इसके अतिरिक्त उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे पूर्ण प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेगा तथा उनसे आपको यथोचित सहयोग तथा सम्मान प्राप्त होता रहेगा।

साथ ही इस मास में आप पति से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगी तथा आपकी बुद्धि निर्मल रहेगी एवं धन लाभ भी प्रचुर मात्रा में होता रहेगा। धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा किसी धार्मिक उत्सव का भी आप इस समय आयोजन कर सकेंगी। इसके अतिरिक्त समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे।

अक्तूबर 2026 के लिए फलादेश

इस मास आप अति उत्साह से धनार्जन करने में सफल रहेंगी साथ ही समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी एवं यश भी दूर दूर तक व्याप्त रहेगा। बन्धु एवं मित्रों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा वे आपको सभी यथोचित आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगे। साथ ही इनसे आप वांछित सुख एवं सहयोग भी प्राप्त करेंगी। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से इस मास में आपको आश्रय प्राप्त होगा जिससे आप अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को शीघ्र ही सम्पन्न करेंगी। आपका स्वास्थ्य भी इस समय अच्छा रहेगा तथा शरीर के बल में वृद्धि होगी। साथ ही मिष्ठान का भी आप अधिक मात्रा में उपभोग करेंगी। इस मास में आपके शत्रु निर्बल रहेंगे अतः उनको पराजित करने में आप सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त व्यापार आदि से भी आप धन अर्जित करने में सफल रहेंगी।

साथ ही इस मास में पति या पुरूष वर्ग से आप वांछित लाभ एवं सहयोग प्राप्त करेंगी।आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिमता से सम्पन्न होंगे। धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना बढ़ेगी एवं इस समय आप किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन भी कर सकती हैं। इस प्रकार यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ फलदायक सिद्ध होगा।

नवम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस महीने में आप सामान्यतया शुभ फल ही प्राप्त करेंगी तथापि न्यूनाधिक अशुभ फल भी होते रहेंगे। इस समय आप अपने पराक्रम से धन अर्जित करेंगी तथा विविध प्रकार से सुखोपभोग करने में समर्थ रहेंगी। साथ ही समाज में आपके यश एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपको आदर प्रदान करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगी। इस समय दूसरे लोगों की भलाई के कार्यो को करने में भी आप तत्पर रहेंगी परन्तु शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। इस मास में उच्चाधिकारी वर्ग से आप आश्रय प्राप्त करेंगी एवं अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सफल बनाने में समर्थ रहेगी। आपके मित्रों तथा बन्धुजनों से इस समय मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे आप पूर्ण सहयोग तथा सुख भी अर्जित करने में सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त आपके मानसिक संकल्प भी इस समय पूर्ण होंगे जिससे आप हृदय से प्रसन्न रहेंगी।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के साथ साथ आप यदाकदा अशुभ फल भी प्राप्त करेंगी।अतः आप गर्मी या पित्त दोष के द्वारा शारीरिक रूप से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी तथा किसी प्रकार से रूधिर विकार की भी संभावना रहेगी। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्य कलापों

को सम्पन्न करें तथा शारीरिक सुरक्षा का भी ध्यान रखें।

दिसम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप सामान्यतया अशुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी तथा शुभ फल अल्प मात्रा में ही होंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा विविध प्रकार से आप शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी। इस मास में आपके शत्रु भी प्रबल रहेंगे अतः वे भी आपके लिए अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न करेंगे जिससे आप उनसे भयभीत तथा चिन्तित रहेंगी। इससे आप मानसिक रूप से भी परेशान रहेंगी। इस समय आपके व्यापार या आजीविका संबधी कार्यो में मन्दी आ सकती है जिससे आर्थिक रूप से भी परेशानी होगी। साथ ही आपका कोई कार्य बन्द या परिर्वतन भी हो सकता है। समाज में दूसरे लोगों से आपके विवाद आदि भी होते रहेंगे जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त धन हानि की भी संभावना होगी तथा शरीर में कोई रोग भी उत्पन्न होगा।

साथ ही इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप पति तथा पुत्र से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगी तथा इनकी ओर से पूर्ण सन्तुष्ट रहेंगी। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन वस्त्र तथा वस्तुएं भी प्राप्त कर सकती हैं। अतः यह मास आपके लिए सामान्य ही रहेगा।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि अष्टम भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं अष्टम भाव में आजाएंगे। मकर राशि का राहु इस वर्ष षष्ठ भाव में रहेगा। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं लग्न स्थान में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का पूर्वार्द्ध व्यापारिक रूप से अच्छा नहीं रहेगा। गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपके कार्य व्यवसाय में कुछ विशेष लाभ नहीं होगा। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रूकावटें डाली जा सकती है। अतः इस समय के अन्तराल में आपको अपना आत्मविश्वास बनाए रखना चाहिए और कोई नया कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए। पहले से चले आ रहे व्यापार को और अच्छे ढंग से चलाएं। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का समय सामान्य रहेगा।

26 जून के बाद समय कुछ अच्छा हो रहा है। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से व्यापार व कार्य क्षेत्र में सफलता मिलनी शुरू हो जाएगी। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। भाग्य अनुकूल होने के कारण आपके कार्यों में सफलता मिल सकती है। 26 नवम्बर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति हो सकती है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं जिससे आपको आर्थिक हानि हो सकती है। धनागम के मार्ग भी प्रभावित हो सकते हैं। इस समय के अंतराल में आपको निवेश या किसी को उधार पैसा नहीं देना चाहिए, नहीं तो वापसी की उम्मीद बहुत कम है। लग्नस्थ मंगल के प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता अनुकूल करने में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

गुरु के गोचर के बाद समय अच्छा हो रहा है। उस समय आपका रुका हुआ धन मिल सकता है, जिससे आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से पत्नी या मित्रों से धन लाभ होगा। अपने व्यापार को और आगे बढ़ाने में भी पैसा खर्च कर सकते हैं। भौतिक सुख सुबिधा पर भी आपका अधिक खर्च होगा। 26 नवम्बर के बाद रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी और आपको ससुराल पक्ष से भी लाभ प्राप्त होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतः बहुत अच्छा नहीं रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में पारिवारिक माहौल बढ़िया नहीं रहेगा। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है। एक दूसरे प्रति वैमनस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है जिससे पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है। पारिवारिक स्थिति को अनुकूल बनाने में आपको मातुल पक्ष का अच्छा सहयोग मिलेगा।

26 जून बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। परिवार में पुत्रादि का विवाह या कोई मांगलिक कार्य संपन्न होगा, उसमें आपकी अहम भूमिका होगी। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपके पत्नी के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे। सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा। द्वादशस्थ गुरु पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से संतान संबंधित कुछ चिन्ताएं हो सकती हैं। आपके बच्चों का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है, जिससे उनकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है।

26 जून के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी रूचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो सबसे अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा। नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत अच्छा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्यतः अनुकूल नहीं रहेगा। द्वादशस्थ गुरु एवं अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। कफ, मधुमेह एवं पेट संबंधित बीमारियों के कारण आप ज्यादा परेशान हो सकते हैं। मौसम जनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से कभी-कभी बीमारी नहीं होने के बावजूद भी बीमारी जैसा अनुभाव होता रहेगा।

26 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचरीय प्रभाव लग्न स्थान में होने से स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा। अच्छे स्वास्थ्य के साथ-साथ आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी अच्छी रहेगी। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे, जिससे आप का स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आपकी धर्म पत्नी भी आपकी सेहत का पूर्ण ध्यान रखेंगी। 03 अक्टूर के बाद आपकी सेहत फिर से प्रभावित हो सकती है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

षष्टस्थ राहु के प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता मिलेगा। आपको

करियर में स्थिरता प्राप्त होगी। जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उनको वर्ष के पूर्वार्द्ध में ही नौकरी मिल सकती है।

26 जून के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा हो रहा है। आप पढाई-लिखाई में आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैंतो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो सकता है। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा के लिए समय काफी अनुकूल है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष काफी अच्छा है। द्वादशस्थ गुरु विदेश यात्रा के अच्छे योग बना रहे हैं। इस समय के अंतराल में आपकी विदेश यात्रा होंगी।

26 जून के बाद नवमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि के प्रभाव सेलम्बी यात्राओं के प्रबल योग बन रहे है। तृतीय स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि छोटी यात्राएं कराती रहेगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का पूर्वार्द्ध धार्मिक कार्यों के लिए सामान्य रहेगा। मानसिक अस्थिरता के कारण आप धार्मिक कार्य कम ही कर पाएंगे परन्तु द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से आप दान पुण्य अधिक करेंगे। गरीबों, भिखारियों को खाना खिलाना, धार्मिक स्थान पर भण्डारा करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से तन्त्र के प्रति आपका आकर्षण ज्यादा रहेगा। 26 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर लग्न स्थान में होगा। उस समय नवम एवं पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका आध्यात्मिक ज्ञान और बढ़ेगा। निःस्वार्थ भाव से आप पूजा पाठ में रूचि लेंगे। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे एवं उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालिसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए मध्यम रहेगा। अतः शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी घटित होते रहेंगे। इस समय आपकी बुद्धि निर्मल रहेगी तथा अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को आप बुद्धिमता से सम्पन्न करने में सफल रहेंगी।साथ ही पुत्र से आप सुख प्राप्त करेंगी एवं अन्य प्रकार से द्रव्य लाभ भी होगा। समाज में भी आपकी प्रभुता में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी प्रभुता को स्वीकार करेंगे एवं आपको हार्दिक मान सम्मान प्रदान करेंगे। इस मास आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य पूर्ण होंगे तथा किसी शुभ समाचार की प्राप्ति भी होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा का भाव रहेगा एवं निष्ठा पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगी। इसके अतिरिक्त सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप आश्रय एवं सहयोग प्राप्त करेंगी फलतः समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त मानसिक चिन्ताओं से भी आप मुक्त रहेंगी तथा प्रसन्नता पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगी।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के साथ अशुभ फल भी प्राप्त होंगे।अतः आप वातजन्य रोगों या ठंड से शारीरिक रूप से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी तथा किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगी जिससे आपकी समाजिक प्रतिष्ठा में न्यूनता आएगी तथा बाद में आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। इसके साथ ही आग के द्वारा किसी प्रकार से धन हानि हो सकती है। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

फरवरी 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा फलतः शारीरिक दुर्बलता बनी रहेगी। साथ ही शत्रु पक्ष से आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगी जिससे मानसिक रूप से उद्विग्न तथा अशान्त रहेंगी। इस समय आपके घर में किसी प्रकार से चोरी भी हो सकती है। साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग की उपेक्षा न करें अन्यथा दंड मिलने की भी संभावना रहेगी। इस समय आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता की अपेक्षा असफलता ही अधिक मिलेगी। इस मास में आपका धन व्यय अधिक मात्रा में होगा फलतः आर्थिक रूप से आप कष्ट प्राप्त करेंगी। इस समय आपकी बुद्धि किसी ऐसे कार्य को करने के लिए प्रवृत होगी जिसके लिए बाद में पश्चाताप करेंगी। साथ ही मित्रों एवं संबधियों से भी मधुर संबध नहीं रहेंगे। इसके अतिरिक्त समाज से भी आप अपने को उपेक्षित समझेगी एवं आपकी आशाएं भी इस मास में अपूर्ण ही रहेंगी।

साथ ही इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ यदाकदा शुभ फल भी होंगे। अतः आप पति एवं पुत्र का वांछित सहयोग एवं सुख प्राप्त करेंगी। इस समय आप नवीन वस्त्र या वस्तुओं की भी प्राप्ति कर सकती हैं। इससे आप अल्प मात्रा में मानसिक रूप से सन्तुष्टि एवं शान्ति की अनुभूति कर सकेंगी।

मार्च 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप अशुभ फलों को ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी तथा कई प्रकार से परेशानियां भी होगी। इस समय आप पति तथा अन्य बन्धुजनों से कष्ट प्राप्त करेंगी साथ ही आपके शत्रु भी बलवान रहेंगे जिससे उनकी ओर से भी आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगी। इस मास में आपके उत्साह के भाव में अल्पता आएगी तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा फलतः शारीरिक रूप से भी आप काफी अस्वस्थ रहेंगी तथा शरीर निर्बलता से युक्त रहेगा। इस समय आपके मन में लोभ के भाव की भी अधिकता रहेगी। मित्रों तथा बन्धुवर्गो से संबधों में तनाव उत्पन्न होगा तथा सभी मित्र शत्रु की तरह आपसे व्यवहार करेंगे जिससे आप मानसिक रूप से भी अशान्त एवं उद्विग्न रहेंगी। समाज में भी अन्य जनों से वाद विवाद या संघर्ष की स्थिति रहेगी जिससे समाजिक सम्मान में अल्पता आएगी। अतः सावधानी तथा बुद्धिमतापूर्वक इस समय को व्यतीत करें।

साथ ही इस मास में आप गर्मी या पितोत्पनन रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगी तथा रूधिर विकार की भी संभावना रहेगी। इस समय आप अग्नि द्वारा भी किसी प्रकार क्षति प्राप्त करेंगी। अतः यह मास आपके लिए सामान्यतया अशुभ सिद्ध होगा।

अप्रैल 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप अधिकाशं अशुभ फल प्राप्त करेंगी परन्तु शुभफल भी न्यूनाधिक अवश्य ही घटित होंगे। इस समय आप शत्रुवर्ग से भयभीत तथा चिन्तित रहेंगी तथा घर में किसी प्रकार की चोरी की घटना भी हो सकती है। इस मास में आपका धन व्यय अधिक होगा अतः आर्थिक रूप से आप कमजोर होंगी। साथ ही धर्म के प्रति आपके मन में कोई विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा तथा विविध प्रकार से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी फलतः शरीर में भी दुर्बलता रहेगी। इस मास में आप दूर समीप की किसी प्रकार की यात्रा भी कर सकती हैं। साथ ही अपने सांसारिक कार्यों को पूर्ण करने में आप असमर्थ रहेंगी फलतः मानसिक रूप से आप अत्यंत ही चिन्तित तथा उद्विग्न रहेंगी इसके अतिरिक्त मुकद्दमे आदि में भी आपका धन व्यय होगा। अतः सावधानी एवं बुद्धिमता पूर्वक इस मास को व्यतीत करें।

साथ ही इस मास में अशुभ फलों के मध्य शुभ फल भी होते रहेंगे। अतः आप पति का पूर्ण सुख अर्जित करेंगी तथा उनसे आपको पूर्ण सहयोग भी प्राप्त होगा। इस समय आप की बुद्धि में निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी तथा धन लाभ एवं सुखार्जन करने में भी आप सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त समाज में आपकी कीर्ति में भी वृद्धि होगी।

मई 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ तथा सौभाग्यशाली रहेगा। इस समय उच्चाधिकारी वर्ग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे फलतः आप किसी सम्मानित पद को प्राप्त करने में सफल रहेंगी। इस मास आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगी तथा सरकार या अधिकारी

वर्ग से भी लाभ एवं सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगी इस समय आपके घर में कोई धार्मिक उत्सव भी सम्पन्न हो सकता है। साथ ही पति एवं पुत्र से आप पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करके प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा नियम पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगी। इस मास में समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा अधिकांश भाग्योदय सम्बन्धी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी सम्पन्न होंगे। आपकी बुद्धि भी इस समय निर्मल रहेगी तथा दूर समीप की लाभदायक यात्राओं का भी योग बनेगा। इसके अतिरिक्त मित्र एवं बन्धु वर्ग से आपके मधुर सम्बन्ध रहेंगे तथा उनसे वांछित सुख एवं सहयोग भी प्राप्त करेंगी। इस प्रकार इस समय आपकी सर्वत्र यश तथा सम्मान में वृद्धि होगी।

साथ ही इस मास में आप पति से पूर्ण सुख एवं सहयोग अर्जित करेंगी तथा बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करेंगी एवं उनमें लाभ अर्जित करके सुखानुभूति प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आपकी असीम श्रद्धा रहेगी। इस प्रकार इस महीने को आप अत्यंत ही सुख एवं आनंदपूर्वक व्यतीत करेंगी।

जून 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने कार्यक्षेत्र में आशातीत उन्नति तथा लाभ अर्जित करने में पूर्ण सफलता अर्जित करेंगी। साथ ही आपके उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे अतः आप पदोन्नति भी प्राप्त कर सकती हैं। बन्धु एवं मित्र वर्ग से आप पूर्ण सुख तथा सहयोग अर्जित करेंगी तथा उनकी भलाई के लिए भी तत्पर रहेंगी। इस समय आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सिद्ध होंगे जिससे मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा शान्त रहेंगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा श्रद्धापूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगी। इस मास में समाज में आपके प्रभुत्व तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा दूर दूर तक आपके यश में भी विस्तार होगा साथ ही अन्य प्रकार से भी लाभ योग बनते रहेंगे। इस समय आप नवीन गृह या स्थान की प्राप्ति भी कर सकती हैं। इसके अतिरिक्त विगत असफल अशाओं में भी आप सफलता अर्जित करने में सफल रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप पति से पूर्ण सुख तथा सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगी तथा पुरूषवर्ग से भी लाभ हो सकता है। इस समय आपकी बुद्धि निर्मल रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में लाभ या सुखार्जन करने में सफल रहेंगी तथा धर्म में आपकी श्रद्धा रहेगी एवं समाज में यथोचित मान सम्मान प्राप्त होगा। इस प्रकार यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा।

जुलाई 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिये अत्यन्त ही सुख एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहेगा। सौभाग्य से युक्त हो कर आप अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता अर्जित करेंगी। साथ ही उच्चाधिकरी वर्ग से आपको पूर्ण सहयोग तथा लाभ प्राप्त होता रहेगा। इस मास आपका

शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा अध्ययन या ज्ञार्नाजन में आप रूचिशील रहेंगी तथा इसको प्राप्त करने में सफल भी रहेंगी। मित्रों तथा संबधियों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे सुख एवं सहयोग प्राप्त होता रहेगा। साथ ही इस समय आप वांछित द्रव्य पदार्थो को प्राप्त करने में भी सफल रहेंगी। सन्तति पक्ष से भी आपको पूर्ण सुख प्राप्त होगा तथा उनकी ओर से आप निश्चिन्त रहेंगी। इस मास में समाज में आपके पराक्रम एवं प्रतिष्ठा की वृद्धि होगी तथा आपकी विगत असफल आशाओं में भी सफलता प्राप्त होगी। अतः मानसिक रूप से आप शान्त एवं प्रसन्न रहेंगी।

साथ ही इस मास में उच्चाधिकारी वर्ग के आश्रय से आप उन्नति करेंगी। इस समय आप दूर समीप की लाभदायक यात्रा भी सम्पन्न कर सकती हैं तथा पति से पूर्ण सहयोग, नवीनवस्त्रों की प्राप्ति तथा अन्य प्रकार के सुखों को अर्जित करने में भी आप सफल रहेंगी। अतः यह मास आपके लिये अत्यंत ही सौभाग्यशाली सिद्ध होगा तथा आप प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

अगस्त 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ तथा अशुभ दोनों प्रकार के फलों को अर्जित करेंगी। इस समय आपका धन व्यय अधिक मात्रा में होगा तथा दुष्ट मनुष्यों की संगति भी प्राप्त करेंगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी इस समय अच्छा नहीं रहेगा तथा शारीरिक कष्ट आपको होते रहेंगे। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास में अत्यन्त ही परिश्रम तथा पराक्रम से अल्प मात्रा में सफल हो सकेंगे। धर्म के प्रति आपकी विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी। साथ ही अन्य प्रकार से भी आप धन हानि प्राप्त कर सकती हैं। आपके संबधियों तथा मित्रों से मधुर संबध नहीं रहेंगे तथा आजीविका संबधी कार्यों में भी इस मास में अनावश्यक व्यवधान उत्पन्न होते रहेंगे।शत्रुपक्ष से भी आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगी। इस समय जिस कार्य को आप प्रारंभ करेंगी उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही अधिक मात्रा में प्राप्त होगी जिससे मानसिक रूप से आप असन्तुष्ट तथा अप्रसन्न रहेंगी।

साथ ही अशुभ फलों के साथ साथ आप को यदाकदा शुभफल भी प्राप्त होंगे। इससे आप पति का पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगी तथा बुद्धि भी निर्मल रहेगी एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धि बल से सम्पन्न हो जाएंगे। इसके अतिरिक्त इस मास में आप किसी धार्मिक आचरण करनेमें भी सफल हो सकती हैं।

सितम्बर 2027 के लिए फलादेश

इस मास में सुख एवं प्रसन्नता अर्जित करने में आप सफल रहेंगी तथा आनन्द पूर्वक समय को व्यतीत करेंगी। इस समय आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी शान्त तथा प्रसन्न रहेंगी। इस मास में आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा शत्रु वर्ग आपसे पराजित एवं भयभीत रहेगा। साथ ही विविध प्रकार से आय स्त्रोतों में वृद्धि होगी। नौकरी या व्यापार के अतिरिक्त आप अन्य स्त्रोतों से लाभार्जन भी कर सकेंगी जिससे आपकी आर्थिक

स्थिति सुदृढ़ रहेगी। सामाजिक जनों तथा मित्रों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा इनसे आप उचित सहयोग तथा सम्मान अर्जित करने में सफल रहेंगी। साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप यथोचित सहयोग एवं लाभ अर्जित करने में भी सफल सिद्ध होंगी। इस मास में आप सौभाग्य शाली रहेंगी तथा आपके अधिकाशं शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इसी समय सिद्ध होंगे। इसके अतिरिक्त सांसारिक कार्यो को पूर्ण करने में भी आप सफल रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप पति से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगी। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन होता रहेगा। इसके अतिरिक्त किसी धार्मिक कार्य को भी आप इस समय सम्पन्न कर सकती हैं। साथ ही मित्र एवं बन्धु वर्ग में आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी तथा उनसे आप यथोचित सहयोग एवं सम्मान प्राप्त करने में सफल रहेंगी।

अक्तूबर 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप अधिकाशं रूप से शुभ फलों को ही प्राप्त करेंगी तथापि अल्प मात्रा सें अशुभ फल प्राप्त होंगे। इस समय आप अपने उत्साह एवं पराक्रम से धनार्जन करेंगी तथा इससे आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। इस मास में समाज बन्धु तथा मित्रों के मध्य भी आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी तथा इनसे आपके संबध भी मधुर रहेंगे। साथ ही इनसे वांछित सहयोग भी प्राप्त होता रहेगा। उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप उचित सहयोग तथा सम्मान अर्जित करने में सफलता प्राप्त करेंगी। आप मिष्ठान का उपभोग इस मास में अधिक मात्रा में करेंगी परन्तु स्वास्थ्य मध्यम ही रहेगा। इस मास में शत्रु वर्ग को पराजित तथा भयभीत करने में आप सफल मानी जाएंगी। साथ ही पति से भी आप मनोवांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त व्यापार या अन्य कार्यो के द्वारा भी आप धनार्जन करने में समर्थ रहेगी तथा प्रसन्नता पूर्वक इस मास को व्यतीत करेंगी।

परन्तु शुभफलों के साथ साथ यदाकदा अशुभ फल भी होंगे। अतः आप गर्मी या पित्तोत्पन्न रोगों से शारीरिक रूप से अस्वस्थ रहेंगी तथा किसी प्रकार से रक्त विकार भी हो सकता है। अतः इस मास में शारीरिक सुरक्षा के प्रति पूर्ण सतर्क रहें तथा अपने कार्य कलापों को भी सावधानी पूर्वक सम्पन्न करें।

नवम्बर 2027 के लिए फलादेश

इस मास को आप सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगी। इस समय आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगी तथा अन्य प्रकार से भी सुखोपभोग करने में सफल सिद्ध होंगी। साथ ही समाज में भी आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी तथा सभी लोग आपको यथोचित सम्मान तथा सहयोग प्रदान करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा नियम पूर्वक आप इनका पूजन तथा सत्कार करेंगी। अन्य लोगों की भलाई के लिए भी कार्यो को करने के लिए आप तत्पर रहेंगी। इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा उच्चाधिकारी वर्ग से आप पूर्ण सहयोग तथा आश्रय भी प्राप्त करेंगी

जिससे आपके सामाजिक सम्मान में वृद्धि होगी। इस मास भाई बहिनों का आपको पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त होगा साथ ही आपसी संबध भी मधुरता से युक्त रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपके मानसिक संकल्प भी इस समय में पूर्ण होंगे जिससे आप हृदय से प्रसन्न रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप पति तथा पुत्र से सुख तथा सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप नवीन वस्त्र द्रव्य या स्वर्णादि के आभूषणों को भी प्राप्त कर सकती है। अतः यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ फलदायक सिद्ध होगा।

दिसम्बर 2027 के लिए फलादेश

इस मास को आप सामान्यतया कष्ट से व्यतीत करेंगी। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा अन्य ओर से भी कष्ट प्राप्त होंगे। इस मास में आपके शत्रु प्रबल रहेंगे। अतः उनसे आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगी फलतः मानसिक रूप से आप परेशान तथा अशान्त रहेंगी। इस समय पारिवारिक जनों से भी आपके मधुर संबध नहीं रहेंगे तथा आपस में मन मुटाव रहेगा। आपके व्यापार या कार्य क्षेत्र में भी इस समय व्यवधान आएंगे तथा उन्नति मार्ग भी अवरूद्ध होगा। इस मास आपके स्थान परिवर्तन की भी संभावनाएं रहेंगी साथ ही कोई अस्थाई कार्य भी छूटेगा। सामाजिक जनों से आपका वैमनस्य का भाव अधिक रहेगा अतः सामाजिक सम्मान में अल्पता आएगी। इसके अतिरिक्त शरीर में रोग भी उत्पन्न होंगे तथा धन भी अनावश्यक रूप से अधिक मात्रा में व्यय होगा जिससे आप अशान्त एवं दुःखी रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप ठंड या वातोत्पन्न रोगों से अस्वस्थ रहेंगी। इस समय आप किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगी जिससे समाज में आपके सम्मान में कमी आएगी तथा बाद में आपको पश्चाताप भी करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि के द्वारा भी कोई हानि हो सकती है। अतः सावधानी पूर्वक एवं बुद्धिमता से अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि अष्टम भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं षष्ठ भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु द्वितीय भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए सामान्य रहेगा। अष्टम स्थान के शनि व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बना रहे है। गुप्त शत्रु आपके कार्यों में रुकावट डालने की कोशिश करेंगे परन्तु सामने नही आएंगे। फरवरी के बाद आप कोई नया कार्य प्रारम्भ कर सकते हैं। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपके अंदर नवीन विचारधाराएं नयी योजनाओं को जन्म देंगी जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने व्यापार को और सुदृढ़ बना सकते हैं।

नवम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका भाग्य भी आपके अनुकूल रहेगा। अतः कम समय में अच्छी सफलता प्राप्त कर सकते हैं। शेयर बाजार से जुड़े व्यक्तियों को इच्छित लाभ होगा। 24 जुलाई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नती होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्नाभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में वृद्धि होगी। फरवरी के बाद व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में वृद्धि होगी, जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। कर्जे इत्यादि से भी मुक्ति मिल सकती है। 24 जुलाई के बाद आपके रुके हुए या फंसे हुए पैसे मिल सकते है। छठे स्थान का राहु शत्रुओं से भी लाभ करा सकता है। सामाजिक व धार्मिक कार्यों में भी व्यय करेंगे।

24 जुलाई के बाद मांगलिक कार्यों में व्यय करेंगे। अष्टम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से पैतृक संपत्ति या स्थिर धन का लाभ होगा। पंचम का राहु संतान के स्वास्थ्य पर भी धन खर्च करा सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में ही परिवार में किसी सदस्य की वद्धि होगी, जिससे आपके परिवार में खुशी का माहौल बनेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी। जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। परन्तु अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं।

राहु ग्रह के गोचर के बाद संतान संबंधित परेशानी हो सकती है। पंचमस्थ राहु उनका स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। आप सामाजिक गतिविधियों में कम ही भाग लेंगे।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रूचि बढ़ेगी। वह अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। फरवरी के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। यदि आपका दूसरा बच्चा विवाह योग्य है तो उसका विवाह हो सकता है।

24 मई के बाद पंचम स्थान का राहु आपके बच्चे का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। अतः उसके स्वास्थ्य से संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही नहीं करनी चाहिए। आपके बच्चों को अपने कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा।

स्वास्थ्य

अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से वर्षारम्भ में आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा परन्तु 28 फरवरी के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह होने से आपके मन में हमेशा अच्छे विचार आएंगे, जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। आपके अन्दर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी।

वर्ष के उतरार्द्ध में लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका स्वास्थ्य किंचित प्रभावित हो सकता है। मौसमजनित बीमारी या आलस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है परन्तु आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे और अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए नियमित व्यायाम करेंगे। शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्षारम्भ षष्ठस्थ राहु के प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षाओं के लिए उत्तम रहेगा। आप अपने सारे शत्रुओं को परास्त करते हुए करियर में सफलता प्राप्त करेंगे। बेरोजगार जातकों को मनोनुकूल नौकरी मिल सकती है।

24 मई के बाद समय कुछ प्रभावित हो रहा है। विद्यार्थियों के लिए बहुत अच्छा समय नही रहेगा। उनको करियर में सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से वर्षारम्भ में ही विदेश यात्रा हो सकती हैं।

फरवरी के बाद नवमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्रा

होगी साथ ही छोटी-मोटी यात्राएं भी होती रहेंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। फरवरी के बाद नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रूचि बढ़ेगी, जिसके फलस्वरूप आप पूजा, पाठ, यज्ञ व अनुष्ठान अधिक करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ईश्वर में आपका अटूट विश्वास होगा। दान पुण्य करने मे आप आगे रहेंगे परन्तु वर्ष का उत्तरार्द्ध धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं रहेगा।

- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें एवं शनि मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक मंगलवार को हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- दुर्गाजी की उपासना करें या दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि नवम भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं नवम भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु पंचम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु तृतीय भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में कार्य व्यवसाय में उन्नति करेंगे। नवम स्थान पर शनि एवं गुरु के गोचरीय प्रभाव के चलते आपका भाग्य साथ देगा। व्यावसायिक उन्नति के सारे मार्ग प्रशस्त होंगे। व्यापार में भाइयों का अच्छा सहयोग मिलेगा। साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो अच्छा लाभ मिलेगा।

29 मार्च से सफलता के अच्छे अवसर मिलेंगे जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने कार्य में सफल होंगे। गुरु के प्रभाव से आमदनी के नये स्रोत खुलने की उम्मीद है। 25 अगस्त के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी व कार्य स्थल पर मान सम्मान भी बढ़ेगा। अनुभवी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलने से आप अपने व्यापार में और अधिक सुधार करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता के कारण आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। भाग्य अनुकूल होने से आप बचत करने में सफल रहेंगे परन्तु द्वितीयस्थ मंगल के कारण आपके पारिवारिक खर्चे भी बढ़ेंगे। 29 मार्च के बाद रत्नाभूषण इत्यादि वस्तु की प्राप्ति हो सकती है। पुराने कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे उसमें भी आपके पैसे खर्च हो सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में आपके पिता की अहम भूमिका होगी। पंचम स्थान का राहु आपकी संतान के स्वास्थ्य पर भी व्यय करा सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ सामाजिक उन्नति के साथ होगा। तृतीयस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि प्रभाव से सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। 29 मार्च के बाद आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। पंचमस्थ राहु आपके बच्चे का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है।

25 अगस्त के बाद चतुर्थ स्थान पर शनि की दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है। आपके माता पिता का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। परिवार में कुछ लोगों का

बर्ताव ठीक नहीं रहेगा।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान का राहु संतान के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है और उनकी शिक्षा में भी रुकावटें उत्पन्न कर सकता है। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान प्राप्ति में बाधा उत्पन्न हो सकती है। गर्भवती स्त्रियों अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है नहीं तो गर्भपात भी हो सकता है।

आपकी दूसरी संतान के लिए समय अच्छा है। उनकी शिक्षा-दीक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी एवं अपने परिश्रम के बल पर लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। लग्न स्थान पर राहु की दृष्टि से अचानक स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। अतः स्वास्थ्य संबंधित किसी भी प्रकार की लापरवाही आपके लिए अच्छी नहीं होगी। 29 मार्च से आपके स्वास्थ्य में सुधार होना शुरू हो जाएगा।

25 अगस्त से आपको खान-पान पर विशेष ध्यान देना होगा। चिकनाईयुक्त व तली हुई वस्तुओं का कम से कम सेवन करना चाहिए। कुछ बेवजह की यात्राएं और काम का बोझ आपको थका सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

आपको लगातार अथक परिश्रम के बाद सफलता मिलेगा। विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करा सकती है।

छठे स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता मिलेगी। बेरोजगार जातकों को रोजगार मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष का प्रारम्भ यात्रा की दृष्टि से अनुकूल है। गुरु के प्रभाव से छोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। तीर्थ यात्रा पर जाने की योजना भी बन सकती है। 25 अगस्त के बाद द्वादश स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से विदेश यात्रा भी होगी।

चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है। यह परिवर्तन आपके प्रतिकूल स्थान पर भी सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में गुरु ग्रह की दृष्टि नवम स्थान पर पड़ रही है जिसके कारण आपका

मन धार्मिक कार्यों की ओर आकृष्ट होगा। आप कोई विशेष अनुष्ठान करेंगे जैसे- अखण्ड रामायण का पाठ, माता की चौकी, माता का जागरण इत्यादि।

- मंगलवार के दिन हनुमान जी को लड्डू का भोग लगाकर गरीबों में वितरित करें।
- दुर्गा जी की उपासना करें या राहु मन्त्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि नवम भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु पंचम भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं तृतीय भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

यह वर्ष आपके लिए कई लाभकारी अवसर लेकर आ रहा है। आप अपने व्यावसायिक जीवन में कुछ विशेष करेंगे जिससे आपके सहयोगी और अधिकारी भी प्रभावित होंगे। अपने दायित्वों का पूर्ण रूप से निर्वहन करेंगे राहु एवं गुरु का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण व्यावसायिक जीवन में थोड़े बहुत अवरोध आएंगे। इस दौरान आपके कार्यों में देरी भी हो सकती है जिसके चलते तनावपूर्ण स्थिति बन सकती है। जैसे ही यह प्रभाव खत्म होगा आपका समय फिर से अनुकूल हो जाएगा और सब कुछ आपके हित में होने लगेगा। आप अपने लक्ष्यों को योजनानुसार प्राप्त कर सकेंगे।

जो व्यक्ति नवीन रोजगार की तलाश में हैं उन्हें अड़चनों के बाद सफलता प्राप्त होगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। अप्रैल के बाद आपको रोजगार से सम्बन्धित सुखद समाचार मिलने शुरु हो जाएंगे और आप पूर्ण विश्वास के साथ आगे बढ़ेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह साल आपके लिए चुनौतियों के साथ अनेक लाभ भी लाएगा। 04 फरवरी के बाद नए निवेश करना सही नहीं होगा। भूमि, भवन एवं वाहनादि पर निवेश न करें नही तो आपका पैसा डूब सकता है। इस समय आप इस बात पर ध्यान दें कि भविष्य में किए जाने वाले निवेशों से लाभ किस प्रकार पाया जाए और एक सही योजना बना कर आप निवेश से लाभान्वित भी हो सकते हैं।

अप्रैल के बाद कोई खोया हुआ जरूरी दस्तावेज भी मिल सकता है। यदि ऋण के लिए आवेदन किया है तो वह भी बिना देरी के मंजूर हो जाएगा। हर प्रकार की आर्थिक परेशानिया तुरंत ही दूर हो जाएंगी। परिवार में मांलिक कार्य होंगे जिसमें आप खुले हाथों से व्यय करेंगे

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक वातावरण में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। 04 फरवरी के बाद चतुर्थस्थ राहु आपको घरेलू जीवन में कुछ चिंताएं दे सकता है जिससे परिजनों के बीच

सामंजस्य बिठाने में कठिनाई पैदा होंगी। ऐसे में विपरीत परिस्थितियों से निबटने के लिए आपको अपने अन्दर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करनी होगी।

आपके माता-पिता का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। अचानक ही उनका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। मई के बाद आपका समाजिक स्तर बढ़ेगा। मान-प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। इस समय के अंतराल में समाज में आपकी एक अगल पहचान होगी।

संतान

वर्ष की शुरुआत संतान के लिए शुभ नहीं है। लग्न स्थान का राहु गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात करा सकता है। आपके बच्चों को स्वास्थ्य से संबंधित परेशानी होगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपकी दूसरे संतान के लिए समय अच्छा हो रहा है। उस समय आपकी दूसरी संतान के साथ प्रेम व समन्वय में वृद्धि होगी। यदि संतान की इच्छा रखते हैं तो यह समय श्रेष्ठ है। आप अपने बच्चों के मनोबल को बढ़ाते रहें तो वह अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ में स्वास्थ्य को लेकर चिंता बनी रहेगी। 04 फरवरी के बाद आप अपने आप को तंदरुस्त और सेहतमंद महसूस करेंगे क्योंकि आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जा की वृद्धि होगी।

मई से आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि व्यायाम करना या सुबह-सुबह टहलने जाना। यदि आलस्य ने आपके अन्दर घर बना लिया है तो आपका स्वास्थ्य एक चिंताजनक विषय बन सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। चतुर्थ स्थान में राहु एवं गुरु की युति माध्यमिक शिक्षा ग्रहण कर रहे शिक्षार्थियों के लिये भ्रम और असमंजस की स्थिति बनायेगी।

यदि आप अपने शत्रुओं को परास्त करना चाहते हैं, तो नीतियों में बदलाव करना पड़ेगा। शनि ग्रह के गोचर के बाद आप कोई विदेशी भाषा सीखने की तरफ आकर्षित होंगे। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए उत्तम योग बन रहा है।

यात्रा-तबादला

नवमस्थ शनि के प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आप लम्बी-लम्बी यात्राएं भी करेंगे धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का भी अवसर प्राप्त होगा।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। 17 अप्रैल के बाद द्वादश स्थान

पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्राएं होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

कोई भी शुभ कार्य योजनाबद्ध तरीके से ही संपन्न करें अन्यथा पूजादि कार्यों में व्यवधान आने की आशा है। 17 अप्रैल से आप अपने कार्य-व्यवसाय पर अधिक ध्यान देंगे और कर्म ही पूजा है इस वाक्य को चरितार्थ करेंगे

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दे एवं प्रणायाम करें।
- बुधवार के दिन चींटियों को दाना डालें एवं भूखे व्यक्तियों को खाना खिलाएं।
- नित्य हनुमान चालीसा का पाठ करें।

इस वर्ष वृष राशि के शनि दशम भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु चतुर्थ भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु चतुर्थ भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य-व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। व्यापार में बदलाव या फिर नौकरी में पदोन्नति की भी संभावना है। 18 फरवरी से अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा जिससे आपके कार्यों में लाभ की मात्रा और बढ़ जाएगी। साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ मिलना या उसके साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी और यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा।

9 अगस्त से व्यावसायिक स्तर पर समय आपके लिए काफी हितकारी होने वाला है। आपको आपकी पिछली व्यावसायिक सफलताओं के लिए पुरुस्कृत भी किया जाएगा। साथ ही आपकी कड़ी मेहनत को नजरअंदाज नहीं किया जाएगा। दशमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप के अन्दर गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप अपने क्लाइंट्स को प्रभावित करने में सफल होंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बहुत बढ़िया रहेगा। 18 फरवरी के बाद आय भाव पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। साथ ही फंसे हुए धन या रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है। धार्मिक यात्रा या मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा।

9 अगस्त से आर्थिक स्थिति के लिए समय और बढ़िया हो रहा है। आप कुछ बेहतरीन व्यावसायिक संबंध भी कायम करेंगे और लाभकारी निवेशकों के साथ भी निवेश करेंगे। आप किसी वित्तीय लेन-देन की योजना भी बना सकते हैं। यह समय आपके लिए अत्यंत लाभकारी रहेगा। यदि अनापेक्षित ही कोई अच्छा सौदा आपकी झोली में आ गिरे, तो चौंकिएगा मत। भूमि संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। दशमस्थ शनि पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपके सामने कई लाभकारी अवसर आएंगे।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भघरेलू वातावरण के लिए अनुकूल है। पारिवारिक माहौल अनुकूल रहेगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता रह सकती है अतः परिवार से जुड़े हर

मामलों में आपको सावधानी बरतने की आवश्यकता है। आपके माता-पिता के लिए समय शुभ है।

9 मई से घरेलू वातावरण के लिए समय अनुकूल हो रहा है। परिवार में सुख, शान्ति का वातावरण बनेगा। इन सबके पीछे आपका ही महत्वपुर्ण योगदान होगा क्योंकि आप बहुत से ऐसे कामों को अंजाम देने वाले हैं जो पारिवारिक जीवन के लिए हितकर होंगे। 15 अक्टूबर के बाद परिजनों के साथ आप किसी धार्मिक स्थल की यात्रा करेंगे या घर परिवार में शुभ कृत्य का आयोजन होगा।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए अच्छा रहेगा किन्तु आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित चिंताएं रहेंगी। 18 फरवरी से गुरु ग्रह का गोचर शुभ हो रहा है। यह समय आपकी संतान के लिए शुभ होगा।

गर्भाधान का सुन्दर समय चल रहा है। इस समय के अंतराल में आपके बच्चे कुछ ऐसे काम करेंगे जिससे आप उन पर गर्व करेंगे। आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की लिहाज से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। पारिवारिक क्लेश के कारण मानसिक अशान्ति बनी रहेगी। आपके जीवन में इस साल खुशी के पल भी आएंगे। स्वस्थ्य रहने के लिए आपको चाहिए कि आप योग और ध्यान का सहारा लें। प्रियजनों और परिजनों के साथ अधिक से अधिक समय बिताएंगे।

15 अक्टूबर के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का विकास होगा जिससे आपकी शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी और आप पूर्णरूप से स्वस्थ रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष के प्रथम दो माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा वर्ष अनुकूल बना रहेगा। विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धी प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए भी ये समय बहुत बढ़िया है। प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपनी परीक्षा में सफल होंगे। जो व्यक्ति अपना व्यापार शुरु करना चाहते हैं। उनके लिए यह समय अनुकूल है।

15 अक्टूबर के बाद बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलेगी। आपके लिए रोजगार के नये अवसर भी पैदा होंगे। आप व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में विदेश यात्रा का योग बन रहा है। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती

रहेंगी। 18 फरवरी के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्म भूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के शुरु में आपके धार्मिक कार्य प्रभावित होंगे। 18 फरवरी के बाद पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से पूजा-पाठ यज्ञ अनुष्ठान व मन्त्र जाप के प्रति आपकी रूचि बढेगी। 14 जूल के बाद आप पूरे परिवार सहित घरेलू सुख शान्ति के लिए पूजा करेंगे और धार्मिक यात्रा कर पुण्यरर्जन भी करेंगे।

- अपने घर में श्रीयन्त्र की स्थापना कर उसके सामने प्रत्येक दिन दीपक जलाएं और महालक्ष्मी के मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच का पाठ करें।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दुर्वा चढ़ाएं एवं गणेश अथर्वशीर्ष का पाठ करें।

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं दशम भाव में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु तृतीय भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि केगुरुपंचम भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं पंचम भाव में आजाएंगे और पुनः मार्गी होकर 23 अक्तूबर को मकर राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भश्रेष्ठतम रहेगा। बौद्धिक बल के द्वारा व्यापार को एक अलग ही मुकाम पर ले जाएंगे। आप आपनी आंतरिक क्षमता, इच्छा शक्ति, संतुलन और दृढ़ता से अपने काम पर ध्यान देंगे। बड़ी-बड़ी योजनाएं और अवसर आपके द्वार पर दस्तक देंगे।

23 अक्तूबर के बाद व्यावसायिक जीवन में उतार-चढाव का सामना करना पड़ सकता है परन्तु अपने अनुभवों से अपना विकास करेंगे। आपका धैर्य ही आपको प्रगतिशील रहने के लिए प्रेरित करता रहेगा और हर समस्या का समाधान सूझ-बूझ से निकाल लेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए उत्तम रहेगा। संचित धन में वृद्धि होगी। धनागम के स्रोत बढ़ेंगे। नवीन संपत्ति खरीदने की दिशा में प्रयासरत रहेंगे। इस संबंध में आपको सफलता भी मिलेगी। गुरु के गोचर के बाद क्रय-विक्रय के मामले में सावधान रहें। खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

12 अगस्त के बाद एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके आय के स्रोतों में बढ़ोत्तरी होगी। रुके हुए या फंसे हुए पैसे मिलने की सम्भावना है। लॉटरी, शेयर इत्यादि से भी आपको अच्छा लाभ मिलेगा। कर्जे से मुक्ति मिल सकती है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान पर शनि की दृष्टि से घरेलू माहौल अनुकूल नहीं रहेगा। परिवार में वैचारिक मतभेद से आप मानसिक अशान्ति महसूस सकते हैं। आपकी माता का स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा। 5 मार्च के बाद परिवार में सदस्य संख्या में वृद्धि होगी। परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में समय काफीअनुकूल हो रहा है। परिवार के सभी सदस्यों का अच्छा सहयोग मिलेगा। लगाव बढ़ने के कारण पारिवारिक माहौल भी अनुकूल होगा। आपके भाईयों के लिए यह समय काफी शुभ है।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ काफी शुभ रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। अच्छे शैक्षणिक संस्थान मेंबच्चों का प्रवेश हो जाएगा।

5 मार्च से गुरु का गोचरप्रतिकूल होने से संतान संबंधित चिंताएं हो सकती हैं। बच्चों का स्वास्थ्य प्रतिकूल रहने के कारण उनकीशिक्षा-दीक्षा में रूकावटें आ सकती हैं। बच्चोंके स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें। शारीरिक आरोग्यता प्राप्ति के लिए आप तुला दान भी करा सकते हैं।

स्वास्थ्य

आपकी शारीरिक ऊर्जा व कार्य क्षमता में वृद्धि होगी। पूर्ण रूप से शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे जिससे आपके अंदर अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपको छोटी-मोटी बीमारियां हो सकती हैं। मई के बाद लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आलस्य की भावना उत्पन्न कर सकती है। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली को उत्तमबनाने की कोशिश करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत बढ़िया रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता मिलने के प्रबल योग बन रहे हैं। व्यवसायी इस समय कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे और उसमें सफलता भी होंगे।

यदि आप विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो 5 मार्च से समय आपके लिए काफीशुभ हो रहा है।

यात्रा-तबादला

तृतीयस्थ राहु के कारण वर्षारम्भ से ही आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्राओं के भी प्रबल योग बन रहे हैं। चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

गुरु के गोचर के बाद आपकी विदेश यात्रा होगी। यात्रा के दौरान किसी से बहुत अच्छी मित्रता होगी। 12 अगस्त के बाद धार्मिकयात्रा का भी योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। आप अधिक धार्मिक कार्य जैसे मन्दिर निर्माण में दान देना, धार्मिक स्थलों पर भण्डारा करना, गरीबों की सहायता करना, तीर्थ स्थलों की यात्रा इत्यादि करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- अपने घर में स्फटिक श्रीयन्त्र की स्थापना कर उसके सामने नित्य देशी घी का दीपक जलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं छठे भाव में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। परन्तु 18 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने से समय अति उत्तम हो रहा है। आप अपने परिश्रम की बदौलत व्यावसायिक जीवन में उन्नति करेंगे। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से आपके अंदर काम करने का जुनून होगा। यही आपके व्यावसायिक उन्नति का कारण बनेगा। अष्टम स्थान के केतु आपके कार्यों में कुछ रुकावट उत्पन्न कर सकते हैं।

आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेंगे। यदि आप किसी के साथ मिलकर कोई नया व्यापार प्रारम्भ करेंगे तो उसमें अच्छा लाभ होगा। अपने कार्य व्यवसाय में रिश्तेदारों के साथ साझेदारी न करें। नहीं तो उनके साथ संबंध खराब हो सकते हैं। नौकरी करने वालों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक रूप से चुनौतीपूर्ण रहेगा। द्वितीयस्थ राहु के कारण बीमारी दूर करने में संचित धन का व्यय हो सकता है। गुरु ग्रह का गोचर अशुभ होने से धनागम में रुकावट व आर्थिक तंगी का योग बना हुआ है। परन्तु 18 मार्च के बाद अचानक व्यापारिक उन्नति होने से आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

एकादश स्थान के शनि धनागम में वृद्धि करते रहेंगे। यह समय आपके लिए उपलब्धियों से भरा रहेगा। संपत्ति में निवेश करेंगे। पुराने ऋण इत्यादि से मुक्ति मिलेगी व तरक्की के द्वार खुलेंगे। व्यावसायिक उन्नति के लिए भी आप धन निवेश करेंगे। घरेलू सुख सुविधाओं पर भी आप अधिक खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान के राहु पारिवारिक माहौल में विषमता की स्थिति उत्पन्न करेंगे। अतः आपको पारिवारिक मामलों में बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता रह सकती है। छोटी-छोटी बातों पर झगड़ें या विवाद में न उलझें और अपनी वाणी पर पूर्ण नियंत्रण रखें, नहीं तो आपकी प्रतिक्रिया पारिवारिक वातावरण के लिए अच्छी नहीं होगी। मामा के साथ भी आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा।

18 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर बहुत ही शुभ हो रहा है। उस समय धर्म पत्नी के

साथ भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी। प्रेम संबंध बहुत ही मधुर होंगे। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परिवार में मांगलिक कार्य होते रहेंगे।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। छठे स्थान का गुरु आपकी संतान के लिए अच्छा नहीं है। शारीरिक कष्ट एवं मानसिक परेशानी बनी रहेगी। उनकी शिक्षा-दिक्षा में भी रूकावटें आ सकती हैं।

18 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर अच्छा हो रहा है। अतः उस समय के बाद आपके बच्चों की उन्नति होगी। बच्चों के स्वास्थ्य से संबंधित किसी प्रकार की लपरवाही न करें। आपकी दूसरी संतान के लिए समय शुभ है। उसका चौमुखी विकास होगा।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य की दृष्टि से बहुत अच्छा नहीं है। वर्षारम्भ से ही कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी बनी रहेगी। द्वितीयस्थ राहु के प्रभाव से मौसमजनित बीमारियों से भी ग्रस्त होंगे। आपको ऐसा लग सकता है कि आपकी शारीरिक ऊर्जा धीरे-धीरे करके कम हो रही है। रोग स्थान में गुरु ग्रह की स्थिति स्वास्थ्य के लिए अच्छी नहीं है। यदि पहले आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो यह समय ज्यादा प्रभावित करने वाला है। शारीरिक कष्ट के साथ मानसित चिंता भी बनी रहेगी।

18 मार्च से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि शारीरिक व्याधियों को दूर कर आरोग्यता प्रदान करेगी। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का विकास होगा। आप अपने को पूर्ण रूप से स्वस्थ महसूस करेंगे। अपने खान-पान पर संयम रखें। सूर्योदय से पहले उठ कर टहलना और व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। शारीरिक आरोग्यता को अनुकून बनाने के लिए आप तुला दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष की शुरुआत करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए श्रेष्ठ रहेगी। परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे। जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उनको 18 मार्च के बाद मनोनुकूल नौकरी मिल सकती है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय श्रेष्ठ है।

शिक्षार्थी इस समय योग्यता के अनुसार सफलता पाने में सफल रहेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में विशेष बड़ी कोई अड़चन नहीं आयेगी। अध्ययन कार्यों में आपकी रूचि रहेगी। विदेशी भाषा सीखने की ओर आकर्षित होंगे। आपका उत्साह व साहस बना रहेगा।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में ही विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। 18 मार्च से आप अपनी पत्नी के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त करेंगे। व्यावसायिक यात्राओं से आपको लाभ होगा।

वर्षान्त में नौकरी करने वाले व्यक्तियों के स्थानान्तरण के योग बन रहे हैं। परन्तु यह बदलाव आपके लिए अनुकूल नहीं रहेगा। अष्टम स्थान पर राहु एवं शनि ग्रह की दृष्टि समुद्र के माध्यम से विदेश यात्रा करा सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में पूजा-पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। अधिक आलस्यता के कारण आपका दैनिक पूजा-पाठ भी प्रभावित हो सकता है। 18 मार्च के बाद धार्मिक कार्यों में आपकी रुचि बढ़ेगी। मन्दिर जाना, योग करना, पूजा करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। ईश्वर के प्रति आपका आकर्षण और बढ़ेगा।

- बेसन के लड्डू वीरवार के दिन विष्णु जी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और प्रत्येक दिन शनि मन्त्र का पाठ करें।
- दुर्गा बीसा यन्त्र अपने घर में स्थापित करें एवं उसके सामने प्रत्येक दिन घी का दीपक जलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2034

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं द्वादश स्थान में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष के पूर्वार्द्ध में आप कुछ विशेष करने वाले हैं। पराक्रम के बल पर अपनी व्यापारिक स्थिति को सुदृढ़ बनाएंगे। कार्य व्यवसाय में मित्रों व परिजनों से खूब मदद मिलेगी। आप महत्वपूर्ण व्यक्तियों के संपर्क में आएंगे। यदि साझेदारी में कोई व्यापार कर रहें है तो आपके लिए यह समय श्रेष्ठ रहेगा। कानून से जुड़े लोगो को अच्छा लाभ मिलेगा। 28 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय के बाद कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें।

जुलाई के बाद आपके कार्यों में गुप्त एवं प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा रूकावटें डाली जा सकती हैं। आपके विरोधी बढ़ेंगे जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं। कार्यक्षेत्र में आपका किसी से मतभेद हो सकता है। कार्यस्थल पर अपनी वाणी पर नियंत्रण रखना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। पैसे के लेन-देन में सावधानी बरतें। किसी प्रकार का जोखिम मोल न लें नहीं तो व्यापार में हानि हो सकती है।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रथम भाग आर्थिक दृष्टि से अच्छा रहने वाला है। एकादशस्थ शनि के कारण आर्थिक स्थिति और भी सुदृढ़ होने वाली है। विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा। शेयर बाजार से भी लाभ होने की संभावना है, परन्तु द्वितीयस्थ राहु के कारण अचानक कुछ व्यर्थ के खर्चे होते रहेंगे। अनावश्यक खर्चों पर नियंत्रण और भावनाओं पर काबू रखने की जरूरत है। व्यर्थ की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। वर्ष का पूर्वार्द्ध सम्पन्नता से गुजरेगा।

जुलाई के बाद द्वादश स्थान में शनि ग्रह की स्थिति आर्थिक उन्नति के लिए अच्छी नहीं है। आय कम एवं व्यय ज्यादा होने का योग बन रहा है। निवेश के मामले में सावधान रहें एवं जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा धन हानि हो सकती है। आप किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है। धोखा या आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का पूवार्द्ध सामान्य रहने वाला है। द्वितीय स्थान का राहु प्रतिकूल होने के कारण आपको घरेलू मामलों में बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता रह सकती है। छोटी-छोटी बातों पर

झगड़ा या विवाद में नही पड़ना चाहिए। मार्च के बाद अपने दांपत्य जीवन को सुखमय बनाए रखने के लिए आपको अपने जीवन साथी के साथ विशेष स्नेह व सहनशीलता से काम लेना होगा। एकादशस्थ शनि के कारण बड़े भाइ-बहनों के लिए समय काफी शुभ है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में ससुराल पक्ष के लोगों के साथ वैचारिक मदभेद होने की संभावना बन रही है। पिता के लिए यह समय अच्छा नहीं है परन्तु माता के लिए शुभ है। आपका एवं आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहने सेघरेलू माहौल ठीक नहीं सकता है। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक कार्य करने में आप हमेशा तत्पर रहेंगे।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। उनके विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बनेंगे। उनके पराक्रम में भी वृद्धि होगी परंतु उसके बावजूद भी आपकी चिंताएं बनी रहेंगी।

28 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण यह समय आपके बच्चों के लिए अच्छा नहीं रहेगा। उनको स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां आ सकती हैं। अतः उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना लाभप्रद रहेगा। दूसरे संतान के लिए भी यह वर्ष ज्यादा अच्छा नहीं है।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य की दृष्टि से बढ़िया रहेगा। आप रोग-मुक्त रहने वाले हैं खान-पान पर विशेष ध्यान देंगे और अपने स्वास्थ्य को अनुकूल बनाए रखेंगे। परन्तु 28 मार्च के बाद कुछ न कुछ शारीरिक परेशनी उत्पन्न हो सकती है। मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान होते रहेंगे।

जुलाई के बाद द्वादश स्थान का शनि धीरे-धीरे आपकी शारीरिक ऊर्जा कम कर सकता है, जिससे आप अपने को कमजोर व बीमार महसूस कर सकते हैं। मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी, इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें। नहीं तो पेट संबंधित तकलीफें बढ़ सकती हैं। लग्न स्थान का राहु अचानक आपको बीमार कर सकता है। अतः राहु ग्रह की शान्ति स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद रहेगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष के पूर्वार्द्ध में प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्त करेंगे। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से शत्रुओं पर आपका प्रभाव बढ़ेगा और आपके समस्त विरोधी शान्त होंगे। व्यावसायिक शिक्षा, औषधि क्षेत्र, कम्प्यूटर साईंस, सिविल सर्विसेज से जुड़ लोगों को सफलता मिलेगी।

यदि आप नौकरी करते हैं तो साल का उत्तरार्द्ध कुछ खास अच्छा नहीं रहेगा। लोग आपके विरूद्ध षड्यंत्र भी बना सकते हैं। बेवजह आपके ऊपर आरोप भी लगाये जा सकते हैं,

जिससे आप काफी तनाव महसूस करेंगे। यदि आप विदेश में अपना करियर बनाना चाहते हैं तो यह समय आपके लिए अनुकूल है और आपको अच्छी सफलता मिलेगी।

यात्रा-तबादला

वर्ष का पूर्वार्द्ध यात्रा के लिए सामान्य रहेगा। ऑफिस व व्यवसाय से संबंधित छोटी-मोटी यात्राएं होंगी। मार्च के बाद घर से दूर रहने वाले व्यक्ति अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे।

जुलाई के बाद द्वादश के शनि आपको विदेश यात्रा करा सकते हैं। किसी भी प्रकार की यात्रा करते समय या वाहनादि चलाते समय सावधान रहें नहीं दुर्घटना हो सकती है। क्योंकि चोट चपेट की प्रबल सम्भावना बन रही है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि धार्मिक कार्यों के लिए बहुत ही शुभ है। ईश्वर की भक्ति में आपका अटूट विश्वास होगा। आप अपनी धर्मपत्नी के साथ सभी धार्मिक कार्यों में संलग्न रहेंगे। धर्म से जुड़े सभी पर्वों को हंसी खुशी के साथ मनाएंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप दान-पुण्य अधिक करेंगे। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से गुप्त विद्याओं या तान्त्रिक सिद्धियों के प्रति भी आपका आकर्षण बढ़ेगा।

- गुरुवार के दिन केला गरीबों में दान करें एवं केले के वृक्ष की पूजा करें।
- शनि ग्रह का अशुभ प्रभाव शान्त करने के लिए शनि यन्त्र अपने पूजा घर में स्थापित कर उसकी पूजा करें।
- मदिरा और नशीले पदार्थों का सेवन बिल्कुल न करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें। ऊँ नमः शिवाय मन्त्र का प्रत्येक दिन पाठ करें।

इस वर्ष कर्क राशि का शनि द्वादश भाव में और सिंह राशि का राहु लग्न स्थान में रहेंगे। 5 अप्रैल तक गुरु मीन राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे और उसके बाद मेष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। 21 जुलाई से 9 सितम्बर तक वक्री मंगल मीन राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक जीवन के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। मुख्यतः सारे ग्रह प्रतिकूल होने के कारण आप व्याकुल हो सकते हैं। गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। ऐसे में आपको बड़ी सावधानी से काम लेना चाहिए। जल्दबाजी में कोई निर्णय न लें। गैरकानूनी तरीकों से धन कमाने की कोशिश न करें वरना कानूनी वाद-विवाद में फंस सकते हैं। अर्जित की हुई संपत्ति को व्यर्थ में न गवाएं, सभी प्रकार के वित्तीय मामलों में पारदर्शिता बरतें। हालांकि 6 अप्रैल के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है।

इस वर्ष आप कोई नया कार्य व्यवसाय प्रारम्भ न करें नहीं तो उस में आपको हानि हो सकती है। पहले से चले आ रहे कार्यों को सुचारु रूप से चलाते रहें। उसमें आपको सफलता मिल सकती है। नवमस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से अनुभवी लोगों का सफलता मिलेगी। जो लोग शेयर बाजार या रीयल एस्टेट से जुड़े हैं, उनको थोड़ा बहुत लाभ मिल सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह साल आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा। जितना लाभकारी होगा उतना ही चुनौतीपूर्ण भी होगा। साल की शुरुआत में निवेश से सम्बन्धित योजनाओं पर ध्यान न दें और अपने दस्तावेज भी संभाल कर रखें। हड़बड़ी में कोई भी कार्य न करें नहीं तो आर्थिक हानि हो सकती है। निवेश व आर्थिक निर्णय लेते समय सतर्क रहें व जल्दबाजी न करें। इस अवधि में सकारात्मक बने रहना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

अधिक सतर्कता बरतने की जरूरत है। जितना ज्यादा हो सके धन की बचत करने की कोशिश करें और फिजूल के खर्चों पर नियंत्रण रखें। तृतीय स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि के कारण कोई करीबी ही आपको दगा दे सकता है। ऐसे लोगों से बचने के लिए किसी भी प्रकार के वित्तीय लेनदेन में पूरी सावधानी बरतें। यदि वह आपसे उधार मांग रहा हो तो बेहद ही सावधान रहें। जोखिम भरा निवेश करने से बचें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक जीवन के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। अधिक भागदौड़ के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। गृहस्थ जीवन की बात करें तो पारिवारिक सदस्यों के साथ कुछ तर्क-वितर्क होने की संभावना नजर आ रही है। हालाँकि समझदारी से इसे टाला जा सकता है। अप्रैल के बाद आपके छोटे भाई बहनों के साथ संबंध अच्छा रहेगा। आपके माता पिता

जी के लिए यह समय काफी शुभ है। परन्तु आपकी धर्मपत्नी के स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी।

6 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके पारिवारिक एवं सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। समाज में आपका मान-सम्मान बढ़ेगा। जन कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे। समाज में आपका सम्मान और बढ़ेगा। आपको बच्चों का भी अच्छा सहयोग मिलेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा नहीं है। अष्टम स्थान का गुरु संतान संबंधित चिंताएं दे सकता है। गर्भवती स्त्रियों को बड़ी सावधानी से से रहना चाहिए नहीं तो गर्भपात हो सकता है।

6 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार आएगा। संतान के साथ संबंधों में मधुरता आएगी, जिससे घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा। यदि आप अपने बच्चों को प्रोत्साहित करते रहे तो वे अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे। अतः आप उनकी सकारात्मक सोच में वृद्धि करते रहें।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। लग्नस्थ राहु के कारण स्वास्थ्य संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होते रहेंगे। दुर्घटना या किसी प्रकार के शारीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। साथ ही अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीवरजनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है। 6 अप्रैल से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी शारीरिक आरोग्यता अनुकूल रहेगी।

अपना स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए खान-पान एवं दिनचर्या में भी सुधार करना होगा। सुबह-सुबह व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। यदि आपने स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं दिया तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है। अतः स्वास्थ्य संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही न बरतें। आँखों में समस्या हो सकती है और चश्मा भी लग सकता है। जिन लोगों को पहले ही चश्मा लग चुका है उनके चश्मे का नम्बर बढ़ सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता के लिए यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। माध्यमिक शिक्षा ग्रहण कर रहे शिक्षार्थियों के लिये भ्रम और असमंजसता की स्थिति बनी रहेगी। विदेशी भाषा सीखने वाले विद्यार्थियों के लिए यह साल बहुत ही शुभ रहेगा।

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को कठिन परिश्रम के बाद सफलता मिलेगी। शत्रुओं को परास्त करने के लिये आपको अत्यधिक परिश्रक करना पड़ेगा।

यात्रा-तबादला

विदेश यात्रा के लिए वर्ष प्रारम्भ बहुत ही श्रेष्ठ है। अष्टम स्थान का गुरु प्राचीन दर्शनीय स्थलों या सामुद्रिक स्थलों की यात्रा करा सकता है। 6 अप्रैल के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगे।

नवमस्थ गुरु के कारण आप धार्मिक यात्रा भी अधिक करेंगें। इन यात्राओं के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए लाभप्रद रहेगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का प्रारम्भ धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। आपके समस्त धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न होंगे। आपका मन एकाग्र नहीं रहेगा, जिससे आप पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान आदि क्रियाएं कम ही कर पाएंगे। 6 अप्रैल के बाद धार्मिक कार्यों के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। आपके दैनिक पूजा-पाठ व दिनचर्या में सुधार होगा। गरीबों को खाना खिलाने या उनकी सहायता करने में आपको संतुष्टि मिलेगी।

- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन गरीबों को काला कम्बल दान करें।
- अपने वजन के बराबर अन्न दान करें जिसके प्रभाव से शारीरिक व्याधियां दूर होंगी।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें। जिससे राहु ग्रह का दुष्प्रभाव समाप्त होगा।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि कर्क राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे और 27 अगस्त को सिंह राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। 13 अप्रैल तक राहु सिंह राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे और उसके बाद कर्क राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में मेषस्थ गुरु नवम भाव में रहेंगे और 15 अप्रैल को वृष राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 9 सितम्बर को मिथुन राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 17 नवम्बर को वृष राशि एवं दशम भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए आपको लगातार प्रयास करना पड़ेगा। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कुछ प्रतिद्वंदी आपके कार्यों में रुकावट डाल सकते हैं। आपके कार्यों में अचानक हानि या कोई बड़ी समस्या आ सकती है, जिससे आप परेशान हो सकते हैं। परन्तु नवमस्थ गुरु के कारण आपका भाग्य साथ देगा और आप सभी समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे।

अप्रैल के बाद कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है। व्यापार में किसी पर अवश्यकता से ज्यादा विश्वास न करें नही तो हानि हो सकती है। 27 अगस्त के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी होगा। यह तबादला आपके अनुकूल स्थान पर भी हो सकता है। भूमि से सम्बन्धित कार्य करने वाले व्यक्तियों को लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्य फलदायक रहेगा। धनागम तो होगा परन्तु अधिक खर्च होने के कारण बचत नहीं कर पाएंगे। रोग बीमारी इत्यादि में आपका व्यय ज्यादा होगा। द्वादश स्थान का शनि अनावश्यक खर्च भी बढ़ा सकता है। अतः अपने खर्चे पर अंकुश लगाएं।

अप्रैल के बाद द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन के साथ रत्न आभुषण इत्यादि की प्राप्ति हो सकती है। अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में धन का व्यय होगा। यदि कोई बड़ा निवेश करना पड़े तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी व्यक्तियों की सलाह अवश्य लें। यदि पैतृक संपत्ति पर कोई वाद-विवाद चल रहा हो तो फैसला आपके प्रतिकूल हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अधिक अनुकूल नहीं है। व्यावसायिक व्यस्तता के चलते घर में अधिक समय दे पाना मुश्किल हो सकता है। कुछ विषम परिस्थितियां भी निर्मित होंगी अतः अच्छा यही होगा कि विपरीत परिस्थितियों का सामना करने के लिए आप

अपने अंदर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकास करें। आपके ईष्ट मित्र भी अपने वादों से मुकर सकते हैं और उनसे आपका मतभेद हो सकता है। माता का स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

15 अप्रैल के बाद पारिवारिक रूप से समय काफी अनुकूल हो जाएगा। आपको परिवार के बड़े सदस्यों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपको मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगी और परिवार के प्रति आपका आकर्षण भी बढ़ेगा। माता पिता के लिए यह समय अच्छा रहेगा। परन्तु आपके ससुराल पक्ष के लिए समय अच्छा नहीं है। उनके साथ आपके संबंध भी खराब हो सकते हैं।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बहुत अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि आपके बच्चों के लिए बहुत ही शुभ है। उनके उन्नति के बन्द सारे मार्ग खुलेंगे और आपके बच्चों का चौमुखी विकास होगा।

आपके दूसरे बच्चे के लिए समय अच्छा नहीं है। अतः उसको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी बनी रहेगी, जिससे उनकी शिक्षा-दीक्षा व उन्नति में व्यवधान आ सकता है।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ में स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। नवमस्थ गुरु की पंचम दृष्टि लग्न पर होगी उसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत हैं। लग्न स्थान में शुभ प्रभाव के कारण सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। परन्तु अप्रैल के बाद संक्रामक बीमारियों की चपेट में आ सकते हैं।

राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण रक्तचाप, वायु विकार व पित्त विकार आदि रोगों की संभावना हो सकती है। अत्यधिक आलस्यता के कारण आप स्वस्थ रहते हुए भी बीमार जैसा अनुभव करेंगे। यदि आपने स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं दिया तो किसी बड़ी बीमारी की चपेट में आ सकते हैं। ऐसी स्थिति में आपको दवा से ज्यादा दुआ की आवश्यकता होगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अत्यधिक अनुकूल है। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए बहुत अच्छा योग बना रही है। शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी उन्नति करेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश मिल सकता है।

अत्यधिक भोजन एवं आलस्य से बचें। विद्याध्ययन में एकाग्रता बढ़ाने के लिए गुरुवार के दिन उपवास करें। 27 अगस्त के बाद शिक्षा प्राप्ति में व्यवधान आ सकता है। जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारंभ में छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। नवमस्थ गुरु के कारण लम्बी यात्रा का प्रबल योग बन रहा है। इन यात्राओं से भाग्योन्नति भी होगी। इस यात्रा के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

अप्रैल के बाद द्वादश स्थान में राहु एवं शनि ग्रह की युति विदेश यात्रा का प्रबल योग बना रही है। नौकरी वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है। यह परिवर्तन आपके घर के पास हो सकता है। यात्रा करते समय या वाहन चलाते समय सावधानी अत्यधिक जरूरी है। क्योंकि यात्रा के अंतराल में दुघर्टना का भी योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में नवमस्थ गुरु के कारण आप कोई विशेष पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान संपन्न करेंगे। अप्रैल के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे। आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे। आपके मन में नैसर्गिक रूप से आध्यात्मिक ज्ञान के प्रति रुचि बढ़ेगी, जिससे परमात्मा के प्रति आत्मसमर्पण का भाव उत्पन्न होगा। आध्यात्मिक ज्ञान के कारण आपको अलौकिक आनन्द की प्राप्ति होगी।

- प्रत्येक मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढाएं व हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें व गरीबों को लोहे का तवा दान करें।
- दुर्गा बीसा व आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

इस वर्ष शनि सिंह राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे। 19 अक्टूबर तक राहु कर्क राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे और उसके बाद मिथुन राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु वृष राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। 26 अप्रैल को मिथुन एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 16 सितम्बर को कर्क राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। 29 अगस्त से 28 नवम्बर तक वक्री मंगल वृष राशि एवं दशम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष अधिक अनुकूल नहीं रहेगा। शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण नौकरी में परिवर्तन व व्यवसाय में व्यवधान आने की संभावना बना रहा है। यदि किसी के साथ मिलकर व्यापार कर रहे हैं तो आप अपने भागीदार से असंतुष्ट रहेंगे। इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें नहीं तो जिम्मेदारियों का बोझ बढ़ेगा। व्यवसाय/नौकरी व निवेश संबंधी मामलों में जल्दबाजी में जोखिम भरा निर्णय लेना घातक होगा।

अप्रैल के बाद गुरु का गोचर किंचित शुभ हो रहा है। अतः व्यापार व नौकरी में कुछ सुधार होगा। शेयर बजार से जुड़े जोगो को लाभ मिलेगा। क्रय विक्रय, व खाद्य पदार्थ का व्यवसाय करने वाले व्यक्तियो को सावधान रहना चाहिए नही तो हानि हो सकती है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला जुला रहेगा। धनागम तो होगा परन्तु पारिवारिक खर्च अधिक होने के कारण बचत नहीं कर पाएंगे। आप अपनी भौतिक सुख सुबिधा पर अधिक खर्च करेंगे। द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको भूमि, भवन, वाहन एवं रत्नादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। अप्रैल के बाद आय के स्रोत बढ़ेंगे। रुके हुए व फंसे हुए पैसे मिलेंगे।

16 सितम्बर से आप का समय प्रभावित हो रहा है। मुख्यतः ग्रहों का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आर्थिक हानि का योग बन रहा है। इस समय आपको खर्चो पर नियंत्रण और भावनाओं पर काबू रखने की जरूरत है। अचानक परिवार में कुछ ऐसे खर्चे आ सकते हैं, जिससे आपको आर्थिक कमी का एहसास हो सकता है। अतः इस समय के अंतराल में आपको सावधान रहना चाहिए।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग मिलेगा, जिससे आपके व्यक्तित्व में निखार व चमक पैदा होगी। अप्रैल के बाद आपको प्रेम प्रसंगो में भी सफलता प्राप्त होगी। सप्तम स्थान पर

शनि एवं गुरु ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से धर्मपत्नी के साथ आपके संबंध मधुर होंगे। आपके भाईयों की उन्नति होगी। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आप सामाजिक कल्याण के लिए कुछ विशेष कार्य संपन्न करेंगे, जिससे आपकी ख्याति समाज में और बढ़ेगी।

16 सितम्बर से आपका पारिवारिक माहौल प्रभावित हो सकता है। अचानक आपकी धर्म पत्नी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। कुछ लोगों का व्यवहार आपको अच्छा नहीं लगेगा। फिर भी आपको उन लोगों के साथ स्नेह व प्रेम बनाए रखना पड़ेगा। माँ के साथ कुछ नाराजगी हो सकती है तथा उन्हें स्वास्थ्य संबंधी भी कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं। अतः उनका समुचित ख्याल रखें और व्यवहारों में संयम बरतें।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। आपकी दूसरे संतान के लिए यह समय अच्छा नहीं है। उसको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। अतः उसके स्वास्थ्य पर ध्यान देना लाभप्रद रहेगा।

26 अप्रैल के बाद समय काफी शुभ हो रहा है। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। आपके बच्चों की उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति करेंगे। परन्तु सितम्बर के बाद समय प्रभावित हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल उन पर ज्यादा ध्यान देना आपके लिए लाभ प्रद रहेगा।

स्वास्थ्य

इस वर्ष आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव काफी देखने को मिलेंगे। खासकर जोड़ों में दर्द, सिर में दर्द, मानसिक चिंता एवं वायु संबंधी समस्या हो सकती है। अतः स्वास्थ्य को लेकर किसी प्रकार की लापरवाही न करें अन्यथा स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है। शनि की सप्तम भाव पर दृष्टि के फलस्वरूप व्यापारिक कारणों या अपने निजी कारणों की वजह से मानसिक तनाव हो सकता है। मौसमजनित बीमारियों से आप प्रभावित रह सकते हैं। आपको अपने अन्दर कमजोरी जैसा अनुभव होगा।

अप्रैल के बाद आपके स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा। परन्तु गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आप मोटापे का शिकार हो सकते हैं, क्योंकि आप खान-पान पर विशेष ध्यान देंगे। मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुची बढ़ेगी। इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें। आलस्य का त्याग कर स्फूर्तिवान बनें। आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए सामान्यतः मिला जुला रहेगा। लग्न स्थान में शनि का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आलस्यता व दीर्घसूत्रता आपके उन्नति में बाधक बन सकती है। अतः समय के सदुपयोग के साथ मन को एकाग्र कर अपने लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करना आपके लिए लाभ प्रद रहेगा।

26 अप्रैल के बाद समय विद्यार्थियों के लिए उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु उत्तम है। जो विद्यार्थी किसी नये कॉलेज में प्रवेश परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं उन्हें मनोनुकूल अच्छे कॉलेज में दाखिला मिल जाएगा। यदि गूढ़ विज्ञान और मनोविज्ञान में आपकी रुचि है तो उनके लिए समय अनुकूल है। सितम्बर के बाद यदि शिक्षा के संदर्भ में कोई लुभावना प्रस्ताव मिल रहा है तो सावधान रहिए, क्योंकि शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने कारण आपको धोखा मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

लग्न में शनि की स्थिति यात्रा में विलंब या किसी प्रकार की कठिनाई का कारण बनेगी। छोटी-मोटी यात्राएं प्रभावित होंगी। परन्तु द्वादश स्थान के राहु विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहे हैं। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अप्रैल के बाद जन्म भूमि की यात्रा होगी।

26 अप्रैल के बाद सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि व्यवसाय संबंधित यात्रा भी करा सकती है। इस वर्ष आपकी पूर्व निर्धारित कोई यात्रा नहीं होगी। मुख्यतः सारी यात्राएं अचानक होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। लग्न स्थान का शनि धार्मिक कार्यों में अरुचि उत्पन्न कर सकता है, जिससे आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। तन्त्र, यन्त्र व सिद्धि के प्रति आपका रुचि बढ़ेगी। 26 अप्रैल के बाद आपके अंदर ईश्वर के प्रति विश्वास बढ़ेगा, जिससे आप निःस्वार्थ भाव से भगवान की पूजा करेंगे। सुबह शाम मन्दिर जाना व पूजा पाठ करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। वर्षान्त में आप दान पुण्य भी अधिक करेंगे।

- राहु मन्त्र का पाठ करें व शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।
- अमावस्या तिथि को विद्वान ब्राह्मण को भोजन कराएं।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें व मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- अपने घर में पारद शिवलिंग की स्थापना करें और सुबह सुबह उसका दर्शन करें।

वार्षिक फलादेश - 2038

इस वर्ष राहु मिथुन राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे। 22 अक्टूबर तक शनि सिंह राशि एवं लग्न स्थान मे रहेंगे और उसके बाद कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कर्क राशि द्वादश भाव में रहेंगे और वक्री होकर 17 जनवरी को मिथुन राशि एवं एकादश भाव में गोचर करेंगे और पुनः मार्गी होकर 11 मई को कर्क राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 7 अक्टूबर को सिंह राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतः श्रेष्ठ रहेगा। वर्षारम्भ में एकादश स्थान का गुरु व्यापार में उन्नति का योग बना रहा है। आपको भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा। यदि आप साझेदारी में व्यावसाय कर रहे हैं तो अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे। अनुभवी लोगों व वरिष्ठ अधिकारियों का अच्छा सहयोग मिलेगा। जिसके प्रभाव से कार्यक्षेत्र में उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। मई के बाद समय कुछ प्रभावित होगा। अतः इस समय के अंतराल में आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे।

गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कोई गुप्त शत्रु आपके प्रति किसी प्रकार का षड्यन्त्र या कोई बड़ी समस्या उत्पन्न कर सकता है। इन समस्याओं के बीच आप अपने को पूर्ण रूप से फंसा हुआ महसूस करेंगे। फिर भी आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा सभी समस्याओं का समाधान निकालने की कोशिश करेंगे और अक्टूबर के बाद काफी हद तक सफल भी रहेंगे। उस समय आपके कार्य व्यवसाय में अच्छी सफलता मिलेगी।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। धनागम में निरंतरता बनी रहेगी। धनार्जन करने में आपको भाई व धर्मपत्नी का अच्छा सहयोग मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे उसमें भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। परन्तु मई के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय के अंतराल में कोई बड़ा निवेश न करें व धन के लेन देन में सावधान रहें नहीं तो आर्थिक हानि हो सकती है।

गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण अनावश्यक खर्चे बढ़ेंगे, जिससे संचित धन में कमी आ सकती है। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाएं। धन के मामले में किसी पर बहुत जल्दी विश्वास न करें। घर में रोगों की अधिकता होगी जिसके निवारण में धन का व्यय होगा। अक्टूबर के बाद समय और ज्यादा प्रभावित हो रहा है। अतः उस समय रिश्तेदारों व मित्रों के साथ पैसे का लेन देन न करें नहीं उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। व्यापारिक व्यस्तता के कारण आप अपने परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। 11 मई के बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपका पारिवारिक माहौल ज्यादा प्रभावित हो सकता है। ऐसे में आप बड़े ही विवेक से काम लें और सभी लोगों के साथ स्नेह और आपसी सौहार्द के साथ पेश आएं।

परिवार के लोगों के सुझावों पर अमल करना आपके लिए फायदे का सौदा हो सकता है और उनके विरुद्ध जाना घातक भी हो सकता है। माँ के साथ कुछ नाराजगी हो सकती है तथा उन्हें स्वास्थ्य संबंधी भी कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं, अतः उनका समुचित ख्याल रखें और व्यवहार में संयम बरतें। आप मानसिक रूप से परेशान भी रह सकते हैं। सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष समान्य रहेगा। अक्टूबर के बाद जीवनसाथी के साथ प्रेम सम्बन्धों में मधुरता आएगी।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। आपके दूसरे बच्चे का चौमुखी विकास होगा। उसके उन्नति के सारे मार्ग प्रसस्त होंगे। यदि वह विवाह के योग्य हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

11 मई के बाद उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके बच्चे कुसंगति का शिकार हो सकते हैं। उनका रहन सहन व दिनचर्या भी अनुशासनहीन हो सकती है, जिससे उनकी उन्नति में किंचित व्यवधान आ सकता है, परन्तु अक्टूबर के बाद समय बहुत ही शुभ हो रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी बनी रहेगी। 11 मई के बाद चोट चपेट व वाहनादि से दुर्घटना इत्यादि का योग बन रहा है। स्वास्थ्य संबंधी कोई बड़ी समस्या भी हो सकती है। पेट संबंधी समस्या जैसे अचानक पेट दर्द, गैस, अपच या बदहजमी आदि हो सकती है। सर्जरी आदि होने की भी संभावनाएं बनी हुई हैं।

अतः आपको समय-समय पर डॉक्टर की सलाह लेते रहना चाहिए। इसके अतिरिक्त आपको अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमताओं को बढ़ाने के लिए अपने खान पान का विशेष ध्यान रखना होगा। जहां तक हो सके शुद्ध शाकाहारी ही भोजन करें। दाल, सब्जी, फल आदि का अधिक सेवन करें। 7 अक्टूबर के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से सामान्य रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए शुभ है। यदि उच्च शिक्षा हेतु अच्छे

शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही शुभ है।

मई के बाद उन्नति में व्यवधान आता रहेगा। यदि आप अपने लक्ष्य में सफलता पाना चाहते हैं तो अथक परिश्रम करने की आवश्यकता है। जो लोग नौकरी की तलाश में हैं, उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है। जो लोग विदेश में अपना करियर बनाना चाह रहे हैं। उनके लिए यह वर्ष शुभ है।

यात्रा-तबादला

तृतीय स्थान पर गुरु की दृष्टि छोटी-मोटी यात्रा कराती रहेगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ भी मिलेगा। 11 मई के बाद आपकी विदेश यात्रा होंगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा, जिससे आप दुखी रहेंगे।

यात्रा करते समय व वाहन चलाते समय सावधानी अत्यधिक जरूरी है। क्योंकि मई के बाद गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह साल मिला-जुला रहेगा। लग्न स्थान का शनि आपके सारे धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है। आलस्यता के कारण आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। परन्तु मई के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे। गरीबों की सहायता करना, भूखे को खाना खिलाना ही आप अपना धर्म समझेंगे। अक्टूबर के बाद आपका मन पूजा-पाठ के प्रति आकर्षित होगा। दैनिक पूजा-पाठ सुधरेगा। परमात्मा की भक्ति व मन्त्र पाठ में ज्यादा रूचि लेंगे।

- वीरवार के दिन केला या बेसन के लड्डू दान करें।
- सातमुखी रुद्राक्ष लाल धागे में धारण करें।
- अपने घर में पारद शिवलिंग स्थापित कर नित्य उसका पूजन करें।
- महामृत्युंजय यन्त्र अपने घर में स्थपित करें और नित्य उसका पूजन करें।

वार्षिक फलादेश - 2039

वर्षारम्भ में शनि कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 5 अप्रैल को सिंह राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और पुनः मार्गी होकर 13 जुलाई को कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे। 7 अप्रैल को राहु वृष राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु सिंह राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे तथा 3 मार्च को वक्री होकर कर्क राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 2 जून को सिंह राशि एवं लग्न स्थान में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 4 नवम्बर को कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष के प्रारम्भ में शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से कार्य क्षेत्र में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे। कुछ प्रतिद्वंदी आपके कार्यों में व्यवधान उत्पन्न करने की काशिश करेंगे। इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये अपने बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें। हालांकि अप्रैल से समय काफी शुभ हो रहा है। कार्य व्ययवाय में सुधार होगा। वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे।

आमदनी के नये-नये स्रोत मिलेंगे। इस अवधी में आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे। यदि आप खनिज एवं खान विभाग व रासायनिक विभागों से संबंधित कार्य कर रहे हैं तो अच्छी सफलता मिलेगी। अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा, जिससे आपके कार्यों में सफलता की उम्मीद और बढ़ जाएगी। 4 नवम्बर के बाद समय नौकरी करने वालों के लिए शुभ नहीं है। आपके वरिष्ठ अधिकारियों के साथ वैचारिक मतभेत उत्पन्न हो सकते हैं तथा कार्य स्थल का वातावरण खराब हो सकता है।

धन संपत्ति

द्वितीय स्थान के शनि कुछ अनावश्यक खर्चे ला सकते हैं जिससे संचित धन में कमी आ सकती है। घर परिवार में रोग व्याधि की अधिकता होने से भी आपके अपव्यय होंगे। पैसे के लेन देन के समय कागजी कार्यवाही अवश्य करें। आपको अपने अनावश्यक खर्चो पर अंकुश लगाने की जरूरत है तथा जोखिम भरे कार्यो में धन निवेश करने से बचें।

5 अप्रैल से शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होते ही धनागम के बन्द सारे मार्ग खुलेंगे तथा आपका चौमुखी विकास होगा। आपका घर सर्व प्रकारेण आधुनिक एवं भौतिक उपकरणों से सुसज्जित होगा तथा इसकी सुन्दरता एवं आकर्षण बनाए रखने में आप अत्यधिक व्यय करेंगे। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे उसमें भी आपका पैसा खर्च होगा। मित्र या भाइयों के माध्यम से भी धन लाभ हो सकता है। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से चल एवं अचल संपत्ति की प्राप्ति होगी।

घर-परिवार, समाज

द्वितीय स्थान के शनि आपके परिवार में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न कर सकते हैं, जिससे आपका परिवारिक माहौल खराब हो सकता है। अतः आपको अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखना चाहिए नहीं तो परिवार में किसी के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है। परन्तु आपकी पत्नी के साथ समन्वय मधूर होंगे। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

आपके भाइयों की उन्नति होगी। पिता जी के लिए भी यह समय शुभ है। 2 जून के बाद परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी, जिससे पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। आप उच्च मान संमान एवं प्रतिष्ठा अर्जित करने में समर्थ होंगे। आपके सामाजिक प्रभाव व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सरकारी क्षेत्र में आपको काफी सम्मान मिलेगा। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे। परन्तु 4 नवम्बर से समय फिर से प्रभावित हो रहा है।

संतान

नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होने के प्रबल योग बन रहे हैं। पंचमस्थ केतु पर गुरु की दृष्टि बच्चों की उन्नति के सारे मार्ग खोल रही है। अतः आपके बच्चे का चौमुखी विकास होगा। उनकी उन्नति के सारे मार्ग प्रशस्त होंगे।

3 मार्च के बाद समय किंचित प्रतिकूल हो रहा है। परन्तु 2 जून के बाद समय फिर से अच्छा हो जाएगा तथा उसके बाद पूरा वर्ष अनुकूल रहेगा। उस समय के अंतराल में बच्चों के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे तथा वे आपकी उम्मीदों से बढ़-चढ़ कर कार्य करेंगे जिससे आप उनसे प्रसन्न रहेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। परन्तु 3 मार्च के बाद द्वादश स्थान का गुरु छोटी मोटी बीमारियों से स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। मौसमजनित बीमारियों से भी परेशान हो सकते हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरुरी होगा। यदि पहले से कोई लम्बी बीमारी भुगत रहे हैं तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है, नहीं तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है। हालांकि 2 जून के बाद स्वास्थ्य में कुछ सुधार होना प्रारम्भ हो जाएगा।

लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। सभी महत्वपूर्ण कार्यों को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। अपने स्वास्थ्य को अनुकूल बनाए रखने के लिए शुद्ध शाकाहारी भोजन की ग्रहण करेंगे। अर्थात् सादा खाना उच्च विचार वाली युक्ति आप पर पुर्ण रूप से चरितार्थ होगी। 4 नवम्बर के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर में सफलता प्राप्ति के लिए आप को अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता

है। जो विद्यार्थी विदेश या घर से दूर जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है। आधुनिक शिक्षा प्राप्त करने वाले व्यक्तियों को अच्छी सफलता मिलेगी।

अप्रैल से जून तक का समय नौकरी करने वालों के लिए समय अच्छा नहीं है उसके बाद आपके मान सम्मान में वृद्धि होगी। इजीनियरिंग की तैयारी करने वाले विद्यार्थियों को ज्यादा सफलता नहीं मिलेगा।

यात्रा-तबादला

3 मार्च के बाद द्वादशस्थ गुरु के कारण आपकी विदेश यात्रा हो सकती है। सामुद्रिक यात्रा का भी प्रबल योग बन रहा है। सपरिवार किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा कर आनन्द प्राप्त करेंगे।

2 जून के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। यह यात्रा आपके लिए बहुत ही सुखद व मनोरंजात्मक होंगी। 4 नवम्बर से सामुद्रिक स्थलों की यात्रा होने का योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से पूजा पाठ के प्रति आपकी विशेष रुचि बढ़ेगी। ईश्वर के प्रति आपका अटूट विश्वास होगा। मार्च के बाद दान पुण्य करने में आप सबसे आगे रहेंगे। मन्दिर निमार्ण, गौशाला, अनाथाश्रम, वृद्धाश्रम इत्यादि स्थानों पर खुले हाथों से दान करेंगे। 2 जून के बाद आप अपनी पत्नी के साथ पारिवारिक कल्याण के लिए कोई विशेष पूजा संपन्न करेंगे, जिससे परिवार में सुख, शान्ति, समृद्धि इत्यादि में वृद्धि होगी। धार्मिक कार्य कर आप मानसिक रूप से प्रसन्न रहेंगे।

- सोमवार के दिन शिव जी पर दूध में काले तिल डाल कर चढ़ाएं तथा ऊँ नमः शिवाय इस मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें तथा मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- वीरवार के दिन केला दान करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य दें।

वार्षिक फलादेश - 2040

इस वर्ष शनि कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। पूरे वर्ष राहु वृष राशि एवं दशम भाव में रहेंगे तथा 11 दिसम्बर को मेष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 अप्रैल को सिंह राशि एवं प्रथम भाव में गोचर करेंगे तथा मार्गी होकर पुनः 28 जून को कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे तथा अतिचारी होकर 3 दिसम्बर को तुला राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

इस वर्ष आप कई कार्यों में सफल होंगे। व्यापार में बड़े बड़े निर्णय लेने या विकास की योजनाओं पर ध्यान देने के लिए यह आवश्यक है कि आप पूरी जांच परख करके ही कदम बढ़ाएं। कानूनी मामलों से बचें क्योंकि वर्षारम्भ में शनि एवं गुरु की युति अच्छी नहीं है। झूठी आशाओं पर निर्भर न रहें। अधिक आत्मविश्वास आपको मुश्किल में डाल सकता है। अपनी प्रतिष्ठा के प्रति सचेत रहना भी जरूरी होगा। आप अपने मनपसंद क्षेत्र में अच्छा काम करेंगे और जनप्रिय बने रहेंगे।

अप्रैल से जून तक का समय किंचित प्रभावित रहेगा। इस समय के अंतराल में किसी पर अत्यधिक विश्वास न करें नहीं तो कार्य व्यवसाय में नुकसान हो सकता है। परन्तु जून के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। आपके मान-सम्मान में बढ़ोत्तरी होगी तथा सभी सहकर्मियों का अच्छा सहयोग मिलेगा। आप प्रसन्न रहेंगे व अपने काम को समय से पहले पूरा करने में सफल रहेंगे और प्रतिद्वंदियों को मुहतोड़ जबाब देंगे। 11 दिसम्बर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने से बड़े अधिकारियों का पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा कार्यस्थल पर आपकी एक अलग पहचान होगी।

धन संपत्ति

आमदनी में बढ़ोत्तरी होने के कारण आप बचत करने में भी सफल रहेंगे। किसी वसीयत के माध्यम से आपको धन लाभ हो सकता है अथवा किसी अप्रत्याशित जगह से अचानक धन की प्राप्ति हो सकती है। आप धन को धार्मिक कार्य में खर्च कर सकते हैं। परिवार के सदस्यों और अन्य लोगों के हित में भी आप खर्च करेंगे, परन्तु 6 अप्रैल के बाद धन हानि के योग हैं अतः कोई जोखिम भरा निवेश करने से बचें साथ ही पैसों की सुरक्षा को लेकर चिंतन करें। जून के बाद आपको रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपके ऐश्वर्य में वृद्धि होगी तथा सम्पन्नता बनी रहेगी। अपने पराक्रम एवं परिश्रम से आप यथोचित सम्पत्ति अर्जित करेंगे। वर्षान्त निवेश के लिए बहुत ही शुभ है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ रहने वाला है। परिवार के सभी सदस्य

आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आप अपने परिवार पर पूर्ण नियंत्रण रखेंगे तथा सभी परिवारीजनों का विशेष ख्याल भी रखेंगे, परन्तु 6 अप्रैल के बाद अचानक आपकी माताजी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है, जिसके नकारात्मक प्रभाव से पूरा परिवार प्रभावित हो सकता है। चतुर्थ स्थान का केतु वैचारिक मतभेद भी करा सकता है। आपसी मतभेदों के कारण यदा कदा संबंधो में तनाव की अनुभूति हो सकती है। परन्तु 28 जून से समय फिर से अनुकूल हो जाएगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध पारिवारिक शान्ति एवं सामाजिक उन्नति के लिए उत्तम है। पराक्रम व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। समाज में आपका एक अलग प्रकार का प्रभाव होगा तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करके वांछित मान सम्मान प्रदान करेंगे। सामाजिक उन्नति के लिए आप कोई विशेष कार्य करेंगे जिससे आपकी प्रतिष्ठा में और अधिक वृद्धि होगी।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे। माता पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण आदर एवं सम्मान का भाव होगा। आज्ञापालन में वे हमेशा तत्पर रहेंगे।

आप अपनी ओर से उनकी उन्नति का यथोचित प्रबन्ध करेंगे और वे आपकी महत्वकांक्षाओं की पूर्ति करने में सफल भी होंगे। यदि आपकी संतान विवाह के योग्य है तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है। वर्षान्त आपकी दूसरी संतान के लिए बहुत ही शुभ है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी तथा आप मानसिक रूप से प्रसन्न व सन्तुष्ट बने रहेंगे। आप पराक्रमी एवं परिश्रमी स्वभाव के होंगे। आप रोग व्याधियों से दूर होंगे, परन्तु 6 अप्रैल के बाद समय कुछ प्रतिकूल हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में अपने स्वास्थ्य को लेकर सचेत रहना उचित होगा।

खान-पान पर संयम रखना बहुत जरूरी होगा। अधिक खान-पान व बाहर का खाना खाने से फूड पॉइजनिंग की सम्भावना है। जहां तक सम्भव हो गैर जरूरी यात्राओं से बचें। व्यवहारिक बने रहें। व्यर्थ के कार्यों में समय खराब न करें, इसके फलस्वरूप आप परेशान रह सकते हैं। अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखें एवं अधिक आत्मविश्वासी न बनें वर्षान्त आपके लिए काफी श्रेष्ठ है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। यदि उच्च शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो 6 अप्रैल के बाद समय अनुकूल हो रहा है।

इंजीनियर, वकील व कानून से जुड़े लोगों के लिए यह साल मिला जुला रहेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में नौकरी में अचानक पदोन्नति हो सकती है। विदेश में वांछित उन्नति के लिए वर्षान्त श्रेष्ठ है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में यात्रा के योग कम ही बन रहे हैं, परन्तु 6 अप्रैल के बाद छोटी मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। व्यवसाय से संबंधित यात्राओं की अधिकता होगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ-साथ स्थानान्तरण होने का प्रबल योग बन रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ मिला जुला रहेगा, परन्तु 6 अप्रैल के बाद पूजा पाठ के प्रति आपकी विशेष रुचि होगी। ईश्वर के प्रति आपकी निष्ठा एवं विश्वास बढ़ेगा। दैनिक पूजा-पाठ में भी सुधार होगा। साल के मध्य में आप दान पुण्य अधिक करेंगे। तन्त्र, मन्त्र व यन्त्र के प्रति भी आपकी रुचि बढ़ेगी। साधना व योग के लिए आप अधिक से अधिक समय निकालेंगे। सत्संग में जाना व गुरु वाणी सुनना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- अपने पूजा घर में पारद शिवलिंग स्थापित करें और उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं एवं काली वस्तु का दान करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें तथा मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- श्रावण मास में शिवजी का रुद्राभिषेक करें।

वार्षिक फलादेश - 2041

इस वर्ष राहु मेष राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु तुला राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 मई से 30 जुलाई तक कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा उसके बाद पुनः मार्गी होकर तुला राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे। 25 सितम्बर तक शनि कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा उसके बाद तुला राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक जीवन के लिए यह साल सामान्यतः अच्छा नहीं रहेगा। शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कुछ न कुछ परेशानियां आती रहेंगी। कुछ गलत फहमियों से भी आप व्याकुल हो सकते हैं। गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। जल्दबाजी में कोई निर्णय न लें, गलत-सही का चुनाव करने के बाद ही निर्णय लें। हालांकि 6 मई के बाद समय अच्छा हो रहा है। उस समय आपको कुछ सकारात्मक परिणाम मिलेगा।

इस वर्ष आप कोई नया कार्य व्यवसाय प्रारम्भ न करें। पहले से चले आ रहे कार्यों को ही सुचारू रूप से चलाते रहें। यदि साझेदारी में कार्य कर करे हैं तो 26 सितम्बर के बाद आपका साझेदार धोखा दे सकता है। अतः उसके साथ सभी कार्यों में पारदर्शिता रखने की कोशिश करें। राजनीति से जुड़े लोगों के लिए यह समय ज्यादा प्रतिकूल है।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह वर्ष आपके लिए मिला-जुला रहेगा। लाभ के साथ-साथ चुनौतियां भी होंगी। वर्ष के प्रारम्भ में निवेश से सम्बंधित योजनाओं पर ध्यान न दें और अपने दस्तावेज भी संभाल कर रखें। हड़बड़ी में कोई भी कार्य न करें नहीं तो आर्थिक हानि हो सकती है। निवेश व आर्थिक निर्णय लेते समय सतर्क रहें व जल्दबाजी न करें। इस अवधि में सकारात्मक बने रहना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में अधिक सतर्कता बरतने की जरूरत है। जितना ज्यादा हो सके धन की बचत करने की कोशिश करें और फिजूल के खर्चों पर नियंत्रण रखें। आपका कोई करीबी ही आपको दगा दे सकता है। ऐसे लोगों से बचने से के लिए किसी भी प्रकार के वित्तीय लेन-देन में पूरी सावधानी बरतें। जोखिम भरे निवेश करने से बचें। राजनीति एवं भूमि से संबंधित काम करने वालों को आर्थिक हानि हो सकती है।

घर-परिवार, समाज

द्वितीय स्थान में शनि ग्रह का गोचर परिवार के लिए अच्छा नहीं रहेगा। अधिक भागदौड़ के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। पारिवारिक सदस्यों के साथ कुछ तर्क-वितर्क होने की संभावना नजर आ रही है। हालाँकि समझदारी से इसे टाला जा सकता है। ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय अच्छा नहीं है। तृतीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके छोटे

भाई बहनों के साथ संबंध अच्छे रहेंगे। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

6 मई के बाद पारिवारिक समस्याएं कुछ कम होंगी। लेकिन आप पारिवारिक स्थिति को लेकर चिंचित रहेंगे। 26 सितम्बर के बाद जीवनसाथी के साथ वैचारिक मतभेद होने की प्रबल संभावना है। तृतीय स्थान पर शनि की दृष्टि के कारण सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में कुछ कमी आ सकती है।

संतान

यह साल संतान के लिए अच्छा रहने वाला है। आपके बच्चे अपने बौद्धिक बल के द्वारा उन्नति करेंगे। दूसरी संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही शुभ है। उनके विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे।

शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बनेंगे। उनके पराक्रम में भी वृद्धि होगी परंतु उसके बावजूद भी आपकी चिंताएं बनी रहेंगी। 6 मई से जुलाई तक का समय कुछ प्रभावित रहेगा। उसके बाद पूरा वर्ष श्रेष्ठ रहने वाला है।

स्वास्थ्य

द्वितीयस्थ शनि के कारण स्वास्थ्य में उतार-चढाव की स्थिति बनी रहेगी। कमर के निचले हिस्से में कोई रोग बढ़ सकता है अतः किसी भी छोटी समस्या को छोटी ना समझते हुए तुरंत चिकित्सकीय परामर्श लें। ऋतुजनित बीमारियों के कारण स्वास्थ्य प्रतिकूल हो सकता है विशेष कर सर्दी-जुकाम इत्यादि का प्रकोप झेलना पड़ सकता है।

पहले से चली आ रही बीमारी उग्र रूप ले सकती है इसलिए सावधानी बरतें। 26 सितम्बर के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। उस समय कोई लम्बी बीमारी हो सकती है। अतः शारीरिक आरोग्यता प्राप्ति के लिए आप घर में कोई विशेष धार्मिक आयोजन व महामृत्यंजय का जाप कराएं जो आपकी मनोकामनाओं को पूरा करने में सहयोग करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्य रहने वाला है। आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे तो उसमें सफलता मिल सकती है। मैकेनिकल इंजीनियर व हार्डवेयर से संबंधित कार्य करने वालों के लिए यह समय अच्छा रहेगा। 6 मई के बाद आपको वांछित सफलता मिलेगी।

वर्ष का उत्तरार्द्ध व्यावसायिक व्यक्तियों के लिए अच्छा रहने वाला है। 26 सितम्बर के बाद नौकरी करने वालों के लिए अच्छा नहीं रहेगा। आपके बड़े अधिकारियों के साथ वैचारिक मतभेद होने की संभावना बन रही है।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में छोटी मोटी यात्राओं के साथ-साथ लम्बी यात्राएं भी अधिक होंगी।

सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि व्यावसायिक यात्राएं भी कराते रहेंगे। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह परिवर्तन आपके प्रतिकूल स्थान पर भी हो सकता है। यात्रा व वाहन चलाते समय सावधान रहें क्योंकि 26 सितम्बर के बाद दुर्घटना इत्यादि का योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में तीर्थयात्रा और धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। कोई भी शुभ कार्य योजनाबद्ध तरीके से ही संपन्न करें अन्यथा पूजादि कार्यों में व्यवधान आने की आशा है। वर्ष के उत्तरार्द्ध में कार्य व्यवसाय पर अधिक ध्यान देंगे और कर्म ही पूजा है, इस उद्देश्य पर रहेंगे। 26 सितम्बर के बाद सभी धार्मिक कार्यों में व्यवधान आएंगे।

- प्रत्येक सोमवार के दिन शिवलिंग पर जल चढ़ाएं तथा ऊँ नमः शिवाय मन्त्र का पाठ करें।
- स्फटिक श्रीयन्त्र अपने घर में स्थापित करें तथा उसके सामने देशी घी की दीपक जलाएं।
- मंगलवार का व्रत करें या हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- प्रत्येक शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।

इस वर्ष शनि तुला राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे। 22 जून तक राहु मेष राशि एवं नवम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मीन राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 10 जून से 27 अगस्त तक तुला राशि एवं तृतीर्य भाव मे गोचर करेंगे और पुनः मर्गी होकर फिर से वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

इस वर्ष नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी होगा। वरिष्ठ लोग व उच्च अधिकारी आपके कार्यों से प्रसन्न रहेंगे तथा सभी प्रकार से आपकी सहायता करने में तत्पर्य रहेंगे। कार्य स्थल पर आपको मान-सम्मान की प्राप्ति होगी। यह सब आपकी सकारात्मक विचारधारा के कारण होगा। व्यावसायिक व्यक्ति अपने परिश्रम के बल पर उन्नति करेंगे। 10 जून से अगस्त तक का समय किंचित प्रभावित रहेगा। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आजीविका के क्षेत्र में कुछ कमी आ सकती है, जिससे आय के स्रोत प्रभावित होंगे। प्रतिद्वंदी आपको नीचा दिखाने की कोशिश करेंगे, परन्तु आप अपने बौद्धिक बल द्वारा सभी प्रतिद्वंदियो को पीछे छोड़कर सफलता के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। व्यावसायिक उन्नति करने में आपको कर्ज भी लेने पड़ सकता है। भूमि, वाहन व कॉस्मेटिक से जुड़े लोगों को लाभ हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक स्थिति के लिए वर्ष का प्रारम्भ लाभप्रद रहेगा। धनागम के स्रोत बढ़ेंगे। आपको भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होगा। 22 जून के बाद पैसे के मामले में आप ज्यादा सावधान रहें तथा आंख बन्द कर किसी पर विश्वास न करें। किसी के बहकावे में आकर अपने धन को निवेश न करें नहीं तो हानि हो सकती है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में विदेशी धन व वसीयत की प्राप्ति होगी। गुप्त रूप से भी आपको धन लाभ होगा। यदि आप निवेश करना चाहते हैं तो यह समय आपके लिए श्रेष्ठ है। वर्षान्त में आपके कुछ अनावश्यक खर्च बढ़ेंगे। अतः उस समय अपने खर्चों पर अंकुश लगाएं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक सुख, शान्ति एवं समृद्धि के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। सभी पारिवारिक जन परस्पर मिल जुलकर रहेंगे, जिससे परिवार में शान्ति तथा सद्भावना का वातावरण रहेगा। आपकी माता के लिए यह समय शुभ है। जून के बाद सुख एवं सहयोग में न्यूनता आयेगी परन्तु संबंधो में मधुरता बनी रहेगी। मित्र वर्ग आप से नाराज हो सकता है। राहु के कारण आप मानसिक रूप से परेशान रह सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में ससुराल पक्ष के लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। आपको वांछित मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा मिलेगी तथा किसी सम्मानित उच्च पद को अर्जित करने में भी समर्थ होंगे। समाज में आपकी प्रतिष्ठा एवं प्रसिद्धि दूर-दूर तक व्याप्त होगी एवं सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकर करेंगे।

संतान

संतान के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान पर राहु की दृष्टि संतान को स्वास्थ्य संबंधी परेशानी दे सकती है। उनकी शिक्षा-दीक्षा में रुकावटें आ सकती हैं। आपके प्रति बच्चों में मर्यादा एवं आदर्श की भावना कम होगी। आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। बच्चों के साथ भावनात्मक लगाव में कमी आएगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके बच्चों को किसी नौकरी या रिसर्च के कार्यों में सफलता मिलेगी। यदि वे किसी प्रतियोगिता परीक्षा में भाग लेते हैं तो सफलता सम्भव है। यदि आप दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं तो गर्भाधान के लिए यह बहुत शुभ समय है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिए वर्ष पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं है। लग्न स्थान पर राहु की दृष्टि के कारण आप कुछ चिन्ता का अनुभव करेंगे। अकारण चिंता करने से कुछ हासिल नहीं होगा। आप चिंताओं से उबरने की कोशिश करें वरना आपको किसी मानसिक रोग अथवा मस्तिष्क सम्बन्धी विकार का सामना करना पड़ सकता है। बदलते मौसम के कारण कुछ परेशानियां हो सकती हैं, लेकिन आप जल्द ही ठीक हो जाएंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में वजन बढ़ने की संभावना है, इसलिए मक्खन, घी और मिठाई खाने से परहेज करें। यदि निरोगी काया चाहते हैं तो नियमित रूप से व्यायाम करें और खान-पान का विशेष ध्यान रखें। अपना स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए तुला दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

शिक्षा की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला फल देने वाला है। विद्यार्थियों की उन्नति में रुकावट व उच्च शिक्षा में व्यवधान आ सकता है। करियर में सफलता प्राप्त करने के लिए आपको अथक परिश्रम करना पड़ेगा। यदि आप विदेश में अपना करियर बनाना चाहते हैं तो यह समय काफी श्रेष्ठ है। आपका नये-नये तकनीकी विषयों की ओर रुझान रहेगा।

राहु के कारण याद करके भूलने की प्रवृति बनेगी। अष्टम स्थान का राहु मानसिक तनाव का कारण बन सकता है। आपका रुझाान राजनैतिक, तंत्र-मंत्र, विद्या सिद्धि रोमांचकारी रिसर्च से जुड़े विषयों में अधिक रहेगा।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे है। 10 जून के बाद छोटी मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। ये सभी यात्राएं आपके लिए लाभप्रद सिद्ध होंगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपने जन्मस्थान की यात्रा होगी। आप पूरे परिवार के साथ आनन्ददायक यात्राएं करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का आरम्भ अनुकूल नहीं है। लग्न स्थान पर राहु की दृष्टि सारे धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न करेगा। आप चाह कर भी पूजा-पाठ, यज्ञ अनुष्ठान नहीं कर पाएंगे। मानसिक अशान्ति के कारण ध्यान योग व मन्त्रोच्चारण में आपका मन नहीं लगेगा। परन्तु काला जादू, तन्त्र व यन्त्र के प्रति आपका विश्वास बढ़ेगा।

उत्तरार्द्ध में गरीबों को दान देना, भिखारियों को खाना खिलाना एवं दुखियों की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। योग व ध्यान के प्रति भी आपका रुझान बढ़ेगा।

- पारद शिवलिंग अपने पूजा घर में स्थापित करें।
- दुर्गा चालीसा का पाठ करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष गले में धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2043

वर्षारम्भ में गुरु वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा 27 जनवरी को धनु राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 30 जुलाई को वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे तथा अतिचारी होकर फिर से 11 सितम्बर को धनु राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे। पूरे साल शनि तुला राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे तथा 12 दिसम्बर को वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। 19 सितम्बर तक राहु मीन राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद कुम्भ राशि एवं सप्तम भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यापारियों के लिए यह वर्ष उत्तम रहने वाला है। अच्छे मुनाफे मिलने के आसार हैं। कुछ नए व्यापारिक भागीदार मिलेंगे। कारोबार का विस्तार होगा तथा सरकारी ठेके भी मिल सकते हैं। व्यापार में पूंजी लगाने वाले नए लोग भी मिलेंगे। आमदनी के नये स्रोत मिलने की उम्मीद है। इस अवधि में कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे, तो उसमें सफलता मिलने की उमीद ज्यादा है। आपको अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। अष्टमस्थ राहु के कारण कुछ विरोधी व गुप्त शत्रु आपको नीचा दिखाने की कोशिश करेंगे परन्तु अपने बौद्धिक बल के द्वारा आप उन पर विजय प्राप्त कर लेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में सेवारत लोगों को अच्छे परिणाम मिलेंगे। कार्यस्थल पर आपकी तारीफ होगी और मान सम्मान भी बढ़ेगा। नई और बेहतर नौकरी मिलने की प्रबल संभावना है। पदोन्नति के साथ-साथ अनुकूल स्थान पर परिवर्तन भी हो सकता है। नौकरी से संबंधित आपकी सभी इच्छाएं पूरी होंगी।

धन संपत्ति

एकादश स्थान पर गुरु की दृष्टि आपकी आर्थिक स्थिति में मददगार साबित होगी। आय के बाधित मार्ग खुलेंगे। आप अपने कार्यों के प्रति सजग रहेंगे। पैसे का आगमन लगातार होता रहेगा। जमापूंजी में तेजी मे वृद्धि होगी। आर्थिक रूप से वर्ष का पूर्वार्द्ध आपके लिए बेहतर साबित होगा।

30 जुलाई के बाद किसी पर भी आंख बन्द कर विश्वास करना आपके लिए घातक हो सकता है। अतः पैसे के लेन-देन में सावधानी बरतें, नहीं तो अष्टम स्थान का राहु अचानक धन हानि करा सकता है। शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाना होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। अपने खर्चों पर भी अंकुश लगाएं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में अधिक व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। लेकिन परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर

सहयोग की भावना बनी रहेगी। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान सुख की प्राप्ति होगी। आपको भाइयों का सहयोग मिलता रहेगा। परिवार में धार्मिक कार्य व मांगलिक कार्य होते रहेंगे जिसमें परिवार के सभी लोग सम्मिलित होंगे।

तृतीयस्थ शनि के कारण आपकी सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा इस वर्ष आप अपनी सामाजिक गतिविधियों में पहले से अधिक सक्रिय होंगे। समाज में आपका दबदबा बना रहेगा। कोई भी व्यक्ति आपके विरुद्ध जाने का साहस नहीं कर पाएगा तथा आपको वांछित सम्मान प्रदान करेगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत ही शुभ है। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। यदि वे विवाह के योग्य हैं, तो विवाह होने का प्रबल योग बन रहा है।

30 जुलाई से 11 सितम्बर तक का समय किंचित प्रभावित रहेगा तथा उसके बाद फिर से उत्तम हो जाएगा। आपके बच्चे धर्म कार्य व अच्छे कार्यों में समय ज्यादा व्यतीत करेंगे। आपकी आज्ञा के पालन में सदैव तत्पर्य रहेंगे। सितम्बर के बाद नवविवाहित व्यक्तियों को संतान की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य

लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि स्वास्थ्य के लिए बहुत ही शुभ है। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा की वृद्धि होगी, जिससे आपकी रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी जो आपको शारीरिक रूप से आरोग्य रखने में सहायता करेगी तथा आप अपने को पूर्ण रूप से स्वस्थ अनुभव करेंगे। यदि पहले से आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो इस वर्ष उससे भी मुक्ति मिल सकती है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपका स्वास्थ्य किंचित प्रभावित हो सकता है। अष्टम स्थान का राहु जल तत्व राशि होने के कारण कफ, सर्दी तथा जुखाम इत्यादि बीमारियों से पीड़ित कर सकता है। मोटापा तथा पेट संबंधित बीमारी भी हो सकती हैं। अतः उस समय घी या तला हुई वस्तु का सेवन कम करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। विद्यार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत उत्तम रहने वाला है। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल जाएगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आध्यात्मिक शिक्षा, योग शिक्षा तथा शोध कार्य करने वाले के लिए बहुत ही शुभ है। इन लोगों को वांछित उन्नति मिलेगी। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने

लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। बेराजगार जातकों को रोजगार के लिए अभी और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपकी छोटी बड़ी यात्राएं खूब होंगी। धार्मिक यात्रा का अधिक आनन्द लेंगे। वर्ष के प्रारम्भ में विदेश यात्राएं प्रभावित होंगी।

नौकरी करने वालों के लिए मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण के योग बने हुए हैं। आप अपने जन्मस्थल की यात्रा करेंगे। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए वर्ष का उत्तरार्द्ध बहुत अनुकूल है। विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

- प्रत्येक दिन दुर्गा सप्तसती का पाठ करें तथा नीली वस्तु का दान करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष सोमवार के दिन गले में धारण करें।
- प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- अपने पूजा घर में बुधवार के दिन श्वेतार्क गणपति स्थापित करें।

वार्षिक फलादेश - 2044

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा राहु कुम्भ राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे। 16 फरवरी तक गुरु धनु राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल वक्री होकर 4 मार्च से 13 जून तक सिंह राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। सभी व्यावसायिक मामलों में निर्णय सोच विचार ही लें। हालांकि आप कारोबार के मामले में काफी होशियार हैं फिर भी अपने स्तर पर पूरी एहतियात बरतें, क्योंकि शनि ग्रह का गोचर आपके लिए शुभ नहीं है। गैरकानूनी क्रिया-कलापों में शामिल न हों तथा कोई ऐसा कार्य न करें जिससे आपकी मानहानि होने की संभावना हो। साझेदारी में कार्य करने वाले लोगों के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा।

नौकरी करने वाले जातकों को अपने सहकर्मियों के साथ अच्छे संबंध बना कर रखने चाहिए। फरवरी के बाद व्यवसाय करने वालों को अपनी व्यावसायिक प्रगति में अवरोधों का सामना करना पड़ सकता है। बिजनेस में धीमी चाल से प्रगति होगी। शेयर बाजार एवं सट्टेबाजी आधारित गतिविधियों में किस्मत अजमाने का प्रयास न करें अन्यथा आपका धन लंबे समय के लिए फँस सकता है। जल्दबाजी में लिए गए निर्णय आपको आर्थिक हानि पहुँचा सकते हैं। किसी भी बिजनेस के लिए सोच समझकर ही साझेदार शामिल करें।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक स्थिति के लिए उत्तम रहेगा, परन्तु 16 फरवरी के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है। अतः उस समय आपकी जमापूंजी में कमी आ सकती है। इसलिए समझदारी के साथ पैसे खर्च करें तथा वित्तीय जोखिम उठाने से बचें। बिना लिखित प्रक्रिया पूरी किए किसी को पैसे न दें और किसी पर भी आंख बन्द कर विश्वास न करें।

आर्थिक मोर्चे पर आपको विशेष सावधानी रखनी होगी क्योंकि आमदनी की तुलना में खर्च अधिक रहेगा। वैसे आमदनी का स्रोत बना रहेगा तथा दैनिक आमदनी में कोई रुकावट नहीं आएगी। अगर किसी को धन उधार दिया है तो फिलहाल उसके वापिस मिलने की संभावना कम है। आप आक्स्मिक धन लाभ की उम्मीद न रखें। मंहगी व सुख सुविधा वाली वस्तुओं में धन लगा सकते हैं जो आपके लिए धन का अपव्यय ही होगा इसके परिणामस्वरूप आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक जीवन के लिए यह समय थोड़ा तनावपूर्ण रह सकता है। सप्तम स्थान का राहु आपके दाम्पत्य जीवन में कुछ खटास उत्पन्न कर सकता है, जिससे आपके पत्नी के साथ संबंध खराब हो सकते हैं। चतुर्थ स्थान में शनि ग्रह का गोचर पारिवारिक वातावरण के

लिए अच्छा नहीं होता, अतः आपको अपने व्यवहार पर विशेष ध्यान देने की जरुरत है, वरना संबंधों में कुछ कड़वाहट आने की संभावना है।

माता व बड़े-बुजुर्गों का स्वास्थ्य आपकी चिंता का प्रमुख कारण बन सकता है। किसी करीबी व्यक्ति के साथ आपकी कहा-सुनी हो सकती है। सामाजिक स्तर पर भी आपको सतर्क रहना होगा कुछ अपमानजनक परिस्थितियाँ पैदा हो सकती हैं। आपके साथ विश्वासघात हो सकता है यानी आप जिन लोगों पर भरोसा करते हैं वे धोखा दे सकते हैं।

संतान

साल का प्रारम्भ संतान के लिए श्रेष्ठ रहने वाला है, परन्तु 16 फरवरी के बार समय सामान्य हो जाएगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढेंगे। अपने जीवन में उन्नति के लिए अथक मेहनत करेंगे देर से ही सही लेकिन उनको परिश्रम का पूरा फल मिलेगा।

आपकी दूसरी संतान के लिए समय अच्छा नहीं है। अचानक उनको स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां आ सकती हैं तथा उनकी उन्नति में व्यावधान आते रहेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान का शनि तथा सप्तम स्थान का राहु आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। मौसमजनित बीमारियों से आप ज्यादा परेशान हो सकते हैं। लग्न स्थान पर राहु एवं शनि की दृष्टि सरदर्द, मांसपेशियों, रक्त और लीवर से संबंधित दिक्कतें दे सकती है। आंखो का विशेष ध्यान रखें। यदि पहले से चश्मा लगा हुआ है तो उसके नंबर की जांच करा लें। आपके आत्मवश्वास में कमी आ सकती है।

लंबे समय से चली आ रही बीमारी का सरलता से निदान नहीं होगा। उसके उपचार में दिक्कतों का सामना करना पड़ सकता है। आक्स्मिक चोट लगने की संभावनाएं भी बनी हुई हैं। अनिद्रा की शिकायत आपको परेशान कर सकती है। अपने क्रोध पर नियन्त्रण रखें नहीं तो मानसिक तनाव बढ़ सकता है। वाहन चलते समय व मशीनरी से सम्बन्धित कार्य करते समय सतर्कता बरतें। तरोताजा रहने के लिए सैर-सपाटे पर जाएँ। सुबह सुबह पार्क में घूमना आपके लिए ज्यादा लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियो के लिए यह साल सामान्य रहेगा। यदि आप किसी प्रतियोगिता परीक्षा में बैठने जा रहे हैं तो सफलता प्राप्ति के लिए आपको अधिक परिश्रम की आवश्यकता होगी। अंततः आपको सफलता मिलेगी भी परन्तु संघर्षात्मक परिस्थितियों में मिलेगी। अध्ययन के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी परन्तु आलस्य की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है।

छात्रों को सफलता मिलने के पूर्ण आसार है। दी गई परीक्षाओं का परिणाम

हितकारी होगा। दोस्तों का सहयोग मिलेगा। कला और सामाजिक कार्यों से जुड़े लोगों को अवश्य लाभ मिलेगा।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में धार्मिक यात्राएं करने का अवसर प्राप्त होगा। 16 फरवरी के बाद द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि आपको विदेश यात्रा करा सकती है। नौकरी करने वाले लोगों का प्रतिकूल स्थान पर तबदला होगा जिससे आप प्रसन्न नही रहेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में ईश्वर के प्रति श्रद्धा, आस्था व भक्ति बढ़ेगी। द्विज, देव, ब्राह्मण व ईष्ट देव की कृपा प्राप्त होगी। इस समय के अंतराल आप कोई विशेष पूजा, अनुष्ठान, यज्ञ, हवन आदि संपन्न कराने में सफल होंगे।

- मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं तथा प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन पीपल के वृक्ष के नीचे चौमुखी दीपक जलाएं।
- प्रतिदिन चिड़ियों तथा चींटियों को दाना डालें।
- अपने पूजा घर में पारद शिवलिंग की स्थापना करें।

वार्षिक फलादेश - 2045

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। 15 जून तक राहु कुम्भ राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। 2 मार्च को गुरु कुम्भ राशि एंव सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा। आपको काफी मेहनत करनी होगी, क्योंकि शनि के चतुर्थ भाव में गोचर करने से आपके सारे कार्य धीमी गति से आगे बढ़ेंगे। इस समय के अंतराल में आपको मानसिक तौर पर मजबूत तथा धैर्यवान बनना होगा। बड़े स्तर की योजनाओं में सोच समझकर ही निवेश करें।

लगातार प्रयास और दृढ़ निश्चय के साथ डटे रहने से ही आप सफलता को प्राप्त कर सकेंगे। व्यापार का विस्तार करने से पहले जोखिम होने की संभावनाओं को ध्यान में अवश्य रखें। धैर्य से काम लें और जो कुछ हो रहा है उसे होने दें। 15 जुलाई के बाद आप अपने विरोधियों से मुकाबला करने में सक्षम रहेंगे। हालांकि आप कारोबार के मामले में काफी होशियार हैं फिर भी अपने स्तर पर पूरी एहतियात बरतें। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने सहकर्मियों के साथ अच्छे संबंध बनाकर रखना श्रेष्ठ रहेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ खर्चों में बढ़ोत्तरी दर्शा रहा है। इस अवधि के दौरान धनार्जन करने के लिए आपको सतत प्रयास करने पड़ सकते हैं तथा व्यवसाय में धन की आवाजाही लगी रहेगी। आप अपनी भौतिक सुख-सुविधाओं पर अधिक खर्च करेंगे। अपनी विलासिता पर लगाम लगाएँ अन्यथा कुछ आर्थिक समस्याएँ हो सकती हैं। अगर किसी को उधार दिया है तो फिलहाल उसके वापस मिलने की संभावना कम है। आप आक्स्मिक धन लाभ की उम्मीद न रखें।

15 जून के बाद आपके बिगड़े हुए कार्यों में सुधार होगा। धन कमाने के काफी अच्छे अवसर मिलने की संभावनाएँ हैं। आर्थिक स्थिति में मजबूती आएगी व अनेक स्रोतों के माध्यम से धन मिल सकता है। आप अपने खुद के परिश्रम से अधिक धन अर्जित कर पाएंगे। पत्नी व मित्रों से भी धन लाभ होने की संभावना बन रही है।

घर-परिवार, समाज

चतुर्थ स्थान में शनि ग्रह का गोचर पारिवारिक वातावरण के लिए अच्छा नहीं है। माता के साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं जिसका नकारात्मक प्रभाव पूरे परिवार पर पड गा। अतः आपको अपने व्यवहार पर विशेष ध्यान देने की जरुरत है, वरना संबंधों में कुछ कड वाहट आने की संभावना है। पारिवारिक जीवन के लिए यह समय थोड़ा तनावपूर्ण रह सकता है। वर्ष के पूर्वार्द्ध में सप्तम स्थान का राहु आपके दाम्पत्य जीवन में कुछ खटास उत्पन्न कर सकता है। माता या किसी बड़े-बुजुर्ग का स्वास्थ्य आपकी चिंता का प्रमुख कारण बन सकता है।

सामाजिक स्तर पर कुछ अपमानजनक परिस्थितियाँ पैदा हो सकती हैं, हालांकि राहु ग्रह के गोचर के साथ समय कुछ अनुकूल होगा। वर्ष के दूसरे भाग से आप अपने जीवनसाथी के साथ ढेर सारी खुशियाँ मना सकेंगे। यह समय आनंद से भरपूर रहेगा। आपके व्यवहार में प्रेम और भावुकता की वृद्धि होगी। जीवनसाथी आपके प्रति अधिक समर्पित रहेंगे।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपकी दूसरी संतान के लिए अच्छा नहीं है। अचानक उनको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है तथा उनके उन्नति में भी व्यावधान आने की संभावना बन रही है। यदि आप दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं तो गर्भाधान के लिए यह समय श्रेष्ठ नहीं है।

आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। अपने जीवन में उन्नति के लिए अथक मेहनत करेंगे देर से ही सही लेकिन उनको परिश्रम का फल अवश्य मिलेगा। 15 जून के बाद आपकी दूसरी संतान के लिए समय बहुत ही शुभ हो रहा है तथा उस समय उनको वांछित सफलता मिलेगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान का शनि तथा सप्तम स्थान का राहु आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। मौसमजनित बीमारियों से आप ज्यादा परेशान हो सकते हैं। लग्न स्थान पर राहु एवं शनि की दृष्टि सरदर्द, मांसपेशियां, रक्त और लीवर से संबंधित दिक्कतें दे सकती है। आंखों का विशेष ध्यान रखें। सिर में चोट चपेट लगने की पूर्ण सभावना बन रही है। किसी लंबी चली आ रही बीमारी का सरलता से निदान नहीं होगा, जिसके कारण आपको उपचार कराने में दिक्कतों का सामना करना पड़ सकता है।

आप अपने क्रोध पर नियन्त्रण रखें वरना आपका मानसिक तनाव बढ़ सकता है। वाहन चलते समय व मशीनरी से काम करते हुए सतर्कता बरतें। तरोताजा रहने के लिए सैर-सपाटे पर जाएं। सुबह सुबह पार्क में घूमना आपके लिए ज्यादा लाभप्रद रहेगा। हालांकि 15 जून के बाद सयम काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय आपके स्वास्थ्य में सुधार होगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। यदि आप किसी प्रतियोगिता परीक्षा में बैठने जा रहे हैं तो सफलता प्राप्ति के लिए आपको अधिक परिश्रम की आवश्यकता होगी। अंततः आपको सफलता मिलेगी। अध्ययन के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी परन्तु आलस्य की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपको सफलता मिलने के पूर्ण आसार हैं। इस लिए दी गई परीक्षाओं का परिणाम हितकारी होगा। दोस्तों का सहयोग मिलेगा। कला और सामाजिक कार्यों से जुड़े लोगों को अवश्य लाभ मिलेगा।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में द्वादश पर गुरु की दृष्टि आपको विदेश यात्रा करा सकती है। नौकरी करने वाले लोगों का प्रतिकूल स्थान पर तबदला होगा जिससे आप प्रसन्न नही रहेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में व्यावसायिक यात्राएं अधिक होंगी तथा इन यात्राओं से आपको खूब लाभ मिलेगा। इस वर्ष आप ज्यादातर अपने घर से दूर ही रहेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का पूर्वार्द्ध धार्मिक कार्यों के लिए अनुकूल नहीं है। मानसिक अशान्ति व आलस्यता का भाव बना रहेगा, जिससे आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। 15 जून के बाद आपके मन में ईश्वर के प्रति आस्था व विश्वास बढ़ेगा। आप अपनी धर्म पत्नी के साथ मिल कर कोई विशेष पूजा पाठ यज्ञ, अनुष्ठान, हवन आदि संपन्न कराने में सफल होंगे।

- मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं तथा प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- प्रतिदिन चिड़ियों तथा चींटियों को दाना डालें।
- वीरवार के दिन बेसन के लड्डू गरीबों को दान करें।

दशा विश्लेषण

महादशा :- केतु
(30/06/2025 - 30/06/2032)

केतु की महादशा 30/06/2025 को आरम्भ और 30/06/2032 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में केतु सप्तम भाव में है जहाँ से इसकी दृष्टि लग्न पर है। इसके पूर्व आपकी बुध की दशा चल रही थी जिसकी दशा 17 वर्ष थी। बुध के कारण आपको सम्पत्ति, समृद्धि, यश और ख्याति की प्राप्ति और लम्बी यात्रा हुई होगी। केतु की वर्तमान दशा में यात्रा, व्यापार में वृद्धि और साझेदारों से लाभ होगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप शक्ति शाली तथा स्फूर्तिवान होंगे। आपको विषाणुजन्य बुखार, चर्मरोग, छूत की बीमारी, फोड़ा, जनन तथा मूत्राशय संबंधी समस्या हो सकती है। कुछ उपायकर इनसे बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी होगी। आपको साझेदारों तथा व्यवसाय से लाभ होगा। सट्टे तथा निवेश में लाभ होगा। आपको कार्य में सफलता तथा यश और ख्याति मिलेगी। जीविका-व्यवसाय के लिए उद्योग, इंजीनियरिंग, कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी, धातु अथवा खनिज प्रौद्योगिकी अथवा हाईवेयर निर्माण अथवा कृषि का चयन कर सकते हैं। रत्न, धातु, चमड़े, मशीनरी लोहा और इस्पात, हाईवेयर, खेल-सामग्री आदि का व्यापार लाभदायक होगा। नौकरीपेशा लोगों को लाभ, आय में वृद्धि तथा सम्मान की प्राप्ति होगी। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों को यश, ख्याति, आदर, सफलता तथा जीवन में प्रगति होगी। यह दशा व्यवसाय में उन्नति के लिए उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जायदाद :

शनि की अन्तर्दशा में आपको सभी सुख मिलेंगे। जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी। आप एक मकान खरीद सकते हैं। सम्पत्ति के लेन-देन के लिए यह दशा उत्तम है। गुरु की अन्तर्दशा में आपकी छोटी किन्तु, लाभदायक और बुध की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आपको अपना स्तर बनाए रखने के लिए कठिन परिश्रम करना होगा। गणित, इंजीनियरिंग, कम्प्यूटर विज्ञान, भाषा, मेकैनिकल इंजीनियरिंग, प्रशासन और योजना में आपकी रुचि हो सकती है। आप साहसी और आत्मविश्वासी हैं और खेल तथा शिक्षा, अन्य गतिविधियों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका संबंध मधुर रहेगा। आपके बच्चों को कठिन परिश्रम करना होगा और उनकी छोटी यात्रा होगी। उन्हें आपकी सहायता और मार्गदर्शन की जरूरत होगी।

आपके जीवन साथी को यश, ख्याति और धर्म में रुचि होगी। अपने जीवन साथी के साथ आपका संबंध उत्तम रहेगा। आपकी माता की जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी और सफलता मिलेगी जबकि पिता को लाभ, विभिन्न स्रोतों से आय और इच्छाओं की पूर्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को सट्टे में लाभ और शिक्षा उत्तम होगी। बड़ों की यात्रा होगी और धन तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी।

अन्तर्दशा :

केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के दौरान आपकी यात्रा और व्यापार में वृद्धि होगी और सफलता मिलेगी। शुक्र के कारण आपको लाभ मिलेगा और मनोकामनाओं की पूर्ति होगी जबकि चन्द्र की अन्तर्दशा में प्रगति होगी, व्यवसाय में सफलता और लाभ मिलेगा। राहु कुछ बाधा खड़ी कर सकता है। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान शत्रु के कारण कुछ समस्या, स्वास्थ्य संबंधी मामूली समस्या और छोटी यात्रा होगी जबकि योगकारक शनि के कारण बच्चों से सुख, सफलता और जीवन का आराम मिलेगा। बुध की अन्तर्दशा में सम्पत्ति और समृद्धि मिलेगी तथा लम्बी यात्रा होगी।

अंर्तदशा :- केतु - शुक्र
(26/11/2025 - 27/01/2027)

केतु महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 1 वर्ष 2 मास होगी ।

इस अवधि में आप धनी और प्रसिद्ध होंगे। जीवन सुख-सुविधापूर्ण होगा। बड़ों और गुरुजनों का आशीर्वाद प्राप्त होगा। विवाह हो सकता है। दान-धर्म के कार्यों में भाग ले सकते हैं। कला में दक्षता की संभावना है। लाभदायक लघु यात्राएं हो सकती हैं। विज्ञापन क्षेत्र में सक्रियता के लिए समय उपयुक्त है। सफलता स्वयं के प्रयास से ही मिल जाएगी।

आपके जीवनसाथी सफलता प्राप्त करेंगे। आपके पिता भी सफल होंगे। माता को स्पर्धियों पर विजय मिलेगी, स्वास्थ्य उत्तम होगा, प्रसन्नचित्त रहेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए धन, आराम, संभवतः विवाह, सफलता और आकांक्षाओं की पूर्ति का संकेत है।

आपकी संतान के लिए समय शुभ रहेगा, शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो निवेश से लाभ होगा, धनी बनेंगे, विवाहित जीवन सुखी रहेगा, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो पुरानी साख से लाभ होगा। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ सकते हैं, यात्राएं हो सकती हैं। व्यापारियों की आय अच्छी होगी, लघु यात्राएं होंगी, स्वयं के प्रयास से सफलता मिलेगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मामूली गठिया आदि व्याधि हो सकती है।

अंर्तदशा :- केतु - सूर्य
(27/01/2027 - 03/06/2027)

आपके लिए केतु महादशा 30/06/2025 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 4 मास 6 दिन होगी जो आपके लिए 27/01/2027 को प्रारंभ होकर 03/06/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य पिता, स्वास्थ्य, ऊर्जा, कार्यक्षमता और आत्मा का कारक है।

इस अवधि में व्यापार में धनार्जन उत्तम हो सकता है। आपकी इच्छाओं की पूर्ति हो सकती है। वांछित स्थान पर तबादला हो सकता है। सब कार्यों में सफलता मिलेगी। उच्चपद पर आसीन हो सकते हैं। उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे; समाज में सम्मान मिलेगा। जीवन में प्रगति होगी।

आपके जीवनसाथी सफल होंगे, उच्चपद मिल सकता है, सम्मानित होंगे। आपके पिता थोड़े प्रयास से ही सफलता प्राप्त कर लेंगे। माता अचल संपत्ति प्राप्त कर सकती हैं, घर में सुख-साधन मौजूद रहेंगे।

आपके भाई-बहनों के लिए इच्छाओं की पूर्ति, सौभाग्य, सफलता और धनी होने का संकेत है। आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो लघु यात्राएं हो सकती हैं, उच्च पद प्राप्त कर सकते हैं, लेखन आदि से लाभ हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो धनार्जन उत्तम होगा; उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं की आय और सक्रियता बढ़ेगी। व्यापारी धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए गायत्री मंत्र का जाप करें।

अंर्तदशा :- केतु - चन्द्र
(03/06/2027 - 02/01/2028)

आपके लिए केतु महादशा 30/06/2025 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में चंद्रमा अंतर्दशा की अवधि 7 मास रहेगी जो आपके लिए 03/06/2027 से प्रारंभ होकर 02/01/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र मन, भावनाओं और माता का कारक है।

इस अवधि में आपका जीवन खुशियों से भरपूर रहेगा। घरेलू जीवन सुखी रहेगा। माता से संबंध मधुर रहेंगे। मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। धनी बनेंगे। पिता से लाभ हो सकता है। संतान सुखकारी होगी। दान-धर्म और अध्यात्म में मन लगेगा।

आपके जीवनसाथी की लंबी यात्राएं हो सकती है; वे भाग्यशाली और धनी रहेंगे। आपके पिता को साझेदारों से लाभ होगा, व्यापार में धनार्जन उत्तम होगा। माता के कार्य में कुछ बाधाएं आ सकती हैं, खर्चे बढ़ेंगे, व्यर्थ की यात्राएं हो सकती हैं।

आपके भाई-बहनों के लिए प्रसिद्धि, निवेश से लाभ, सुखी घरेलू जीवन, कला और खेलों में रुचि का संकेत है। आपकी संतान का ज्ञानार्जन उत्तम होगा, उनके बहुत मित्र होंगे, लोकप्रिय बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो सफल रहेंगे, धनार्जन उत्तम होगा; उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं के स्पर्धी प्रबल हो सकते हैं। व्यापारी भाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए चांदी, दूध और जल का दान करें।

अंर्तदशा :- केतु - मंगल
(02/01/2028 - 31/05/2028)

आपके लिए केतु की महादशा 30/06/2025 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी जो आपके लिए 02/01/2028 को प्रारंभ होकर 31/05/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल शारीरिक शक्ति, ऊर्जा और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। लक्ष्य प्राप्ति में सफल रहेंगे। विवाहित जीवन में कुछ तनाव हो सकता है मगर आप कूटनीति द्वारा बचाव कर सकते हैं। व्यापार द्वारा लाभ में वृद्धि होगी; व्यापार से संबंधित यात्राएं हो सकती हैं। शारीरिक क्षमता और ऊर्जा उत्तम होंगी। विरासत और जीवनसाथी के धन द्वारा लाभ हो सकता है। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

आपके जीवनसाथी का धनार्जन उत्तम होगा; व्यापार या साझेदारी में कुछ तनाव हो सकता है। आपके पिता को निवेश से लाभ होगा। माता सफल रहेंगी, उनकी तीर्थयात्रा हो सकती है, निवेश से लाभ होगा, उत्साह पर्याप्त रहेगा। आपके भाई-बहनों के लिए स्पर्धियों पर विजय, धन, उत्तम स्वास्थ्य, सफलता और प्रसिद्धि का संकेत है।

आपकी संतान अगर कार्यरत है तो प्रसिद्ध होगी, कार्यों में सफलता मिलेगी, पिता से लाभ होगा, यात्रा हो सकती है।

अगर आप सेवारत हैं तो अचानक लाभ हो सकता है; सहकर्मियों से लाभ होगा। परामर्शदाताओं को पहले की साख और निवेश से लाभ होगा। व्यापारियों की आय बढ़ेगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा, मगर अत्यधिक परिश्रम से बचाव करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए लाल मसूर, लाल वस्त्र और लाल चंदन का दान करें।

अंर्तदशा :- केतु - राहु
(31/05/2028 - 18/06/2029)

आपके लिए केतु महादशा 30/06/2025 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा 1 वर्ष 18 दिन की होगी जो आपके लिए 31/05/2028 को प्रारंभ होकर 18/06/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु दादा, अचानक घटने वाली घटना और भौतिक सुखों का कारक है।

इस अवधि में आपका धनार्जन उत्तम होगा, भौतिक सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। आत्मविश्वास में वृद्धि होगी, प्रसिद्धि प्राप्त होगी। अन्य लोग आपकी सहायता करेंगे; आप भी औरों की मदद करेंगे। विवाह हो सकता है। दृढ़प्रतिज्ञ होंगे। विवाहित जीवन में कुछ तनाव हो सकता है। विदेश यात्रा या व्यापार से संबंधित यात्रा संभव है।

आपके जीवनसाथी सफल और लोकप्रिय होंगे। आपके पिता को निवेश से लाभ होगा। माता कार्यक्षेत्र में प्रगति करेंगी, तीर्थयात्राएं होंगी, प्रसिद्ध बनेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए प्रभावशाली मित्र, आर्थिक प्रगति के अवसर, समृद्धि, इच्छाओं की पूर्ति, सौभाग्य का संकेत है।

आपकी संतान शिक्षा में प्रसिद्धि प्राप्त करेगी, परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो विवाह हो सकता है, उच्चपद मिलेगा, धनी बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो कुछ परिवर्तन हो सकते हैं, अचानक धनलाभ हो सकता है। परामर्शदाताओं की नींव मजबूत होगी, आय बढ़ेगी। व्यापारी विदेश जा सकते हैं, लाभ में वृद्धि होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शरीर के ऊपरी भाग के रोगों से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए हनुमानजी की पूजा करें।

अंर्तदशा :- केतु - गुरु
(18/06/2029 - 25/05/2030)

आपके लिए केतु महादशा 30/06/2025 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में बृहस्पति अंतर्दशा की अवधि 11 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 18/06/2029 को प्रारंभ होकर 25/05/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति ज्ञान, धन और संतान का कारक है।

इस अवधि में आप धनी और प्रसन्न होंगे। आय उत्तम होगी। शिक्षा में सफलता मिलेगी। पारिवारिक जीवन प्रसन्नतापूर्ण रहेगा। अध्यात्म में रुचि हो सकती है। शिशु का जन्म हो सकता है। परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर अविवाहित हैं तो विवाह हो सकता है। विवाहित जीवन सुखी रहेगा। आप धनी बनेंगे, पिता से लाभकारी संबंध रहेंगे, दान-धर्म में रुचि लेंगे।

आपके जीवनसाथी को कार्यों में सफलता मिलेगी। आपके पिता की धर्म में रुचि होगी। माता सफल होंगी, धनी बनेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए धन के संचय और इच्छाओं की पूर्ति का संकेत है।

आपकी संतान को परीक्षा में सफलता मिलेगी, ज्ञानार्जन उत्तम होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी, सफल और भाग्यशाली होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो कुछ परिवर्तन हो सकते हैं। परामर्शदाताओं की आय बढ़ेगी, धनी बनेंगे। व्यापारियों का धनार्जन उत्तम होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए पीली वस्तुएं, दाल, हल्दी या शहद दान में दें।

अंर्तदशा :- केतु - शनि
(25/05/2030 - 04/07/2031)

आपके लिए केतु महादशा 30/06/2025 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 9 दिन होगी। यह अंतर्दशा 25/05/2030 को प्रारंभ होकर 04/07/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि भाग्य और सेवा का कारक है।

इस अवधि में आपकी आय बढ़ेगी, संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। जिंदगी आराम से कटेगी। जीवनसाथी या साझेदार के माध्यम से लाभ हो सकता है। तंत्र-मंत्र और गुप्त विद्या में रुचि हो सकती है। धनागम उत्तम होगा, धनी बन सकते हैं। भूमि और वाहन का सुख मिलेगा। प्रसिद्धि बढ़ेगी, धनागम होगा, सम्मान और पद में उन्नति होगी। इच्छाएं पूर्ण होंगी।

आपके जीवनसाथी के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकता है। आपके पिता को स्पर्धियों पर सफलता मिलेगी; उन्हें अधीनस्थ कर्मचारियों का सहयोग मिलेगा। माता का धनार्जन उत्तम होगा, निवेश से लाभ होगा। आपके भाई-बहनों के लिए कार्यों में बाधा, अचल

महादशा :- शुक्र
(30/06/2032 - 30/06/2052)

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 30/06/2032 को आरम्भ होकर 30/06/2052 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है।

शुक्र नवम भाव में स्थित है। यह एक शुभ ग्रह है, और संगीत, नाटक और आनन्द का द्योतक है। यह दो राशियों वृष और तुला का स्वामी है। यह कन्या राशि में निम्न का जबकि

मीन राशि में उच्च का होता है। यह विवाह का कारक भी है। नवम भाव में स्थित होकर यह आपकी जन्म कुण्डली के तृतीय भाव को देख रहा है और इस भाव पर शुभ प्रभाव डाल रहा है। भाव जिसमें यह स्थित है अर्थात् तृतीय भाव विश्वास, भाग्य, धार्मिक तथा अध्यात्मिक आस्था, ध्यान, त्याग, दान, पिता, गुरु, लम्बी यात्रा, उच्च शिक्षा, विदेश यात्रा का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी शुक्र नवम भाव में स्थित है जिसके फल स्वरूप आपको कोई क्षति नहीं होगी तथा आप बिना किसी समस्या के एक स्वस्थ और खुशहाल जीवन व्यतीत करेंगे।

अर्थ-संपत्ति :

शुक्र नवम भाव में स्थित है जिसके फलस्वरूप आपको इस दशा काल में चल तथा अचल सम्पत्ति अर्जित करने का अवसर मिलेगा। आप अपने कर्म और पिता सहित गुरु जनों के आशीर्वाद से काफी धन एकत्र कर पाएँगे।

व्यवसाय :

शुक्र नवम् भाव में स्थित है जिसके फलस्वरूप आप अपने पारिवारिक व्यवसाय को जारी रखेंगे। आप भाग्यशाली हैं, आपको ख्याति मिलेगी, शिक्षा-प्रशिक्षण आपके पारिवारिक व्यवसाय को बड़े स्तर में ले जाने में सहायक होगा।

आप विदेश यात्रा कर सकते हैं।

पारिवारिक जीवन :

नवम भाव में स्थित शुक्र के फलस्वरूप आपके पिता दीर्घायु और समृद्धिशाली होंगे। आपकी दान-पुण्य के कार्यों में रुचि हो सकती है। आप अपने परिवार की परंपरा का निर्वाह करते हुए धनोपार्जन करेंगे। आपके जीवन साथी आपके सहयोगी होंगे। और परिवार को एकरूपता से प्रगति के पथ पर ले जाएंगे। आपके बच्चे आज्ञाकारी होंगे और आपके पदचिह्नों का अनुसरण करेंगे।

अंर्तदशा :- शुक्र - शुक्र
(30/06/2032 - 30/10/2035)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 30/06/2032 को प्रारंभ होकर 30/06/2052 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 3 वर्ष 4 मास की होगी। आपके लिए यह 30/06/2032 को प्रारंभ होकर 30/10/2035 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है। शुक्र शुभ ग्रह है। नवम भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के 3रे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपका व्यवहार नीतिपूर्ण रहेगा, वाणी मृदु होगी। विपरीत लिंग के व्यक्तियों से संबंध बिगड़ सकते हैं, जिससे धनहानि संभव है।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए निम्न उपाय करें :

- चींटिओं को चीनी और आटा खिलाएं।
- कन्याओं को खीर खिलाएं।
- लक्ष्मीजी की उपासना करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - सूर्य
(30/10/2035 - 30/10/2036)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष की होगी। आपके लिए यह 30/06/2032 को प्रारंभ होकर 30/06/2052 को समाप्त होगी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 1 वर्ष की होगी जो 30/10/2035 को प्रारंभ होकर 30/10/2036 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव आत्मीय संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन में खतरों का परिचायक है। सूर्य आत्मा और पिता का कारक है और एक शक्तिशाली ग्रह है। सप्तम भाव में स्थित होकर सूर्य कुंडली में लग्न पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में सरकारी अधिकारी आपसे अप्रसन्न रह सकते हैं। अपमान से बचाव करें। चरित्र की रक्षा करें अन्यथा स्त्रियों के कारण बेइज्ज़ती हो सकती है। मित्रों की संख्या में कमी होगी क्योंकि आपकी किसी से नहीं बनेगी। यात्राएं खूब होंगी। इस सबके बावजूद आपका व्यवहार संतुलित रहेगा।

कोई चोट लग सकती है, अतः आवश्यक सावधानियां बरतें।

अरिष्ट से बचाव के लिए 5 से 9 रत्ती के माणिक की सोने या तांबे की अंगूठी दाहिने हाथ की अनामिका में रविवार के दिन प्रातःकाल सूर्य की प्रार्थना और सूर्य नमस्कार के

उपरांत धारण करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - चन्द्र
(30/10/2036 - 30/06/2038)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष है। आपके लिए यह 30/06/2032 को प्रारंभ हुई थी और 30/06/2052 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 8 मास की होगी जो आपके लिए 30/10/2036 से प्रारंभ होकर 30/06/2038 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्री में तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है।

चंद्रमा मष्तिष्क और माता का कारक है।

तृतीय भाव में स्थित होकर चंद्रमा कुंडली के नवम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप साहसी, बुद्धिमान और ज्ञानवान बनेंगे। मष्तिष्क समस्याओं का सामना करने में सक्षम रहेगा। नये नये लाभदायक विचार मन में आएंगे। ज़िम्मेदारियों का निर्वाह अच्छी प्रकार से करेंगे। व्यक्तित्व में निखार आएगा, साहसी होंगे, कार्यक्षेत्र में प्रगति होगी।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए चंद्र के वैदिक मंत्र के 11000 जाप करें। शाम को चंद्रोदय के समय चंद्रमा को कच्चा दूध चंद्र मंत्र का उच्चारण करते हुए अर्पित करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - मंगल
(30/06/2038 - 31/08/2039)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 30/06/2032 को प्रारंभ होकर 30/06/2052 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 14 मास रहेगी। यह 30/06/2038 को प्रारंभ होकर 31/08/2039 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्री में प्रथम भाव में स्थित है। प्रथम भाव शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है।

मंगल अग्निप्रधान ग्रह है और ऊर्जा का द्योतक है।

प्रथम भाव में स्थित होकर मंगल आपकी कुंडली के 4, 7 और 8 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप ऊर्जावान, महत्वाकांक्षी और दुःसाहसी हो सकते हैं। दुर्घटना के

विरुद्ध सावधानी आवश्यक है। विवेकपूर्ण व्यवहार आवश्यक है, अन्यथा घरेलू जीवन विचलित हो सकता है। जीवनसाथी या व्यापार में साझेदार का व्यवहार क्रोधपूर्ण हो सकता है।

प्रथम भाव में मंगल की स्थिति के कारण आप मंगली हैं अतः विवाह करते समय ध्यान रखें कि जीवनसाथी भी मांगलिक हो, अन्यथा विवाहित जीवन में सुख कम हो सकता है या जीवनसाथी की मृत्यु भी संभव है।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें और हनुमान मंदिर में दर्शन करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - राहु
(31/08/2039 - 30/08/2042)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष है। आपके लिए यह 30/06/2032 को प्रारंभ होकर 30/06/2052 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा 3 वर्ष की होगी। आपके लिए यह 31/08/2039 को प्रारंभ होकर 30/08/2042 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में लग्न में स्थित है। लग्न शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है।

राहु छाया ग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती है और न ही यह किसी राशि का स्वामी होता है। इसका शुभ/अशुभ प्रभाव इसकी स्थिति, भाव और राशि के अनुसार होता है।

प्रथम भाव में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के 7वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अंतर्दशा की अवधि में आप अध्ययनशील होंगे, मगर स्वास्थ्य निर्बल हो सकता है। जीवन में अजीब घटनाएं घट सकती हैं। विवाहित जीवन में कठिनाई आ सकती है। आप स्वार्थी या शक्की स्वभाव के हो सकते हैं। पापकर्म में लिप्त हो सकते हैं।

अरिष्ट से बचाव के लिए राहु के वैदिक मंत्र के 18000 जाप करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - गुरु
(30/08/2042 - 30/04/2045)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 30/06/2032 को आरंभ हुई थी और 30/06/2052 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 30/08/2042 को प्रारंभ होकर 30/04/2045 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में प्रथम भाव में स्थित है। प्रथम भाव शारीरिक

बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है।

बृहस्पति शुभ ग्रह है। प्रथम भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 5, 7, 9 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप बुद्धिमान और धनी बनेंगे। विद्वता के कारण समाज में इज्ज़त बढ़ेगी। वाहन सुख रहेगा। व्यायाम करने के कारण स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। लग्न में स्थित बृहस्पति बहुत शुभ समझा जाता है, अतः यह दशा बहुत शुभ रहेगी।

शुभत्व में वृद्धि के लिए बृहस्पति के उपाय करें। पीपल वृक्ष पर विशेषकर बृहस्पतिवार को बृहस्पति का मंत्र पढ़ते हुए जल छिड़कें।

अंर्तदशा :- शुक्र - शनि
(30/04/2045 - 30/06/2048)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती हैं। आपके लिए यह 30/06/2032 को प्रारंभ हुई थी और वद 30/06/2052 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 30/04/2045 को प्रारंभ होकर 30/06/2048 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में द्वितीय भाव में स्थित है। द्वितीय भाव भाग्य, लाभ-हानि, सांसारिक उपलब्धियां, रत्न, वाणी, दायीं आंख, महत्वाकांक्षा, जीभ, दांत और परिवार के सदस्यों का प्रतिनिधि है।

इस अवधि में आपकी आय में कमी आ सकती है; कष्ट बढ़ेंगे। परिश्रम अधिक करने पर भी आमदनी कम होगी। वाणी कटु होगी, समाज से कट कर रहेंगे, मुख पर दुख का भाव होगा, बिना उद्देश्य के इधर-उधर भटकेंगे। आपको तरक्की के कई अवसर मिलेंगे, मगर फ़ायदा उठाने में असफल रहेंगे। पारिवारिक जीवन दुखी हो सकता है। धातु, भंडारण, खनन और श्रमिकों से संबंधित व्यवसाय में लाभ होगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए नौमुखी रुद्राक्ष चांदी में जड़वाकर दाहिने हाथ की मध्यमा अंगुली में शनिवार के दिन शिवजी की प्रार्थना और शनि वैदिक मंत्र के जाप के बाद धारण करें।

एस्ट्रोग्राफ

एस्ट्रोग्राफ, जीवन के किसी भी पहलू की ग्राफ द्वारा प्रस्तुति है। इससे स्वास्थ्य, आर्थिक, बुद्धि, प्रेम या अन्य किसी भी क्षेत्र में, एक समय के दौरान, होने वाली घटनाओं में रूचि रखने वालों को जानकारी मिलती है। एस्ट्रोग्राफ हमें सही रूप जानने और उन्हें आसानी से समझने में सहायक होते है।

अगले पृष्ठों में आपके जीवन के तीन महत्वपूर्ण पहलू - स्वास्थ्य, धन तथा मानसिक स्तर एस्ट्रोग्राफ द्वारा दिखाये गये हैं। ये एस्ट्रोग्राफ 100 मापक्रम के अनुसार हैं।। यदि आपका एस्ट्रोग्राफ 50 से अधिक अंक दिखाता है तो वह शुभ है। 65 से ऊपर बहुत अच्छा होता है और 80 से ऊपर अति उत्तम होता है। 50 से नीचे सामान्य होता है, 35 से नीचे बुरा तथा 20 से नीचे बहुत बुरा माना जाना चाहिए।

0-20	निकृष्ट	50-65	श्रेष्ठ
20-35	नेष्ट	65-80	उत्तम
35-50	सामान्य	80-100	अत्युत्तम

एस्ट्रोग्राफ - 2026

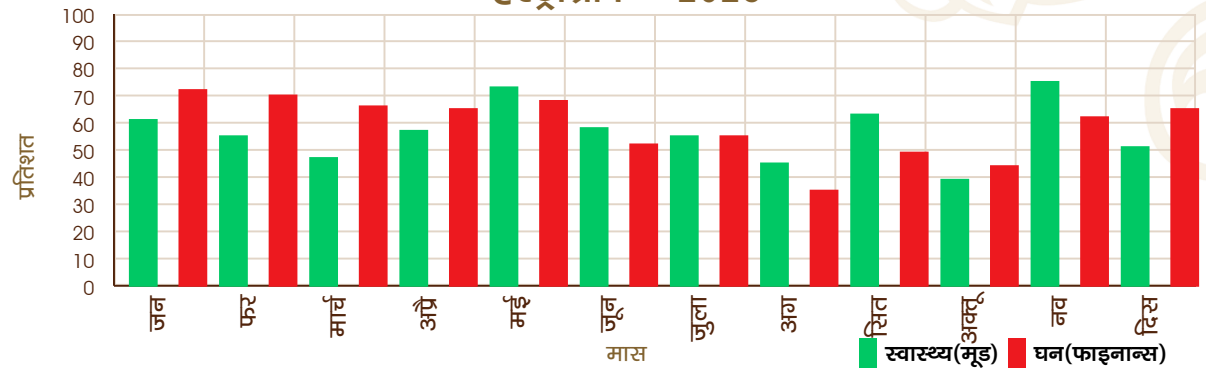

एस्ट्रोग्राफ - 2027

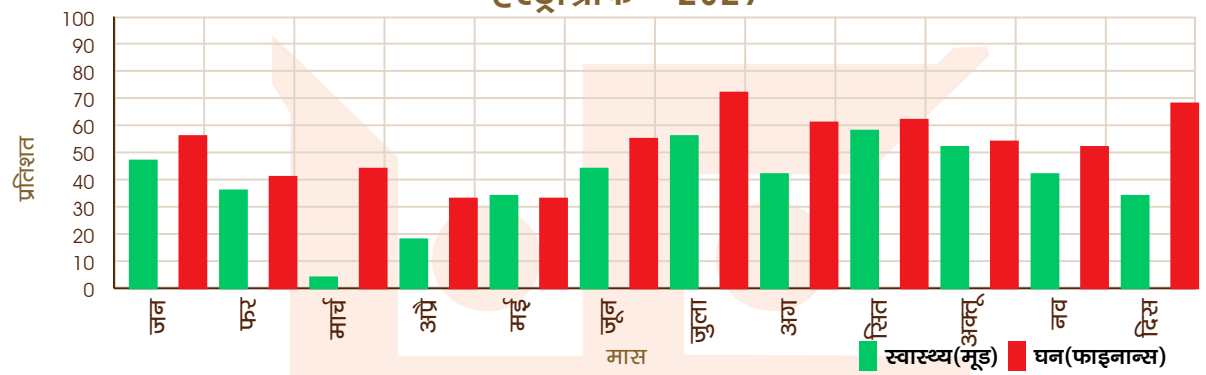

एस्ट्रोग्राफ - 2028

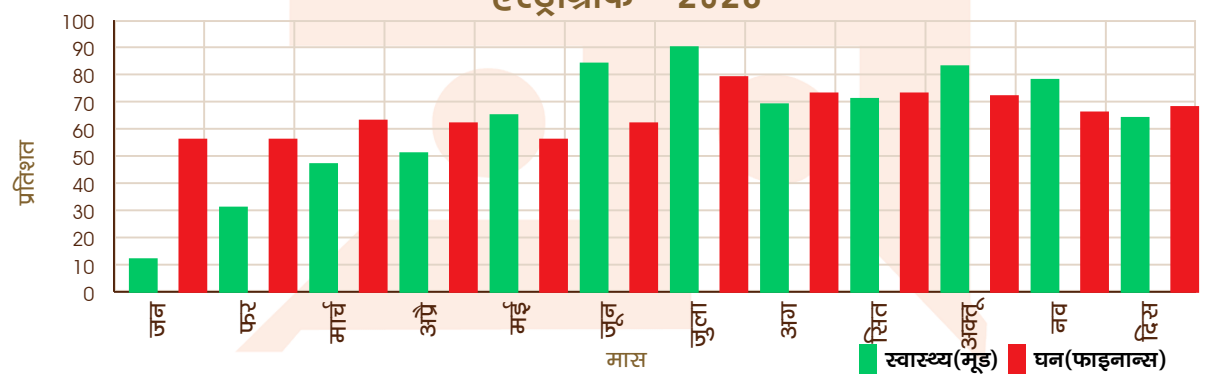

एस्ट्रोग्राफ - 2029

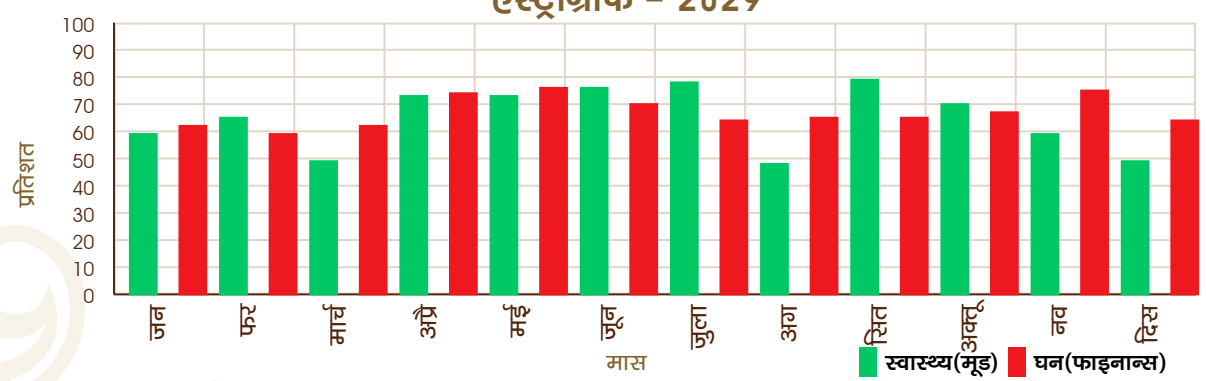

एस्ट्रोग्राफ - 2030

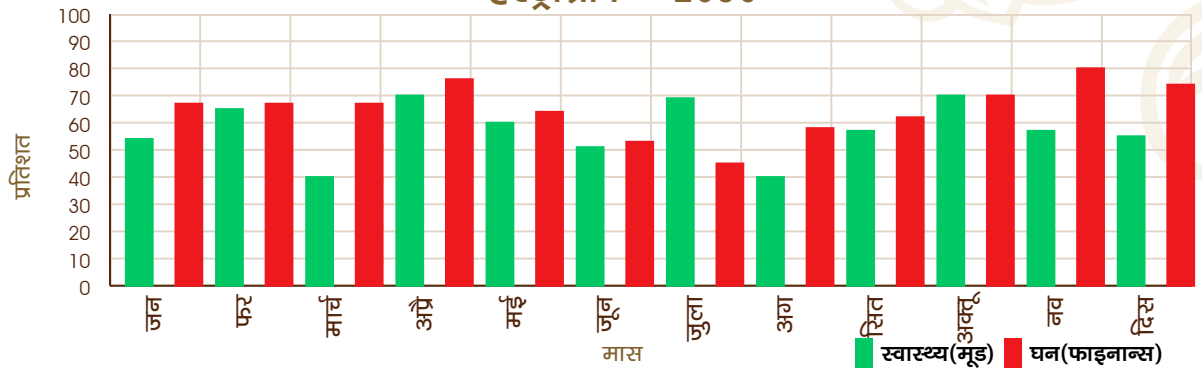

एस्ट्रोग्राफ - 2031

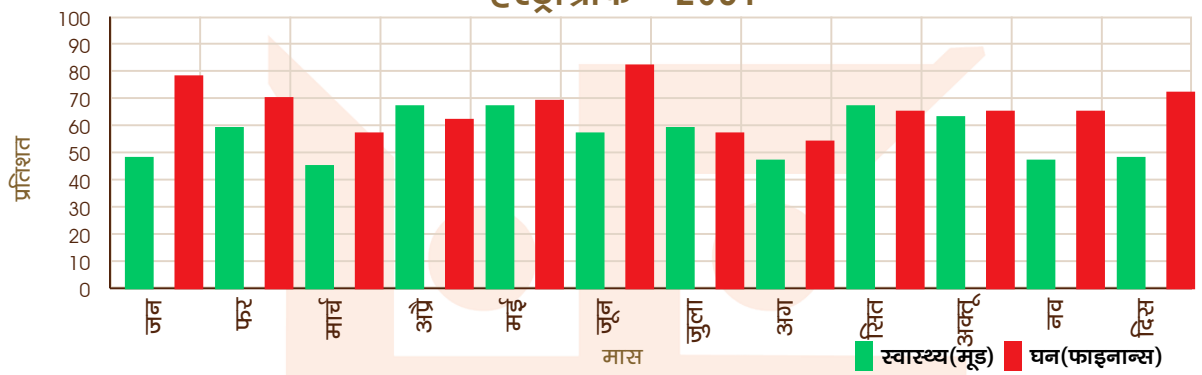

एस्ट्रोग्राफ - 2032

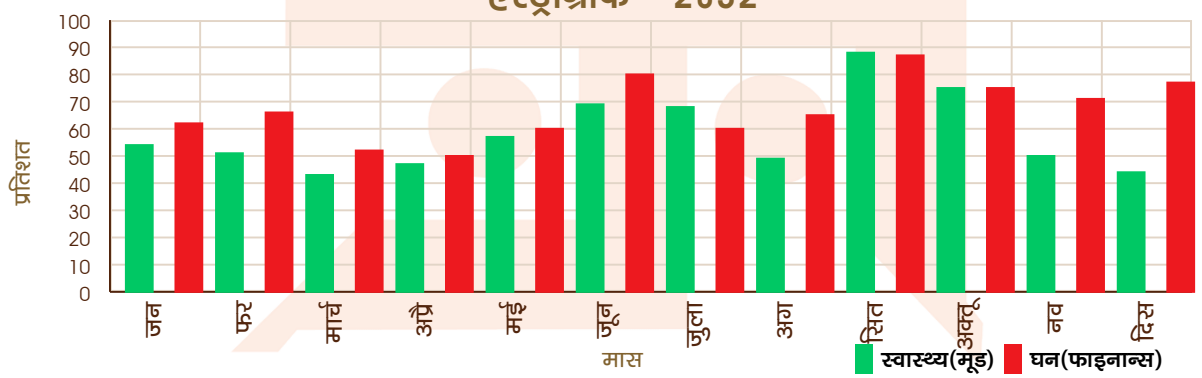

एस्ट्रोग्राफ - 2033

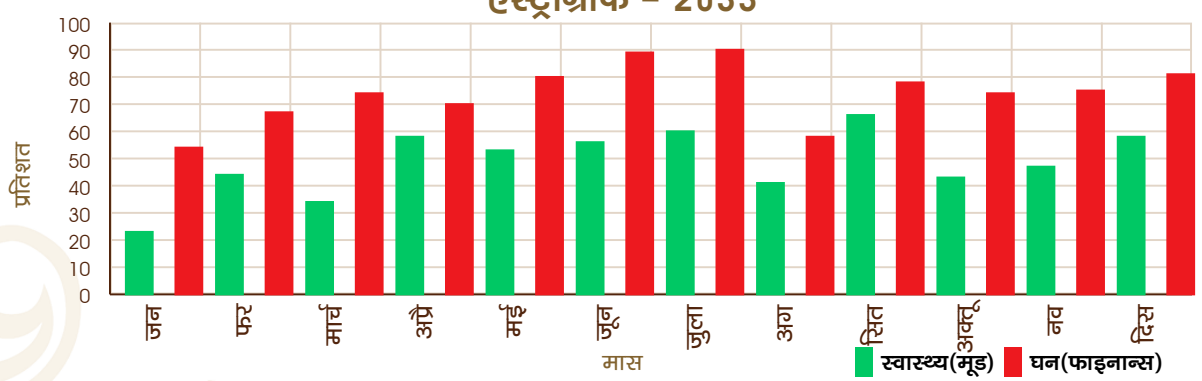

एस्ट्रोग्राफ - 2034

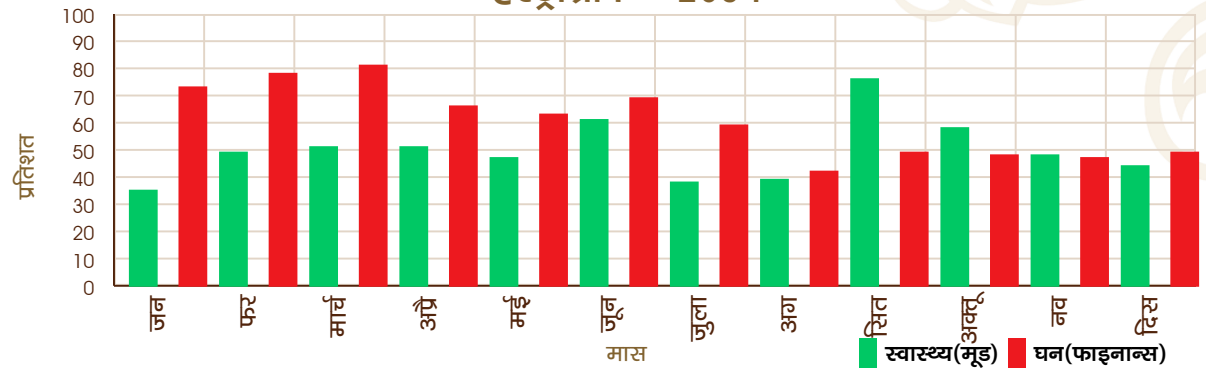

एस्ट्रोग्राफ - 2035

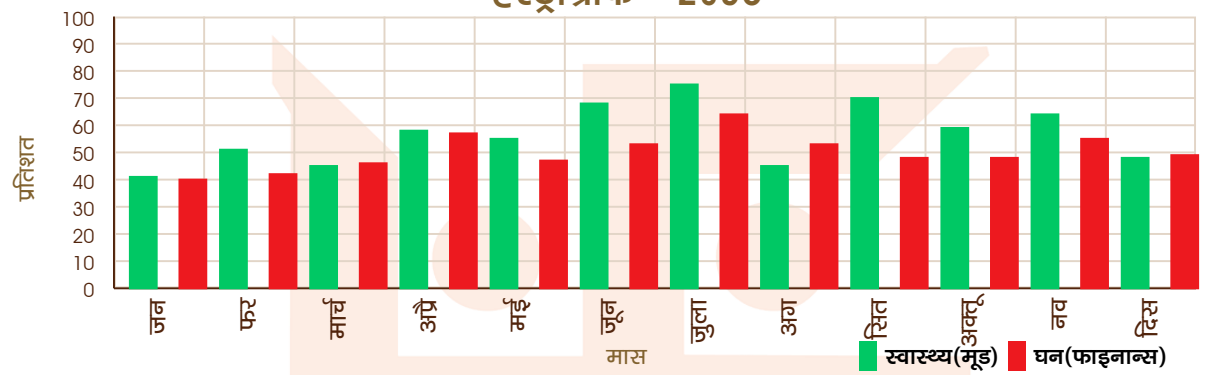

एस्ट्रोग्राफ - 2036

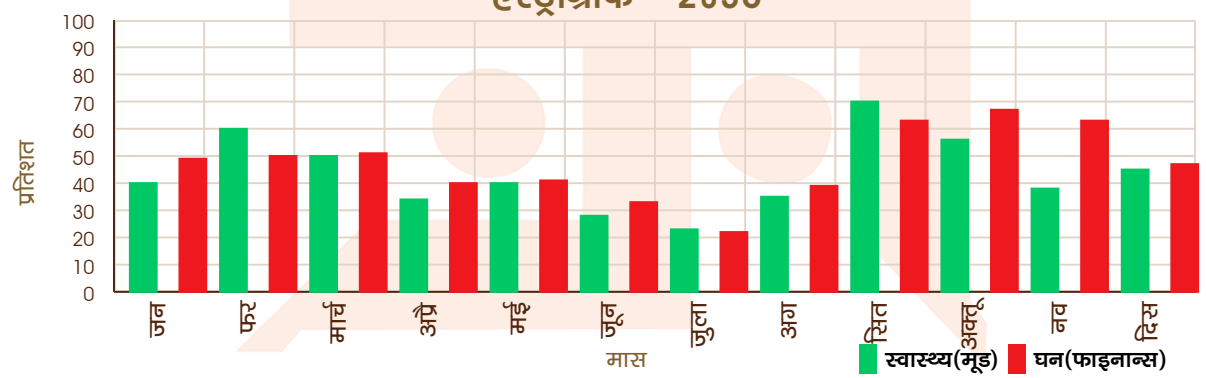

एस्ट्रोग्राफ - 2037

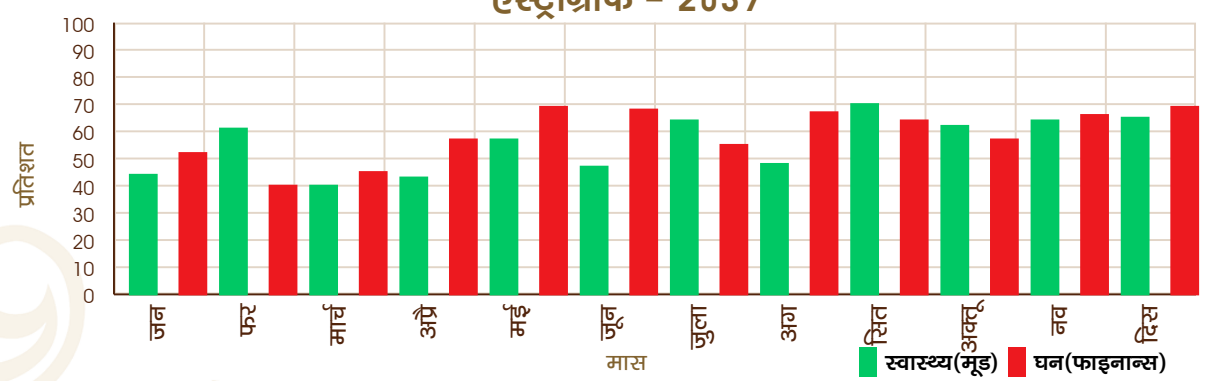

एस्ट्रोग्राफ - 2038

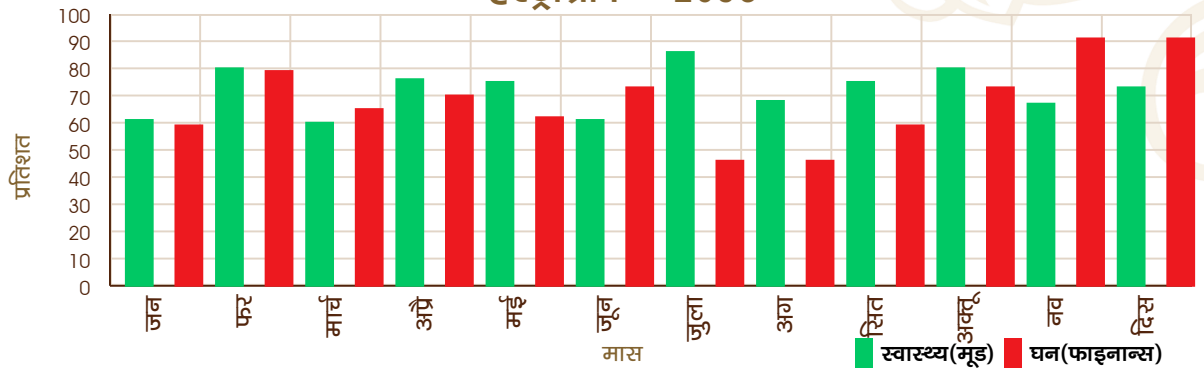

एस्ट्रोग्राफ - 2039

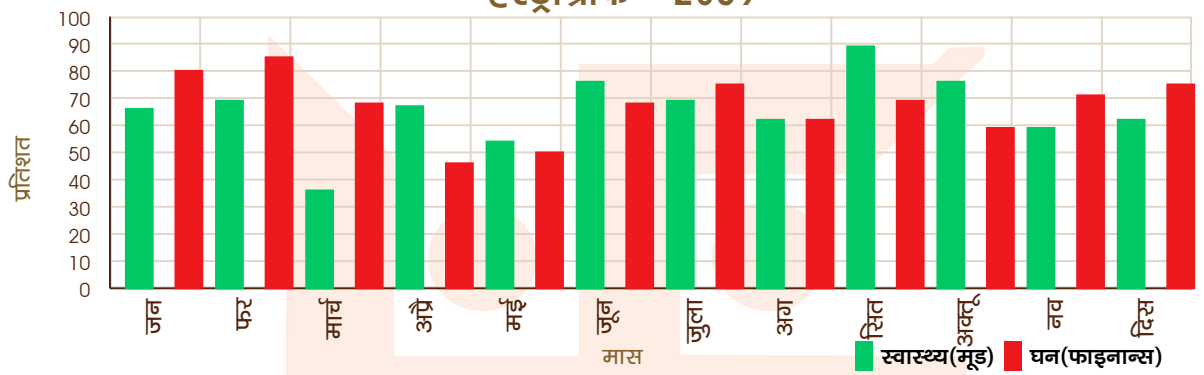

एस्ट्रोग्राफ - 2040

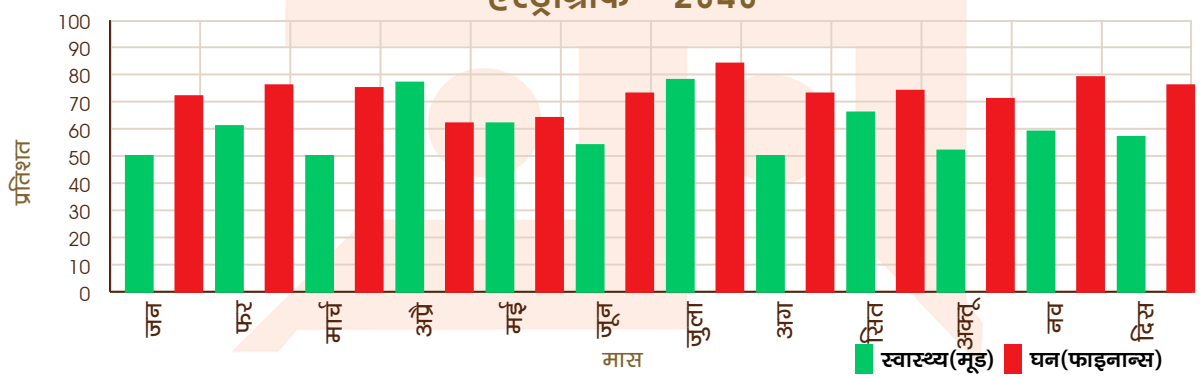

एस्ट्रोग्राफ - 2041

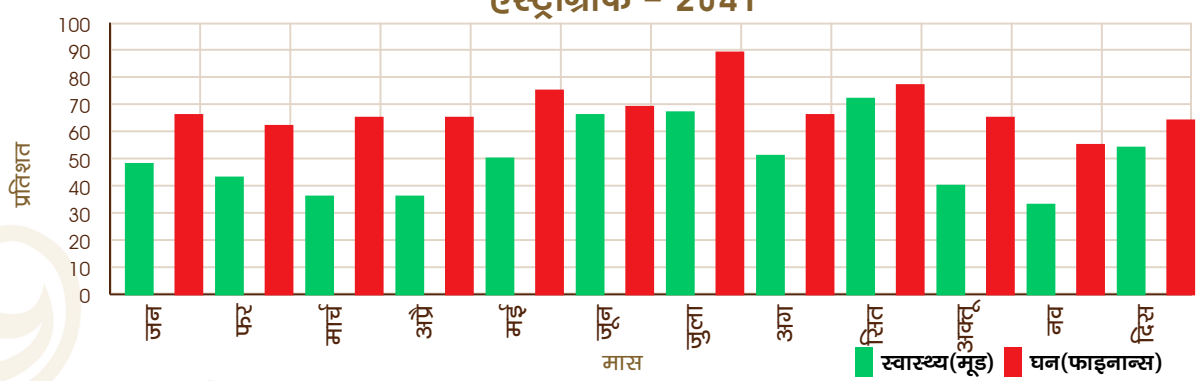

एस्ट्रोग्राफ - 2042

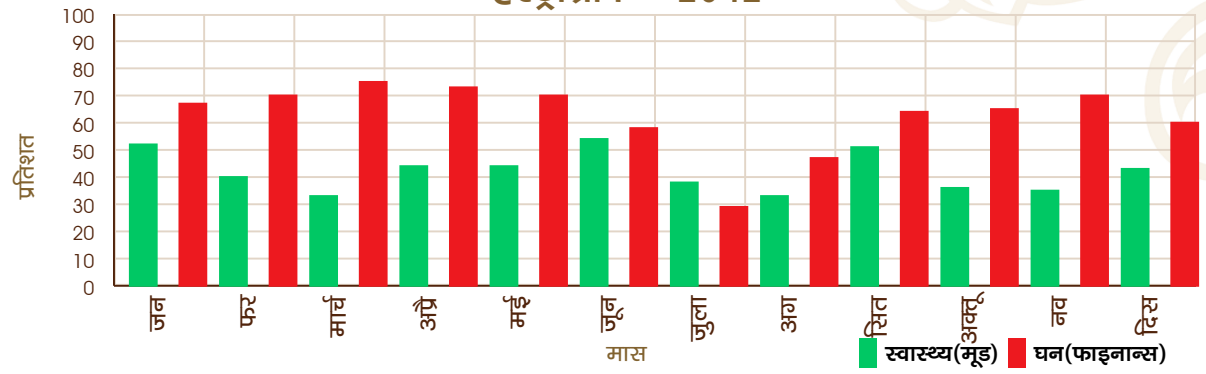

एस्ट्रोग्राफ - 2043

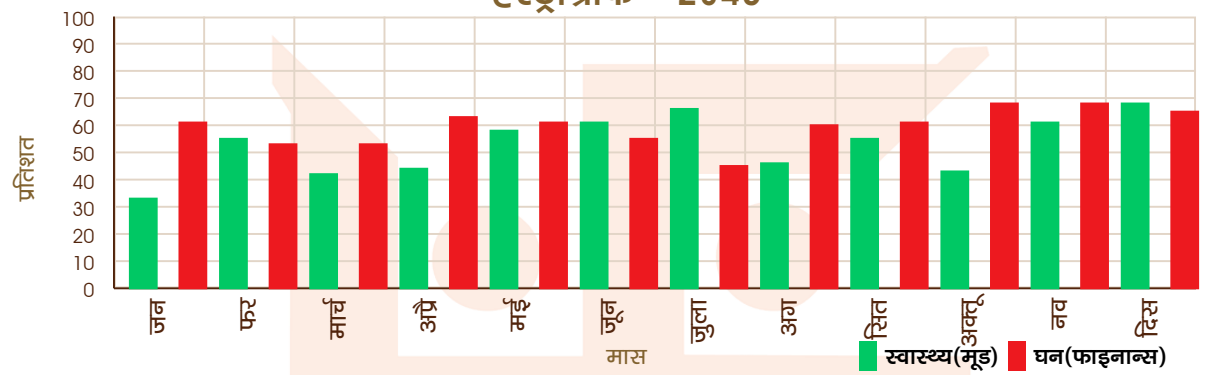

एस्ट्रोग्राफ - 2044

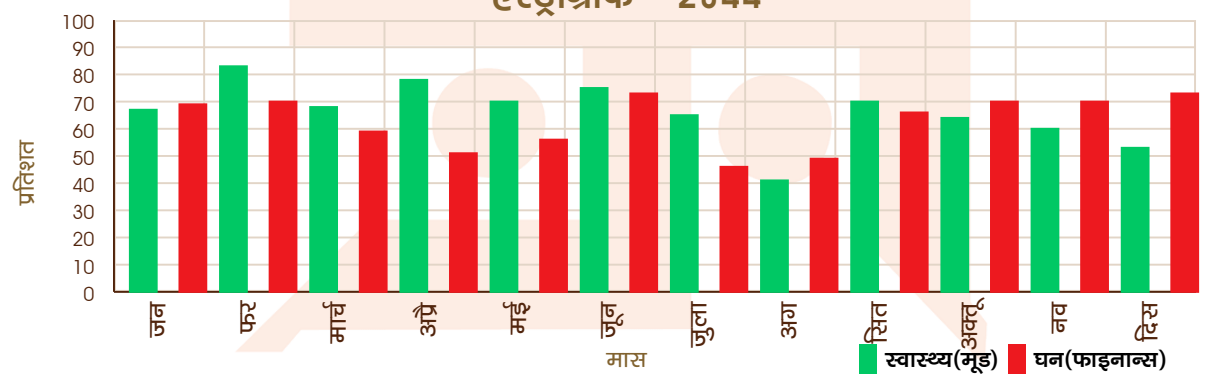

एस्ट्रोग्राफ - 2045

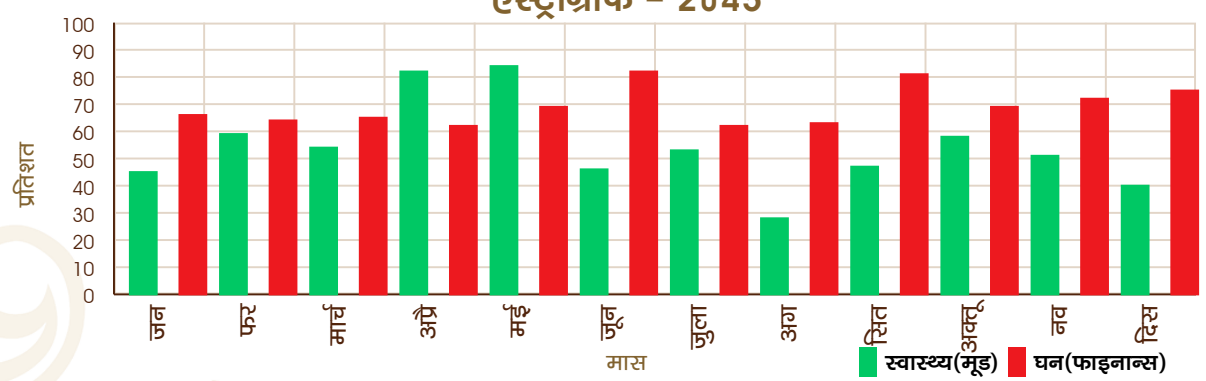

योग

महादान योग

दानाधिपेन संदृष्टे लग्ने तन्नायकेपि वा ।
तस्मिन्केन्द्रत्रिकोणस्थे महादानकरो भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.7/भाव-9/श्लोक-4

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश पर या लग्न पर नवमेश की दृष्टि हो वह नवमेश भी केन्द्र या त्रिकोण में हो तो जातक महादानी होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,सूर्य योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप हाथी-घोड़ा दान, तुलादान तथा महादान करेंगे। आप महादानी होंगे।

अनफा योग

अनफा रविरहितैः।
अन्त्ये कैरववनबान्धवाद्विहगैः।।
वाग्मीप्रभुर्द्रविणवानगदः सुशीलो
भोक्तान्नपानकुसुमाम्बरकामिनीनाम्।
ख्यातः समाहितगुणः सुखशस्तचित्तो
योगे निशाकरकृते त्वनफे सुवेषः।।
।। सारावली ।। अ. 13/श्लोक 1, 5।।

यदि जन्मकुंडली में चंद्रमा से द्वादश भाव में सूर्य रहित कोई ग्रह हो तो अनफा योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शनि,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप कुशलवक्ता, सामर्थ्यवान्, धनवान्, नीरोग, सुन्दर शीलवान् अन्नपानपुष्पवस्त्र व स्त्री का सुख भोगने वाले, गुणी, सुखी तथा सुन्दर वेशभूषा वाले होंगे।

भ्रातृवृद्धि योग

भ्रातृपे कारके वापि शुभयोगनिरीक्षिते ।
भावे वा बलसंपूर्णे भ्रातृणां वर्धनं भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो. -16 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीय स्थान तथा तृतीय भाव कारक शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट हो एवं पूर्णबली हो तो भाइयों की वृद्धि होती है।

योग कारक ग्रह : बुध,गुरु,चंद्र,शुक्र,मंगल योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके भाइयों में वृद्धि हो, ऐसा प्रतीत होता है।

कर्णरोग योग

तृतीयनाथे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदन्ति कर्णोद्भवरोगमत्र ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-49 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो कर्णरोग होता है।

योग कारक ग्रह : राहु,शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है फलस्वरूप आपको कर्णरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

दीर्घायु भ्रातृ योग

।। भारतीय ज्योतिष ।। पृ.-285।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीय भाव में शुभग्रह हो तो दीर्घायु भाई होते हैं।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके भाई दीर्घायु होंगी, ऐसा प्रतीत होता है।

सर्प भय योग

।। भारतीय ज्योतिष ।। पृ.-285।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश राहु स्थित राशि पद से युक्त हो अथवा लग्न राहु युक्त हो तो जातक को सर्प का भय होता है।

योग कारक ग्रह : राहु योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको सर्प का भय होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

उच्च प्रासाद (भवन) प्राप्ति योग

तृतीये सौम्यसंयुक्ते गृहेशे स्वबलान्विते ।
तदीशे बलसंपूर्णे हर्म्यप्राकारमण्डितम् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-59 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तीसरे भवन में शुभ ग्रह स्थित हो, चतुर्थेश अपने बल से पूर्ण हो तृतीयेश बलिष्ठ हो तो विशाल भवन प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको महल (भवन) सुख प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

मातृस्नेह योग

यदा लग्नसुखेशौ वा मित्रभूतौ परस्परम् ।
शुभेक्षितौ शुभैर्युक्तौ मातृस्नेहं विनिर्दिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-148 ।।

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश चतुर्थेश परस्पर मित्र हों, शुभ ग्रहों से युक्त और दृष्ट हो तो माता का विशेष स्नेह प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,सूर्य योग की संभावना : 36 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको अपनी माता का विशेष स्नेह प्राप्त हो ऐसा प्रतीत होता है।

मातृस्नेह योग

लग्नेश्वरेण संदृष्टे मातृनाथे चतुष्टये ।
शुभग्रहान्विते दृष्टे मातृस्नेहं विनिर्दिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-149 ।।

यदि जन्मपत्रिका में चतुर्थेश केंद्र में लग्नेश से दृष्ट शुभ ग्रह युक्त वा दृष्ट हो तो जातक को माता से पूर्ण स्नेह प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,गुरु,मंगल,सूर्य योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको माता का पूर्ण स्नेह प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

सुन्दर भवन प्राप्ति योग

तृतीये सौम्यसंयुक्ते गेहेशे स्वबलान्विते ।
लग्नेशे बलसंपूर्णे हर्म्यं प्राकारसंयुतम् ।।
।। जातकपारिजात ।। अ.12/श्लो.-148 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीय भाव में शुभ ग्रह हो, चतुर्थेश बलिष्ठ हो और लग्नेश पूर्ण बली हो तो जातक को सुंदर भवन प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,सूर्य,मंगल योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको सुंदर भवन प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

पुत्रनाश योग

पापमध्ये तु यद्भावे तदीशेऽपि तथा स्थिते ।
कारके पापसंयुक्ते पुत्रनाशं वदेत्तदा ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-14 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचम भाव या पंचमेश पाप ग्रहों के बीच हो, तथा संतान कारक ग्रह भी पाप युक्त हो तो पुत्रनाश योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,राहु,गुरु योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको संतान सुख में बाधा हो ऐसा प्रतीत होता है।

बुद्धिमान् तथा नीतिमान् योग

बुद्धिस्थानाधिपे सौम्ये शुभदृष्टिसमन्विते ।
शुभग्रहाणां क्षेत्रे वा बुद्धिमान्नीतिमान् भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-32।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश शुभग्रह शुभ ग्रहों से दृष्ट हो या शुभग्रह की राशि में हो तो बुद्धिमान् तथा नीतिमान् योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध,गुरु योग की संभावना : 36 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप बुद्धिमान् तथा नीतिमान् होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

तीव्रबुद्धि योग

बुद्धिस्थानाधिपस्यांशराशीशे शुभवीक्षिते ।
वैशेषिकांशके वापि तीव्रबुद्धिं समादिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-35 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश जिसके नवांशक में हो वह शुभ ग्रह से दृष्ट अथवा वैशेषिकांश में हो तो तीव्र बुद्धि योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप तीव्र बुद्धि के होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

दन्त रोग योग

वाक्स्थानपे षष्ठगते सराहौ राहुस्थितर्क्षाधिपसंयुते वा।
दन्तस्य रोगं पतनं च तेषां भुक्तौ तयोर्वा प्रवदन्ति तज्ज्ञाः।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.- 3/श्लो.-113।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वितीयेश राहु के साथ षष्ठ स्थान में हो अथवा राहु जिस राशि में है उसके स्वामी से युक्त हो तो उसकी दशान्तर्दशा में दातों का रोग होता है तथा दन्तहीन हो जाता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,बुध योग की संभावना : 72 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके जब राहु स्थित भावस्वामी की दशान्तर्दशा आएगी तब दन्त रोग होकर आपको दन्तहीन कर देगा। ऐसा प्रतीत होता है।

तालु रोग योग

तदीश्वरेणापि युतेन्दुपुत्रे सराहुकेतावरिभायुक्ते।
राहुस्थितर्क्षाधिपसंयुते वा भुक्तौ तदा तालुभवः स रोगः।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-3/श्लो.-116।।

यदि जन्मकुंडली में द्वितीयेश से युक्त बुध राहु या केतु सहित षष्ठस्थान में हो अथवा जिस राशि में राहु है उसके स्वामी से युक्त हो तो तालु स्थान में रोग द्वितीयेश की दशा में होती है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,बुध योग की संभावना : 864 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको

उपर्युक्त ग्रहों की दशा का काल में तालु स्थान में रोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

शिर मुख या गुल्म रोग योग

बलहीनेऽरिनाथे वा लग्नस्थे वा धरासुते।
मूर्धार्तिर्मुखरोगो वा गुल्मविद्रधिभाग्भवेत्।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि-अ.-5/श्लो.-42 ।।

यदि जन्मकुंडली में षष्ठेश निर्बल हो या लग्नस्थ हो अथवा लग्न में मंगल हो तो शिर में पीड़ा या मुखरोग अथवा गुल्मरोग होता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको शिर रोग, मुखरोग या गुल्म रोग से पीड़ित होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

स्वर्गनिवास योग

भृगुसुतः स्वर्गसम्प्रापयेत्प्राणिनः ।
सम्बन्धाद्व्ययनायकास्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में शुक्र स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यिद उस नवांश में शुक्र हो या द्वादश स्थान के स्वामी शुक्र से संबंध स्थापित करता हो तो जातक स्वर्ग में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप

मरणोपरांत स्वर्ग में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुस्त्री-कुटुम्बी योग

कलत्रे भानौ कुटुम्बी बहुदारसक्तः ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ-6/श्लो.-3 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तम स्थान में सूर्य स्थित हो तो जातक बहुत कुटुम्ब वाला तथा बहुस्त्री वाला होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप बहु कुटुम्बी तथा आपके कई जीवनसाथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-14।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : सूर्य,केतु,बुध योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्यायोग

कलत्रेशे बहुगुणे तुङ्गवक्रादिहेतुभिः ।
बहुभार्यं नरं विद्यादुदयर्क्षगतेऽपि वा।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-15 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश उच्च वक्र आदि बहुत गुणों से युक्त हो अथवा लग्नस्थ हो तो मनुष्य बहुत स्त्रियों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके अधिक जीवनसाथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

विवाहोपरान्त भाग्योदय योग

भाग्यं विवाहत्परतो वदन्ति शुक्रेस्तगे चोपचयान्विते वा ।
कुटुम्बमेतादृशभावयुक्ते लग्नेश्वरे वा शुभदृष्टियोगे ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-62 ।।

जन्मपत्रिका में यदि शुक्र सप्तम में हो अथवा उपचय 3/6/11/10 स्थानों में हो अथवा द्वितीयस्थ हो अथवा लग्नेश इन भावों में से किसी भी स्थान में हो एवं शुभ ग्रह द्वारा निरीक्षित हो तो विवाहोपरांत भाग्योदय होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,बुध,गुरु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका भाग्योदय विवाहोपरांत होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विभार्या योग

रन्ध्रेशेंगे अस्ते द्विभार्यः।।
।। बृहद्योग रत्नाकर ।। पृ. 302 ।।

यदि जन्मपत्रिका में अष्टमेश लग्न में अथवा सप्तमभाव में स्थित हो तो द्वि भार्या योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो विवाह हो, ऐसा प्रतीत होता है।

द्विभार्या योग

पापाः सप्तमे द्विभार्यः।
।। बृहद्योग रत्नाकर ।। पृ. 303 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तम भाव में पाप ग्रह हो तो द्विभार्या योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,केतु योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके जीवन में दो जीवनसाथी आएगें, अर्थात आपके दो विवाह हो, ऐसा प्रतीत होता है।

धर्म के कारण धन व्यय योग

शुभेन कर्मनाथेन दृष्टे युक्ते व्ययेश्वरे ।
स्वोच्चामित्रस्ववर्गस्थ धर्ममूलाद्धनव्ययः ।।

।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.8/व्ययभाव-8 ।।

यदि जन्मपत्रिकामें दशमेश शुभ ग्रह से व्ययेश दृष्ट युक्त हो तथा अपने उच्च, मित्र स्वराशिगतनवांशक में हो तो धर्म कार्य में धन का व्यय होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,चंद्र योग की संभावना : 18 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप धार्मिक कार्य में धन व्यय करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

गजकेसरी योग

''केन्द्रस्थिते देवगुरौ शशाङ्काद्योगस्तदाहुर्गजकेसरीति।
दृष्टे सितार्येन्दुसुतैः शशाङ्के नीचास्तहीनैर्गजकेसरीस्यात्।।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 1 ।।

चन्द्रमा से केन्द्र में गुरु हो तो गजकेसरी योग होता है और चन्द्रमा नीच अस्तादि में न गये हुये शुक्र, गुरु और बुध से देखा जाता हो तो भी गजकेशरी योग होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,चंद्र योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में गजकेसरी योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धनी, मेधावी, गुणी तथा राजप्रिय सम्मानित पुरुष होंगे।

काहल योग- प्रथम विधि

''अन्योन्यकेन्द्रगृहगौ गुरुबन्धुनाथौ-
लग्नाधिपे बलयुते यदि काहलः स्यात्।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 10 ।।

जिस जातक की पत्रिका में गुरु और चतुर्थेश परस्पर केन्द्र में हों, और लग्नेश बली हो तो काहल योग का सृजन होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,गुरु,सूर्य योग की संभावना : 48 में 1

आपकी पत्रिका के अनुसार काहल योग के प्रथम विधि के अनुसार पत्रिका में काहल योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप तेजस्वी, साहसी, मूर्ख सेना के बल से युक्त, ग्रम पति, मुखिया या ग्राम प्रधान होंगे।

पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : मंगल,बुध,शनि,राहु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

उत्तमवर्ग योग

''नीरोगतामुत्तमवर्गयातः।''

।।बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका के "उत्तमवर्ग" भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "उत्तमवर्ग" में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

गोपुरांश योग

''सगोपुरांशो यदि गोधनानि ''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका में "गोपुरांश" भाग में ग्रह स्थित हो, वह मनुष्य गौ और धन दोनों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में "गोपुरांश" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप गो धन अर्थात् पशुओं और धन से पूर्ण रहेंगे।